करेंट अफेयर्स की राष्ट्रीय पत्रिका

परीक्षा मंथन®

empowering aspirants since 1984

e-book series

Buy ONLINE
manthanprakashan.in
www.instamojo.com/manthanprakashan

Follow us on Facebook
www.facebook.com/parikshamanthan
www.facebook.com/groups/parikshamanthan

प्राचीन भारत का इतिहास

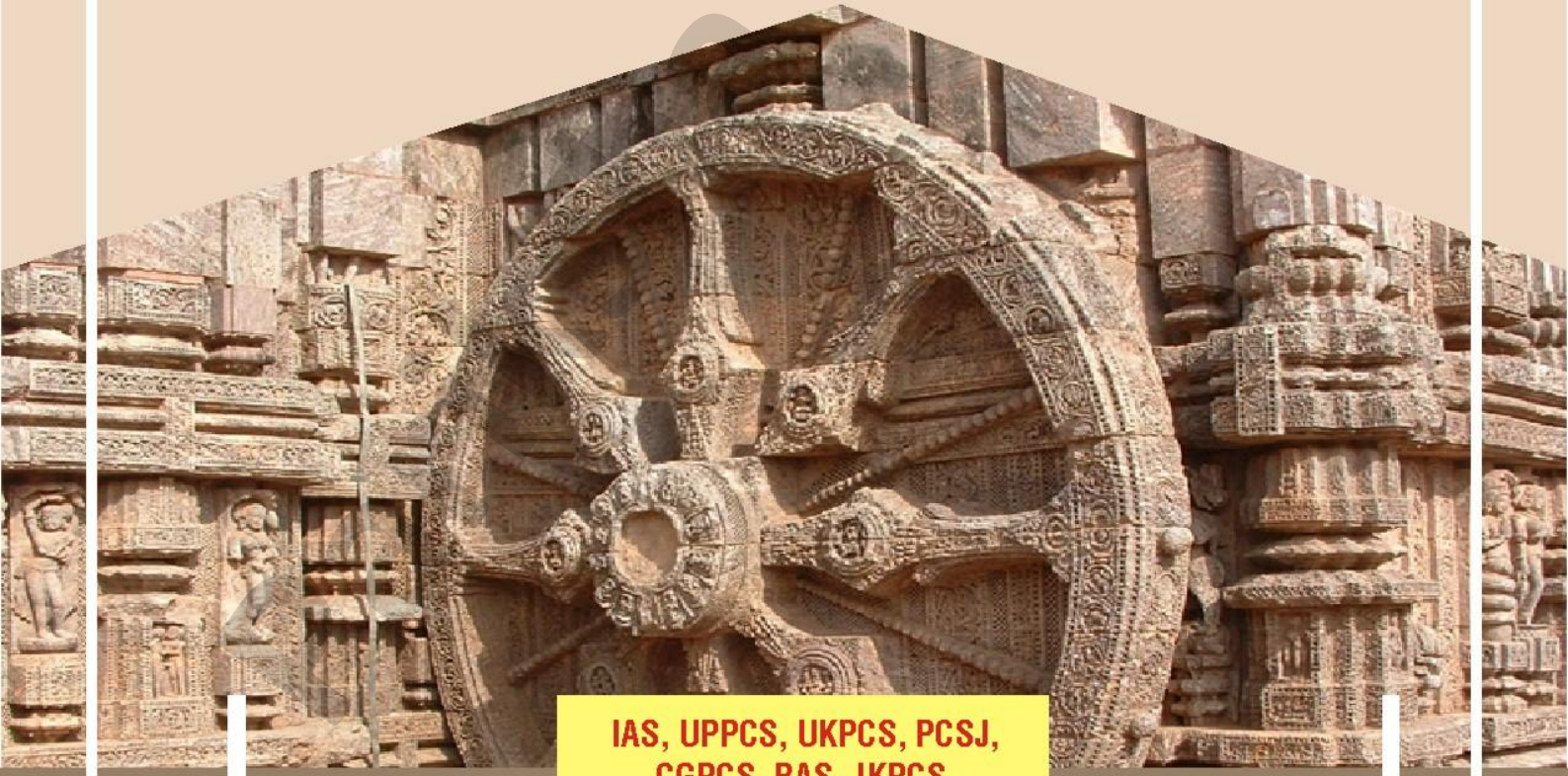

IAS, UPPCS, UKPCS, PCSJ, CGPCS, RAS, JKPCS, BPSC, MPPCS, CDS, SSC, RAILWAY etc.

परीक्षा मंथन â

ई-बुक श्रृंखला-1

सामान्य अध्ययन

प्राचीन भारत का इतिहास

संस्करण-2019-20

(संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग, लोअर सबॉर्डिनेट, यूडीए-एलडीए, पीसीएस (जे), कर्मचारी चयन आयोग, रेलवे भर्ती बोर्ड, एनडीए, सीडीएस, सीपीएफ, एलआईसी, जीआईसी, बी-एड, यूजीसी-नेट तथा अन्य सभी परीक्षाओं हेतु एक सम्पूर्ण संदर्भ ग्रन्थ)

मूल्य : ₹ 60/-

(साठ रुपए मात्र)

मंथन प्रकाशन

7R/5 कैलाशपुरी कॉलोनी, ताशकंद मार्ग, (स्प्रिंग डेल नर्सरी स्कूल के सामने),

सिविल लाइन्स, इलाहाबाद – 211001

मोबाइल नं. : 09335151971

Website: www.manthanprakashan.in ; www.instamojo.com/manthanprakashan

Facebook: www.facebook.com/parikshamanthan

वैधानिक सूचना

संपादक की लिखित अनुमति के बिना 'परीक्षा मंथन : E-book श्रृंखला-प्राचीन भारत का इतिहास' से किसी सामग्री का न तो अनुकरण किया जा सकता है और न ही इसे किसी रूप में पुनः किसी माध्यम द्वारा प्रकाशित या प्रसारित किया जा सकता है। 'परीक्षा मंथन : E-book श्रृंखला-प्राचीन भारत का इतिहास' में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है। समस्त वाद-प्रतिवाद इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायिक क्षेत्राधिकार के अधीन ही मान्य होंगे।

Parikshamanthan

परीक्षा मंथन

ई-बुक श्रृंखला- 1

सामान्य अध्ययन

प्राचीन भारत का इतिहास

अनुक्रमणिका

- अतीत के अध्ययन हेतु काल-विभाजन 3
- प्रागैतिहासिक काल 3
- हड़प्पा सभ्यता 6
- वैदिक काल 17
- प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन 24
- महाजनपद काल 33
- मगध का उत्कर्ष 34
- मौर्य साम्राज्य 35
- मौर्योत्तर काल 42
- गुप्त काल 49
- गुप्तोत्तर काल.....53
- राजपूत काल (पूर्व मध्यकाल) 54
- दक्षिण भारत 59

Pariksha Manthan

प्राचीन भारत का इतिहास

अतीत के अध्ययन हेतु काल विभाजन

1. **प्रागैतिहासिक काल** - जिस काल का मानव किसी प्रकार की लिपि अथवा लेखन कला से परिचित नहीं था। मानव उत्पत्ति से लेकर लगभग 3000ई.पू. के बीच का समय इसके अन्तर्गत आता है। पाषाण काल एवं ताम्र पाषाण काल का अध्ययन इसी के अन्तर्गत किया जाता है।
2. **आद्यैतिहासिक काल** - जिस काल का मानव किसी न किसी प्रकार की लिपि से परिचित था लेकिन वह लिपि अभी तक पढ़ी न गई हो। हड़प्पा सभ्यता एवं वैदिक सभ्यता का अध्ययन इसी के अन्तर्गत किया जाता है।
3. **ऐतिहासिक काल** - जिस काल का मानव किसी न किसी प्रकार की लिपि से परिचित था और वह लिपि पढ़ी जा चुकी हो अर्थात् मानव के जिन क्रिया-कलापों का हमें लिखित विवरण प्राप्त होता है और वह विवरण पढ़ा जा चुका हो उसे हम इतिहास कहते हैं। 5वीं शताब्दी ई. पू. से लेकर वर्तमान तक का अध्ययन इसी के अन्तर्गत किया जाता है।

प्रागैतिहासिक काल

पाषाण काल

- भारत में सर्वप्रथम 1863 ई. में पाषाण कालीन सभ्यता की खोज की गई।
- राबर्ट ब्रूस फुट (भू-वैज्ञानिक) ने पहला पुरा पाषाण कालीन उपकरण मद्रास के पास पल्लवरम् नामक स्थान से प्राप्त किया था।
- पाषाण काल को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तीन कालों में विभाजित किया गया है।
  1. पुरा पाषाण काल (5 लाख ई.पू. से 10 हजार ई.पू.)
  2. मध्य पाषाण काल (10 हजार ई.पू. से 4 हजार ई.पू.)
  3. नवपाषाण काल (7 हजार ई.पू. से 1 हजार ई.पू)
- पुरा पाषाण काल को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पुनः तीन कालों में विभाजित किया गया है

निम्न पुरा पाषाण काल

- इस काल में मानव जीवन अस्थिर था। शिकार करके वह अपना भोजन संग्रह करता था।
- इस काल के उपकरणों में हैंड ऐक्स, चापर-चापिंग एवं पेबुल उपकरण मुख्य थे।
- भारत की निम्न पुरापाषाण कालीन संस्कृति को दो वर्गों में विभाजित किया गया है।

चापर-चापिंग पेबुल संस्कृति

- यह संस्कृति पाकिस्तान के पंजाब में सोहन नदी घाटी में सर्वप्रथम प्रकाश में आयी। अतः इसे सोहन संस्कृति या सोहन उद्योग के नाम से जाना जाता है।

हैंड ऐक्स संस्कृति

- इस संस्कृति का मुख्य उपकरण हैंड ऐक्स है। इसे एश्यूलन संस्कृति के नाम से जाना जाता है।
- इस संस्कृति के उपकरण सर्वप्रथम मद्रास के निकट अत्तिरमपम्कम् से प्राप्त हुए हैं। इसीलिए इसे मद्रासी संस्कृति या मद्रासी उद्योग के नाम से जाना जाता है।

Pariksha Manthan

मध्य पुरापाषाण काल

- इस काल में पत्थर के फलक की सहायता से उपकरणों का निर्माण किया गया।
- अतः इस काल को फलक संस्कृति के नाम से जाना जाता है।
- इस काल में स्क्रेपर (खुरचनी) बेधक, बेधनियां आदि उपकरण बनाये गये।
- गंगाघाटी, असम, सिक्किम एवं केरल को छोड़कर सम्पूर्ण भारत से इस संस्कृति के उपकरण प्राप्त हुए हैं।

उच्च पुरापाषाण काल

- इसी काल में सर्वप्रथम होमोसेपियंस (ज्ञानी मानव) का उदय हुआ।
- इस काल के प्रमुख उपकरणों में तक्षनी, चाकू, स्क्रेपर, बेधक एवं बेधनियां हैं। तक्षनी इस काल का विशिष्ट उपकरण है।
- इलाहाबाद जिले में बेलनघाटी में स्थित लोंहदा से हड्डी की बनी नारी की मूर्ति मिली है।
- इसी काल का मानव पहली बार रहने के लिए गुफाओं का प्रयोग करना प्रारम्भ किया।
- भीमबेटका (म.प्र.) की पहाड़ियों से इस काल की गुफायें प्राप्त हुई हैं जिनका प्रयोग रहने के लिए किया जाता था।
- इसी काल का मानव सर्वप्रथम चित्रकारी करना प्रारम्भ किया। भीमबेटका की गुफाओं से इस काल के बने चित्र प्राप्त होते हैं।

मध्य पाषाण काल

- यह काल पुरापाषाण काल और नव पाषाण काल के मध्य एक संक्रमण काल था। वस्तुतः यह काल नव पाषाण काल का अग्रगामी था।
- इस समय जलवायु गर्म हो गई, अब बर्फ की जगह घास से भरे मैदान उगने प्रारम्भ हो गए।
- इस काल का मानव अब पशुपालन करना भी प्रारम्भ कर दिया।
- मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागौर पशुपालन का प्राचीनतम साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं जिसका समय 5000 ई.पू. था।
- मध्य पाषाण कालीन सबसे प्राचीन ज्ञात स्थल सराय नाहर राय, महदहा (प्रतापगढ़) है।
- इस समय पत्थर के उपकरणों में तीर का जो नोक बनाया गया वह इस युग का विशिष्ट उपकरण है जिन्हें सूक्ष्म पाषाण उपकरण (माइक्रोलिथ) कहा गया।
- इस काल के अन्य उपकरणों में इकधार फलक, बेधक बेधनी, चाकू, तक्ष्णी एवं अर्धचन्द्राकार प्रमुख है।
- इसी काल में सर्वप्रथम मानव कंकाल प्राप्त होते हैं।

नव पाषाण काल

- कालक्रम के अनुसार यह युग काफी छोटा है, फिर भी सारे क्रान्तिकारी परिवर्तन इसी युग में हुए हैं।
- विश्व स्तर पर इस संस्कृति का प्रारम्भ 9000 ई.पू. में पश्चिम एशिया में हुआ।
- पश्चिम एशिया के मानव को जौ, गेहूँ, दलहन, तिलहन, आदि के रूप में महत्वपूर्ण खाद्यान्न प्रदान किया।
- यहां की प्राचीनतम नव पाषाण युगीन बस्ती मेहरगढ़ (पाकिस्तान) है। कृषि का सबसे पहला और स्पष्ट प्रमाण यहीं से मिला तथा इस जगह के मानव ने 7000 ई. पू. में कृषि उत्पादन प्रारम्भ कर दिया था।
- इसी तरह भारत में कोलडिहवा नामक स्थान से चावल उगाने का प्राचीन साक्ष्य प्राप्त होता है, इसका समय भी 5000 ई.पू. के लगभग आता है।
- नव पाषाण काल में स्थिर वासी लोग खेती से परिचित हो गए थे तथा पालतू पशु भी रखने लगे थे।

Pariksha Manthan

- इसलिए खाने-पीने के बर्तनों की इन्हें जरूरत हुई अतः कुम्भकारी सबसे पहले इसी काल में दिखाई दी।
- कश्मीर में जिस नवपाषाण काल का विकास हुआ उसे कश्मीरी नवपाषाण संस्कृति के नाम से जाना जाता है।
- बुर्जाहोम संस्कृति के लोग गड्ढे वाले मकानों में रहते थे।
- बुर्जाहोम से मानव के साथ कुत्ते को भी दफनाने का प्रमाण मिलता है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- राबर्ट ब्रूस फूट जिन्होंने पाषाणकालीन सभ्यता की खोज की, एक भू-वैज्ञानिक थे।
- मध्य प्रदेश में नर्मदा घाटी में स्थित हथनौरा से मानव खोपड़ी का जीवाश्म प्राप्त हुआ है। जो भारत में सबसे प्राचीन है।
- लोंहदा (बेलनघाटी) से हड्डी की बनी नारी की मूर्ति प्राप्त हुई है जो उच्च पुरा पाषाण काल से सम्बन्धित है।
- पशुपालन का प्राचीनतम प्रमाण आदमगढ़ एवं बागौर से प्राप्त होता है।
- विश्व के प्राचीनतम मृद्भांड बेलनघाटी में स्थित चोपानी मांडो से प्राप्त हुए हैं।
- बुर्जाहोम संस्कृति के लोग जमीन के अंदर गड्ढे बनाकर निवास करते थे। यहीं से मानव के साथ कुत्ते को दफनाये जाने का प्रमाण मिलता है।

ताम्र-पाषाण काल

- जिस काल का मानव पत्थर के उपकरणों के साथ-2 तांबे के उपकरणों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया, उसी काल को ताम्र-पाषाण काल कहते हैं।

पूर्व सैंधव ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियाँ

1. क्वेटा संस्कृति	बलूचिस्तान में	पांडुरंग के मृद्भांडों का प्रयोग।
2. कुल्ली संस्कति	बलूचिस्तान में	पांडुरंग के लेप पर काले रंग से चित्रण वाले मृद्भांड।
3. नाल-आर्मी संस्कृति	बलूचिस्तान एवं सिंध में	पांडुरंग के लेप पर बहुरंगी अलंकरण वाले मृद्भांड।
4. झोब संस्कृति	बलूचिस्तान में	लाल रंग के लेप पर काले रंग से चित्रण वाले मृद्भांड।
5. कोटिदीजी संस्कृति	सिंध में	लाल रंग के लेप पर दुधिया रंग की पट्टी जिस पर बहुरंगी अलंकरण वाले मृद्भांड।
6. पूर्व हड़प्पा संस्कृति	पंजाब	लाल या बैंगनी रंग के (पाकिस्तान) मेंलेप पर काले रंग की धारियों वाला मृद्भांड।

प्रमुख तथ्य

- सर्वाधिक पूर्व सैंधव ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियां बलूचिस्तान से प्राप्त हुई हैं।
- अहाड़ का प्राचीन नाम ताम्रवती मिलता है।
- ताम्र-पाषाण काल को कैल्कोलिथिक युग भी कहा जाता है।
- गैरिक मृदभांड पात्र का नामकरण हस्तिनापुर से प्राप्त मृदभांडों के आधार पर किया गया है।

Pariksha Manthan

हड़प्पा सभ्यता

(Harappa Civilization)

- हड़प्पा सभ्यता एक सुविकसित काँस्ययुगीन नगरीय सभ्यता थी। ताँबे से अधिक मजबूत काँसे के औजारों का उपयोग, लेखन कला का ज्ञान, नगर-शहरों में रहने को सभ्यता का प्रतीक माना जाता है।
- **नामकरण**–भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित इस प्राचीन महान सभ्यता को सिन्धुघाटी की सभ्यता, सैंधव सभ्यता, सिन्धु सभ्यता एवं हड़प्पा सभ्यता के नाम से जाना जाता है।
- इस सभ्यता का प्रथम खोजा गया स्थल हड़प्पा है जो रावी नदी के तट पर स्थित है।
- इसके बाद प्रारंम्भिक वर्षों में जिन स्थलों की खोज एवं उत्खनन कार्य किया गया जैसे–मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, आम्री, कोटिदीजि, अलीमुराद आदि सभी सिन्धु नदी के तट पर स्थित हैं, अतः पुराविदों ने प्रारम्भ में इस प्राचीन सभ्यता का नाम 'सिन्धुघाटी की सभ्यता' नाम दिया।
- कालान्तर में इस सभ्यता के प्रमाण सिन्धु घाटी से बाहर अन्य क्षेत्रों में पाये गये जैसे–सरस्वती घाटी, यमुना घाटी, गोदावरी घाटी आदि से।
- अतः यह नाम अनुपयुक्त हो गया क्योंकि यह भौगोलिक क्षेत्र को इंगित करता है। तब पुराविदों ने इस सभ्यता के प्रथम खोजे गये स्थल के नाम पर इस सभ्यता का नाम 'हड़प्पा सभ्यता' रखा, क्योंकि यह इतिहास की परंपरा का पालन करता है। यह नाम इस सभ्यता का उपयुक्त नाम है, क्योंकि यह किसी भौगोलिक क्षेत्र को इंगित नहीं करता है।
- **सीमा निर्धारण एवं क्षेत्र विस्तार**–हड़प्पा सभ्यता का विस्तार भारतीय उपमहाद्वीप में भारत, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान तीन देशों में हुआ।
- इस सभ्यता के सर्वाधिक पुरास्थल भारत से प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता का विस्तार पश्चिम में सुत्कागेंडोर (पाकिस्तान के बलूचिस्तान) से लेकर पूरब में आलमगीरपुर (उ.प्र. के मेरठ जिले में) तक लगभग 1600 किमी.।
- उत्तर में माँडा (जम्मू-कश्मीर) से लेकर दक्षिण में दाईमाबाद (महाराष्ट्र) तक लगभग 1400 किमी0 लम्बे क्षेत्र में हुआ।
- इस सभ्यता का क्षेत्रफल लगभग 16 लाख वर्ग किमी. है। इस सभ्यता का विस्तार भारत में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उ.प्र. एवं जम्मू-कश्मीर में हुआ। पाकिस्तान में प.पंजाब, सिन्ध एवं बलूचिस्तान प्रान्त में तथा अफगानिस्तान में हुआ।
- सर्वाधिक पुरास्थल सरस्वती नदी घाटी में पाये गये। किसी एक प्रान्त में सर्वाधिक पुरास्थल गुजरात से प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के पास 1300 किमी. लम्बा समुद्र तट है।

नोट–सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थलों की भौगोलिक स्थिति चार्ट में देखें—

सिन्धु सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल, भौगोलिक स्थिति एवं वहाँ से प्राप्त वस्तुयें

स्थल का नाम	देश/प्रान्त/जिला	नदी	खोज वर्ष	खोजकर्ता/उत्खननकर्ता	मिली वस्तुयें
1- हड़प्पा	पाकिस्तान प. पंजाब माँटगोमरी (शाहीवाल)	रावी	1921	दयाराम साहनी एवं माघव स्वरूप वत्स	1- श्रमिक आवास 2. 18 वृत्ताकार चबूतरे 3. 16 भटिठयाँ 4. खंडों में अन्नागार 5. सोने का बना हार 6. प्रसाधन बाक्स 7. पाउडर 8. काजल की डिबिया 9. गधे का प्रमाण 10. ताँबे से बना पैमाना 11. हृदयाकार मनका आदि।

Pariksha Manthan

2- मोहन जोदड़ो (शाब्दिक अर्थ है मृतको का टीला)	पाकिस्तान सिन्ध लरकाना	सिन्धु	1922	राखाल दास बनर्जी उत्खनन कार्य- मार्शल द्वारा	1. विशाल स्नानागार 2. विशाल अन्नागार 3. सभा भवन 4. पुरोहित आवास 5. मृतकों की गली 6. गोमेद के मनके से बना हार 7. चाँदी की अंगूठी 8. चाँदी की डिब्बी में लाल कपड़े का साक्ष्य 9. काँसे की बनी नर्तकी की मूर्ति 10. पत्थर निर्मित योगी की मूर्ति 11. सीप का बना पैमाना 12. एक मुद्रा में तीन सिर वाले देवता का चित्र (आदि शिव)
3- चन्हूदड़ो	पाकिस्तान सिन्ध नवाबशाह	सिन्धु	1934	एन.जी. मजुमदार	1. गुरिया मनका बनाने का कारखाना 2. लिपिस्टक 3. वक्राकार ईंट 4. एक ईंट पर कुत्ते एवं बिल्ली के पैर के निशान
4- रोपड़ (आधुनिक नाम रूपनगर)	भारत पंजाब	सतलज	1950 उत्खनन-1953	बी.बी. लाल यज्ञदत्त शर्मा	मानव के साथ कुत्ते को दफनाये जाने का प्रमाण।
5- बनावली	भारत हरियाणा हिसार	सरस्वती	1973	आर.एस. विष्ट	1. एक मकान में वाश वेसिन का प्रमाण 2. खिलौने के रूप में मिट्टी का बना हल 3. उत्तम किस्म का जौ।
6- राखीगढ़ी	भारत हरियाणा जींद	—	1969	सूरजभान एवं भगवान दास	भारत का सर्वाधिक बड़ा पुरास्थल।
7- कालीबंगा	भारत राजस्थान गंगानगर	घग्घर	1953 उत्खनन-1961	अमलानंद घोष बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर	1. हल से जुते हुए खेत के निशान। 2. एक ही खेत से दो फसल उगाने के साक्ष्य। 3. अलंकृत ईंट के प्रमाण। 4. मिट्टी का बना पैमाना। 5. अग्नि वेदिकायें।

Pariksha Manthan

8- लोथल	भारत गुजरात अहमदाबाद	भोगवा	1954	एस.आर. राव	1. अन्नागार 2. गुरिया-मनका बनाने का कारखाना 3. रंगाई कुंड 4. गोंदीबाड़ा (डाकयार्ड) 5. हाँथी दाँत से निर्मित पैमाना 6. अग्निवेदिकायें 7. पत्थर निर्मित वृत्ताकार चक्की के दो पाट 8. गुरिल्ला की मृण्मूर्ति।
9- धौलावीरा	भारत गुजरात कच्छ	मानहर एवं मानसर	1967 उत्खनन-1990	जे.पी. जोशी आर.एस. बिष्ट	1. जलाशयों का प्रमाण 2. सोने की अंगूठी 3. सूचना पट्ट का प्रमाण 4. स्टेडियम।

नगर नियोजन

- **सामान्य विशेषतायें**—सिन्धु सभ्यता के नगर विश्व के प्राचीनतम सुनियोजित नगर हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण नगर किसी संस्था के निर्देशानुसार बनवाये गये हैं।
- सड़कें सीधी दिशा में एक दूसरे के समकोण पर काटती हुई नगर को अनेक वर्गाकार तथा चर्तुभुजाकार खण्डों में विभाजित करती थी।
- सिन्धु सभ्यता में सर्वाधिक चौड़ी सड़क मोहन जोदड़ों से प्राप्त हुई जिसकी चौड़ाई लगभग 10 मी0 थी। पुराविदों ने इसे राजपथ/प्रथम सड़क की संज्ञा दी है।
- सामान्यतः मकानों में 4 या 5 कमरे बनाये जाते थे। मकान में आंगन, रसोई घर, स्नानागार, कुँए तथा कुछ बड़े घरों में शौचालय बनाये जाते थे।
- सामान्यतः मकान के दरवाजे मुख्य सड़कों पर न खुलकर गलियों में खुलते थे।
- हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में मकानों के निर्माण में सामान्यतः पकी ईंटों का प्रयोग मिलता है, जबकि अन्य स्थलों से ज्यादातर कच्ची ईंट का प्रयोग मिलता है।
- मात्र कालीबंगा से अलंकृत ईंट का प्रमाण मिलता है।
- सामान्यतः ईंटों का आकार 10' ´ 5' ´ 2½ इंच था जिनमें 4 : 2 : 1 का अनुपात था।

प्रमुख नगरों की विशेषता–

- **हड़प्पा**—हड़प्पा नगर दो खंडों में विभक्त था, पश्चिम में दुर्ग क्षेत्र एवं पूरब में निचला नगर था।
- दुर्ग क्षेत्र से बाहर उत्तर में एक टीले के उत्खनन से कुछ महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए हैं जैसे–

1. मजदूरों को रहने के लिए श्रमिक बस्ती–कुल 15 मकान प्राप्त हुए हैं।
2. इसी के पास से 16 भट्ठियाँ प्राप्त हुई हैं जिसमें कोयले और कंडे की राख मिली हैं। पुराविदों ने इसे ताँबा गलाने का कारखाना माना है।
3. यहीं से पकी ईंटों से निर्मित 18 वृत्ताकार चबूतरे मिले हैं जिनके मध्य में एक गड्ढा है। गड्ढे में गेहूँ जौ एवं राख के साक्ष्य मिले हैं।

- **मोहनजोदड़ो**—मोहनजोदड़ो का नगर दो खंडों में विभक्त था। पश्चिम में दुर्ग क्षेत्र एवं पूरब में निचला नगर।

– दुर्ग क्षेत्र से अनेक सार्वजनिक इमारतें प्राप्त हुई हैं–

1. **विशाल स्नानागार**–यह पकी ईंटों से निर्मित सिन्धु

Pariksha Manthan

सभ्यता की सबसे सुन्दर कृति है। यह पूरी इमारत 180 फीट लम्बी एवं 108 फीट चौड़ी है।

- इसके मध्य में एक तालाब है जिसका आकार 11.89 मी.लम्बा ´ 7.01 मी. चौड़ा ´ 2.43 मी. गहरा है।
- तालाब में तल तक पहुँचने के लिए उत्तर तथा दक्षिण दिशा में सीढ़ियाँ बनी थी।
- तालाब के दक्षिण पश्चिम में एक नाली थी जिसमें से तालाब का गन्दा पानी बाहर निकाला जाता था।

2. **विशाल अन्नागार**–यह अन्नागार 45.71 मीटर लम्बा ´ 22.86 मीटर चौड़ा है।

- अन्नागार के उत्तर में एक चबूतरा बनाया गया है। अन्नागार में कुल 27 प्रकोष्ठ बने हैं। सिन्धु सभ्यता का सबसे बड़ा अन्नागार है।

3. **पुरोहित आवास**–विशाल स्नानागार के पास से एक विशाल इमारत का प्रमाण मिला है जो 70.1 मीटर लम्बा एवं 23.77 मीटर चौड़ा है।

- **चन्हूदड़ो**–सामान्य नगर के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
  - वक्राकार ईंट का प्रमाण मिलता है।
  - गुरिया-मनका बनाने का कारखाना प्राप्त हुआ है।
- **लोथल**–इसे लघु हड़प्पा एवं लघु मोहनजोदड़ो कहा जाता है।
  - लोथल नगर के पश्चिम में दुर्ग क्षेत्र एवं पूरब में निचला नगर था। यहाँ का दुर्ग क्षेत्र एवं निचला नगर एक ही रक्षा प्राचीर से घिरा हुआ था।
  - लोथल से गुरिया मनका बनाने का कारखाना मिला है। यहीं से एक रंगाई कुंड का प्रमाण मिला है।

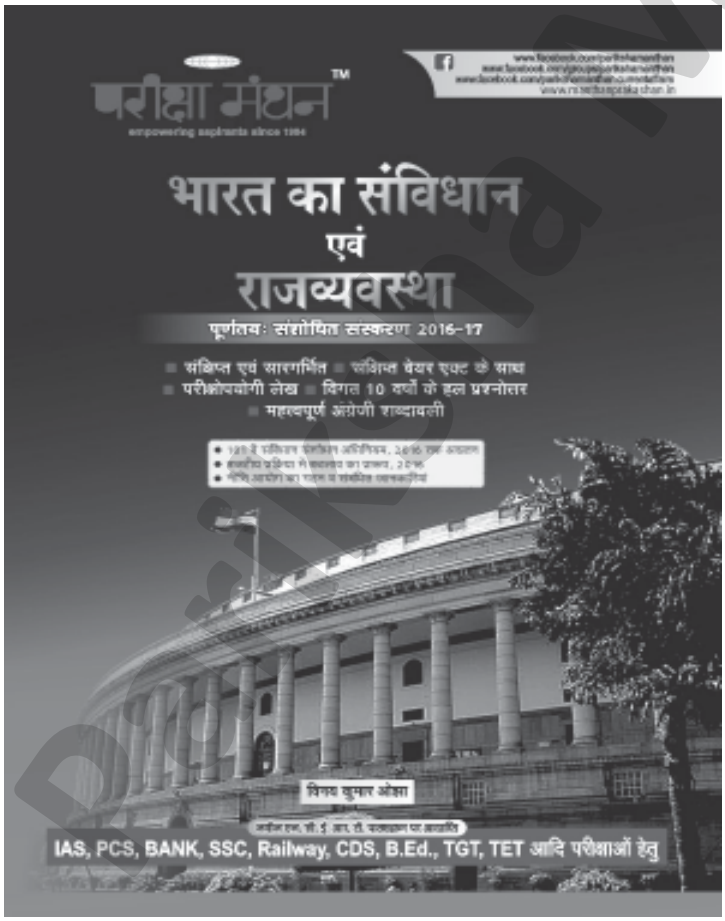

खरीदने के लिए लॉगऑन करें

www.manthanprakashan.in

– लोथल में मकानों के दरवाजे मुख्य सड़कों पर खुलते थे।

– लोथल के निचले नगर के पूरब में एक डाकयार्ड (गोंदीवाड़ा) प्राप्त हुआ है। यह पकी ईंटों से निर्मित है। इसका आकार 218 मीटर लम्बा, 36 मीटर चौड़ा एवं 3.3 मीटर गहरा है।

- **'धौलावीरा**—यह भारत स्थित सिन्धु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर है।

– धौलावीरा नगर अन्य नगरों की योजना से भिन्न योजना में बसाया गया है।

– यहाँ से 16 जलाशयों का प्रमाण मिलता है। यहीं से स्टेडियम एवं सूचना पट्ट का प्रमाण मिलता है।

- **कालीबंगा**—यह नगर दो खंडों में विभक्त है पश्चिम में दुर्ग क्षेत्र एवं पूरब में निचला नगर। यहाँ से सिन्धु सभ्यता के नीचे पूर्व सैंधव संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं।

– यहाँ का दुर्ग क्षेत्र एवं निचला नगर दोनों अलग-अलग रक्षा प्राचीर से घिरा था। यहाँ के एक फर्श से अलंकृत ईंट का साक्ष्य मिला है।

– यहाँ से आयताकार अग्निवेदिकायें प्राप्त हुई हैं।

- **बनावली**—यहाँ का दुर्ग क्षेत्र एवं निचला नगर अलग-अलग नहीं है।

– मिट्टी का बना खिलौने के रूप में हल प्राप्त हुआ है।

– अग्निवेदिकायें प्राप्त हुई हैं।

सामाजिक जीवन

- सिन्धु सभ्यता के समाज का स्वरूप मातृसत्तात्मक था। सैन्धव समाज में कई वर्गों के अस्तित्व के प्रमाण मिले हैं। सैंधव समाज को विभिन्न वर्गों में बाँटा जा सकता है।

1. विद्वान वर्ग – पुरोहित, वैद्य, शिक्षक, ज्योतिषी आदि
2. योद्धा वर्ग–
3. व्यापारी एवं शिल्पी वर्ग
4. श्रमिक वर्ग

- सैंधव समाज में व्यापारियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा होगा।

- **भोजन**—सैंधववासी शाकाहारी तथा माँसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। माँस, मछली, दूध का प्रयोग करते थे। औषधियों के रूप में शिलाजीत, समुद्र का फेन एवं नीबू का प्रयोग करते रहे होंगे।

- **वस्त्र**—सिन्धु सभ्यता के किसी भी स्थल से किसी भी निर्मित वस्त्र का साक्ष्य नहीं मिला। सैंधववासी सूती एवं ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्र पहनते थे। मोहनजोदड़ो से चाँदी की डिबिया के अन्दर से लाल रंग के कपड़े का साक्ष्य प्राप्त हुआ। स्त्रियाँ स्कर्टनुमा वस्त्र धारण करती थीं। शाल जैसा वस्त्र भी ऊपर से धारण किया जाता था।

- **आभूषण**—सैंधववासी विभिन्न प्रकार के आभूषणों का भी प्रयोग करते थे। आभूषण सोना, चाँदी, ताँबा एवं काँसे से निर्मित होते थे। इसके अतिरिक्त कीमती पत्थरों, साधारण पत्थरों, मिट्टी एवं हाँथी दाँत से भी आभूषण बनाये जाते थे। मुख्य आभूषणों में हार, बाजूबंद, बालपिन, अँगूठी, चूड़ियाँ आदि का प्रयोग करते थे। हड़प्पा से सोने का बना हुआ छह लड़ियों वाला हार प्राप्त हुआ है।

- **सौन्दर्य प्रसाधन**—सैन्धववासी सौन्दर्य प्रेमी थे। हड़प्पा के उत्खनन से प्रसाधन बाक्स प्राप्त हुआ है। हड़प्पा से ही काजल की डिबिया, सफेद पाउडर के प्रमाण मिले हैं। चन्हूदड़ों से लिपिस्टक के प्रमाण मिले हैं। स्त्रियाँ विभिन्न प्रकार से केश विन्यास करती थीं।

- **शवाधान प्रणाली**—सैंधववासी अपने मृतकों का तीन प्रकार से अंतिम संस्कार करते थे–

1. पूर्ण शवाधान – मृतकों को कब्र में दफनाने की परंपरा।
2. आंशिक शवाधान – मृतक के शरीर को जंगल में रख देना जब पशु-पक्षी उसके माँस को खा लेते थे तो हड्डियों को दफना देना।

Pariksha Manthan

3. दाह संस्कार – मृतक को जलाने की परंपरा।

- सिन्धु सभ्यता के स्थलों से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सैंधववासियों की लोकप्रिय शवाधान प्रणाली पूर्णशवाधान थी। सैंधववासी सामान्यतः अपने मृतकों का सिर उत्तर पैर दक्षिण में रखकर दफनाते थे। मृतक के साथ अन्त्येष्ठि सामग्री जैसे मृदभांड, आभूषण आदि रखते थे। कब्रें पैर की अपेक्षा सिर की ओर अधिक चौड़ी होती थीं।
- हड़प्पा का कब्रिस्तान दुर्ग क्षेत्र के दक्षिण से प्राप्त हुआ है।
- हड़प्पा के कब्रिस्तान का नाम पुराविदों ने– R-37 रखा है। यहाँ से कुल 37 कब्रें प्राप्त हुई हैं। यहाँ से प्राप्त एक कब्र में मृतक को लकड़ी के ताबूत में रखकर दफनाया गया है। ऐसी परम्परा सुमेरियन सभ्यता में प्रचलित थी।
- लोथल का कब्रिस्तान दुर्ग क्षेत्र उत्तर-पश्चिम से प्राप्त हुआ है। यहाँ से कुल 20 कब्रे प्राप्त हुई हैं। यहाँ से युगल शवाधान के प्रमाण मिले हैं।
- मोहनजोदड़ो से अभी तक कब्रिस्तान का प्रमाण नहीं मिला है।

धार्मिक जीवन

- सैंधववासी अपने देवी-देवताओं की अनेक रुपों में पूजा करते थे—
- **पुरुष देवता**—सैंधवस्थलों से हमें पुरुष देवता के अनेक रुपों के अंकन का साक्ष्य मिलते हैं। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा में सींग युक्त त्रिमुखी पुरुष देवता का चित्र अंकित है। यह योग मुद्रा में एक चौकी पर निर्वस्त्र बैठा है। देवता के दाहिने ओर एक हाँथी और एक बाघ का चित्र अंकित है तथा बाँये ओर एक गैंडा तथा एक महिष एवं चौकी के नीचे दो हिरण के चित्र अंकित हैं। मार्शल महोदय ने इस चित्र को शिव का आदि रुप माना है। पौराणिक काल में शिव को महायोगी, पशुपतिनाथ, त्रिनेत्रधारी, त्रिशूलधारी आदि अनेक नामों से जाना जाता था। जिनका प्रतीकात्मक चित्रण इस मुद्रा में मिलता है।
- हड़प्पा से प्राप्त एक मुद्रा में एक तरफ पेड़ पर बने मचान पर एक पुरुष आकृति बैठी है और पेड़ के नीचे एक बाघ खड़ा है। इस मुद्रा के दूसरी ओर एक बैल का चित्र है और उसके सामने एक त्रिशूल गड़ा है। इसे भी शिव का प्रतीक रूप माना गया है।
- **मातृदेवी**—हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ों आदि से बड़ी संख्या में नारी मृण्मूर्तियाँ, मुहरों पर अंकित नारी आकृतियाँ और अन्य दृश्य मिले हैं जिससे स्पष्ट होता है कि वे मातृदेवी की उपासना करते थे। नारी मृण्मूर्तियों के सिर के दोनों ओर दीपक जैसी आकृति बनी है इनमें कालिख के निशान भी हैं। मैके की मान्यता है कि इसमें तेल बाती डालकर इनकी पूजा की जाती थी। सभी विद्वान इन मूर्तियों को मातृदेवी की मूर्ति मानते हैं। मूर्तिपूजा का सर्वप्रथम उल्लेख सैंधव सभ्यता से मिलता है। यद्यपि किसी भी स्थल से मंदिर के साक्ष्य नहीं मिले हैं। हड़प्पा से प्राप्त एक मुद्रा में एक ओर एक स्त्री को सिर के बल खड़ा किया गया है और उसके योनि से वनस्पति निकलते हुए दिखाया गया है। इस चित्रण को मातृदेवी के प्रजनन शक्ति का स्वरूप माना है अर्थात् पृथ्वी देवी का अंकन है। मार्शल एवं ह्वीलर का मत है कि सैन्धव देवकुल में मातृदेवी का स्थान सर्वोपरि है।
- **पशुपूजा**—सैंधववासी अपने देवी-देवताओं की कल्पना पशु रुप में भी की है। ये देवताओं की काल्पनिक एवं वास्तविक पशु देवताओं के रूप में पूजा करते थे।
- **काल्पनिक पशु**—मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा में तीन सिर वाले पशु का चित्र अंकन है। नीचे का सिर एवं सींग भैंसे का और बीच एवं ऊपर का सिर एवं सींग बकरे का है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक अन्य मुद्रा में तीन बाघों के शरीर को एक में जुड़ा हुआ दिखाया गया है। ये काल्पनिक पशु हो सकते हैं।
- **यज्ञ, अग्नि पूजा एवं पशु बलि**—सैंधववासी यज्ञ एवं अग्नि की पूजा करते थे। यज्ञों में पशु बलि दी जाती थी।

Pariksha Manthan

लोथल, कालीबंगा एवं बनावली से अग्निवेदिकायें मिली हैं, जिससे यज्ञ एवं अग्निपूजा की पुष्टि होती है। कालीबंगा एवं लोथल की अग्निवेदिकाओं से पालतू पशुओं की हड्डियाँ एवं अन्य सामग्री प्राप्त हुई हैं जिससे स्पष्ट होता है कि ये पशु बलि से परिचित थे।

- सैंधववासी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। उनमें अन्धविश्वास का प्रचलन था। जादू टोना आदि खूब प्रचलित थे, जिनसे बचने के लिए झाँड़-फूँक एवं ताबीज बाँधते थे।

आर्थिक जीवन

- सैंधव अर्थव्यवस्था पशुपालन, सिंचित कृषि, अधिशेष उत्पादन, विभिन्न दस्तकारियों में दक्षता और समृद्ध आंतरिक और विदेशी व्यापार पर आधारित थी।
- **पशुपालन**—कृषि पर निर्भर होते हुए भी हड़प्पाई लोग बहुत सारे पशु पालते थे। इनमें प्रमुख रूप से भेड़, बकरी, गाय, बैल, भैंस, भैंसा प्रमुख है। सुअर पालतू एवं जंगली दोनों थे। कुत्ता पालतू पशु था, इसके कई नस्ल मिले हैं। सैंधववासी ऊँट का भी पालन करते थे। हड़प्पा से गधे का साक्ष्य मिला है। घोड़े के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। सुरकोटडा से अंतिम चरण से घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं। कहा जा सकता है कि सैंधववासी घोड़े से परिचित थे। सैन्धववासी जिन अन्य पशुओं से परिचित थे उनमें हाँथी, बाघ, हिरण, बारहसिंहा, रीछ, खरगोश, बन्दर, बिल्ली, गैंडा, मेढ़ा आदि से परिचित थे। सैंधववासी सिंह से परिचित नहीं थे।
- **कृषि**—सिन्धु सभ्यता के आर्थिक संगठन में कृषि का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान था। सिन्धु और उसकी सहायक नदियों का क्षेत्र अत्यधिक उपजाऊ था। सैंधववासी अपनी रबी की फसल की बुवाई अक्टूबर-नवम्बर महीने में और कटाई मार्च-अप्रैल में करते थे। सैंधववासी कृषि उपकरण के रूप में हल, कुदाल, कुल्हाड़ी, हंसिया आदि का प्रयोग करते थे। बनावली से खिलौने के रूप में मिट्टी का बना हल प्राप्त हुआ है। कालीबंगा से प्राक् सैंधव स्तर से जुते हुए खेत के निशान एवं एक ही खेत में दो फसल उगाने के प्रमाण मिलते हैं। सैंधववासी प्रमुख रूप से गेहूँ, जौ, चावल, बाजरा, राई, सरसों, तिल, मटर एवं कपास आदि नौ फसलों का उत्पादन करते थे। बनावली से उत्तम किस्म के जौ के साक्ष्य मिले हैं। लोथल एवं रंगपुर से चावल के साक्ष्य मिले हैं। गेहूँ की दो किस्में मिलती हैं (i) ट्रिटिकम कम्पैक्टम (बड़ा गेहूँ) (ii) ट्रिटिकम स्फीरोकोकम (छोटे दाने का गेहूँ)। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से छह धारियों वाला जौ के साक्ष्य मिले हैं। सैंधववासी विश्व में कपास के प्रथम उत्पादक थे। इसीलिए यूनानियों ने कपास का नाम सिन्डोन (सैंधववासियों की उपज) रखा है।
- **उद्योग**—सैंधववासी विभिन्न उद्योगों से परिचित थे। सैंधववासियों का प्रमुख उद्योग वस्त्र उद्योग था। ये सूती एवं ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करते थे। सैंधव स्थलों के प्रत्येक मकान से कताई-बुनाई में प्रयुक्त मिट्टी एवं शंख के बने दो एवं तीन छेद वाले तकुए मिले हैं। मोहनजोदड़ो वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा होगा। इसके अतिरिक्त सैंधव सभ्यता में धातु उद्योग, गुरिया-मनका उद्योग, मूर्ति उद्योग, मृदभांड उद्योग, हाथी दाँत से निर्मित वस्तुओं का उद्योग, ईंट उद्योग आदि का प्रचलन था।
- **व्यापार**—सैंधववासियों का आन्तरिक एवं वाह्य दोनों व्यापार उन्नत अवस्था में था। सैंधव सभ्यता की विशेषता वहाँ असंख्य छोटे-बड़े नगरों की उपस्थिति थी। सम्पन्न सैंधवजन अधिक से अधिक विलासिता की वस्तुयें प्राप्त करना चाहते थे इस खोज में उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में दूर-दूर तक बस्तियाँ बसाई एवं अफगानिस्तान मध्य एशिया तथा प. एशिया के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध बनाया।
- हड़प्पा सभ्यता में उद्योग विकसित अवस्था में थे लेकिन हड़प्पाई क्षेत्रों में हमें उन उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध नहीं था। अतः सैंधववासी कच्चे माल की प्राप्ति हेतु दूर-दराज की यात्रायें की। कच्चे माल की प्राप्ति व्यापार-वाणिज्य कर्म का प्रथम सोपान है। दूसरे सोपान

Pariksha Manthan

में निर्मित वस्तुओं को घरेलू, क्षेत्रीय और विदेशी बाजारों तक पहुँचाना पड़ता था।

- सैंधववासी निम्न वस्तुयें इन क्षेत्रों से प्राप्त करते थे—

चाँदी—अफगानिस्तान एवं ईरान (मुख्यतः अफगानिस्तान से)

सोना—कर्नाटक स्थित कोलार की खान से

ताँबा—राजस्थान स्थित खेत्री ताम्र खान से कुछ ताँबा ओमान से

टिन—अफगानिस्तान से

सेलखड़ी—बलूचिस्तान एवं राजस्थान से

लाजवर्द—बदख्शाँ (उ. अफगानिस्तान से)

फिरोजा—खुराशान

चर्ट पत्थर—बलूचिस्तान

लाल रंग—फारस की खाड़ी स्थित होर्मुज से

देवदारु एवं शिलाजीत—हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों से

- **विदेशी व्यापार**—सैंधववासी का व्यापारिक सम्बन्ध अनेक वाह्य सांस्कृतियों के साथ थे जैसे मेसोपोटामिया, मिश्र, क्रीट और फारस की खाड़ी स्थित देशों के साथ।
- मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक सम्बन्धों के अनेक पुरातात्विक प्रमाण मिलते हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि मेसोपोटामिया से एक हड़प्पाई व्यापारियों की बस्ती मिली है। मेसोपोटामिया से प्राप्त अभिलेखों में दिल्मुन, मगन एवं मेलुहह नामक क्षेत्रों का उल्लेख है, इन क्षेत्रों से मेसोपोटामियाई लोगों के व्यापारिक सम्बन्ध थे दिल्मुन का समीकरण बहरीन से, मगन का समीकरण मकरान तट से एवं मेलुहह का समीकरण सैंधव क्षेत्र से किया गया है अतः मेसोपोटामियाई लोग सैंधव क्षेत्र से सूती वस्त्र, हाथी दाँत से निर्मित वस्तुयें एवं कार्नेलियन पत्थर के बने मनके आयात करते थे। हड़प्पाई मुद्रायें भी मेसोपोटामियाई क्षेत्रों से मिलती है। सैंधववासियों का मिश्र, फारस की खाड़ी एवं क्रीट से भी व्यापारिक सम्बन्ध थे।
- **यातायात**—सैंधवकाल में स्थल एवं जल दोनों मार्गो से व्यापार होता था। स्थल मार्ग के यातायात का मुख्य साधन ठोस पहिये वाली बैलगाड़ी थी। इसके अतिरिक्त भारवाहक पशुओं का भी यातायात के लिए प्रयोग किया जाता था। जल मार्ग से यातायात का मुख्य साधन नाव एवं जलपोत थे। सैंधव स्थलों से वास्तविक नाव का कोई साक्ष्य नहीं मिला है। लेकिन मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मृदभांड से नाव का चित्र मिलता है, लोथल से मिट्टी के बने नाव के पाँच मॉडल मिले हैं–इसी तरह लोथल से डाकयार्ड का साक्ष्य मिला है।
- **माप तौल**—सैंधववासी माप-तौल की इकाइयों से परिचित थे। नाप के लिए पैमाने का प्रयोग करते थे–मोहनजोदड़ो से सीप का बना हुआ पैमाना, हड़प्पा से ताँबे का पैमाना, लोथल से हाथी दाँत का पैमाना एवं कालीबंगा से मिट्टी का बना हुआ पैमाना प्राप्त हुआ है। सिन्धु सभ्यता के पुरास्थलों से बड़ी संख्या में बाट प्राप्त होते हैं। सिन्धु सभ्यता में माप-तौल का मानक रूप मिलता है। बाट पत्थर निर्मित होते थे। बाट कई आकार-प्रकार के मिलते हैं। लेकिन घनाकार बाट सर्वाधिक लोकप्रिय थे। बड़े बाट 16 के गुणक में मिलते हैं जबकि छोटे बाट दून प्रणाली (दुगुना) पर आधारित थे।

सैंधव कला

- सिन्धु सभ्यता में कला का अत्यधिक विकास हुआ।
- **मुद्रायें**—सैंधव पुरास्थलों के उत्खनन से अभी तक 2500 से अधिक मुद्रायें प्राप्त हुई हैं। ये मुद्रायें विभिन्न प्रकार के पत्थरों, काँचली मिट्टी, मिट्टी एवं ताँबे की बनी हुई हैं। इनमें सर्वाधिक मुद्रायें सेल खड़ी पत्थर की बनी हैं। ताँबे की मुद्रायें अल्पमात्रा में लोथल एवं देसलपुर से मिली हैं। मुद्रायें वर्गाकार, आयताकार, गोल एवं बेलनाकार बनायी जाती थीं। इनमें सबसे लोकप्रिय वर्गाकार मुद्रायें थीं जो सेलखड़ी पत्थर से बनी थीं। लोकप्रिय वर्गाकार मुद्रायें 2.8 से.मी. के वर्ग में बनी थीं। लोथल से बटन जैसी गोल

Pariksha Manthan

मुद्रा मिली है जो फारस की खाड़ी में लोकप्रिय थी। सैंधववासियों की कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन उनकी मुद्राओं के चित्रांकन में मिलता है। सैंधव मुद्राओं पर पशुओं का चित्रांकन अत्यंत सुन्दर है। चित्रांकनों में कूबड़वाला बैल, बाघ, गैंडा, भैंसा के चित्र बहुत ही सुन्दर एवं यथार्थ दिखाई पड़ते हैं। सैंधव मुद्राओं में सर्वाधिक चित्रांकन एकश्रृंगी पशु का है। मुद्राओं में सबसे सुन्दर उदाहरण मोहनजोदड़ो से प्राप्त त्रिमुखी देवता की मुद्रा है।

- **गुरिया-मनका**—सैन्धव सभ्यता में विभिन्न स्थलों से हजारों की संख्या में मनके मिले हैं। मनकों का निर्माण विभिन्न प्रकार के पत्थरों, धातुओं, मिट्टी, काँचली मिट्टी, सीप एवं हाथी दाँत से किया जाता था। चन्हूदड़ो एवं लोथल से गुरिया-मनका बनाने का कारखाना मिला है। सेलखड़ी पत्थर के बने मनके सर्वाधिक प्राप्त हुए हैं। मनके कई आकार के बनते थे। लेकिन बेलनाकार मनके सर्वाधिक प्रचलित थे। रेखांकित मनके सिन्धु सभ्यता के साथ-साथ मेसोपोटामिया एवं मिश्र से मिले हैं। हड़प्पा से एक हृदयाकार मनका मिला है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मनके में तीन बन्दरों का चित्र अंकित है।
- **मृद्भांड**—सैंधव स्थलों से प्राप्त अधिकांश मृदभांड चाक निर्मित हैं चाक का कोई साक्ष्य नहीं मिलता। मृदभांड का निर्माण नदियों की मिट्टी से किया गया था। मृदभांडो पर सर्वप्रथम लाल रंग का लेप लगाया जाता था तब उसके ऊपर काले रंग से चित्रण किया जाता था। मृदभांडों पर वनस्पतियों, जीव जन्तुओं कुछ मानव आकृतियों को रेखाचित्र का अंकन किया जाता था। मोहनजोदड़ो एवं चन्हूदड़ो के मृदभांडों पर मानव आकृति का अभाव है। हड़प्पा से प्राप्त एक मृदभांड पर मछुआरे का चित्र अंकित है। लोथल से प्राप्त एक मृदभांड पर एक चिड़िया अपने मुख में मछली दबाये हुए पेड़ पर बैठी है और पेड़ के नीचे एक लोमड़ी खड़ी है। इस चित्रांकन से हमें पंचतंत्र की कहानी ''चालाक लोमड़ी'' का आभास मिलता है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मृदभांड पर नाव का चित्रण मिलता है। प्रमुख मृदभांडों में, मटके नांद, हत्थेदार ढक्कन, कटोरे, साधारण तश्तरियाँ, कई खाने वाले बर्तन बड़ी थालियाँ, जामदानी, छिद्रित पात्र आदि हैं।
- **मूर्तिकला**—सैंधव मूर्तिकला को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. **धातु मूर्तियाँ**—सैंधव स्थलों से ताँबे एवं काँसे की बनी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। धातु निर्मित मूर्तियों में सबसे सुन्दर मोहनजोदड़ो से प्राप्त कांस्य निर्मित 14 से.मी. ऊंची नर्तकी की मूर्ति है। यह द्रवीमोम विधि से साँचे में ढालकर बनाई गई है। मोहनजोदड़ो से ताँबे एवं काँसे के बने बैल एवं भैसे की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। लोथल से ताँबे की बनी बतख, कबूतर, खरगोश आदि की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।
2. **प्रस्तर मूर्तियाँ**—सैंधववासी मूर्तियों के निर्माण में विभिन्न प्रकार के पत्थरों जैसे—अलाबास्टर, सेलखड़ी, स्लेटी चूना पत्थर एवं लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग करते थे। मोहनजोदड़ो से कुल 12 प्रस्तर मूर्तियाँ मिली हैं जिनमें सबसे सुन्दर सेलखड़ी पत्थर की बनी एक पुरुष मूर्ति है जो तिपतिया अलंकरण से युक्त शाल ओढ़े हुए है यह केवल वक्षस्थल तक है। मोहनजोदड़ो से पत्थर निर्मित एक योगी की मूर्ति प्राप्त हुई है। हड़प्पा से प्रस्तर निर्मित दो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।
3. **मृण्मूर्तियाँ**—सैंधव स्थलों से सर्वाधिक संख्या में मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। ज्यादातर मृण्मूर्तियाँ हस्त निर्मित हैं, कुछ मुखौटे हैं जो साँचे में ढालकर बनाये गये हैं। मानव मृण्मूर्तियों में पुरुष की तुलना में नारी मृण्मूर्तियाँ अधिक मिली हैं। ज्यादातर नारी मृण्मूर्तियाँ स्कर्टनुमा वस्त्र पहने हुए हैं। हड़प्पा से प्राप्त एक नारी मृण्मूर्ति को तीन पाँवे वाली कुर्सी में बैठे हुए दिखाया गया है। अधिकांश पुरुष मृण्मूर्तियाँ निर्वस्त्र हैं, कुछ मूर्तियों को तंग टोपी पहने हुए दिखाया गया है। मोहनजोदड़ो से घुटने के बल चलते हुए

Pariksha Manthan

बच्चों की दो मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से साँचे में ढालकर सींगयुक्त मुखौटे प्राप्त हुए हैं।

- मानव मृण्मूर्तियों की तुलना में पशु मृण्मूर्तियाँ अधिक मिलती है। पशु मृण्मूर्तियों में सर्वाधिक संख्या में बिना कूबड़वाले बैल की मृण्मूर्ति मिलती है। दूसरे स्थान पर कूबड़वाला बैल है। अन्य पशुओं में गैंडा, महिष, बाघ, हाथी, सुअर, रीछ, बन्दर, खरगोश, कुत्ता, बिल्ली आदि तथा अनेक पक्षियों की मृण्मूर्ती मिलती है।
- **सैंधव लिपि**—सैंधव लिपि अधिकांशतः मुहरों पर अंकित है। सैंधव लिपि के सर्वाधिक साक्ष्य मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुआ है। सैंधव लिपि में सामान्यतः 400 से 250 अक्षर प्रयुक्त होते रहे होंगे। सैंधव लिपि मुख्य रूप से चित्रात्मक एवं भाव चित्रात्मक हैं। लिपियों में सर्वाधिक अंकन अंग्रेजी अक्षर U चिह्न का है। सैंधव लिपि की दिशा दांये से बांये थी। सैंधव स्थलों से बूस्ट्रोफेदन लिपि के भी साक्ष्य मिले इसमें दांये से बांये फिर बांये से दांये एवं दांये से बांये लिखा जाता है। हाल में कुछ विद्वानों ने कम्प्यूटर द्वारा सैंधव लिपि पढ़ने का दावा किया है।

सिन्धु सभ्यता में विज्ञान एवं तकनीक

- सैंधववासी कृषि तकनीक में भी अग्रणी थे। खेतों की जुताई के लिए हल का प्रयोग करते थे। बनावली से खिलौने के रूप में मिट्टी का बना हल प्राप्त हुआ है। सैधववासी बीज बोने के यंत्र का प्रयोग करते थे। लोथल से प्राप्त मिट्टी की एक प्लेट में बीज बोने के यंत्र का चित्रण मिलता है। सैंधववासी विभिन्न फसलों एवं विभिन्न प्रजाति के अनाजों का उत्पादन करते थे। विश्व में सर्वप्रथम कपास का उत्पादन सैंधववासियों ने किया। ए. एल. बाशम के शब्दों में—"रुई उत्पादन एवं उसके उपयोग का तकनीकी

खरीदने के लिए लॉगऑन करें

www.manthanprakashan.in

ज्ञान विश्व को हड़प्पा सभ्यता की देन है।''। सैंधववासियों का प्रमुख उद्योग वस्त्र उद्योग था। लगभग प्रत्येक घर से कताई-बुनाई के लिए दो-तीन छेद वाले तकुए प्राप्त हुए हैं।

सिन्धु सभ्यता के पतन के कारण

- सिन्धु सभ्यता बहुत ही विस्तृत क्षेत्र में फैली नगरीय सभ्यता थी। सिन्धु सभ्यता के अलग-अलग क्षेत्रों की अलग-अलग भौगोलिक स्थिति थी। अतः भिन्न-भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों वाली इस सभ्यता का पतन किसी एक कारण से हुआ हो नितान्त असंभव है, अतः सिन्धु सभ्यता के अलग-अलग क्षेत्रों के पतन के अलग-अलग कारण रहे होंगे। विद्वानों ने सिंधु सभ्यता के पतन के लिए अलग-अलग कारणों को अलग-अलग क्षेत्रों के लिए बताया है।
- **बाढ़**—इस मत के समर्थक विद्वान मार्शल, मैके एवं एस.आर. राव हैं। मार्शल ने मोहनजोदड़ो, मैके ने चन्हूदड़ो के विनाश का कारण बाढ़ बताया है। एस. आर. राव ने लोथल नगर के पतन का कारण भोगवा नदी में आयी बाढ़ को बताया है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- सिन्धु सभ्यता आद्यैतिहासिक काल से सम्बन्धित है।
- चार्ल्स मैस्सन ने सर्वप्रथम 1826 में हड़प्पा के टीले की जानकारी दी।
- सिन्धु सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार है।
- सिन्धु सभ्यता का सबसे बड़ा पुरास्थल गनवेरीवाला है जो पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में हकरा नदी के तट पर स्थित है।
- सिन्धु सभ्यता के सर्वाधिक पुरास्थल सरस्वती घाटी में मिले हैं।
- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान में कुल 37 कब्रें प्राप्त हुई हैं। इसे R-37 के नाम से जाना जाता है।
- मोहनजोदड़ो से अभी तक कोई कब्रिस्तान नहीं मिला है।
- हड़प्पा से 18 वृत्ताकार चबूतरे प्राप्त हुए हैं जिनके मध्य में गड्ढे हैं। इन गड्ढों में जले हुए गेहूँ और जौ के प्रमाण मिले हैं।
- हड़प्पा से मजदूरों के रहने के लिए बैरक मिली है। जिसमें 15 कमरे हैं।
- लोथल में मकानों के दरवाजे मुख्य सड़क पर खुलते थे।
- धौलावीरा एक ऐसा नगर था जो अन्य नगरों से भिन्न योजना में बसाया गया था।
- कालीबंगा में सड़कों एवं गलियों की चौड़ाई के मध्य एक अनुपात मिलता है। गलियां 1.8 मी. चौड़ी थी तो सड़कें इसके गुणक में। कालीबंगा से पूर्व सैंधव संस्कृति के प्रमाण मिले हैं।
- सिन्धु सभ्यता का समय 2500-1750 ई. पू. था।
- धौलावीरा से उन्नत जल प्रबन्धन का प्रमाण मिला है।
- सैंधव धर्म में सर्वाधिक पूजा मातृ देवी की होती थी। मूर्ति पूजा का सर्वप्रथम प्रमाण हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त होता है।
- सैंधववासी पुरुष देवता के रूप में पशुपति शिव की पूजा करते रहे होंगे। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा में सींगयुक्त त्रिमुखी पुरुष देवता का चित्रण है जिसे आदि शिव की संज्ञा दी गई है।
- सैंधववासी काल्पनिक एवं वास्तविक पशुओं की पूजा करते थे इनका पूजनीय पशु कूबड़वाला बैल था।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त काँसे से निर्मित नर्तकी की मूर्ति आद्य आस्ट्रेलायड मानी जाती है।

Pariksha Manthan

- कालीबंगा से प्राप्त बच्चे की एक खोपड़ी में छह छेद के निशान मिलते हैं। पुराविदों ने इसे शल्य चिकित्सा का प्रमाण माना है।
- सैंधव नारियाँ 16 प्रकार से केश विन्यास करती थीं। जबकि पुरुष वर्ग दाढ़ी मुड़ाता था। वर्गाकार दाढ़ी रखने का साक्ष्य मोहनजोदड़ों से प्राप्त हुआ है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा में एक मानव ढोल जैसी आकृति बजा रहा है।
- मेसोपोटामियाई अभिलेखों में 'दिल्मुन' 'मगन' एवं 'मेलुहह' नामक तीन देशों का उल्लेख है जहाँ से मेसोपोटामियाई व्यापारी विभिन्न वस्तुओं का आयात करते थे।
- दिल्मुन व्यापार में बिचौलिये की भूमिका अदा करता था।
- हड़प्पा, आम्री, कोटिदीजि, कालीबंगा एवं बनावली से सिन्धु सभ्यता के नीचे पूर्व सैंधव संस्कृतियों के प्रमाण मिले हैं।
- सैंधववासी विश्व में कपास के प्रथम उत्पादक थे इसीलिए यूनानियों ने कपास का नाम सिन्डोन रखा अर्थात् सैंधववासियों की उपज।
- कालीबंगा से मृणपट्टिका पर उत्कीर्ण सींगयुक्त देवता की आकृति प्राप्त हुई है।

वैदिक काल 1500 ई. पू. - 600 ई. पू.

- हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद जिस सभ्यता एवं संस्कृति का विकास हुआ उसकी जानकारी वेदों से प्राप्त होती है। अतः इस काल को वैदिक काल की संज्ञा दी गई।
- वैदिक काल को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम पूर्व वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल, द्वितीय उत्तरवैदिक काल।

वैदिक साहित्य

- ब्राह्मण साहित्य में वैदिक साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद आते हैं।

वेद

- वैदिक साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण स्थान वेदों का है। वेद संस्कृत भाषा के विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना या ज्ञान प्राप्त करना।
- वेदों को संकलित करने का श्रेय कृष्ण द्वैपायन को है। इसीलिए इन्हें वेदव्यास के नाम से भी जाना जाता है।
- प्रथम तीन वेद को वेदत्रयी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद आते हैं।
- वेदों की संख्या चार हैं—

1. ऋग्वेद-

- यह सबसे प्राचीन एवं सबसे विशाल वेद है।
- ऋचाओं से युक्त होने के कारण इसे ऋग्वेद कहा गया है।
- ऋग्वेद में कुल 10 मंडल हैं। जिनमें मंडल न. 2 से 7 सबसे प्राचीन है।
- मंडल न. 8 कण्व ऋषि एवं अंगीरस से सम्बंधित है।
- मंडल न. 9 सोमदेव से संम्बंधित है।
- मंडल न. 1 एवं 10 सबसे नवीन है।
- प्रत्येक मंडल अनेक सूक्तों में विभक्त हैं। ऋग्वेद में मूल रूप से 1017 सूक्त हैं। लेकिन बाद में इसमें 11 सूक्त परिशिष्ट रूप में जोड़े गये हैं। जिन्हें बालखिल्य सूक्त कहा जाता है। इस तरह ऋग्वेद में कुल सूक्तों की संख्या 1028 हो जाती हैं।
- ऋग्वेद में कुल मंत्रों की संख्या 10,580 है। इसमें 118 मंत्र दोहराये गये हैं। मूल मंत्रों की संख्या 10,462 है।

Pariksha Manthan

2. यजुर्वेद

- यजुः (यज्ञ) अर्थात् यज्ञ से सम्बन्धित होने के कारण इसे यजुर्वेद कहा गया।
- यजुर्वेद की दो शाखायें हैं—1. कृष्ण यजुर्वेद - यह गद्य एवं पद्य दोनों में रचा गया है 2. शुक्ल यजुर्वेद - यह केवल पद्य में है। इसे ही वाजसनेयी संहिता के नाम से जाना जाता है।

3. सामवेद

- साम अर्थात् गायन से सम्बन्धित होने के कारण इसका नाम सामवेद पड़ा।
- संगीत की सर्वप्रथम जानकारी सामवेद से मिलती है।
- इसमें कुल 1810 मंत्र हैं, जिसमें 261 मंत्र दोहराये गये हैं, मूल मंत्रों की संख्या 1549 हैं।

4. अथर्ववेद

- अथर्वा ऋषि के नाम पर इस वेद का नाम अथर्ववेद पड़ा।
- इसमें भूत-प्रेत, जादू-टोना, रोग निवारक, शत्रु दमन मेल-मिलाप, विवाह, आर्शीवाद सूचक मंत्र दिये गये हैं।
- अथर्ववेद में कुल 20 अध्याय हैं। इसमें 731 सूक्त एवं 5987 मंत्र हैं।

ब्राह्मण

- वेदों के बाद ब्राह्मण ग्रंथों की रचना की गई।
- ब्राह्मण ग्रंथों में यज्ञ से सम्बन्धित बातों का वर्णन है। एक तरह से ये वेदों के व्याख्या ग्रथ के रूप में भी हैं। इसीलिए प्रत्येक वेद के अपने-अपने ब्राह्मण ग्रंथ रचे गये।
- यजुर्वेद का महत्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण है जिसकी रचना याज्ञवाल्क्य ऋषि ने की है। 100 अध्याय होने के कारण इसका नाम शतपथ ब्राह्मण पड़ा। इसमें जल प्रलय की कथा, पुरुरवा-उर्वशी आख्यान तथा अश्विनों द्वारा च्यवन ऋषि को यौवन दान की कथा है।
- सामवेद का महत्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रंथ पंचविश ब्राह्मण है। जिसकी रचना ताण्ड्य ऋषि ने की है, इसीलिए इसे ताण्ड्य ब्राह्मण के नाम से भी जाना जाता है, इसी में व्रात्य स्त्रोम यज्ञ का वर्णन है। इस यज्ञ के द्वारा अनार्यों को आर्य समूह में सम्मिलित किया जाता था।
- सामवेद का दूसरा ब्राह्मण षट्विश ब्राह्मण है जिसकी रचना अद्भुत ऋषि ने की है। इसीलिए इसे अद्भुत ब्राह्मण के नाम से भी जाना जाता है। इसमें अकाल भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं से मुक्ति के बारे में बताया गया है।
- अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रंथ गोपथ ब्राह्मण है, जिसकी रचना गोपथ ऋषि ने की है। इसमें ओउम एवं गायत्री का महत्व बताया गया है। यह शतपथ ब्राह्मण से प्रभावित है।

आरण्यक

- ब्राह्मण ग्रंथों के बाद आरण्यकों की रचना की गई।
- आरण्यकों में आध्यात्मिक एवं दार्शनिक बातों का उल्लेख किया गया है।

उपनिषद

- वैदिक साहित्य का अंतिम भाग होने के कारण उपनिषदों को वेदान्त भी कहा जाता है।
- उपनिषदों में आध्यात्मिक एवं दार्शनिक बातों का चर्मोत्कर्ष है।
- उपनिषदों की संख्या 108 बताई जाती है, यद्यपि कुछ ही उपनिषद उपलब्ध हैं।
- कठोपनिषद में यम-नचिकेता संवाद मिलता है। इसका सम्बन्ध भी कृष्ण यजुर्वेद से है।
- वृहदारण्यक उपनिषद सबसे प्राचीन उपनिषद है। इसी में राजा जनक के दरबार में याज्ञवाल्क्य एवं गार्गी के बीच हुए शास्त्रार्थ का वर्णन है। इसका सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है।

Pariksha Manthan

- छान्दोग्य उपनिषद में देवकी पुत्र कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। इसका सम्बन्ध सामवेद से है।

वेद	ऋत्विज	कार्य (पुरोहित)
ऋग्वेद	होतृ	देव स्तुति करना
यजुर्वेद	अध्वुर्य	यज्ञ कराना
सामवेद	उद्गाता	ऋचाओं का गायन करने वाला
अथर्ववेद	ब्रह्म	निरीक्षणकर्ता (यज्ञों का)

वैदिकोत्तर साहित्य

- **वेदांग**–वेदों को जानने एवं समझने के लिए वेदांगों की रचना की गई। इनकी संख्या - 6 है।

1. शिक्षा-वैदिक शब्दों के शुद्ध उच्चारण हेतु शिक्षा की रचना की गई। वामज्य ऋषि द्वारा रचित गाएलम नामक ग्रंथ प्राचीनतम ग्रंथ है।
2. कल्प-विधि-विधानों का वर्णन है इनकी संख्या 3 है।
   1. श्रौत सूत्र-यज्ञ सम्बन्धी नियम
   2. गृह्य सूत्र-लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के विधि - विधान
   3. धर्म सूत्र - राजा -प्रजा के अधिकार एवं कर्त्तव्य
3. व्याकरण- भाषा को वैज्ञानिक रूप देने के लिए पाणिनी द्वारा रचित अष्टाध्यायी
4. निरुक्त- वैदिक शब्दों की उत्पत्ति एवं अर्थ - ऋषि कश्यप का निघंटु
5. छंद- वैदिक मंत्रों के लक्षण एवं विशेषतायें पिंगल का छंदशास्त्र
6. ज्योतिष- ब्रह्मण्ड एवं नक्षत्रों की जानकारी लगध मुनि का वेदांग ज्योतिष

स्मृतियां-

- ये हिन्दु धर्म की कानूनी ग्रंथ हैं। मनुस्मृति सबसे प्राचीन स्मृति है। अन्य स्मृतियों में याज्ञवाल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, वृहस्पति स्मृति, कात्यायन स्मृति एवं विष्णु स्मृति महत्वपूर्ण है।

उपवेद- इनकी संख्या 4 हैं

1. धनुर्वेद- युद्ध सम्बन्धी जानकारी है सम्बन्ध-ऋग्वेद से
2. शिल्पवेद- शिल्प व्यवसाय की जानकारी है। सम्बन्ध-यजुर्वेद से।
3. गन्धर्ववेद- संगीत आदि की जानकारी है। सम्बन्ध सामवेद से
4. आयुर्वेद- चिकित्सा सम्बन्धी जानकारी है सम्बन्ध-अथर्ववेद से

ऋग्वैदिक काल (1500ई. पू.-1000 ई. पू.)

ऋग्वैदिक आर्यों का भौगोलिक ज्ञान

- ऋग्वैदिक आर्यों के भौगोलिक ज्ञान की जानकारी ऋग्वेद में वर्णित पर्वत, मरुस्थल एवं नदियों के नामों से होती है।
- ऋग्वेद में हिमवंत अर्थात् हिमालय पर्वत एवं उसकी मूजवंत नामक चोटी का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में कुल 25 नदियों का उल्लेख मिलता है। यद्यपि सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में 33 नदियों का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद में सिन्धु नदी का उल्लेख सर्वाधिक बार मिलता है।
- सरस्वती नदी आर्यों की सबसे पवित्र नदी थी, इसे नदीतिमा कहा गया है।
- ऋग्वेद में वर्णित अंतिम नदी गोमती है।
- ऋग्वेद में यमुना नदी का तीन बार एवं गंगा नदी का एक बार उल्लेख मिलता है।

Pariksha Manthan

राजनीतिक जीवन

- ऋग्वैदिक आर्य अनेक कबीलों में विभक्त थे। कबीले को जन कहा जाता था।
- जन का मुखिया ही राजा कहलाता था। राजा का पद वंशानुगत होता था।
- राज्य का लोकप्रिय स्वरूप राजतंत्रात्मक था यद्यपि गणतंत्र की भी जानकारी मिलती है।
- राजा को जनस्य गोप्ता अर्थात् जन का रक्षक तथा पुराँभेत्ता अर्थात् दुर्गों का भेदन करने वाला कहा गया है।
- कबीले के सदस्य राजा को बलि नामक स्वैच्छिक कर (उपहार स्वरूप) देते थे।
- विदथ नामक परिषद सबसे प्राचीन परिषद थी। यह सैनिक, गैर सैनिक, धार्मिक कार्य का संपादन करती थी।

दाशराजयुद्ध

- यह युद्ध परुष्णी (रावी) नदी के तट पर लड़ा गया।
- यह युद्ध भरत जन के राजा सुदास एवं 10 अन्य राजाओं के संघ के बीच में लड़ा गया।
- दस राजाओं के संघ का नेतृत्व पुरु राजा संवरण ने किया।
- इस युद्ध में अनार्यों ने भी भाग लिया था। अनार्यों का नेता भेद था।

सामाजिक जीवन

- ऋग्वैदिक काल के प्रारम्भ में दो वर्ग थे। आर्य एवं अनार्य।
- ऋग्वैदिक काल के अंतिम चरण में वर्णव्यवस्था का जन्म हुआ।
- ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में सर्वप्रथम चारों वर्णों की उत्पत्ति बताई गई है।
- पुरुष सूक्त में एक विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, बाँह से राजन्य (क्षत्रिय) जाँघ से वैश्य तथा पैर से शूद्र की उत्पत्ति बताई गई है।
- इस काल में अस्पृश्यता (छुआछूत) की परंपरा नहीं थी। शूद्रों द्वारा दिया गया दान ब्राह्मणों को स्वीकार्य था।
- परिवार का स्वरूप पितृसत्तात्मक था। परिवार का मुखिया पिता या बड़ा भाई होता था।

विवाह एवं स्त्रियों की दशा

- सामान्यतः एक विवाह की प्रथा थी, यद्यपि बहुविवाह का भी उल्लेख मिलता है।
- इस काल में बाल विवाह की प्रथा नहीं थी। युवावस्था में कन्या का विवाह होता था।
- इस काल में दहेज प्रथा भी विद्यमान थी जिसे वहतु कहा जाता था।
- विधवा विवाह की सामान्य प्रथा नहीं थी लेकिन विशेष परिस्थिति में विधवा नियोग प्रथा अपना सकती थी।
- अन्तर्जातीय विवाह होते थे। ये दो प्रकार के थे, 1. **अनुलोम विवाह** - इसमें पुरुष उच्च वर्ण का एवं स्त्री निम्न वर्ण की होती थी। 2. **प्रतिलोम विवाह**-इसमें पुरुष निम्नवर्ण का एवं स्त्री उच्च वर्ण की होती थी।

स्त्रियों की दशा

- इस काल में स्त्रियों की दशा अच्छी थी।
- इस काल में बहुत सी महिलायें विद्वान हुई।

  लोपामुद्रा, घोषा, सिक्ता, निवावरी, रोमषा, अपाला, विश्ववारा आदि इस काल की विदुषी महिलायें थीं।

आर्थिक जीवन

- अर्थव्यवस्था का स्वरूप जनजातीय था। अर्थात् जीवन निर्वाह की अर्थव्यवस्था थी।

पशुपालन

- ऋग्वैदिक आर्यों का जीवन अस्थायी था, अतः इनका मुख्य व्यवसाय पशुपालन था।
- आर्यों का सबसे महत्वपूर्ण पशु गाय थी। गाय के नाम पर ही जीवन के गतिविधियों का नामकरण किया जाता था।

Pariksha Manthan

- आर्य हाथी से भी परिचित थे। लेकिन बाघ का उल्लेख नहीं मिलता।

कृषि

- ऋग्वेद आर्यों का जीवन अस्थायी था, अतः कृषि का अधिक विकास नहीं हुआ।
- लकड़ी के बने बड़े-2 हलों से खेतों की जुताई की जाती थी। हल को लाँगल कहा जाता था। 6, 8 एवं 12 बैलों द्वारा हल को खींचे जाने का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वैदिक आर्य केवल यव (जौ) से परिचित थे जिसे धान्य भी कहते थे।

व्यापार

- पणि नामक समुदाय व्यापार कार्य में निपुण थे। आर्य पणि से घृणा करते थे। पणि अपनी कंजूसी के लिए प्रसिद्ध थे।

धार्मिक जीवन

- ऋग्वैदिक देव मंडल में देवियों की तुलना में देवता महत्वपूर्ण हैं।
- ऋग्वैदिक आर्य बहुदेववादी थे लेकिन अंतिम चरण में एकेश्वरवाद की भावना दिखाई पड़ने लगती है।
- ऋग्वेद में कुल 33 देवी-देवताओं का उल्लेख है जिन्हें आकाशवासी, अंतरिक्षवासी एवं पृथ्वीवासी तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है।
- आर्यों का सर्वश्रेष्ठ देवता इन्द्र थे। इन्द्र को पुरंदर भी कहा गया है। ऋग्वेद में इन्द्र की स्तुति में 250 सूक्त रचे गये हैं।
- वरुण सर्वाधिक आचरण वाले देवता थे। इन्हें सृष्टिकर्ता कहा गया है।
- ऋग्वेद में सूर्य की स्तुति 5 रूपों में की गई है। ये रूप हैं - सूर्य, सवितृ, मित्र, पूषन, विष्णु।
- सवितृ (सविता) की स्तुति में ही प्रसिद्ध गायत्री मंत्र की रचना की गई है। गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल में है। इसके दृष्टा विश्वामित्र हैं।

उत्तर वैदिक काल (1000 - 600 ई.पू.)

- उत्तर वैदिक काल में आर्यों का पूरब की ओर विस्तार हुआ।
- अर्थर्ववेद में उल्लेख मिलता है कि अंग एवं मगध आर्य संस्कृति से बाहर थे।
- शतपथ ब्राह्मण में सदानीरा (गंडक) एवं रेवोत्तरा (नर्मदा) नदी का उल्लेख मिलता है।

राजनीतिक जीवन

- भरत एवं पुरु कबीले आपस में मिलकर कुरु राज्य का निर्माण किया। इसी प्रकार क्रिवि एवं तुर्वश मिलकर पांचाल राज्य का निर्माण किया।
- इस काल में राज्य का लोकप्रिय स्वरूप राजतंत्रात्मक था। यद्यपि गणतंत्र राज्यों का भी उल्लेख मिलता है।
- राजा का पद वंशानुगत होता था। लेकिन राजा का निर्वाचन भी किया जाता था।
- राजा की सहायता के लिए सभा एवं समिति नामक परिषदें होती थीं।
- अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।

सामाजिक जीवन

वर्ण व्यवस्था

- वर्ण व्यवस्था की वास्तविक स्थापना उत्तर वैदिक काल में हुई।
- इस काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र चारों वर्णों में अन्तर स्पष्ट करने के लिए भेदपरक वर्ण व्यवस्था स्थापित हुई।
- इस काल में वर्णव्यवस्था जटिल होने लगी थी। वैश्यों को 'अनस्य बलिकृत' अर्थात् कर देने वाला तथा शूद्रों को

Pariksha Manthan

'अनस्य प्रेष्य' कहा गया है अर्थात् दूसरों की सेवा करने वाला।

- अश्पृश्यता (छुआछूत) का उल्लेख नहीं मिलता। शूद्र यज्ञ भी कर सकता था।

स्त्रियों की दशा

- इस काल में भी बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। सोलह-सत्रह वर्ष की आयु में कन्या का विवाह किया जाता था।
- सगोत्र विवाह वर्जित था।
- इस काल में भी स्त्रियों को शिक्षा-दीक्षा का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। स्त्रियां गुरु आश्रम में जाकर शिक्षा ग्रहण करती थीं।
- मैत्रायणी संहिता में स्त्रियों को असत्य भाषी कहा गया है। इसी ग्रंथ में स्त्रियों को मनुष्य की तीन बुराइयों में से एक बताया गया है। ये बुराइयाँ है शराब, जुआ, एवं स्त्री।

आश्रम व्यवस्था

- जीवन में क्रमबद्धता लाने के लिए तथा लौकिक एवं पारलौकिक सुख की प्राप्ति तथा मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए हिन्दू व्यवस्थाकारों ने आश्रम व्यवस्था की स्थापना की। आश्रमों की संख्या चार है।
- चारों आश्रमों का एक साथ वर्णन सर्वप्रथम जाबालोपनिषद में मिलता है।

चार आश्रम

1. **ब्रह्मचर्य आश्रम (जन्म से 25 वर्ष तक)-** शैक्षणिक उपलब्धियां एवं बौद्धिक विकास हेतु।
2. **गृहस्थ आश्रम (25 वर्ष-50 वर्ष तक)-** सामाजिक विकास हेतु धर्म, अर्थ, काम की प्राप्ति हेतु।
3. **वानप्रस्थ आश्रम (50 वर्ष-75 वर्ष तक)-** आध्यात्मिक उत्कर्ष हेतु
4. **सन्यास आश्रम (75 वर्ष -100 वर्ष तक)-** मोक्ष प्राप्त करना

- चारों आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।

संस्कार

- मनुष्य के स्वरूप को सुसंस्कृत एवं परिष्कृत करने के लिए संस्कारों की व्यवस्था की गई।
- संस्कारों का लोकप्रिय उद्देश्य अशुभ शक्तियों का निवारण करना तथा भौतिक समृद्धि प्राप्त करना था।
- हिन्दू धर्म में सोलह संस्कार सर्वाधिक लोकप्रिय हैं।

सोलह संस्कार

1. **गर्भाधान-** माँ के गर्भ में जीव की स्थापना।
2. **पुंसवन** -पुत्र प्राप्त हेतु
3. **सीमान्तोन्नयन** -गर्भिणी स्त्री के सुख सांत्वना हेतु
4. **जातकर्म-** शिशु के जन्म के समय
5. **नामकरण** - शिशु का नामकरण करना।
6. **निष्क्रमण** -घर से पहली बार बाहर निकलने पर।
7. **अन्नप्राशन-**पहली बार अन्न ग्रहण करने पर।
8. **चूड़ाकरण** - मुंडन संस्कार (पहली बार सिर मुड़ाने पर)
9. **कर्णवेधन** - जब शिशु का कान छेदा जाता है।
10. **विद्यारम्भ-**जब शिशु को अक्षर ज्ञान कराया जाता है।
11. **उपनयन** -जब बालक या कन्या गुरु आश्रम में प्रवेश करते हैं।
12. **वेदारम्भ-**जब पहली बार वेद का अध्ययन करते हैं।
13. **केशान्त-**जब बालक पहली बार दाढ़ी एवं मूंछ बनवाता है।
14. **समावर्तन-** शिक्षा पूर्ण होने पर गुरु द्वारा संपन्न।
15. **विवाह** -गृहस्थ जीवन प्रारम्भ करने के लिए।
16. **अन्त्येष्टि** - मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार

कृषि

- उत्तरवैदिक काल में कृषि की महत्ता बढ़ गई। तैत्तिरीय उपनिषद में उल्लेख मिलता है कि अधिक अन्न पैदा करना

Pariksha Manthan

यही हमारा संकल्प होना चाहिए।

- शतपथ ब्राह्मण में व्यवस्थित ढंग से कृषि करने का उल्लेख मिलता है।
- काठक संहिता में उल्लेख मिलता है कि हल को खींचने के लिए 24 बैल लगाये जाते थे।

पशुपालन

- अथर्ववेद में गोवध करने वाले को मृत्युदंड का विधान किया गया है।

शिल्प-व्यवसाय

- ऋग्वैदिक व्यवसाय तो प्रचलित रहे लेकिन अनेक नये व्यवसाय भी प्रचलित हुए।
- श्याम अयस (लोहा) लोहित अयस (ताँबा) अयस् (कांसा) हिरण्य (सोना) रुप्य (चांदी) सीस (शीशा) त्रपु (रांगा) का उल्लेख मिलता है।

व्यापार

- इस काल में व्यापारियों को वणिक् कहा जाता था।
- व्यापारियों के अध्यक्ष को श्रेष्ठि कहा जाता था।
- इस काल में ब्याज पर धन देने का व्यवसाय भी प्रचलित था जिसे कुसीदी कहा जाता था।
- यजुर्वेद में सौ चम्पुओं वाली नाव का उल्लेख मिलता है।

धार्मिक जीवन

- उत्तर वैदिक काल में धार्मिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। एकेश्वरवाद की प्रवृत्ति मजबूत होने लगी।
- इस काल में पहले के कई महत्वपूर्ण देवताओं की महिमा घट गई, तथा नये देवता महत्वपूर्ण हो गये।
- प्रजापति इस काल के सर्वश्रेष्ठ देवता बन गये। इन्हें देवताओं का पिता कहा गया है।
- पूषन शूद्रों के देवता माने गये हैं।
- अग्नि की महत्ता बनी रही। इन्हें मनुष्यों एवं देवताओं के बीच मध्यस्थ के रूप में महत्व बना रहा।

वैदिक काल से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- ऋग्वेद के दो से सात तक के मंडल सबसे प्राचीन हैं। इन्हें वंश मंडल भी कहा जाता है।
- गायत्री मंत्र की रचना ऋग्वेद के तीसरे मंडल में हुई है। इसके दृष्टा विश्वामित्र हैं।
- दाशराज युद्ध परुषणी नदी के तट पर लड़ा गया था।
- ऋग्वेद में वर्णित अनु, द्रुह्य, तुर्वश, यदु एवं पुरु कबीलों को पंचजन कहा गया है।
- ऋग्वेद में नियमित सेना का उल्लेख नहीं मिलता। इस काल में सेना को पृत/पृतना कहा गया था।
- बोगजकुई अभिलेख में हित्ती एवं मितानी नामक दो कबीलों के बीच हुई संधि का उल्लेख है।
- वैदिक साहित्य में सप्त सैंधव प्रदेश को 'देवकृतयोनि' अर्थात् देवताओं द्वारा निर्मित क्षेत्र कहा गया है।
- बाल गंगाधर तिलक ने 'द आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन्स' नामक पुस्तक लिखी। इन्होंने आर्यों का मूल स्थान उत्तरी ध्रुव बताया।
- तैत्तिरीय उपनिषद में उल्लेख मिलता है कि सदा सत्य बोलो तथा सदा धर्म का पालन करो।
- ऋग्वैदिक काल में शिक्षा का स्वरूप मौखिक था।
- ऋग्वैदिक विधार्थियों की तुलना बरसाती मेढक से की गई है।
- ऋग्वैदिक काल में गाय के लिए युद्ध हो जाते थे, इसलिए युद्ध को गविष्ठि कहा जाता था।
- राज्याभिषेक ब्राह्मण क्षत्रीय एवं वैश्य मिलकर 17 प्रकार के जल से करते थे।
- स्त्री विद्यार्थियों की भी दो श्रेणी होती थी।

1. सद्योवधू - 16-17 वर्ष की उम्र तक गुरु आश्रम में रहकर

Pariksha Manthan

शिक्षा प्राप्त करने वाली कन्यायें।

2. ब्रह्मवादिनी-अधिक समय तक या जीवनपर्यंत गुरु के पास रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाली।

- शुल्व सूत्र में यज्ञवेदी के निर्माण की तकनीक मिलती है।
- ऋग्वेद में इन्द्र को युद्ध देवता समझा जाता था।
- 'गोत्र' शब्द की उत्पत्ति 'गोष्ठ' शब्द से हुई है। 'गोष्ठ' का अर्थ उस स्थान से है जहां सामूहिक रूप में गाय रहती थीं। गोत्र शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में हुआ है।

प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन

जैन धर्म

- जैन शब्द जिन् से बना हुआ है जिसका अर्थ है इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला।
- जैन धर्म के आदि प्रवर्तक ऋषभदेव थे। इनका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। अर्थात् जैन धर्म लगभग 1500 ई.पू. का है। इसकी प्राचीनता ऋग्वैदिककालीन है।
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थकर हुए, ऋषभ देव प्रथम तीर्थंकर थे।
- जैन धर्म में 23वें एवं 24वें तीर्थंकर ऐतिहासिक पुरुष माने जाते हैं।
- जैन धर्म के 23वें तीर्थकंर पार्श्वनाथ थे जिन्होंने निग्रंथ सम्प्रदाय की स्थापना की थी। इनके अनुयायी भी निग्रंथ (बँधनरहित) कहलाते थे।
- पार्श्वनाथ महावीर स्वामी से 250 वर्ष पहले हुए। महावीर स्वामी के माता-पिता भी निग्रन्थ सम्प्रदाय के अनुयायी थे।

महावीर स्वामी

- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी थे। ये जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर थे।
- महावीर स्वामी का जन्म 540 ई.पू. अथवा 599 ई.पू. में कुंड ग्राम (बिहार) में हुआ था। इनके बचपन का नाम वर्धमान था।
- इनके पिता का नाम सिद्धार्थ था जो कुंडग्राम के ज्ञात्रिक वंश के शासक थे।
- 30 वर्ष की आयु में महावीर स्वामी अपने बड़े भाई नंदिवर्धन से आज्ञा लेकर गृह त्याग किया।
- 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद बिहार में जम्भिय ग्राम के निकट ऋजुपालिका नदी के किनारे एक शाल वृक्ष के नीचे इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर स्वामी ने अपना पहला धर्मोपदेश राजगृह में बराकर नदी के तट पर विपुलचल पहाड़ी में दिया।
- महावीर स्वामी का प्रथम भिक्षु उनका दामाद जमालि बना।
- प्रथम भिक्षुणी चंदना बनीं जो चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री थीं।
- महावीर स्वामी के प्रधान शिष्यों को गणधर कहा जाता था। इनकी संख्या 11 थी।
- इन 11 गणधरों का उल्लेख आवश्यक निर्मुक्ति एवं आवश्यक चूर्णि नामक ग्रंथों में मिलता है।
- लिच्छिवि नरेश चेटक, चम्पा नरेश दधिवाहन एवं मगध सम्राट अजातशत्रु महावीर स्वामी के शिष्य बने।
- महावीर स्वामी ने प्राकृत भाषा में अपने धर्म का प्रचार किया।
- महावीर स्वामी की मृत्यु 72 वर्ष की उम्र में बिहार में पावा के शासक सास्तिपाल के महल में हुई।

निर्वाण प्राप्ति का सिद्धान्त

- जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव को अपने-अपने कर्मों के अनुसार विभिन्न योनियों में पुनर्जन्म लेना पड़ता है।

Pariksha Manthan

- कर्मफल से विमुक्ति ही निर्वाण (मोक्ष) है। जैन धर्म में मृत्यु के बाद निर्वाण की प्राप्ति होती है।

जैनधर्म के त्रिरत्न

1. **सम्यक् श्रृद्धा/दर्शन-** जैन तीर्थंकरों एवं उनके बताये गये मार्गों पर पूर्ण विश्वास करना ही सम्यक श्रद्धा या सम्यक दर्शन है।
2. **सम्यक् ज्ञान-** जीव एवं अजीव के वास्तविक स्वरूप को जानना अर्थात् जैन सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान है।
3. **सम्यक् आचरण/चरित्र-** अच्छे कर्मों को करना तथा बुरे कर्मों का त्याग ही सम्यक् आचरण है।

पंचव्रत

- महावीर स्वामी ने अपने अनुयायियों को पाँच शिक्षाओं के पालन पर बल दिया है।

1. **सत्य-** सत्य बोलना, प्रिय बोलना, धर्मवार्ता करना ही सत्य है।
2. **अहिंसा -** प्राणी मात्र पर दया करना, किसी भी जीव की हिंसा न करना।
3. **अपरिग्रह-** धन का संचय न करना।
4. **अस्तेय-** चोरी न करना।
5. **ब्रह्मचर्य-** संयमपूर्ण जीवन जीना।

- पंचव्रतों में पहले चार शिक्षायें पार्श्वनाथ द्वारा दी गई हैं। जबकि महावीर स्वामी ने केवल ब्रह्मचर्य को जोड़ दिया।
- भिक्षुओं को ये 5 शिक्षायें 'पंचमहाव्रत' के रूप में हैं अर्थात् कठोरता से इनका पालन करना होगा।
- श्रावकों (गृहस्थों) के लिए ये 5 शिक्षायें 'पंचअणुव्रत' के रूप में है अर्थात् आंशिक रूप से पालन करना है।
- जैन धर्म के अनुसार एक भिक्षु में भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी सहते हुए तपस्या करने की क्षमता या योग्यता होनी चाहिए। इसे ही 'परिषा' कहा गया है।
- जैन धर्म में श्रावकों को निर्देश दिया गया है कि यदि वे किसी महान संकट से छुटकारा पाने में असमर्थ हैं तो उन्हें भोजन-पानी का त्याग कर प्राणों का अंत कर देना चाहिए इसे ही जैन धर्म में 'संल्लेखना' कहा गया है।
- जैन धर्म इस रूप में अनिश्वरवादी है कि वह देवताओं को स्वीकार करता है लेकिन विश्व व्यवस्था में उसका कोई योगदान स्वीकार नहीं करता।
- जैन धर्म के अनुसार विश्व शाश्वत है। यह अनेक चक्रों में विभक्त है। प्रत्येक चक्र में दो अवधियाँ हैं 1. उत्सर्पिणी (विकास की अवधि) 2. अवसर्पिणी (..ह्रास... की अवधि)। इन चक्रों में 24 तीर्थंकर सहित 63 शलाकापुरुष (महान पुरुष) निवास करते हैं।
- जैन धर्म स्यादवाद के सिद्धांत को स्वीकार किया। स्यादवाद कहने वाले के कथन की एक ऐसी शैली है जिससे कथन का गुणात्मक अभिप्राय प्रकट होता है। असत्य भाषण एवं वैचारिक मतभेदों से बचने के लिए स्यादवाद को जैन धर्म में स्थान दिया गया है।
- इन द्रव्यों को अस्तिकाय (जो स्थान घेरता है) एवं अनस्तिकाय (जो स्थान नहीं घेरता) दो भागों में विभाजित किया गया है।
- अस्तिकाय के अन्तर्गत जीव एवं अजीव आते हैं। अजीव के अन्तर्गत धर्म, अधर्म, पुद्गल एवं आकाश में चार तत्व है।
- अनस्तिकाय के अन्तर्गत काल आता है।
- इस प्रकार जैन धर्म के अनुसार जगत का निर्माण कुल छह पदार्थों से माना जाता है।

जैन संघ में प्रथम फूट

- जैन संघ से अलग होने वाला प्रथम व्यक्ति महावीर स्वामी का दामाद जमालि था।
- महावीर स्वामी के ज्ञान प्राप्ति के 12वें वर्ष में जमालि क्रियमाणकृत अर्थात् 'कार्य प्रारम्भ करते ही कार्य पूरा' सिद्धान्त के कारण जैन संघ से अलग हो गया।

Pariksha Manthan

जैन संघ में विभाजन

- हेमचन्द्र द्वारा रचित परिशिष्टपर्वन नामक ग्रंथ से पता चलता है कि मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में मगध में 12 वर्षों का अकाल पड़ा। अकाल के समय भद्रबाहु के नेतृत्व में जैन भिक्षुओं का एक दल मैसूर में श्रवणबेलगोला क्षेत्र में चला गया, जबकि स्थूलभद्र के नेतृत्व वाला जैन साधुओं का दल यहीं रुका रहा।
- इस प्रकार जैन धर्म दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया।

1. **श्वेताम्बर सम्प्रदाय**- स्थूलभद्र के नेतृत्व में उनके अनुयायी श्वेत वस्त्र धारण करने के कारण श्वेताम्बर कहलाये।
2. **दिगम्बर सम्प्रदाय**-भद्रबाहु के नेतृत्व में उनके अनुयायी निर्वस्त्र रहने के कारण दिगम्बर कहलाये।

श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय में अन्तर

श्वेताम्बर

- इसके प्रवर्तक स्थूलभद्र थे।
- ये श्वेत वस्त्र धारण करते थे।
- इनके अनुसार महावीर स्वामी का विवाह हुआ था और उनके एक पुत्री भी थी।
- इनके अनुसार 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थे।
- इनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति के बाद भी भोजन आवश्यक है।

दिगम्बर

- इसके प्रवर्तक भद्रबाहु थे।
- ये निर्वस्त्र रहते थे।
- इनके अनुसार महावीर स्वामी अविवाहित थे।
- इनके अनुसार मल्लिनाथ पुरुष थे।
- इनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति के बाद भोजन आवश्यक नहीं है।

जैन संगीतियाँ

- किसी भी धर्म की बिखरी हुई परम्पराओं को एक जगह संकलित करने के उद्देश्य से संगीतियों (धर्माचार्यों का सम्मेलन) का आयोजन किया जाता है।
- प्रथम जैन संगीति का आयोजन चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में पाटलिपुत्र में हुआ। इसके अध्यक्ष स्थूलभद्र थे।

जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिन्ह

तीर्थंकर का नाम	प्रतीक चिन्ह
1. ऋषभदेव (आदिनाथ)	वृषभ (बैल)
2. अजितनाथ	गज (हाँथी)
3. संभवनाथ	अश्व (घोड़ा)
4. अभिनंदननाथ	कपि (बंदर)
5. सुमतिनाथ	क्रौंच (कौवा)
6. पद्मप्रभु	पद्म (कमल)
7. सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक
8. चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा
9. पुष्पदंत (सुविधिनाथ)	मकर (मगरमच्छ)
10. शीतलनाथ	श्रीवत्स (आशीर्वाद सूचक हाँथ)
11. श्रेयांसनाथ	गैंडा
12. वासुपूज्यनाथ	महिष (भैंसा)
13. विमलनाथ	वाराह
14. अनंतनाथ	श्येन (गरुड़)
15. धर्मनाथ	वज्र
16. शांतिनाथ	मृग
17. कुन्थुनाथ	अज
18. अरनाथ	मीन
19. मल्लिनाथ	कलश
20. मुनिसुव्रत	कूर्म
21. नेमिनाथ	नीला कमल
22. अरिष्टनेमि	शंख
23. पार्श्वनाथ	सर्पफण
24. महावीर	सिंह

Pariksha Manthan

जैन साहित्य

- जैन साहित्य किसी एक काल की रचना नहीं है। इसका संकलन भिन्न-भिन्न कालों में हुआ।
- जैन साहित्य में जैन आगम सर्वोपरि है। आगम का अर्थ है सिद्धांत।
- जैन आगम के अन्तर्गत 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 1 नंदिसूत्र 1 अनुयोगद्वार एवं 4 मूल सूत्र हैं।

अन्य प्रमुख ग्रंथ

- **आचारांगसूत्र**-इसमें जैन भिक्षुओं के आचरण सम्बन्धी नियम संकलित हैं।
- **भगवती सूत्र**- इसमें महावीर स्वामी के जीवन एवं क्रियाकलापों का वर्णन है।
- **नायाधम्मकथासूत्र**-इसमें महावीर स्वामी की शिक्षायें संकलित हैं।
- **अंतगणदसाओसुत्त**-इसमें प्रमुख भिक्षुओं के निर्वाण प्राप्ति का वर्णन है। उपरोक्त सभी ग्रंथ प्राकृत अर्धमागधी भाषा में लिखे गये हैं।

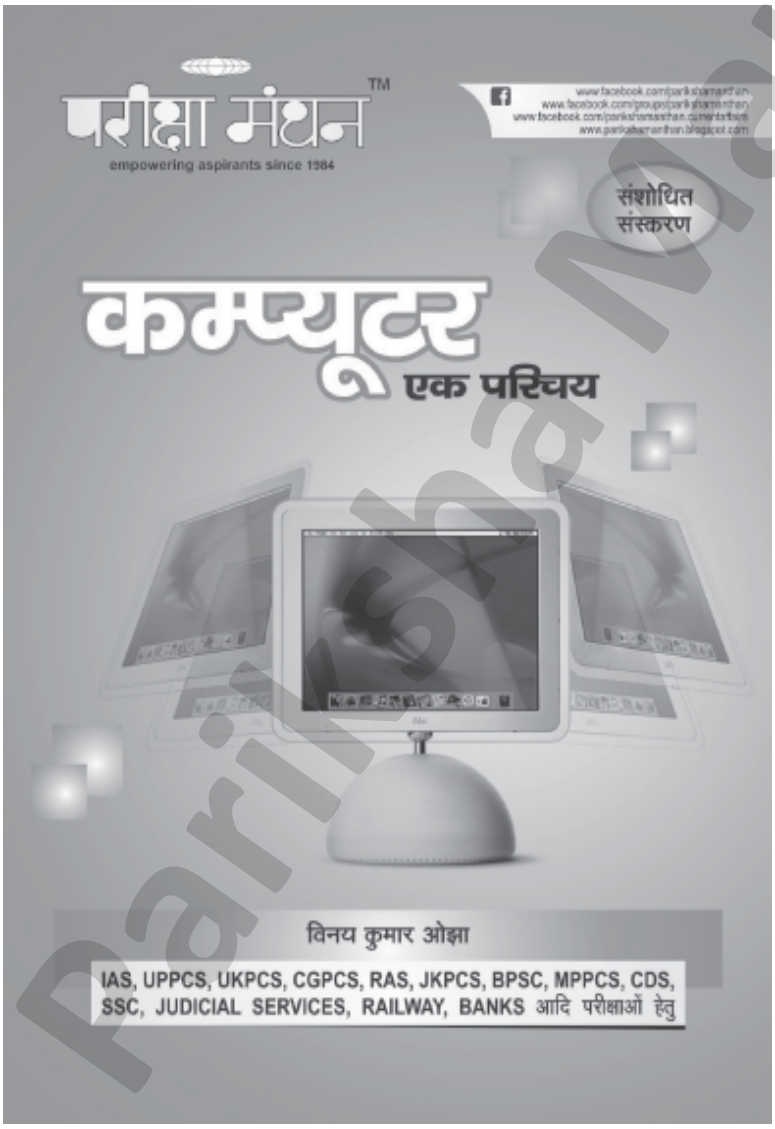

खरीदने के लिए लॉगऑन करें

www.manthanprakashan.in

बौद्ध धर्म

बुद्ध का जीवन परिचय

- महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. अथवा 567 ई.पू. में लुम्बिनी वन (नेपाल की तराई) में हुआ था।
- इनका वास्तविक नाम सिद्धार्थ था।
- इनके पिता का नाम शुद्धोधन था जो कपिलवस्तु के शाक्यगण के मुखिया (राजा) थे।
- इनकी माँ का नाम महामाया था जो कोलिय वंश की राजकुमारी थीं। बुद्ध के जन्म के कुछ समय बाद इनकी मृत्यु हो गई।
- बुद्ध का पालन-पोषण इनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया।
- 29 वर्ष की उम्र में महात्मा बुद्ध ने गृह-त्याग किया। इसे महाभिनिष्क्रमण के नाम से जाना जाता है।
- महात्मा बुद्ध उरुवेला के जंगल में तपस्या प्रारम्भ किया। कौंडिन्य सहित पाँच ब्राह्मण इनके पड़ोसी तपस्वी थे।
- उरुवेला में महात्मा बुद्ध शुजाता द्वारा लाई गई भोज्य सामग्री को ग्रहण कर लिया।
- ज्ञान प्राप्ति की घटना को सम्बोधि कहा गया है।
- प्रथम धर्मोपदेश की घटना को 'धर्मचक्र प्रवर्तन' के नाम से जाना जाता है।
- बुद्ध ने अपना प्रथमवर्षाकाल सारनाथ में व्यतीत किया।
- राजगृह में सारिपुत्र एवं मौद्गल्यायन नामक ब्राह्मणों को अपना शिष्य बनाया। ये दोनों सबसे चिंतनशील एवं प्रबुद्ध शिष्य थे।
- बुद्ध के चचेरे भाई देवदत्त भी इनका शिष्य बना। बुद्ध का यही शिष्य इनका सबसे बड़ा विरोधी था। इसने बुद्ध की तीन बार हत्या करने का असफल प्रयास किया।
- ज्ञान प्राप्ति के 5वें वर्ष में बुद्ध वैशाली गये यहीं पर बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनंद के कहने पर बौद्ध संघ में स्त्रियों को प्रवेश दिया। बुद्ध की मौसी महाप्रजापति गौतमी प्रथम भिक्षुणी बनीं।
- ज्ञान प्राप्ति के 20वें वर्ष में श्रावस्ती में अंगुलिमाल डाकू का हृदय परिवर्तन कराया।
- पावा से बुद्ध कुशीनारा पहुँचे और मल्लों के शालवन में रुके। यहाँ पर इन्होंने अपना अंतिम उपदेश सुभद्द को दिया।
- कुशीनारा में 80 वर्ष की उम्र में बुद्ध की मृत्यु हुई, इस घटना को महापरिनिर्वाण के नाम से जाना जाता है।

बौद्ध धर्म के सिद्धान्त

- बुद्ध के धर्म में चार आर्य सत्य का मूल योग था जिन्हें सत्य चतुष्टय कहा गया है। इन्होंने अपने धर्म के मूल में दुःख को रखा है।

चार आर्य सत्य

1. **दुःख**- बुद्ध के अनुसार संसार के सभी कष्टों का मूल दुःख है। जरा-मरण दुःख का सांकेतिक नाम है।
2. **दुःख समुदय**-इसके अन्तर्गत बुद्ध ने दुःख के कारणों को बताया है। दुःख के कारणों की व्याख्या के लिए 'प्रतीत्य समुत्पाद' नामक सिद्धान्त विकसित किया अर्थात् 'यह होने से-यह होगा'। जन्म होने से मृत्यु होगी अर्थात् मृत्यु का कारण जन्म है। इसी के अर्न्तगत द्वादश निदान की व्याख्या की गई है।
3. **दुःख निरोध**-(दुःखों का अंत) लोभ, मोह, तृष्णा, आसक्ति आदि का अंत ही दुख निरोध है। दुःख निरोध से निर्वाण की प्राप्ति होती है।
4. **दुःखनिरोध गामिनी प्रतिपदा**-इसके अंतर्गत बुद्ध ने दुःखों को दूर करने के लिए 8 मार्ग बताये हैं जिन्हें अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है।

अष्टांगिक मार्ग

1. **सम्यक दृष्टि**-नीर-क्षीर विवेकी दृष्टि ही सम्यक् दृष्टि है।

Pariksha Manthan

सत्य-असत्य, पाप-पुण्य आचरण-दुराचरण में अंतर करना ही सम्यक दृष्टि है।

2. **सम्यक् संकल्प**-दृढ़तापूर्वक सांसारिक बंधनों का त्याग कर निवृत्तिमार्ग का अनुसरण करना ही सम्यक् संकल्प है।

3. **सम्यक् वाणी**-सत्य एवं प्रिय बोलना ही सम्यक् वाणी है।

4. **सम्यक् कर्मांत**-अच्छे कर्म करना ही सम्यक् कर्मांत है।

5. **सम्यक् आजीव**-जीवन यापन शुद्ध एवं न्यायपूर्ण प्रणाली ही सम्यक् आजीव है।

6. **सम्यक् व्यायाम**-दूसरों की भलाई करने का प्रयत्न करना ही सम्यक् व्यायाम है।

7. **सम्यक् स्मृति**- इसमें विवेक एवं स्मरण का पालन किया जाता है।

8. **सम्यक् समाधि**-चित्त की एकाग्रता ही सम्यक् समाधि है।

- अष्टांगिक मार्गों को तीन स्कंध में विभक्त किया गया है।

1. **प्रज्ञा**-इसके अन्तर्गत सम्यक् दृष्टि एवं सम्यक् संकल्प हैं।

2. **शील**-इसके अन्तर्गत सम्यक् वाणी सम्यक् कर्मांत सम्यक् आजीव एवं सम्यक् व्यायाम आते हैं।

3. **समाधि**-इसके अन्तर्गत सम्यक् स्मृति एवं सम्यक् समाधि आते हैं।

- बौद्ध धर्म कारणवाद, क्षणिकवाद, अनिश्वरवाद, कर्म एवं पुनर्जन्म पर विश्वास करता है।
- बौद्ध धर्म अनात्मवादी है अर्थात् आत्मा में विश्वास नहीं करता।

बौद्ध संगीतियाँ

प्रथम बौद्ध संगीति	द्वितीय बौद्ध संगीति	तृतीय बौद्ध संगीति	चतुर्थ बौद्ध संगीति
स्थल - राजगृह अध्यक्ष महाकश्यप शासक-अजातशत्रु कार्य- विनयपिटक एवं एवं सुत्तपिटक का संकलन	वैशाली सर्वकामी (सुबुकामी) कालाशोक (काकवर्ण) बौद्ध संघ में फूट बौद्ध भिक्षु दो वर्गों में विभक्ति हो गए 1. स्थिविर वादी 2. महासांघिक	पाटलिपुत्र मोग्गलिपुत्र तिष्य अशोक अभिधम्म पिटक का संकलन	कुंडलवन (कश्मीर) वसुमित्र कनिष्क बौद्ध धर्म में विभाजन 1. हीनयान 2. महायान

हीनयान एवं महायान में अंतर

हीनयान	महायान
✸ यह बौद्ध धर्म का प्राचीन रूप है	-यह नवीन रूप है
✸ यह कठोर मार्ग है इसके द्वारा कम लोग निर्वाण की प्राप्ति कर सकते हैं	-यह सरल मार्ग है। इसके द्वारा अधिक लोग निर्वाण की प्राप्ति कर सकते हैं।
✸ यह बुद्ध को अलौकिक गुण वाला सामान्य पुरुष मानते हैं	-यह बुद्ध को भगवान मानते हैं।

Pariksha Manthan

हीनयान	महायान
* यह बुद्ध के प्रतीकों की पूजा करते हैं।	-यह बुद्ध की मूर्ति की पूजा करते हैं।
* इनके ग्रंथ पाली भाषा में रचे गये हैं।	इसके ग्रंथ संस्कृत भाषा में रचे गये हैं।
* ये कर्म एवं धर्म में विश्वास करते हैं।	-यह परोपकार में विश्वास करते हैं। इसमें बोधिसत्व का आदर्श ग्रहण किया है जो दूसरों का कल्याण करते हैं।
* इसका प्रचार प्रसार लंका, बर्मा थाईलैंड, कम्बोडिया आदि देशों में हुआ।	-इसका प्रचार-प्रसार चीन, तिब्बत, जापान, कोरिया आदि देशों में हुआ।

हीनयान के उप सम्प्रदाय

1. **वैभाषिक मत**-महाविभाषा नामक ग्रंथ में श्रृद्धा रखने के कारण वैभाषिक कहलाये। इस मत के प्रवर्तक वसुमित्र थे। वसुमित्र लिखित अभिधर्मकोष इसका महत्वपूर्ण ग्रंथ है।
2. **सौत्रांतिक मत**- सुत्त पिटक में श्रद्धा रखने के कारण सौत्रांतिक कहलाये। इस मत के प्रवर्तक कुमार लाट थे।

महायान के उप सम्प्रदाय

1. **योगाचार (विज्ञानवाद)**- इस मन के आदि प्रचारक मैत्रेयनाथ थे।
2. **शून्यवाद - (माध्यमिक दर्शन)**- इस मत के प्रवर्तक नागार्जुन थे।
3. **बौद्धन्याय (न्यायशास्त्र दर्शन)**- इस मत के प्रवर्तक दिङ्गनाग थे।
4. **वज्रयान**-यह बौद्ध धर्म का तांत्रिक स्वरूप है। इस मत के प्रवर्तक असंग माने जाते हैं। इसमें तारा नामक देवियों की पूजा की जाती है।
5. **कालचक्रयान**-मंजुश्री को इसका प्रवर्तक माना जाता है।

बौद्ध साहित्य

* **त्रिपिटक**-ये मूल रूप में पाली भाषा में रचे गये हैं। इनकी संख्या तीन है।

1. **विनय पिटक**-इसमें भिक्षु एवं भिक्षुणियों के आचरण सम्बन्धी नियम हैं।
2. **सुत्त पिटक**-इसमें बौद्ध धर्म के उपदेश संकलित हैं।
3. **अभिधम्म पिटक**- इसमें बौद्ध धर्म की दार्शनिक व्याख्यायें दी गई हैं। इसका सबसे महत्वपूर्ण भाग कथावस्तु है जिसकी रचना मोग्गलिपुत्र तिष्य ने की है।

* **जातक कथायें**-ये मूल रूप में पालीभाषा में रचे गये हैं। इनकी संख्या 549 हैं। इनमें बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथायें हैं।
* **अट्ठ कथायें**-अट्ठ कथायें त्रिपिटकों के भाष्य के रूप में लिखे गये हैं।
* **मिलिन्दपन्हो**- यह ग्रंथ पाली भाषा में रचा गया है। इसमें यूनानी राजा मिनेंडर एवं बौद्ध आचार्य नागसेन के बीच वार्तालाप है।
* **विशुद्धिमग्ग**-इसकी रचना बुद्ध घोष ने पाली भाषा में की है। इसे त्रिपिटक की कुंजी कहा जाता है। यह हीनयानियों का ग्रंथ है।
* **बुद्ध चरित**- इसकी रचना संस्कृत भाषा में हुई है। अश्वघोष द्वारा रचित यह एक महाकाव्य है। इसमें बुद्ध का जीवनवृत्त एवं उनकी शिक्षाओं का वर्णन है। इसे बौद्धों की रामायण कहा जाता है।
* **धम्म पद**-पाली भाषा में रचा गया है। इसे बौद्धों की गीता कहा जाता है।

Pariksha Manthan

बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के कारण

1. राजाश्रय का प्राप्त होना।
2. चारों वर्णों का सहयोग एवं आम जनता द्वारा स्वीकार किया जाना।
3. महात्मा बुद्ध का चतुर्मुखी व्यक्तित्व
4. जन-भाषा (पाली) में धर्म का प्रचार-प्रसार
5. संघ द्वारा प्रचार-प्रसार।
6. बौद्ध धर्म का प्रारम्भिक क्षेत्र मगध आर्य संस्कृति से अप्रभावित होना।
7. बौद्ध धर्म का सरल होना।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

1. ब्राह्मण धर्म का परिवर्तित रूप।
2. बौद्ध धर्म में व्याप्त बुराइयाँ
3. संघ द्वारा प्रचार-प्रसार की समाप्ति
4. बौद्ध धर्म में फूट
5. संस्कृत भाषा का प्रयोग
6. बौद्ध धर्म संघ में व्याप्त भ्रष्टाचार
7. बौद्ध भिक्षुओं का बौद्धिक रूप से निर्बल होना
8. राजाओं का आश्रय न मिलना।
9. तुर्कों का आक्रमण

बुद्ध से सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटनायें व प्रतीक

- माता के गर्भ में आना - हांथी
- बुद्ध का जन्म - कमल
- गृह त्याग - घोड़ा
- ज्ञान प्राप्ति - बोधिवृक्ष
- प्रथम उपदेश - धर्मचक्र
- महापरिनिर्वाण (मृत्यु) - स्तूप

भागवत (वैष्णव) धर्म

- भगवान विष्णु को ईष्ट देव मानने वाले लोग वैष्णव कहलाते हैं और इनका धर्म वैष्णव धर्म कहलाता है।
- वैष्णव धर्म का प्राचीन रूप भागवत धर्म है।
- भागवत धर्म के अन्तर्गत वासुदेव (कृष्ण) की पूजा की जाती है।
- कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख छांदोग्य उपनिषद में मिलता है। कृष्ण को वृष्णि वंश में उत्पन्न बताया गया है।
- गुप्त काल में वैष्णव धर्म का सर्वाधिक उत्कर्ष हुआ। इस काल के साहित्य एवं स्थापत्य दोनों में भागवत धर्म की जानकारी मिलती है।
- सभी गुप्त सम्राट भागवत धर्म के अनुयायी थे और परम भागवत की उपाधि धारण करते थे।
- उत्तर भारत की भाँति दक्षिण भारत में भी वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ।
- दक्षिण भारत में वैष्णव संत आलवार के नाम से जाने जाते थे।
- आलवार संतों के गीतों का संकलन नायलार प्रबंधम् अथवा तमिल प्रबंधम् में किया गया है।

विष्णु के 10 अवतार

बाराह पुराण में सर्वप्रथम विष्णु के दसावतारों का उल्लेख मिलता है। 1. मत्स्यावतार 2. कूर्मावतार 3. वाराहावतार 4. नृसिंहावतार 5. वामनावतार 6. परशुराम 7. राम 8. कृष्ण 9. बुद्ध 10. कल्कि - भावी अवतार

शैव धर्म

- भगवान शिव को ईष्ट देव मानने वाले शैव कहलाये और इनका धर्म शैव धर्म है।
- शिव की प्राचीनता प्रागैतिहासिक है। हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत शिव की पूजा उपासना के प्रमाण मिलते हैं।
- ऋग्वेद में शिव का उल्लेख रुद्र के रूप में मिलता है।

Pariksha Manthan

- कालिदास ने 'कुमार संभव' नामक महाकाव्य में शिव महिमा का वर्णन किया है।
- दक्षिण भारत में भी शैव धर्म का विकास हुआ। संगम साहित्य में शिव का वर्णन मिलता है।
- दक्षिण भारत में शैव संतों 'नयनार' के नाम से जाना जाता है।
- शैव ग्रंथ पेरियपुराणम् 63 नयनार संतों का उल्लेख है।
- शैव धर्म में पाशुपत मत के प्रवर्तक लकुलीश थे।

धर्म से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- अष्टांगिक मार्ग का मूल श्रोत तैत्तिरीय उपनिषद है।
- मेगस्थनीज ने हेरीक्लीज (कृष्ण) एवं डायोनिसस (शिव) की पूजा का उल्लेख किया है।
- कापालिक सम्प्रदाय के ईष्टदेव भैरव हैं जिन्हें शिव का अवतार माना जाता है।
- वीरशैव सम्प्रदाय के प्रवर्तक बसव नामक एक ब्राह्मण था जो कलचुरि वंश के शासक विजय के मंत्री थे।
- कश्मीरी शैव सम्प्रदाय के प्रवर्तक वसुगुप्त थे।
- बौद्ध संघ में प्रवेश के लिए प्रवृज्या संस्कार होता था।
- बुद्ध, धम्म एवं संघ ये बौद्ध धर्म में त्रिरत्न के समान हैं।
- जैन धर्म के दिगम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्धित यापनीय सम्प्रदाय था।
- प्रथम शताब्दी ई.पू. में कलिंग के चेदि वंश के शासक खारवेल ने जैन धर्म को संरक्षण दिया था।
- सर एडविन एर्नाल्ड की पुस्तक 'द लाइट ऑफ द एशिया' ललित विस्तार पर आधारित है।
- बुद्ध का ज्ञान प्राप्ति स्थल बोध गया 'निरंजना' नदी के तट पर स्थित है।

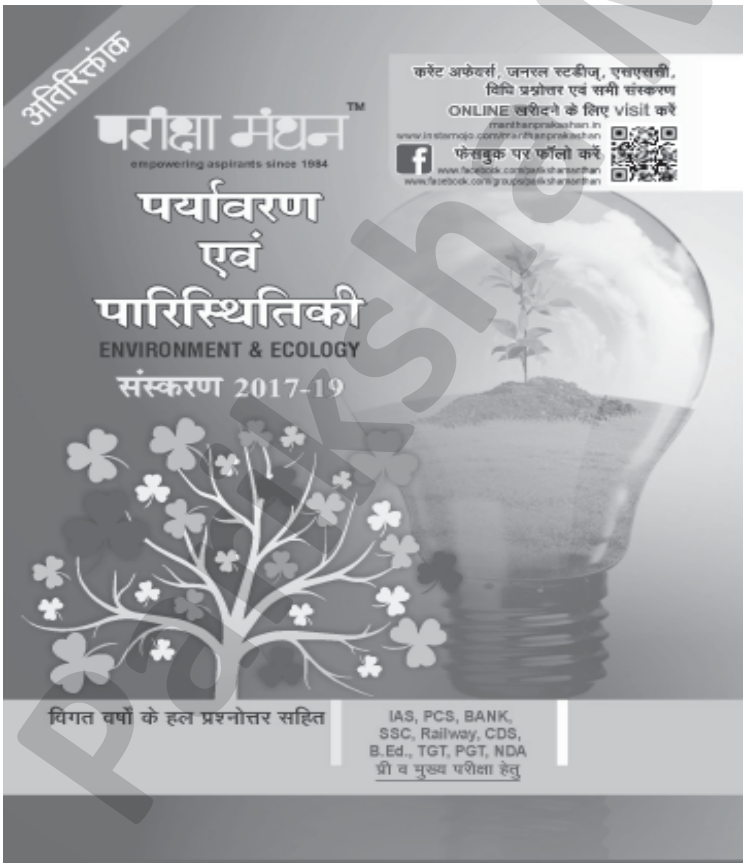

खरीदने के लिए लॉगऑन करें

www.manthanprakashan.in

- महात्मा बुद्ध को 'एशिया के ज्योति पुंज' के रूप में जाना जाता है।
- विश्व का सबसे ऊँचा कहा जाने वाला विश्व शांति स्तूप बिहार में 'राजगीर' की पहाड़ियों पर स्थित है। यह लगभग 400 मीटर ऊंचाई पर स्थित है।
- चीनी मान्यता के अनुसार नागार्जुन ने प्रथम शताब्दी ई. में चीन की यात्रा की और यहां लोगों को बौद्ध शिक्षा प्रदान की।
- भागवत धर्म के अन्तर्गत भक्ति के रूपों की संख्या 9 बताई गई है।
- भागवद्गीता मोक्ष के साधन के रूप में जन्म, कर्म तथा भक्ति को समान महत्व देता है।
- वासुदेव कृष्ण की पूजा सर्वप्रथम भागवतों ने प्रारम्भ किया।

महाजनपद काल

- बुद्धकालीन भारत की पहली विशेषता जो राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी वह है विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति अर्थात् इस समय भारत छोटी-छोटी अनेक राजनीतिक इकाईयों में विभक्त था।
- ये राज्य आपस में संघर्ष करते रहते थे इसीलिए इस काल को 'संघर्षरत जनपदों' का युग कहा जाता है।
- विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति के बावजूद इस काल में केन्द्रीयकरण के प्रयास प्रारम्भ हो गये थे।
- इस काल में राजतंत्र के साथ-साथ अनेक गणराज्यों का भी उदय हुआ।
- इस काल के सोलह महाजनपदों में द. भारत के केवल एक अश्मक जनपद का ही उल्लेख मिलता है। यह तथ्य दर्शाता है की उत्तर भारत के दक्षिण भारत के साथ घनिष्ठ सम्पर्क नहीं था।
- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है, जो सर्वाधिक प्रामाणिक सूची मानी जाती है।

बुद्धकालीन भारत के सोलह महाजनपद

महाजनपद	राजधानी	राजा	वर्तमान स्थिति
1. अंग	चम्पा	ब्रह्मगुप्त	पूर्वी बिहार एवं प. बंगाल
2. मगध	राजगृह	बिम्बिसार एवं अजातशत्रु	बिहार
3. काशी	वाराणसी	कोशल के अधीन	उ.प्र. में वाराणसी के आसपास
4. कोशल	श्रावस्ती	प्रसेनजित	उ.प्र. फैजाबाद श्रावस्ती आदि जिले
5. वज्जि संघ	वैशाली	8 गणराज्यों का संघ	उ.प्र. बिहार पूर्वी उ.प्र.
6. मल्ल संघ	कुशीनारा एवं पावा	—	पूर्वी उ.प्र.
7. चेदि	शक्तिमती (सोत्थवती)	—	बुन्देलखंड
8. वत्स	कौशाम्बी	उदयन	इलाहाबाद के आसपास
9. कुरु	इन्द्रप्रस्थ	—	दिल्ली, मेरठ एवं हरियाणा
10. पांचाल	अहिक्षत एवं काम्पिल्य	—	रुहेलखंड
11. मत्स्य	विराटनगर	—	राजस्थान
12. शूरसेन	मथुरा	—	प.उ.प्र.
13. अश्मक	पोतन/ पोटली	—	महाराष्ट्र/आँध्रप्रदेश
14. अवंति	उज्जयिनी एवं महिष्मती	चंड प्रद्योत	मध्य प्रदेश
15. गांधार	तक्षशिला	पुष्कर सरीन	पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान
16. काम्बोज	हाटक/ राजपुर	—	उ अफगानिस्तान

Pariksha Manthan

मगध का उत्कर्ष

हर्यक वंश - 544 ई.पू. - 412 ई.पू.

बिम्बिसार (544-492 ई.पू.)

- यह इस वंश का प्रथम शासक था। इसकी प्रारम्भिक राजधानी गिरिब्रज थी। बाद में इसने राजगृह को अपनी राजधानी बनाई।
- बिम्बिसार अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए वैवाहिक एवं मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों पर बल दिया।
- मद्र देश की राजकुमारी क्षेमा/खेमा से भी विवाह किया बिम्बिसार की यही पत्नी (क्षेमा/खेमा) बौद्ध भिक्षुणी बन गई थी।
- बिम्बिसार का अवंति के शासक चंड प्रद्योत के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे।
- एक बार चंड प्रद्योत पांडुरोग से ग्रस्त हो गया तब बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को इसके इलाज हेतु उज्जयिनी भेजा था। जो इसके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध को दर्शाता है।
- बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- बिम्बिसार ने अंग पर आक्रमण कर यहां के शासक ब्रह्मगुप्त को पराजित कर उसका वध कर दिया और अंग को मगध में मिला लिया। यह मगध की प्रथम विजय थी।

अजातशत्रु (492 ई.पू.-461ई.पू.)

- अजातशत्रु अपने पिता बिम्बिसार की हत्या करके गद्दी प्राप्त की थी।
- मगध का शासक बनने से पहले यह अंग का गवर्नर था।
- अजातशत्रु का प्रथम युद्ध कोशल नरेश प्रसेनजित से हुआ जिसमें दोनों ने एक-एक युद्ध में विजय प्राप्त की। अंततः दोनों में संधि हो गई। संधि के अनुसार प्रसेनजित ने अपनी पुत्री वज्जिरा का विवाह अजातशत्रु के साथ कर दिया एवं काशी ग्राम की आय दहेज रूप में पुनः दे दिया।
- अजातशत्रु का दूसरा युद्ध वैशाली के शासक चेटक के साथ हुआ इस युद्ध में अजातशत्रु ने रथमूसल एवं महाशिलाकंटक नामक दो गुप्त युद्धास्त्रों का प्रयोग किया। अंततः चेटक पराजित हुआ और वैशाली को मगध में मिला लिया गया।
- प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन इसके शासनकाल में राजगृह में हुआ था।
- इसी के समय में महावीर स्वामी एवं महात्मा बुद्ध दोनों की मृत्यु हुई।
- इसने बुद्ध के भष्मावशेष पर राजगृह में स्तूप का निर्माण कराया।

उदायिन (461ई.पू. - 445 ई.पू.)

- इसने राजगृह के स्थान पर पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाई।

शिशुनाग वंश (412 ई. पू. - 344 ई. पू.)

शिशुनाग (412 ई.पू.-394 ई.पू.)

- इसने पाटलिपुत्र के स्थान पर वैशाली को अपनी राजधानी बनाई।

कालाशोक (काकवर्ण) (394-366 ई. पू.)

- इसने वैशाली के स्थान पर पुनः पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाई।

नंद वंश (344 ई.पू.-322ई. पू.)

महापद्मनंद (344 ई.पू. - 326 ई. पू.)

- नंद वंश का संस्थापक एवं प्रथम राजा महापद्मनंद था।
- पुराणों में उल्लेख मिलता है कि नंद वंश के शासक शूद्र थे।
- महापद्मनन्द इस वंश का सबसे महान शासक था। इसने अनेक क्षत्रिय राज्यों को जीतकर अपने राज्य में सम्मिलित किया।

Pariksha Manthan

- कलिंग नरेश खारवेल के हाँथी गुँफाअभिलेख से पता चलता है कि महापद्मनंद ने कलिंग विजय की और यहां से एक जिन मूर्ति अपने साथ मगध ले आया।
- इसने कलिंग में सिंचाई हेतु एक नहर का निर्माण कराया।

घनानंद (326 ई.पू. - 322 ई.पू.)

- इसके समय में 326 ई.पू. में मकदूनिया का यूनानी शासक सिकन्दर ने पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण करके यहाँ यूननी सत्ता की नींव रखी।
- 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त एवं कौटिल्य ने मगध पर आक्रमण किया। जिसमें घनानंद पराजित हुआ इस प्रकार नंद वंश का अंत हो गया और मौर्य वंश की स्थापाना हुई।

महत्वपूर्ण तथ्य

- मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- बिम्बिसार के राजवैद्य जीवक की मां का नाम शालवती था, जो एक नर्तकी (वेश्या) थी।
- वत्स नरेश उदयन बहुत अच्छा वीणावादक था। इसे हांथी पकड़ने का भी ज्ञान था।
- महापद्मनंद ने कलिंग में एक नहर का निर्माण कराया था।

मौर्य साम्राज्य

स्त्रोत

1. साहित्यिक श्रोत

- **अर्थशास्त्र**-इसकी रचना कौटिल्य ने संस्कृत भाषा में किया है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण, 180 प्रकरण एवं 4000 श्लोक हैं।
- **इण्डिका**-यह मेगस्थनीज द्वारा यूनानी भाषा में लिखी गई है।
- यूनानी लेखकों स्ट्राबो, एरियन, प्लूटार्क तथा प्लिनी ने इण्डिका के महत्वपूर्ण अंशों के आधार पर ग्रंथ लिखे।
- इण्डिका के इन महत्वपूर्ण अंशों को हर जगह से एकत्रित कर शावनबेक ने नयी इण्डिका का संकलन किया था।

2. अभिलेखीय स्रोत

- अशोक के अभिलेख तथा रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख

चन्द्रगुप्त मौर्य- (322-298 ई. पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य मौर्य वंश का प्रथम शासक तथा संस्थापक था।
- चन्द्रगुप्त के पिता मोरिय वंश के क्षत्रियों का सरदार था।
- मुद्राराक्षस, कथासरितसागर जैसे ब्राह्मण ग्रंथ मौर्यों को शूद्र मानते हैं।
- पुराण नन्दों को शूद्र मानते हैं तथा चन्द्रगुप्त को नंद की पत्नी मुरा से उत्पन्न मानते हैं।
- यूनानी लेखक जस्टिन ने चन्द्रगुप्त को निम्न कुल से उत्पन्न बताया है। स्पूनर ने इसे पारसी माना है।
- रोमिला थापर ने मौर्यों को वैश्य बताया है।

चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्यारोहण

- चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यारोहण की तिथि 322 ई.पू. मानी जाती है।
- 28 फरवरी 1793 में सर विलियम जोन्स ने सर्वप्रथम उपरोक्त नामों का समीकरण चन्द्रगुप्त मौर्य से किया था।
- **साम्राज्य विस्तार**-जैन ग्रंथ परिशिष्टपर्वन के अनुसार 'कौटिल्य ने भूगर्भ से प्राप्त धन से चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए एक सेना का निर्माण किया।'
- चन्द्रगुप्त तथा कौटिल्य ने सर्वप्रथम 322 ई. पू. में पंजाब पर आक्रमण कर वहां के यूनानी गवर्नर फिलिप की हत्या कर दिया।
- पंजाब विजय चन्द्रगुप्त मौर्य की प्रथम विजय थी।
- पंजाब के बाद चन्द्रगुप्त तथा कौटिल्य ने पुनः 321 बी.सी. में मगध पर आक्रमण कर उसे जीत लिया।

Pariksha Manthan

- मगध पर इस समय अंतिम नंद शासक धनानन्द का शासन था।
- 305 बी.सी. में सिकन्दर के सेनापति, सीरिया के शासक सेल्यूकस ने सिकन्दर द्वारा पूर्व में विजित भारतीय क्षेत्रों पर आक्रमण कर दिया।
- सेल्यूकस तथा चन्द्रगुप्त के मध्य सिंधुनदी के किनारे युद्ध हुआ।
- युद्ध में सेल्यूकस बुरी तरह पराजित हुआ तथा उसे चन्द्रगुप्त मौर्य से एक अपमानजनक संधि करनी पड़ी।

संधि की निम्न शर्तें थी

- सेल्यूकस अपनी पुत्री हेलना/कार्नेलिया का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से किया।
- सेल्यूकस ने अपने 4 राज्य परोपनीषदी (काबुल), आरकोशिया (कंधार) एरिया (हेरात) तथा जेड्रोशिया (बलूचिस्तान) चन्द्रगुप्त मौर्य को देने पड़े।
- चन्द्रगुप्त तथा सेल्यूकस के मध्य राजनयिक सम्बंध स्थापित हुए तथा एक यूनानी राजदूत मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त के राज दरबार में रहने लगा।
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु मैसूर में श्रवणबेलगोला में चन्द्रगिरी पर्वत पर हुयी थी, इससे भी दक्षिण में साम्राज्य विस्तार की जानकारी होती है।
- रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में उल्लेख है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के गवर्नर पुष्यगुप्त वैश्य ने सौराष्ट्र प्रान्त में सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था।
- रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में ही उल्लेख है कि अशोक के गवर्नर तुसाष्प ने सुदर्शन झील का पुनः निर्माण करवाया था।
- रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख एकमात्र ऐसा अभिलेख है जिसमें चन्द्रगुप्त तथा अशोक दोनों का नाम एक साथ मिलता है।
- जैनाचार्य भद्रबाहु से प्रभावित होकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने जीवन के अंतिम दिनों में जैन धर्म स्वीकार कर लिया था।

बिन्दुसार (298 -273 ई. पू.)

- बिन्दुसार चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र तथा सम्राट अशोक का पिता था।
- यूनानी इतिहासकारों ने बिन्दुसार को 'अमित्रोचेटस' कहा है।
- इसका संस्कृत में अर्थ 'अमित्रघात' होता है अर्थात शत्रुओं का नाश करने वाला।
- परिशिष्टपर्वन में बिन्दुसार का नाम बिन्दुसार मिलता है।
- दिव्यावदान के अनुसार उत्तरापथ की राजधानी तक्षशिला में बिन्दुसार के समय दो विद्रोह हुए।
- सीरिया के शासक एण्टियोकस प्रथम का राजदूत डाइमेकस बिन्दुसार के दरबार में रहता था।
- यूनानी लेखक एथेनियस के अनुसार बिन्दुसार ने पत्र-व्यवहार के माध्यम से एण्टियोकस प्रथम से तीन वस्तुओं— 1. अंगूरी मदिरा 2. अंजीर तथा 3 यूनानी दार्शनिक की माँग किया था।
- एण्टियोकस प्रथम ने दो वस्तुएं अंगूरी मदिरा तथा अंजीर भेजवा दिया था परन्तु यूनानी दार्शनिक की मांग को यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि यूनानी कानूनों के अनुसार दार्शनिक का क्रय-विक्रय नहीं किया जाता है।
- मिस्र नरेश टालमी फिलाडेल्फस द्वितीय ने अपना राजदूत डाईनिसियस को बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।

अशोक (273-232 ई. पू.)

- बिन्दुसार की 16 रानियों से 101 पुत्र हुए जिनमें अशोक सर्वाधिक तेजवान था।
- अशोक का एक ही सगा भाई था जिसका नाम विगताशोक था।
- बौद्ध अनुश्रुतियों के अनुसार अशोक अपने 99 भाइयों को मारकर गद्दी प्राप्त किया था।

Pariksha Manthan

- अशोक का सिंहासनारोहण 273 बी.सी. में हो चुका था जबकि राज्याभिषेक 4 वर्ष पश्चात् 269 बी.सी. में हुआ।
- अशोकावदानमाला में अशोक की मां का नाम सुभद्रांगी बताया गया है।
- बौद्ध ग्रंथों में अशोक की कई पत्नियों के नामों का उल्लेख मिलता है।
  1. असंघिमित्रा
  2. महादेवी
  3. पद्मावती
  4. तिष्यरक्षिता
- अशोक के इलाहाबाद कौशाम्बी अभिलेख में अशोक की एक ही रानी कारुवाकी का उल्लेख मिलता है।
- अशोक के इलाहाबाद कौशाम्बी अभिलेख में एक ही पुत्र तीवर का उल्लेख है।
- 'देवनामप्रियप्रियदर्शी' अशोक की सर्वाधिक लोकप्रिय उपाधि थी।
- अशोक का नाम अशोक उसके 4 अभिलेखों में मिलता है।
  1. गुर्जरा (म.प्र.)
  2. मास्की (कर्नाटक)
  3. नेत्तूर - (कर्नाटक)
  4. उडेगोलन - कर्नाटक
- सर्वप्रथम 1915 में मास्की लघुशिलालेख में अशोक नाम पढ़ा गया।
- अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 8 वर्ष बाद 261बी.सी. में कलिंग विजय किया था।
- अशोक के कलिंग विजय की जानकारी उसके 13वें दीर्घशिलालेख से होती है।
- कलिंग विजय के पश्चात् अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था।
- ह्वेनसांग के अनुसार उपगुप्त ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था।

मौर्यों का केन्द्रीय प्रशासन

- मौर्यकालीन केन्द्रीय प्रशासन कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत पर आधारित था।
- राजा का पद वंशानुगत होता था।
- राजा की सहायता के लिए मंत्रिण (उपसमिति) की नियुक्ति की गयी थी जिसमें प्रधानमंत्री, सेनापति, युवराज तथा मुख्य समाहर्ता आदि होते थे।
- यूनानी इतिहासकारों ने अध्यक्ष को मजिस्ट्रेट कहा है।

प्रमुख अध्यक्ष

- शुल्काध्यक्ष- व्यापार से प्राप्त कर/चुंगी एकत्रित करना।
- पौतवाध्यक्ष- माप तौल के मान को नियंत्रित करने वाला।
- सूत्राध्यक्ष- वस्त्रोद्योग मंत्री
- सूनाध्यक्ष- बूचड़खाने/चर्मउद्योग का अध्यक्ष।
- लक्षणाध्यक्ष- टकसाल का अध्यक्ष।
- अश्वाध्यक्ष- घोड़ों की देखभाल करने वाला।
- हस्त्याध्यक्ष- हाथियों की देखभाल करने वाला।
- अकाराध्यक्ष- खानमंत्री

मौर्यकालीन सैन्य व्यवस्था

- यूनानी इतिहासकारों के अनुसार चन्द्रगुप्त की सेना में 6 लाख पैदल, 30 हजार अश्वारोही, 9 हजार गज सेना, 8 हजार रथ सेना थी।
- मेगस्थनीज के अनुसार सेना की देखरेख के लिए अलग एक विभाग था। इस विभाग में 30 सदस्य थे।
- कौटिल्य के अनुसार राजा को सभी वर्गों के लोगों को सेना में नियुक्त करना चाहिए।

Pariksha Manthan

- कौटिल्य के अनुसार राजा को परिस्थिति के अनुसार 3 प्रकार का युद्ध करना चाहिए—
- प्रकाशयुद्ध - आमने-सामने का युद्ध
- कूट युद्ध - चालाकी तथा छलबाजी से युद्ध
- तूष्णी युद्ध - अप्रत्यक्ष युद्ध/शत्रु राज्य में गृहयुद्ध छिड़वा देना।

गुप्तचर व्यवस्था

- मौर्य काल में जनतांत्रिक परिषदों के अभाव के कारण जनता के मनोभावों, विचारों, इच्छाओं, राजा के विरोधियों, विद्रोहियों अधिकारियों आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए सुदृढ़ गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना की गयी थी।
- अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को गूढ़ पुरुष कहा गया है।
- स्ट्राबो ने गुप्तचरों को इंसपेक्टर कहा है।
- **संस्था**-संस्था उन गुप्तचरों को कहा जाता था जो एक ही स्थान पर रहकर गुप्तचरी का कार्य करते थे।
- **संचरा**- संचरा उन गुप्तचरों को कहा जाता था जो राज्य में भ्रमण करते हुए गुप्तचरी का कार्य करते थे।
- विदेशों में नियुक्त गुप्तचरों को उभयवेतन कहा जाता था।

न्याय व्यवस्था

- मौर्य प्रशासन में सबसे बड़ा न्यायालय राजा का केन्द्रीय न्यायालय होता था।
- ग्राम न्यायालय में ग्रामिक ग्राम वृद्ध परिषद की सहायता से न्याय कार्य करता था।
- फौजदारी न्यायालय को कंटकशोधन कहा जाता था।
- दीवानी न्यायालय को धर्मस्थीय कहा जाता था।
- अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 26वें वर्ष तक 25 बार वृद्ध कैदियों को रिहा किया था।

राजस्व व्यवस्था

- मौर्य काल में वित्तीय (राजस्व) वर्ष आषाढ़ से ज्येष्ठ तक होता था।
- **भाग**-स्वतंत्र रूप से खेती करने वाले किसानों से लिया जाने वाला भूमि कर।
- अशोक ने लुम्बिनी का भाग घटाकर 1/8 कर दिया था।

बिक्री कर

- **हिरण्य कर**- नकद कर था।
- **उदक भाग**- सिंचाई कर था।

नगर प्रशासन

- मौर्य कालीन नगर प्रशासन की सर्वोत्कृष्ठ जानकारी 'इण्डिका' से मिलती है।
- मेगस्थनीज ने नगर प्रशासन के सम्बंध में पोलिब्रोथा (पाटलिपुत्र) का विवरण दिया है।
- मेगस्थनीज के अनुसार पोलिब्रोथा में नगर प्रशासन के लिए 30 सदस्यीय एक सभा थी जिसमें 5-5 सदस्यों की 6 समितियाँ थी।
- मेगस्थनीज के अनुसार नगर का प्रमुख अधिकारी एस्ट्रोनोमोई होता था।

अन्य प्रशासनिक इकाईयाँ

- मौर्य काल में साम्राज्य प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से अनेक प्रांतों में विभक्त था। प्रांतों को चक्र कहा जाता था।
- मौर्य साम्राज्य अपनी पूर्णता के समय 5 चक्रों में विभक्त था।
- प्रत्येक चक्र में सम्राट द्वारा एक प्रान्तपति की नियुक्ति की जाती थी जिसे 'कुमार' कहा जाता था।

अशोक के अभिलेख

- अशोक के अभिलेखों की खोज सर्वप्रथम टिफेन्थैलर नामक एक पादरी ने 1750 ई. में की थी।
- सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने 1837 में अशोक के अभिलेखों को पढ़ा। इन्होंने दिल्ली-टोपरा अभिलेख को पढ़ा था।

Pariksha Manthan

- अशोक के अभिलेखों की मूल भाषा प्राकृति है।
- अशोक के अभिलेखों में कुल 4 लिपियों का प्रयोग हुआ है—1. ब्राह्मी लिपि 2. खरोष्ठी लिपि 3. आरमाइक लिपि 4. यूनानी लिपि

अशोक के अभिलेखों का वर्गीकरण				
दीर्घ शिलालेख	**लघु शिलालेख**	**दीर्घ स्तंभलेख**	**लघु स्तंभ लेख**	**अन्य**
* दीर्घ शिलालेख प्राकृतिक चट्टानों पर लिखे गये लम्बे लेख हैं। * इसमें प्रशासन एवं धम्म से सम्बन्धित लेख है। * इनमें कुल 14 बातें (लेख) हैं। इसीलिए इन्हें चर्तुदश लेख कहा जाता है। * ये 8 स्थानों से प्राप्त हुए हैं। * दीर्घ शिलालेख में ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपि का प्रयोग हुआ है।	* लघु शिलालेख भी प्राकृतिक चट्टानों पर लिखे गये छोटे लेख हैं। * इनमें अशोक के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित लेख हैं। * में 20 से अधिक स्थानों से प्राप्त हुए हैं। * इनमें ब्राह्मी लिपि में लेख लिखे गये हैं।	* ये पत्थर के स्तंभ पर लिखे गये लम्बे लेख हैं। * इनमें अशोक के प्रशासन एवं धम्म से सम्बन्धित बातें है। * इनमें अधिकतम 7 बातें हैं। * सातवाँ लेख केवल दिल्ली-टोपरा स्तंभलेख में है। * ये कुल 6 स्थानों से प्राप्त हुए हैं। * इनमें ब्राह्मीलिपि का प्रयोग हुआ है।	* ये पत्थर के स्तभों पर लिखे गये छोटे लेख हैं। * इनमें अशोक के प्रशासनिक निर्देश हैं * ये कुल 5 स्थानों से प्राप्त हुए हैं। * ये केवल ब्राह्मी लिपि में हैं।	* गुहालेख बराबर की पहाड़ी में अशोक ने 4 गुफायें बनवायी इसी में लेख लिखवाये। * द्विभाषिक लेख * सर-ए-क्यूना से प्राप्त हुआ है इसमें यूनानी एवं आरमाइक लिपि में लेख हैं

- धौली एवं जौगढ़ से प्राप्त दीर्घशिलालेख में लेख नं. 11, 12 एवं 13 नहीं मिलते। यहां से दो पृथक लेख मिलते हैं।
- पाकिस्तान से प्राप्त दीर्घशिलालेखों की लिपि खरोष्ठी है।
- भाब्रू लघु शिलालेख में अशोक द्वारा बौद्ध धर्म में आस्था व्यक्त किये जाने का उल्लेख है।
- भाब्रू लघु शिलालेख में अशोक ने स्वयं को मगध का राजा कहा है।
- येर्रागुडी से दीर्घ एवं लघुशिला लेख दोनों प्राप्त होते हैं।
- द्वितीय दीर्घशिलालेख में अशोक द्वारा अपने साम्राज्य एवं पड़ोसी राज्यों में मनुष्यों एवं पशुओं की चिकित्सा का प्रबंध कराये जाने का उल्लेख है।
- रुम्मिनदेई स्तंभ लेख में अशोक द्वारा बलि नामक कर समाप्त करने एवं भूमिकर घटा कर 1/8 करने का उल्लेख है।
- इलाहाबाद-कौशाम्बी लघु स्तंभ लेख को रानी का अभिलेख कहा गया है।
- प्रथम पृथक अभिलेख में अशोक कहता है कि सभी मनुष्य मेरी संतान के समान है।

Pariksha Manthan

- पाँचवें दीर्घ शिलालेख में अशोक द्वारा अपने अभिषेक के 13वें वर्ष में धर्ममहामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति किये जाने का उल्लेख है।
- तेरहवें दीर्घशिलालेख में कलिंग युद्ध का वर्णन है।

सामाजिक व्यवस्था

- कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में परम्परागत 4 वर्णों का उल्लेख किया है।
- मेगस्थनीज ने चातुर्वर्ण व्यवस्था का उल्लेख नही किया था किन्तु उसने आर्थिक आधार पर भारतीय समाज को 7 वर्णों में बांटा है—

1. **दार्शनिक**-इसके अन्तर्गत पुजारी, भिक्षु तथा विद्वान आदि आते थे।
2. **कृषक**-मेगस्थनीज ने 7 वर्गों में कृषकों की संख्या सर्वाधिक बताया है।
3. **पशुपालक**-ये पशुपालन का कार्य करते थे।
4. **व्यापारी शिल्पी**-ये अधिकांशतः नगरों में निवास करते थे।
5. **सैनिक**- समाज में किसानों के बाद सैनिक सर्वाधिक संख्या में थे।
6. **निरीक्षक**-ये समाज में व्यवस्था का निरीक्षण करते थे।
7. **मंत्री**- समाज में इसके अन्तर्गत शासक वर्ग आता था।

दास प्रथा

- मार्य कालीन समाज में दास प्रथा प्रचलित थी।

स्त्रियों की दशा

- स्त्रियों की स्थिति में पहले की अपेक्षा गिरावट आयी थी।
- समाज में 8 प्रकार के विवाह होते थे।
- विधवा तथा पुनर्विवाह होते थे।
- पुनर्विवाह करने वाली स्त्रियों को पुनर्भू कहा जाता था।

आर्थिक जीवन

कृषि

- कौटिल्य ने कृषि, पशुपालन तथा वाणिज्य को सम्मिलित रूप से 'वार्ता' कहा है। मेगस्थनीज के अनुसार मौर्यकालीन भारतीय समाज में 7 वर्गों में कृषकों की संख्या सर्वाधिक थी।
- मौर्यकाल में कृषक स्वतंत्र रूप से कृषि करते थे परन्तु राज्य द्वारा भी सीताध्यक्ष की देखरेख में कृषि करवायी जाती थी।
- चन्द्रगुप्त ने सौराष्ट्र में पुष्यगुप्त वैश्य के नेतृत्व में सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था।
- अर्थशास्त्र के अनुसार वर्ष में 3 फसलें उगायी जाती थीं—

  हैमन-रबी की फसल

  ग्रैष्मिक- खरीफ की फसल

  केदार- जायद की फसल

उद्योग

- मौर्यकाल में अनेक प्रकार के उद्योग थे जो कि राजनियंत्रित होते थे।
- मौर्यकाल में कर्मान्तिक साम्राज्य के उद्योग धन्धों का प्रधान नियंत्रक होता था।
- मौर्यकाल में वस्त्रोद्योग सर्वाधिक महत्वपूर्ण था।
- भारत में मौर्यकाल में सोना निकालने वाली चीटियां भी पायी जाती थीं।

व्यापार

- मौर्यकाल में व्यापार जल तथा स्थल दोनों मार्गों से होता था।
- व्यापारियों के काफिले चलते थे जिन्हें सार्थ कहा जाता था।
- व्यापारिक काफिले के नेतृत्व करने वाले को सार्थवाह कहा जाता था।
- अर्थशास्त्र के अनुसार चीन का बना रेशमी वस्त्र चीन पट्ट भारत में अत्यधिक लोकप्रिय था।

Pariksha Manthan

- भारत के पश्चिमी तट पर भरुकच्छ तथा सोपारा बन्दरगाह थे।
- भारत के पूर्वीतट पर बंगाल में ताम्रलिप्ति बन्दरगाह था।

मुद्रा

- मुद्रा के निर्गमन का अधिकार लक्षणाध्यक्ष नामक अधिकारी को था।
- मौर्यकाल में मुद्रा सोना, चांदी, तथा ताम्र की ढाली जाती थी।
- मौर्यकाल में सर्वाधिक लोकप्रिय मुद्रा चांदी की थी।
- असली तथा नकली सिक्कों की जाँच के लिए रूपदर्शक नामक अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी।

मौर्य कला

- मेगस्थनीज के अनुसार 'पोलिब्रोथा' (पाटलिपुत्र) भारत का सबसे बड़ा नगर है। यह गंगा तथा सोन नदियों के संगम पर स्थित हैं।
- पोलिब्रोथा 80 स्टेडिया लम्बा तथा 15 स्टेडिया चौड़ा है। नगर के बाहर 60 फीट गहरी खांई थी।
- नगर के मध्य में उद्यानों से घिरा हुआ राजप्रसाद था जो सूसा तथा पसिपोलिश (सीरिया) के राजप्रसादों से भी सुन्दर था।
- उत्खनन में पाटलिपुत्र से कोई भी राजप्रसाद नहीं प्राप्त हुआ था।
- फाह्यान पाटलिपुत्र के राजप्रसाद वर्णन करते हुए कहता है कि 'यह राजप्रसाद पत्थरों से निर्मित था। यह मानव द्वारा नहीं देवताओं द्वारा निर्मित प्रतीत होता है।'

गुफाएँ

- बराबर पहाड़ी में अशोक ने 4 गुफाओं का निर्माण करवाया था। और उन्हें आजीवक सम्प्रदाय के साधुओं को दान में दिया था।
- नागार्जुनी पहाड़ी पर अशोक के पौत्र दशरथ ने 3 गुफाओं का निर्माण करवाया था और उन्हें आजीवक सम्प्रदाय के साधुओं को दान में दिया था।

स्तूप

- स्तूप बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है।
- मौर्यकालीन स्तूप ईंटों से बनाए गये थे।
- महावंश के अनुसार 'अशोक ने 84 हजार स्तूप का निर्माण करवाया था।'
- अशोक द्वारा बनाए गए अनेक स्तूपों में वर्तमान में दो स्तूप ही शेष बचे हैं—

  1. सांची का स्तूप 2. सारनाथ का स्तूप

स्तंभ

- अशोक ने अपने स्तम्भों में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया है।
- लाल बलुआ पत्थर चुनार (Mirzapur) तथा मथुरा की पहाड़ियों से लाया गया था।
- सारनाथ स्तम्भ में 4 पशु चलते हुए दिखाये गये हैं।

  1. हांथी 2. वृषभ 3. सिंह 4. अश्व
- इन चार पशुओं के नीचे 24 तीलियों वाला चक्र है।
- सारनाथ की इसी लाट से भारत सरकार का राज चिन्ह वृषभ, अश्व तथा 24 तीलियों वाला चक्र लिया गया है।

मूर्तिकला

- पतंजलि ने महाभाष्य में लिखा है कि 'मौर्य शासक शिव तथा स्कन्द की मूर्तियां बनाकर बेचते थे।'
- सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रस्तर मूर्ति दीदारगंज (Patna) से प्राप्त चामरग्राहिणी यक्षी की मूर्ति है जो कि 6 फीट 9 इंच लम्बी है।
- परखम से यक्ष की मूर्ति प्राप्त हुई है। जिसका सिर टूटा

Pariksha Manthan

हुआ है।

- पटना, मथुरा, अहिक्षत, गाजीपुर आदि के उत्खनन से मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।

मृद्भाण्ड

- राजगृह से (Northen Black Palested Ware-NBPW) के साथ गाढ़े काले रंग के मृद्भाण्ड मिले हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य

- चन्द्रगुप्त मौर्य भद्रबाहु के प्रभाव में आकर जैन धर्म स्वीकार किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य 'सल्लेखना' विधि द्वारा प्राणों का अंत किया।
- कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने धम्म विजय की नीति अपनाई।
- मौर्यकाल में सिक्का जारी करने का अधिकार लक्षणाध्यक्ष नामक अधिकारी के पास था।
- अशोक के 8वें दीर्घशिलालेख से पता चलता है कि अशोक ने धम्म यात्रा की प्रथा प्रारम्भ की। सर्वप्रथम अपने अभिषेक 10वें वर्ष में उसने बोध गया की यात्रा की।
- बुलंदीबाग पाटलिपुत्र का प्राचीन स्थान था। यहां से मौर्यकालीन मृण्मूर्तियां एवं अन्य वस्तुयें प्राप्त हुई हैं।
- अशोक के 12वें दीर्घ शिलालेख में पूर्णरूपेण धार्मिक सहिष्णुता की बात की गई है।
- चाणक्य अपने बचपन में विष्णुगुप्त के नाम से जाने जाते थे।
- विशाखदत्त के नाटक ग्रंथ 'मुद्राराक्षस' में चन्द्रगुप्त मौर्य का विशिष्ट रूप से वर्णन हुआ है।
- अशोक के दूसरे एवं तेरहवें दीर्घ शिलालेख में संगम राज्य चोल, पांड्य एवं चेर का उल्लेख मिलता है। यद्यपि इन अभिलेखों में दक्षिण के दो अन्य राज्य सातियपुत्र एवं ताम्रपर्णी (लंका) का उल्लेख है।
- गोरखपुर जिले में स्थित सोहगौरा से एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, इसे चन्द्रगुप्त मौर्य के समय का माना जाता है। इस अभिलेख में खाद्यान्न को देश के संकट काल में उपयोग हेतु सुरक्षित रखने के बारे में प्राचीनतम शाही आदेश है।

मौर्योत्तर काल 200 ई. पू. - 300 ई.

- अनेक विद्वानों ने मौर्योत्तर काल को अंधकार का युग कहा।
- क्यों - अंधकार युग — स्रोतों की कमी एवं दो साम्राज्य के बीच अवसान का काल
- पहली बार मौर्योत्तर काल में लेखयुक्त सिक्के प्राप्त होते हैं।
- इस काल में पूर्वी भारत, मध्य भारत एवं दक्कन में स्थानीय राजवंशों का उदय हुआ जो है-

1. शुंग वंश
2. कंण्व वंश
3. सातवाहन वंश

- उत्तर-पश्चिम भारत में मध्य एशिया से कुछ विदेशी राजवंश आए जो हैं :

1. हिंद यवन (इण्डोग्रीक)
2. शक वंश
3. कुषाण वंश

शुंग वश

- इस वंश का संस्थापक **पुष्यमित्र शुंग** था।

Pariksha Manthan

- यह प्रथम ब्राह्मण राजवंश है जिसने मगध पर पहली बार प्रशासन किया।
- पुष्यमित्र शुंग राजा बनने के बाद भी **'सेनापति'** कहलाए।
- इसके शासनकाल में प्रथम यूनानी आक्रमण हुआ।
- मौर्योत्तर काल में प्रथम यूनानी आक्रमण डेमेट्रियस के नेतृत्व में हुआ लेकिन यह केवल व्यास नदी तक आया। और पूर्वी भारत की विजय इसके सेनापति मिनेण्डर ने की।
- बौद्ध ग्रंथों में पुष्यमित्र शुंग को **'बौद्ध द्रोही'** कहा जाता है।
- शुंग काल में संस्कृत भाषा का अत्यधिक विकास हुआ।
- पुष्यमित्र शुंग का दरबारी कवि **महर्षि पतंजलि** थे जो संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान थे जिसने **महाभाष्य** नामक व्याकरण ग्रंथ की रचना की जो पाणिनी के अष्टाध्यायी ग्रंथ की व्याख्या थी।
- शुंगकाल में ही 'मनुस्मृति' की रचना हुई।
- पुष्यमित्र शुंग ने **दो अश्वमेघ** यज्ञ किया जिसके पुरोहित पतंजलि थे।
- पुष्यमित्र शुंग ने **सांची एवं भरहुत के स्तूपों** का विस्तार एवं अलंकरण करवाया।
- **बेसनगर अभिलेख** में उल्लेख मिलता है कि तक्षशिला का यूनानी राजा एण्टियाकिल्ड्स ने हेलियोडोरस को अपना राजदूत बनाकर भागभद्र के दरबार में भेजा और **हेलियोडोरस** यहां आकर के भागवत धर्म को स्वीकार किया और भागवत वासुदेव के सम्मान में एक गरुड़ ध्वज की स्थापना किया।
- शुंग वंश का अंतिम शासक **देवभूति** था।

खरीदने के लिए लॉगऑन करें

www.manthanprakashan.in

कण्व वंश

- कंण्व वंश का संस्थापक वसुदेव था।
- इस वंश का अंतिम शासक सुशर्मा था। इसके अमात्य सिमुक ने इसकी हत्या करके कंण्व वंश का अंत कर दिया।

सातवाहन वंश

- इस वंश का संस्थापक **सिमुक** था।
- सातवाहनों का मूल क्षेत्र **महाराष्ट्र** था और बाद में आंध्र प्रदेश में बस गए। यहां के लोगों की सेवा करने के कारण इन्हें **आंध्र भृत्य** कहा गया।
- सिमुक की मृत्यु के बाद इसका छोटा भाई कृष्ण/कान्हा शासक बना।
- इसके बाद कृष्ण का पुत्र शातकर्णि प्रथम शासक बना।

शातकर्णि प्रथम

- यह शातवाहन वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक था।
- शातकर्णि प्रथम की पत्नी नागानिका का नानाघाट अभिलेख प्राप्त होता है जिसमें शातकर्णि प्रथम की उपलब्धियां बताई गयी हैं।
- **नानाघाट अभिलेख** में ही शातकर्णि प्रथम को महान विजेता व महान शासक बताया गया है।
- नानाघाट अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि शातकर्णि ने इन यज्ञों के उपलक्ष्य में ब्राह्मणों को दृष्यदान (मुद्रा) के साथ-साथ भूमिदान भी दिया। यह **भूमिदान** का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण है।
- शातकर्णि प्रथम की मृत्यु के बाद इसकी पत्नी **नागानिका** ने अपने अल्पवयस्क पुत्र शक्ति श्री व वेद श्री के नाम से शासन किया। यह **प्रथम भारतीय महिला शासिका** के रूप में कार्य किया।

हाल-

- इस अंधकार युग में 17 राजा हुए जिनमें राजा हाल थे।
- पुराणों - राजा हाल एक विद्वान राजा था जिसने प्राकृत भाषा में **'गाथासप्तसती'** नामक ग्रंथ की रचना की।

गौतमीपुत्र शातकर्णि

- इसके आगमन से सातवाहनों का अंधकार युग समाप्त हुआ।
- शकों के क्षहरात्र वंश के राजा **नहपान** से गौतमी पुत्र शातकर्णि का भीषण संग्राम हुआ। इस युद्ध में नहपान पराजित हुआ और मारा गया। गौतमीपुत्र शातकर्णि ने नहपान के राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। इसीलिए इसे **क्षहरात्र वंश का विनाशक** कहा जाता है और सातवाहन वंश की प्रतिष्ठा भी स्थापित की।
- बालश्री गौतमी के **नासिक अभिलेख** में उल्लेख मिलता है कि इसके विजयी घोड़ों ने तीनों समुद्रों का पानी पिया और इसकी विजयी पताका अपराजेय थी।

वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी

- इसने **'दक्षिणापथेश्वर'** की उपाधि धारण की थी।
- वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी ने **'नवनगर'** नामक नगर बसाने के उपलक्ष्य में **'नवनगरस्वामी'** की उपाधि धारण की।
- इसने अमरावती के **स्तूप का आकारवर्धन** करवाया।

यज्ञश्री शातकर्णि

- यज्ञश्री शातकर्णि सातवाहनों का अंतिम महत्वपूर्ण राजा था जिसने शकों को पराजित किया और पुनः अपने पूर्वजों के राज्य को प्राप्त किया।
- इस वंश का अंतिम शासक **'पुलुमावी चतुर्थ'** था।
- सातवाहनों की राजधानी प्रतिष्ठान थी जो इस समय व्यापार का केन्द्र थी।
- सातवाहनों द्वारा **ब्राह्मणों और बौद्धों** को भूमिदान दिया गया। यहीं से भूमिदान की प्रवृत्ति शुरु हुई और इससे सामंतवाद का जन्म माना जाता है।
- सातवाहन **मातृसत्तात्मक** वंश था।

Pariksha Manthan

- इस वंश की महिलाएं **पति के पद नाम को धारण** करती थी।
- **सातवाहन वंश के शासकों द्वारा जारी किए गए सिक्के—**
  1. चांदी के सिक्के,
  2. तांबा के सिक्के
  3. पोटीन - घटिया चांदी के सिक्के,
  4. सीसा-शीश के सिक्के

हिन्द यवन (इण्डोग्रीक)

- मौर्योत्तर काल में यूनानी भारत में बैक्ट्रिया (हिन्दुकुशपर्वत के पश्चिम में) से आए।

यूथीडेमस वंश

- यूथीडेमस वंश का संस्थापक **यूथीडेमस** था जो 212 ई.पू. में बैक्ट्रिया का गवर्नर बना।
- यूथीडेमस की मृत्यु के बाद डेमेट्रियस बैक्ट्रिया का शासक बना।

डेमेट्रियस

- डेमेट्रियस बैक्ट्रिया का पहला संप्रभुता सम्पन्न शासक हुआ।
- मौर्योत्तर काल में प्रथम यूनानी आक्रमण डेमेट्रियस के नेतृत्व में हुआ।

मिनेंडर

- मिनेंडर डेमेट्रियस का सेनापति और दामाद था।
- बौद्ध ग्रंथ **मिलिन्दपन्हों** से ज्ञात होता है कि मिनेंडर की राजधानी **शाकल** थी।
- मिलिन्दपन्हों ग्रंथ की रचना **नागसेन** ने की थी।
- मिनेंण्डर पहला यूनानी शासक था जो भारत में आकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया।

स्ट्राटो प्रथम

- मिनेण्डर की मृत्यु के बाद स्ट्राटो प्रथम शासक बना। इसकी भी मुद्राएँ मथुरा से मिलती हैं।
- इस वंश का अंतिम ज्ञात शासक हिप्पोस्ट्रेटस था।

युक्रेटाइडिस वंश

- 167 ई.पू. में एन्टियोकस चतुर्थ का सेनापति **युक्रेटाइडिस** ने बैक्ट्रिया में विद्रोह किया और इसने युक्रेटाइडिस वंश की स्थापना की।
- युक्रेटाइडिस की मृत्यु के बाद इसका पुत्र हेराक्लीज शासक बना।

हेराक्लीज

- हेराक्लीज के समय बैक्ट्रिया पर शकों का आक्रमण हुआ और अन्ततः पराजित हुआ।
- हेराक्लीज भारत में युक्रेटाइडिस वंश का सबसे महान शासक हुआ।

एण्टियाकिल्ड्स

- इसने हेलियोडोरस को अपना राजदूत बनाकर भागभद्र के दरबार में भेजा, जो भागवत धर्म का अनुयायी बना।
- इंस वंश का अंतिम ज्ञात शासक हरम्यूंज था।

शक वंश

- शक मध्य एशिया के जैक्जार्टिज प्रदेश के निवासी थे। चीनी ग्रंथों में इन्हें 'संई' नाम से सम्बोधित किया गया।
- चीनी ग्रंथों से ज्ञात होता है कि मंगोलया में दो खानाबदोश जातियाँ हूँग-नू और यू-ची 176 ई.पू. में आपस में संघर्षरत थे।
- शकों के भारत आने के दो मार्ग थे -
  1. सिंधु नदी की घाटी - उत्तरी मार्ग
  2. ईरान - दक्षिणी मार्ग

Pariksha Manthan

तक्षशिला के शक

मोग/मावेज

- यह भारत में प्रथम शासक था जो भारत में प्रथम शक विजेता था।
- इसी अभिलेख (मोग अभिलेख) से ज्ञात होता है कि मोग राजा ने 'मोग संवत' का प्रचलन किया था।

क्षहरात्र वंश

- इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक **भूमक** था। इसकी केवल मुद्राएँ ही प्राप्त होती हैं।
- इसकी मुद्राओं में इसे 'छत्रप' की उपाधि से सम्बोधित किया गया है।
- इसके राज्य के अंतर्गत गुजरात, मालवा, महाराष्ट्र और सिंध थे।

नहपान

- नहपान इस वंश का सबसे महान शासक था। इसकी मुद्राओं में इसे **'महाछत्रप'** की उपाधि मिलती है।
- 'पेरीप्लस ऑफ द इरीथ्रियन सी' ग्रंथ से उल्लेख मिलता है कि नहपान को यूनानी भाषा में **मेम्बेरस** नाम से सम्बोधित किया गया।
- यूनानी स्रोतों से ज्ञात होता है कि नहपान की राजधानी **मिन्नगर** (नासिक) थी।
- नहपान भारत का प्रथम राजा था जिसके सिक्कों में तीन लिपियों में लेख प्राप्त होते हैं—1. ब्राह्मी 2. खरोष्ठी 3. यूनानी

कार्द्धमक वंश

- कार्द्धमक वंश का संस्थापक यशोमतिक था।
- यशोमतिक का पुत्र चष्टन इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक था इसीलिए इसे चष्टन वंश भी कहा जाता है।

रुद्रदामन

- रुद्रदामन इस वंश का सबसे महान शासक था। यह कुछ समय तक अपने दादा चष्टन के साथ मिलकर शासन किया। इसी को 'द्वै राज्य शासन प्रणाली' कहते हैं।
- रुद्रदामन की उपलब्धियों का वर्णन उसके जूनागढ़ अभिलेख में हैं जो संस्कृत भाषा में लिखा गया प्रथम अभिलेख है।
- जूनागढ़ अभिलेख से ज्ञात होता है कि इसके समय सौराष्ट्र (गुजरात) में सुदर्शन झील टूट गयी थी और अपने अमात्य सुविशाख की देखरेख में इसने जीर्णोद्धार कराया था। इसमें रुद्रदामन ने अपना निजी धन खर्च किया था।
- इस वंश का अंतिम शक राजा रुद्रसिंह तृतीय था।
- लगभग 388 ई. में चंद्रगुप्त द्वितीय ने रुद्रसिंह -तृतीय को पराजित कर शक राज्य को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। इसी युद्ध के पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय ने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की।

कुषाण वंश

- जैक्जार्टिज प्रदेश में दीर्घ यू-ची पाँच शाखाओं में विभाजित था जिसकी एक शाखा का नाम **'कुए-ई-शुआंग'** थी जिसे कुषाण कहा गया।
- भारतीय ग्रंथों में कुषाणों को **'ऋषिक'** कहा गया।
- कुषाण वंश का संस्थापक **कुजुल कैडफिसस** था जो बैक्ट्रिया को केन्द्र बनाकर शासन किया।

विम कैडफिसस

- विम कैडफिसस कुषाण वंश का पहला शासक था जिसने भारतीय क्षेत्रों गांधार, पंजाब व मथुरा की विजय की।
- विम कैडफिसस भारत में कुषाण वंश का संस्थापक था।
- इसने तांबे की मुद्रा में एक तरफ शिव, नंदी व त्रिशूल तथा दूसरी तरफ **'महेश्वरः'** शब्द अंकित करवाया।

कनिष्क

- विम कैडफिसस के बाद कनिष्क शासक बना जो इस वंश का सबसे महान शासक था। क्योंकि इसकी राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ थीं।

Pariksha Manthan

- कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि को लेकर विद्वानों में मतभेद है लेकिन अधिकांश विद्वान 78 ई. मानते हैं।
- 78 ई. में कनिष्क के राज्यारोहण से एक संवत् कनिष्क संवत् या शक संवत का प्रारम्भ हुआ। यह संवत् भारत में कैलेण्डर का आधार बनी।

कनिष्क की राजनीतिक उपलब्धियाँ

- कनिष्क साम्राज्यवादी विचार का शासक था।
- कनिष्क के समय तीन बड़े साम्राज्य चीन, पार्थिया (ईरान) व रोम थे। चीन व पार्थिया के साथ शत्रुतापूर्ण संबंध थे। जबकि रोम के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे।

प्रथम युद्ध

- कनिष्क **चीन** के हॉन वंश के शासक हो-ती की राजकुमारी से विवाह करना चाहता था। उसी उपलक्ष्य में कनिष्क ने चीन के शासक के पास विवाह का प्रस्ताव लेकर एक राजदूत भेजा।
- चीन के शासक ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कनिष्क के राजदूत को बंदी बना लिया।
- इसी घटना से कनिष्क ने चीन पर आक्रमण कर दिया। चीनी सेना के शक्तिशाली सेनापति पान-चा-ओ ने कनिष्क को पराजित कर दिया। कुछ दिनों बाद पान-चा-ओ की मृत्यु हो गयी।
- कनिष्क दुबारा पुनः चीन पर आक्रमण कर चीनी सेना को पराजित करके पाँच क्षेत्र चीनियों से छीन लिया

1. काशगर
2. यारकंद
3. खोतान
4. करा
5. कू - ची

चीनी तुर्किस्तान

'द्वितीय युद्ध'

- पार्थिया का पूर्वी क्षेत्र एरियाना प्रदेश में कनिष्क का अधिकार था। पार्थिया का राजा एरियान प्रदेश को प्राप्त करना चाहता था, परिणामस्वरूप युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में कनिष्क ने पार्थिया के राजा को पराजित कर एरियाना पर कब्जा बनाए रखा।
- कनिष्क ने पूर्वी भारत को जीतकर अपने साम्राज्य में विलय किया।
- कनिष्क का एक अभिलेख सारनाथ से प्राप्त होता है।
- कनिष्क की मुद्राएं पूर्वी उ.प्र., बिहार और बंगाल से प्राप्त होती हैं।
- कल्हण की **राजतरंगिणी** में उल्लेख मिलता है कि कनिष्क ने कश्मीर में **'कनिष्कपुर'** नामक नगर बसाया था। इससे स्पष्ट होता है कि इसने उत्तरभारत की विजय की।
- कनिष्क के शासनकाल में **चौथी बौद्ध संगीति** का आयोजन **कुण्डलवन (कश्मीर)** में आयोजित हुई।
- कनिष्क ने एक बड़े साम्राज्य का निर्माण किया। इसकी प्रथम राजधानी **पुरुषपुर** (पेशावर) और दूसरी राजधानी **मथुरा** थी।

कनिष्क की सांस्कृतिक उपलब्धियां

धर्म

- कनिष्क का काल धार्मिक समन्वय का काल था।
- इसी के समय बौद्धधर्म की चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। जिसमें कनिष्क ने हीनयान एवं महायान दोनों को महत्व दिया।
- कनिष्क ने मध्य एशिया चीन में बौद्ध धर्म के प्रचारक मण्डल भेजे।

साहित्य

- कनिष्क का राजकवि अश्वघोष था। जो एक महान दार्शनिक एवं महान कवि था जिसने **'बुद्धचरित'** व **सौन्दरानंद**

Pariksha Manthan

नामक महाकाव्य, **'सारिपुत्र प्रकरण'** नामक नाटक ग्रंथ की रचना की।

- बुद्धचरित को बौद्धों की रामायण कहा जाता है।
- नागार्जुन एक बौद्ध आचार्य थे जिन्होंने **'शून्यवाद दर्शन'** का प्रतिपादन किया। इन्हें भारत का आइंस्टीन भी कहा जाता है।
- वसुमित्र भी एक बौद्ध आचार्य थे जिन्होंने 'महाविभाषाशास्त्र' नामक ग्रंथ की रचना की।
- चरक एक आयुर्वेदाचार्य थे जिन्होंने 'चरक संहिता नामक चिकित्सीय ग्रंथ की रचना की।

स्थापत्य कला

- कनिष्क ने 'पुरुषपुर' और 'कनिष्कपुर' नामक नगर बसाया।
- इसने पुरुषपुर में 13 मंजिला ऊंची (400 फिट) मीनार/टावर का निर्माण कराया।

मूर्तिकला

1. **गांधार शैली**-इस शैली का विकास गांधार प्रदेश में हुआ। इसमें शैली यूनानी है लेकिन विषय भारतीय।

- इस शैली से बुद्ध की सर्वाधिक मूर्तियों का निर्माण किया गया।
- इस कला की मूर्तियां स्लेटी चूना पत्थर से निर्मित होती थी।

2. **मथुरा शैली**-

- इस शैली का विकास मथुरा के आस-पास के क्षेत्रों में हुआ।
- यह शैली शुद्ध भारतीय कला की शैली थी।

कनिष्क के उत्तराधिकारी

- कनिष्क के पश्चात् इसका उत्तराधिकारी वशिष्क की पहचान 'जुष्क' राजा से की जाती है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- तक्षशिला के यूनानी शासक एण्टियाकिल्ड्स ने हेलियोडोरस को अपना राजदूत बनाकर भागभद्र के दरबार में बेसनगर भेजा। यहां हेलियोडोरस भागवत धर्म का अनुयायी बन गया। इसकी जानकारी बेसनगर अभिलेख से मिलती है।
- मौर्योत्तर काल में विदेशी शासक वर्ग को भारतीय समाज में द्वितीय श्रेणी के क्षत्रिय के रूप में शामिल किया गया।
- यूनानी शासक स्ट्राटो द्वितीय ने शीशा के सिक्के जारी किये थे।
- शक शासक नहपान के सिक्कों पर तीन लिपियों में लेख मिलते हैं। यह है ब्राह्मी, खरोष्ठी एवं यूनानी लिपि।
- पहलव वंश के शासक गोण्डोफर्नीज के शासनकाल में ईसाई प्रचारक सेंट टामस भारत आया था। लेकिन यहां इसकी मद्रास के निकट हत्या कर दी गई थी।
- कुषाणों ने सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के जारी किये।
- कुषाण शासक विमकैडफिसेज ने भारत में स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन नियमित उपयोग के लिए किया था।
- हिंद-यवन शासक स्ट्रैटो-II (25 ई.पू.–10 ई.) ने सीसे के सिक्के जारी किए थे।
- कलिंग के चेदि वंश के राजा खारवेल जैन धर्म का संरक्षक था। इसके हाथी गुंफा अभिलेख से इसके जैन होने एवं संरक्षण देने का प्रमाण मिलता है।
- कुषाण शासक कनिष्क की मुद्राओं में बुद्ध का अंकन मिलता है। इससे पता चलता है कि यह महायान सम्प्रदाय का अनुयायी था। यद्यपि यह हीनयान एवं महायान दोनों को संरक्षण प्रदान किया था।
- अफगानिस्तान में स्थित बामियान की पहाड़ियों को काटकर बड़ी संख्या में बुद्ध की प्रतिमायें बनाई गई हैं। लेकिन तालिबानियों ने इन प्रतिमाओं को नष्ट कर दिया है।
- विक्रम संवत् की शुरुआत 57 ई. पू. में हुआ था जबकि शक संवत् की शुरुआत 78 ई. में हुआ था। अतः दोनों के बीच अंतर निकालने के लिए 57 एवं 78 को जोड़ना होता है, जिसका उत्तर 135 होता है।

Pariksha Manthan

गुप्त काल

- **स्रोत**-गुप्तवंशीय इतिहास को जानने के स्रोत के रूप में साहित्यिक साक्ष्य अभिलेखीय साक्ष्य और विदेशी यात्रियों के विवरण का सहारा लिया जाता है।
- **साहित्यक स्रोत-पुराण**—मत्स्यपुराण, वायुपुराण एवं विष्णुपुराण द्वारा प्रारम्भिक शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- **स्मृतियां**-स्मृतियों में नारद, वृहस्पति, पाराशर आदि स्मृतियों से गुप्तकालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक इतिहास की जानकारी मिलती है।
- **बौद्ध ग्रंथ**-आर्य मंजूश्री मूलकल्प एवं वसुबंधु चरित में गुप्तवंशीय इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।
- **जैन ग्रंथ**-हरिवंश पुराण और कुबलयमाला से गुप्तवंशीय इतिहास की जानकारी मिलती है।
- **अभिलेखीय साक्ष्य**-गुप्तों का इतिहास जानने के लिए अभिलेखीय साक्ष्य महत्वपूर्ण है।
- गुप्तों के अब तक 42 अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं। इसमें 27 प्रस्तर 14 ताम्र पत्र तथा एक लौह स्तम्भ है।
- **विदेशी विवरण**-विदेशी विवरण में फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग एवं अलबरूनी आदि का विवरण गुप्तकालीन इतिहास जानने में सहयोग प्रदान करते हैं।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का प्रथम महत्वपूर्ण राजा था जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- चन्द्रगुप्त प्रथम 319 ई. में गुप्त संवत् का प्रचलन किया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम का विवाह लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमार देवी से हुआ। इस उपलक्ष्य में इसने स्मारक स्वर्ण मुद्रा जारी किया जिसमें चन्द्रगुप्त एवं कुमार देवी का चित्र अंकित है और इसी मुद्रा के दूसरी तरफ 'लिच्छिवयः' शब्द अंकित है।

समुद्रगुप्त (335 -75 ई.)

- समुद्रगुप्त वंश का प्रथम महान शासक था जिसकी उपलब्धियां हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से प्राप्त होती है।
- हरिषेण ने प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की क्रमिक विजयों का उल्लेख किया।

विदेशी राज्यों के साथ संबंध

- प्रयाग प्रशस्ति के अंत में विदेशी राज्यों के संबंधों का उल्लेख मिलता है। ये विदेशी राज्य थे - देवपुत्रषाहीषाहानुषाही (कुषाण), शकमुरुंड (शक), सिंहल (लंका), सार्वद्धीपवासी (जावा सुमात्रा)।
- चीनी ग्रंथों से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त का समकालीन लंका का राजा मेघवर्ण था जिसने बहुत उपहारों के साथ अपने राजदूत को समुद्रगुप्त के पास भेजा था।
- समुद्रगुप्त की विजयों के आधार पर इतिहासकार स्मिथ ने इसे 'भारत का नेपोलियन' कहा।

मुद्राएं

- मुद्राओं से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त ने अश्वमेघ यज्ञ किया और कुछ मुद्राओं में इसे वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया है।
- समुद्रगुप्त स्वयं कवि/विद्वान था। प्रयाग प्रशस्ति में इसे 'कवि राज' कहा गया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375-412 ई.)

महान विजेता

- चन्द्रगुप्त द्वितीय 388 ई. में मालवा व गुजरात के शक शासक रुद्र सिंह तृतीय को पराजित कर इसके राज्य पर अधिकार कर लिया।

Pariksha Manthan

- चन्द्रगुप्त द्वितीय शक विजय के उपलक्ष्य में **'विक्रमादित्य'** की उपाधि धारण की।
- शकों के अहंकार को चूर करने के कारण इसे **'शकारि'** भी कहा जाता है।
- **उज्जयनी** भी गुप्तों को प्राप्त हुई जो व्यापार की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने इसे अपनी द्वितीय राजधानी बनाई जिससे साम्राज्य के पश्चिमी क्षेत्र पर नियंत्रण रखा जा सके।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के मेहरौली लौह स्तम्भ से ज्ञात होता है कि इसने बंगाल की विजय की।

वैवाहिक एवं मैत्रीपूर्ण संबंध

- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने नाग वंश की राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया। कुबेरनागा से उत्पन्न पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक वंश के शासक रुद्रसेन द्वितीय से किया।
- राजा भोज की रचना 'श्रृंगार प्रकाश' में उल्लेख मिलता है कि चंद्रगुप्त द्वितीय ने कालिदास को अपना राजदूत बनाकर कुंतल नरेश कुकुस्थवर्मन के दरबार में भेजा था।

सांस्कृतिक उपलब्धियां

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के अभिलेखों में इसे 'परम भागवत' कहा गया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय चीनी यात्री फाह्यान 399 ई. में भारत आया और 415 ई. तक रहा। यह भारत में 16 वर्षों तक रहा।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के अन्य नाम 'देवराज' व 'देवगुप्त' और उपाधि 'विक्रमांक'।

कुमारगुप्त I (415-455 ई.)

- चन्द्रगुप्त-II की मृत्यु के बाद तीन वर्ष तक शासक कौन था, इस संबंध में निश्चित रूप से कुछ कहना मुश्किल है।
- वैशाली से प्राप्त एक मुद्रा में चन्द्रगुप्त द्वितीय के पुत्र गोविन्दगुप्त को युवराज कहा गया है। संभवतः यह तीन वर्ष तक शासक रहा होगा।
- गुप्त शासन के क्रम में इसकी प्रारम्भिक तिथि गुप्त संवत् 96 (415 ई.) है। इसके रजत सिक्के से इसकी अंतिम तिथि गुप्त संवत 136 (455 ई.) मिलती है।
- कुमारगुप्त को जो पैतृक सम्पत्ति के रूप में जो साम्राज्य मिला उसे उसने सुरक्षित रखा।
- कुमारगुप्त के समय नर्मदा नदी के तट में निवास करने वाली जनजाति पुष्यमित्रों का विद्रोह हुआ। युवराज स्कन्दगुप्त ने इन्हें पराजित कर इनका अंत कर दिया।
- इसकी एक मुद्रा में अश्वमेघ महेन्द्रः शब्द अंकित मिलता है इससे स्पष्ट है कि इसने अश्वमेघ यज्ञ किया था।
- कुमार गुप्त ने नालंदा में एक बौद्ध विहार का निर्माण करवाया जो आगे चलकर नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

स्कन्दगुप्त (455-467 ई.)

- स्कन्दगुप्त गुप्त वंश का अंतिम महान सम्राट था।
- स्कन्दगुप्त हूणों को पराजित करने के उपलक्ष्य में 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की।
- स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि सौराष्ट्र (गुजरात) में स्थित सुदर्शन झील टूट गयी थी तब इसने जूनागढ़ के नगर प्रशासक चक्रपालित की देखरेख में इसका जीर्णोद्धार कराया।
- स्कन्दगुप्त के कहौम अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि मद्र नामक एक व्यक्ति ने जैन तीर्थंकरों की पांच मूर्तियों की स्थापना कराई।

स्कन्दगुप्त के उत्तराधिकारी (467-550 ई.)

- स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद इसके आठ उत्तराधिकारियों का उल्लेख मिलता है।
- विष्णुगुप्त गुप्त वंश का अंतिम शासक था।

Pariksha Manthan

गुप्तकालीन प्रशासन

- शासन की दृष्टि से गुप्त साम्राज्य का स्वरूप ऐसा था कि गुप्तवंशीय समाज को आधिपत्य स्वीकार करते हुए अनेक राजा अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्रतापूर्वक शासन करते थे।
- गुप्त साम्राज्य का शासन सम्राट में केन्द्रित था। सैद्धांतिक रूप से यह सभी शक्तियों का स्रोत था। गुप्त शासक अपने को महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक, परमभागवत, परमदेवता, पृथ्वीपति, सम्राट एवं चक्रवर्ती आदि से विभूषित करते थे। राजा के देवत्व की कल्पना इस युग में अधिकाधिक लोकप्रिय हुई। इसका प्रमाण याज्ञवल्क्य स्मृति और नारद स्मृति में मिलती है।
- गुप्तकाल में मंत्रियों का पद वंशानुगत था। करमदण्ड अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि कुमारगुप्त प्रथम के मंत्री पृथ्वीसेन का पिता शिखर स्वामीन चन्द्रगुप्त द्वितीय का मंत्री रह चुका था।
- साम्राज्य के मुख्य पदों पर काम करने वाले अधिकारियों को कुमारामात्य कहते थे।

प्रशासनिक इकाईयां

- देश के शासक को गोप्ता एवं भुक्ति के शासक को उपरिक महाराज कहा जाता था। इन्हें भोगिक राजपुत्र एवं देवभट्टारक के नाम से जाना जाता था।
- स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि जूनागढ़ का नगर प्रशासक चक्रपालित था।
- ग्राम के मुखिया को ग्रामपति, महत्तर या ग्रामभोजक कहा जाता था।

भूराजस्व व्यवस्था

- गुप्त काल में राजकीय आय का मुख्य स्रोत भूमिकर था। भूमिकर को 'भाग' कहा जाता था। भाग की दर 1/6 होती थी।
- गुप्तकाल में नकद कर को **'हिरण्य कर'** कहा जाता था।

गुप्तकालीन संस्कृति

साहित्य

- इस युग में संस्कृत भाषा का अत्यधिक विकास हुआ।
- हरिषेण गुप्तकाल का प्रकाण्ड विद्वान था जिसकी एक अभिलेखीय रचना 'प्रयाग प्रशस्ति' है जो 'चम्पू शैली' में रचा गया।
- कालिदास संस्कृत का विद्वान था जिसकी सात रचनाएं मिलती हैं—

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2. मालविकाग्निमित्रम्
3. विक्रमोवर्षीयम्

— नाटक

4. रघुवंश
5. कुमार संभव

— महाकाव्य

6. ऋतुसंहार
7. मेघदूत

— लघुकाव्य

- विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस व देवीचन्द्रगुप्तम् इस युग के विशिष्ट रूप से राजनीतिक नाटक हैं।

विज्ञान एवं तकनीकि

- इस समय के प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्यभट्ट थे, इन्होंने अपनी पुस्तक 'आर्यभट्टियम्' में वृत्त, त्रिभुज आदि के सिद्धांतों, दशमलव प्रणाली, बीजगणित तथा त्रिकोणमिति का विवेचन किया।
- आर्यभट्ट ने पाई (p) का मान 3.1416 बताया जो आधुनिक सिद्धांत के सर्वनिकट है।
- इन्होंने सौरवर्ष की लम्बाई को 365.358605 दिन के बराबर बताया जो आधुनिक सिद्धांत के सर्वनिकट है।
- इन्होंने चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या की और साथ ही यह बताया कि पृथ्वी गोल है।
- वाराहमिहिर ने पंचरस सिद्धांतिका में ज्योतिष के पाँच सिद्धान्तों का उल्लेख किया है।

Pariksha Manthan

- गुप्तकाल में प्रसिद्ध चिकित्सक एवं आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि हुए।
- पूर्वी तुर्किस्तान ने नवनीतिकम् नामक एक आयुर्वेद का ग्रंथ मिला है जिसकी रचना गुप्तकाल में हुई।

स्थापत्य कला

- प्रथम चरण में बौद्ध चैत्यों का अनुकरण करके मंदिर का निर्माण किया गया। उदाहरण के रूप में कृष्णाजिले (महाराष्ट्र) का कपोतेश्वर मंदिर।
- द्वितीय चरण में स्तूपों का अनुकरण करके गोल मन्दिर बनाए गए।
- तृतीय चरण में मंदिर की छत चौकोर एवं समतल बनाई गयी। इसमें एक कमरा बनाया गया जिसमें देवमूर्ति स्थापित की गयी जिसे गर्भ गृह कहते हैं। कमरे के सामने एक हाल बनाया गया जिसे मण्डप कहा गया।
- चौथे चरण में प्रदक्षिणापथ का निर्माण किया गया।

मूर्तिकला

- बिहार के सुल्तानगंज से बुद्ध की एक मूर्ति प्राप्त होती है। यह सब से सुंदर मूर्ति है जिसे ब्रिटेन के बर्मिंघम संग्रहालय में रखा गया।

चित्रकला

- गुप्त काल में अजंता एवं बाघ की गुफाओं से चित्र प्राप्त होते हैं।
- अजंता की गुफाओं में दो प्रकार की चित्र तकनीकि प्राप्त होती है—

1. **फ्रेस्को तकनीकि**- इस तकनीकि से गीला लेप में चित्र निर्मित किए जाते थे।
2. **टेम्पेरा तकनीकि**- इस तकनीकि से सूखे लेप द्वारा चित्र निर्मित किए जाते थे।

गुप्तकालीन रचनायें एवं उनके लेखक

1. अभिज्ञान शाकुंतलम्		
2. विक्रमोवर्षीयम्		
3. मालविकाग्निमित्रम्		
4. रघुवंश		कालिदास
5. कुमार संभव		
6. मेघदूतम्		
7. ऋतु संहार		
8. मुद्राराक्षस		
9. देवी चन्द्रगुप्तम्		विशाखदत्त
10. मृच्छकटिकम्	-	शूद्रक
11. अमरकोष	-	अमरसिंह
12. नाट्यशास्त्र	-	भरतमुनि
13. कामसूत्र	-	वात्स्यायन
14. पंचतंत्र	-	विष्णुशर्मा
15. नीतिसार	-	कामंदक

महत्वपूर्ण तथ्य

- चन्द्रगुप्त द्वितीय का दूसरा नाम देवगुप्त एवं देवराज भी मिलता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने गुप्त सम्राटों में सर्वप्रथम चांदी के सिक्के जारी किये।
- गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्रा को दीनार कहा जाता था।
- फाहियान के अनुसार सामान्य लेन देन में कौड़ियों का प्रयोग होता था।
- गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राओं का सबसे बड़ा ढेर (समूह) बयाना से प्राप्त हुआ है।
- गुप्तकाल में किसानों से उद्रंग एवं उपरिकर नामक अतिरिक्त कर लिया जाता था।

Pariksha Manthan

- गुप्त काल में ही सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण एरण से प्राप्त हुआ है।
- गुप्त काल में 'कायस्थ' का उल्लेख लेखक वर्ग के रूप में मिलता है। कायस्थ का सर्वप्रथम कुषाणकालीन मथुरा अभिलेख एवं याज्ञवाल्क्य स्मृति में मिलता है।
- फाहियान उल्लेख करता है कि जब चांडाल बस्ती में प्रवेश करता था तो लकड़ियां बजाते हुए चलता था।
- कहौम अभिलेख में जैन मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख मिलता है।
- मंदसौर अभिलेख में ही रेशम के बुनकरों की श्रेणी द्वारा दशपुर (मंदसौर) में एक सूर्य मंदिर बनवाये जाने का उल्लेख है।
- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम को है।
- गुप्तकाल में सुश्रुत नामक शल्य चिकित्सक हुए। इन्होंने सुश्रुत संहिता नामक ग्रंथ की रचना की। इसमें इन्होंने छुआछूत से होने वाली बिमारियों का उल्लेख किया है।
- दशमलव प्रणाली का विकास गुप्त काल में हुआ।
- प्राचीन ग्रंथों में रेशम के लिए 'कौशेय' शब्द का प्रयोग किया जाता था।
- गुप्तकाल में शतरंज का खेल भारत में उद्भूत हुआ। इस समय इसे 'चतुरंग' के नाम से जाना जाता था। मध्यकाल में विजयनगर साम्राज्य के अन्तर्गत यह राजकीय खेल था। भारत से ही यह ईरान और फिर यूरोप पहुँचा।

गुप्तोत्तर काल (वर्धन वंश/ पुष्यभूति वंश)

- वर्धन वंश की जानकारी निम्न ऐतिहासिक स्रोतों से प्राप्त होती है— बाणभट्ट के हर्षचरित नामक ग्रंथ से, ह्वेनसांग के सि-यू-कि नामक चीनी ग्रंथ से

  हर्षवर्धन के दो अभिलेखों, बाँस खेड़ा अभिलेख (शाहजहां पुर) तथा मधुबन अभिलेख (मऊ) से

  चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से तथा हर्षकालीन मुद्राओं से।
- बाणभट्ट हर्षचरित में हर्ष के आदि पूर्वज का नाम पुष्यभूति बताया है।
- हर्ष के पूर्वज श्रीकंठ राज्य के शासक थे जिनकी राजधानी स्थाणुवीश्वर अर्थात् थानेश्वर थी।
- प्रभाकरवर्धन इन वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक बना। इसने महाराजाधिराज परमेश्वर, परमभट्टारक आदि उपाधियां धारण की।
- इसकी मुद्राओं में प्रतापशील अंकित है इससे स्पष्ट होता है कि यह प्रतापशील उपाधि धारण किया था।
- 605 ई. में प्रभाकरवर्धन की मृत्यु हो गयी तथा इसकी पत्नी यशोमती सती हो गयी।
- राज्यवर्धन शासक बना इसी समय मालवा के शासक देवगुप्त ने कन्नौज पर आक्रमण कर दिया तथा यहां के शासक गृहवर्मा की हत्या कर दी और राज्यश्री को कारागार में डाल दिया।
- 606 ई. में हर्षवर्धन कन्नौज का शासक बना तथा इसे अपनी राजधानी बनायी।
- इस उपलक्ष्य में 606 ई. में हर्ष संवत् शुरु किया।
- मगध (बिहार) राज्य की विजय की इस उपलक्ष्य में इसने 'मगध राज' की उपाधि धारण की।
- कामरूप (असम) के शासक भास्करवर्मन ने हर्ष के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए।
- पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से ज्ञात होता है कि हर्ष, पुलकेशिन द्वितीय से पराजित हुआ। यह युद्ध नर्मदा नदी के तट पर हुआ।

Pariksha Manthan

- हर्षवर्धन का शासन काल धर्म, साहित्य तथा कला की उन्नति का काल रहा।
- इसने सभी धर्मों को संरक्षण दिया। इसके समय दो धार्मिक सभाओं का आयोजन हुआ। प्रथम-कन्नौज सभा (पांचवी बौद्ध संगीति) इसकी अध्यक्षता ह्वेनसांग ने किया। इसमें महायान का प्रचार-प्रसार किया गया। तथा महामोक्षपरिषद का आयोजन, इस आयोजन में हर्ष अपनी समस्त आय का दान कर देता था, यह आयोजन प्रत्येक पांच वर्ष बाद प्रयाग में आयोजित की जाती थी।
- इसके काल में शिक्षा तथा साहित्य में भी उन्नति हुई। इस काल में नालन्दा विश्वविद्यालय शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र था, हर्ष ने इसके खर्च हेतु 100 गाँवों का अनुदान दिया था।
- इस काल में संस्कृत भाषा महत्वपूर्ण थी।
- इसके दरबार में बाणभट्ट नामक विद्वान रहते थे जिन्होंने हर्षचरित, कादम्बरी, पूर्वपीठिका, चंण्डीशतक नामक ग्रंथों की रचना की।
- हर्ष स्वयं संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान था इसने रत्नावली, नागानन्द तथा प्रियदर्शिका नामक नाटक ग्रंथों की रचना की।

महत्वपूर्ण तथ्य

- ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार कहा गया है।
- हर्ष की कुछ स्वर्ण मुद्राओं में बैल पर आरुढ़ शिव एवं पार्वती का चित्र अंकित मिलता है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था। 637 ई. में यह नालंदा विश्वविद्यालय गया, इस समय यहां के कुलपति आचार्य शीलभद्र थे।
- पुलकेशिन-II के दरबारी विद्वान रविकीर्ति द्वारा रचित ऐहोल अभिलेख में शक संवत् का वर्ष 556 दिया हुआ है। चूंकि शक संवत् का प्रारम्भ 78 ई. में हुआ है, अतः 556 में 78 जोड़ देने पर जो तिथि आती है वह है 634 ई.।
- कवि बाण भट्ट जो हर्ष के दरबार में रहते थे, इनका जन्म बिहार के औरंगाबाद जिले में सोन नदी के तट पर स्थित 'प्रीथिकूटा' नामक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम चित्रभानु एवं माता का नाम राजदेवी था।

राजपूत काल - (पूर्व मध्यकाल)
(750 ई. - 1200 ई.)

त्रिपक्षीय संघर्ष

- 600 ई.पू. से 600 ई. तक लगभग 1000 वर्षों तक भारतीय राजनीति का केन्द्र मगध तथा उसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।
- 600 ई. के बाद पाटलिपुत्र का स्थान कन्नौज ने ले लिया।
- कन्नौज की महत्ता हर्ष ने बढ़ाई, कन्नौज को अब महोदय श्री कहा जाने लगा।
- हर्ष की मृत्यु के बाद लगभग 150 वर्षों तक कन्नौज में कोई महत्पूर्ण शासक नहीं हुआ।
- बंगाल, बिहार में पाल वंश, मालवा, राजस्थान तथा गुजरात में गुर्जर प्रतिहार और दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट वंश का आधिपत्य था।
- इन तीनों राजवंशों की नज़र इस पर थी, फलस्वरूप त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ।
- त्रिपक्षीय संघर्ष का मूल कारण कन्नौज की राजनीतिक महत्ता, उपजाऊ क्षेत्र तथा व्यापारिक मार्गों पर स्थित होना था।

पाल वंश

- पाल वंश का उदय बंगाल में हुआ।

Pariksha Manthan

- पाल वंश का संस्थापक 'गोपाल' था।
- गोपाल के बाद इसका पुत्र धर्मपाल शासक हुआ, यह इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक था।
- इसने महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक की उपाधियां धारण की, इससे पता चलता है कि यह महान शासक था।
- धर्मपाल के समय से ही त्रिपक्षीय संघर्ष शुरू हुआ।
- धर्मपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था, इसने विक्रमशिला बौद्ध विहार और सोमपुर बौद्ध विहार की स्थापना की।
- इसने गुर्जर प्रतिहार शासक मिहिर भोज को पराजित किया।
- इसके समय जावा के शैलेन्द्र वंशीय शासक बलपुत्र देव ने अपना एक दूतमंडल इसके दरबार में भेजा।
- दूतमण्डल भेजने का उद्देश्य, नालन्दा में जावा के विद्यार्थियों के लिए विशेष विद्यालय की स्थापना एवं खर्च हेतु मगध के पाँच गांवों का अनुदान देना था।
- नारायण पाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था लेकिन अनेक शिव मंदिरों का निर्माण कराया।
- संध्याकर नन्दी रामपाल के दरबार में रहते थे। इन्होंने रामचरित नामक ग्रंथ की रचना संस्कृत भाषा में की।
- जिमूतवाहन नामक विद्वान हुए इन्होंने 'दायभाग' नामक कानूनी ग्रंथ की रचना की।
- इस काल में शिक्षा की उन्नति हुई, विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना धर्मपाल ने की। इसमें अतिश दीपांकर श्री ज्ञान जैसे महान विद्वान थे।
- सभी पाल शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे, अन्तिम रूप से बौद्ध धर्म ने यहीं संरक्षण प्राप्त किया।

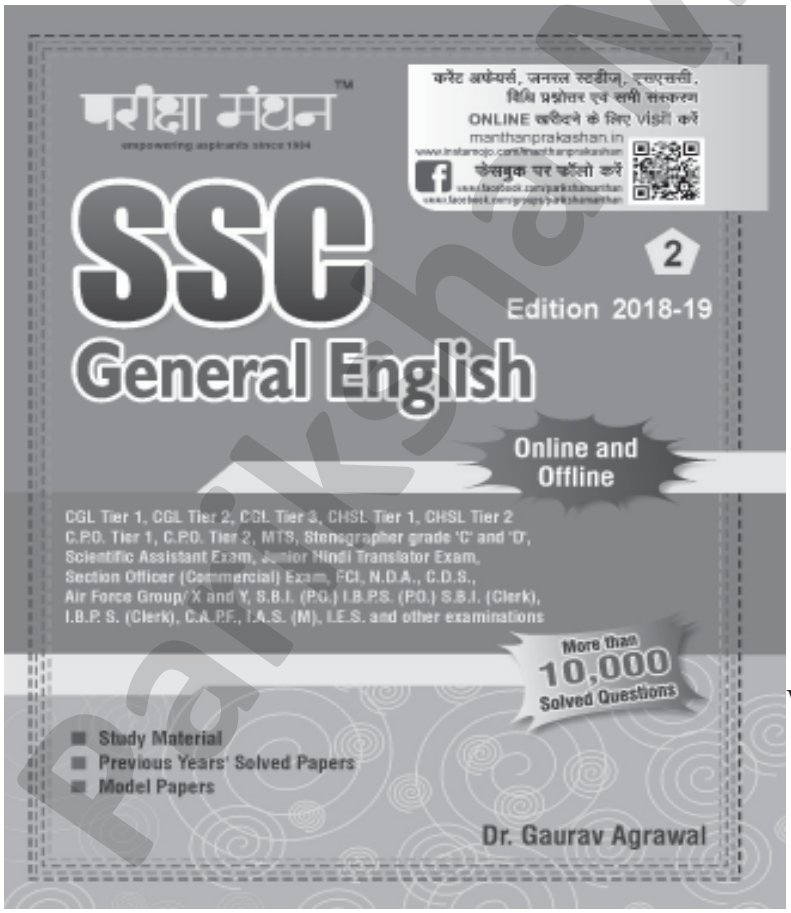

खरीदने के लिए लॉगऑन करें

www.manthanprakashan.in

गुर्जर-प्रतिहार वंश

- गुर्जर-प्रतिहारों की अनेक शाखाओं में उज्जैनी के गुर्जर प्रतिहार प्रसिद्ध हुए।
- उज्जैनी के गुर्जर-प्रतिहार वंश की स्थापना 730 ई. में नागभट्ट प्रथम ने की।
- नागभट्ट प्रथम का राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग से युद्ध हुआ जिसमें नागभट्ट प्रथम पराजित हुआ।
- वत्सराज ने कन्नौज पर आक्रमण किया तथा इन्द्रायुध को पराजित किया।
- वत्सराज के बाद इसका पुत्र नागभट्ट द्वितीय शासक हुआ इसने भी कन्नौज पर आक्रमण किया तथा चक्रायुध को पराजित किया तथा आगे बढ़कर धर्मपाल को पराजित किया।
- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर गुर्जर-प्रतिहार वंश की स्थापना की।
- नागभट्ट द्वितीय ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- इसका पौत्र मिहिर भोज महत्वपूर्ण शासक हुआ। यह कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार वंश का सबसे महान शासक हुआ।
- मिहिर भोज के ग्वालियर प्रशस्ति में उल्लेख मिलता है कि इसमें वाराह की उपाधि धारण की और स्वयं को विष्णु का अवतार घोषित किया।
- मिहिर भोज का राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय से नर्मदा नदी के तट पर युद्ध हुआ, जिसमें मिहिर भोज पराजित हुआ तथा वापस कन्नौज आ गया।
- इसके समय में अरबी यात्री सुलेमान भारत आया, सुलेमान के अनुसार भारतीय शासकों में मिहिर भोज के पास सबसे बड़ी सेना थी। सुलेमान इसे इस्लाम का शत्रु बताया है।
- इसके दरबार में राजशेखर रहते थे जो राजकवि तथा गुरु दोनों थे।
- राजशेखर ने कर्पूर मंजरी नामक नाटक ग्रंथ की रचना प्राकृत भाषा में तथा काव्यमीमांसा नामक काव्य साहित्य की रचना संस्कृत में की।
- महीपाल के समय बगदाद निवासी अलमसूदी 916 ई. में भारत आया।
- गुर्जर प्रतिहारों के समय 1019 ई. में महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया, इस समय यहां का शासक राज्यपाल था। यह बिना युद्ध किए कन्नौज छोड़कर भाग गया।

राष्ट्रकूट वंश

- राष्ट्रकूट उस भौगोलिक इकाई के शासक थे जिसे राष्ट्र कहा जाता था अतः यह राष्ट्रकूट कहलाए।
- राष्ट्रकूट वंश का संस्थापक दन्तिदुर्ग को माना जाता है इनकी राजधानी मान्यखेट थी।
- इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- कृष्ण प्रथम ने एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण कराया।
- कृष्ण प्रथम के बाद ध्रुव शासक हुआ। यह पहला राष्ट्रकूट शासक था जिसने त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया।
- गोविन्द तृतीय ने दक्षिण के अनेक शासकों को पराजित कर इसने 'कीर्तिनारायण' की उपाधि धारण की।
- गोविन्द तृतीय के बाद अमोघवर्ष प्रथम शासक हुआ। यह अपने पिता की भांति महान शासक हुआ।
- अमोघवर्ष प्रथम ने 'नृपतुंग की उपाधि धारण की।
- इसने पाल शासक नारायण पाल को पराजित किया।
- यह पहले देवी का पूजक था तथा बाद में जैन धर्म का अनुयायी बना तथा अन्तिम समय में जैन संन्यासी हो गया। इसके गुरु आचार्य जिनसेन थे।

साम्राज्य के लिए संघर्ष का युग (1000-1200 ई.)

- गुर्जर प्रतिहार वंश का पतन के बाद देश का अत्यधिक विश्रृंखलन हो गया।

Pariksha Manthan

- इसी समय पूरा उत्तर भारत महमूद गजनवी के आक्रमण से आक्रान्त हो रहा था।
- गुर्जर प्रतिहार वंश के साम्राज्य के खण्डहर पर अनेक राजवंशों का उदय हुआ।

मालवा	-	परमार वंश
बुन्देलखण्ड	-	चंदेल वंश
अजमेर	-	चौहान वंश
काशी एवं कन्नौज	-	गाहड़वाल वंश
त्रिपुरी	-	कलचुरि वंश
गुजरात	-	चालुक्य वंश (सोलंकी वंश)

ये सभी अपने-अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए संघर्ष किया। इसीलिए इसे साम्राज्य के लिए संघर्ष का युग कहा जाता है।

मालवा के परमार वंश

- प्रारम्भ में ये गुर्जर प्रतिहारों के सामन्त थे।
- परमारों का आदि पूर्वज परमार था।
- इनकी प्रारम्भिक राजधानी उज्जैनी थी।
- मालवा के परमार वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक मुंजराज था। इसने अनेक विजय की।
- मुंजराज स्वयं विद्वान और विद्वानों का संरक्षक था इसे 'कविमित्र कहा गया।
- मुंजराज के दरबारी राजकवि पद्मगुप्त (परिमलगुप्त) थे इन्होंने 'नवसाहसांकचरित' नामक ग्रंथ की रचना की।
- भोजराज इस वंश का सबसे महान शासक हुआ।
- इसने उज्जैनी के स्थान पर धारानगरी को अपनी राजधानी बनाया।
- भोजराज ने ही धारानगरी को बसाया था।
- राजा भोज स्वयं विद्वान और विद्वानों का बहुत बड़ा संरक्षक था इसने कविराज की उपाधि धारण की।
- धनपाल भोजराज के समय तक जीवित रहा और भोजराज के कहने पर 'तिलक मंजरी' नामक ग्रंथ की रचना की।

गुजरात के चालुक्य/सोलंकी वंश

- चालुक्यों के आदिपूर्वज चुलुक था इसलिए इन्हें चालुक्य कहा गया।
- चालुक्य वंश का संस्थापक मूलराज सोलंकी था इसलिए इसे सोलंकी वंश कहा जाता है।
- मूलराज सोलंकी ने अन्हिलवाड़ा को अपनी राजधानी बनायी यही इनकी अन्तिम राजधानी थी।
- भीम प्रथम गुजरात के सोलंकी शासन का महत्वपूर्ण शासक बना।
- जिस समय गुजरात का शासक भीम प्रथम था उसी समय महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण किया, यह महमूद गजनवी के आक्रमण को रोक नहीं सका।
- भीम प्रथम के मंत्री तेजपाल एवं विमलपाल ने आबूपर्वत पर दिलवाड़ा के जैनमंदिर का निर्माण कराया।
- भीम प्रथम के बाद इसका पुत्र कर्णदेव शासक बना।
- इसके बाद इसका पुत्र जयसिंह सिद्धराज शासक बना, यह शक्तिशाली शासक था।
- इसने यशोवर्मा को पराजित कर 'अवन्ति नाथ' की उपाधि धारण की।
- इसने खम्भात में एक मस्जिद का निर्माण कराया।
- कुमारपाल इस वंश का सबसे महान शासक था तथा बड़े राज्य का निर्माण किया।
- इसने सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण कराया था।
- इसके बाद अजयपाल शासक बना। इसके समय जैनियों पर अत्यधिक अत्याचार किया गया।
- इसके बाद मूलराज द्वितीय तथा भीम द्वितीय शासक हुए। इन्हीं के समय 1178 ई. में मुहम्मद गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया लेकिन भीम द्वितीय के नेतृत्व में चालुक्य सेना ने गोरी को पराजित किया।

Pariksha Manthan

चंदेल वंश

- इस वंश का उदय बुन्देलखण्ड क्षेत्र में हुआ। शुरुआत में ये गुर्जर प्रतिहारों के सामन्त थे।
- इस वंश का प्रथम शासक नन्नुक था। यह सामन्त शासक था।
- इसके बाद क्रमशः वाक्पति और जेजा/जय शक्ति शासक हुए।
- जेजा के नाम पर ही चन्देल क्षेत्र का नाम जेजाक भुक्ति पड़ा।
- इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक यशोवर्मन था।
- धंग इस वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक हुआ। इसने अनेक विजय कर साम्राज्य विस्तार किया।
- इसने कालिंजर में एक सुदृढ़ किले का निर्माण कराया।
- इसने खजुराहो के स्थान पर कालिंजर को अपनी राजधानी बनायी और 'कालिंजराधिपति' की उपाधि धारण की।
- राजा धंग अपनी 100 पत्नियों के साथ प्रयाग आया और पत्नियों सहित जलसमाधि ले लिया।
- इसके बाद इसका पुत्र गंड शासक हुआ। इसने अपने पिता के राज्य को सुरक्षित रखा।
- इसके बाद विद्याधर शासक हुआ। यह इस वंश का सबसे महान शासक था।
- 1020-21 में महमूद गजनवी ने कालिंजर पर आक्रमण किया विद्याधर ने इससे युद्ध प्रारम्भ किया युद्ध भूमि में इसने सर्वक्षार की नीति अपनायी।

कलचुरि वंश

- कलचुरियों की अनेक शाखाओं में त्रिपुरी के कलचुरि प्रसिद्ध हुए।
- इस वंश का प्रथम शासक कोकल्ल देव था।
- इस वंश का पहला महान शासक गांगेयदेव था। इसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- इसने अपनी विजयों के उपलक्ष्य में विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- इसके शत्रु भी इसे 'जितविश्व' अर्थात् विश्व विजेता कहते थे।
- इसने लक्ष्मी प्रकार के सोने एवं चाँदी के सिक्के प्रचलित किए।

चौहान वंश

- चौहानों की अनेक शाखाओं में शाकम्भरी (राजस्थान) के चौहान महत्वपूर्ण हुए।
- इस वंश का प्रथम शासक तथा संस्थापक वसुदेव था।
- सिंहराज इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- अजय राज अपने नाम पर अजमेर नामक नगर बसाया और इसे अपनी राजधानी बनायी।
- विग्रहराज बीसलदेव चतुर्थ इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक हुआ।
- इसका पंजाब के गजनवी शासकों से युद्ध हुआ और गजनवी शासक पराजित हुए।
- इसी उपलक्ष्य में इसने 'तुरुष्कजित' की उपाधि धारण की।
- इसने स्वयं संस्कृत भाषा में 'हरिकेलि नाटिका' नामक ग्रंथ लिखा।
- इसके दरबार में संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान सोमदेव रहता था। इसने संस्कृत भाषा में 'ललित विग्रह राज' की रचना की।
- इसने अजमेर में सरस्वती विद्यामंदिर नामक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की।
- इसके बाद सोमेश्वर द्वितीय शासक बना इसने अपने पिता के साम्राज्य को सुरक्षित रखा।
- इसके बाद पृथ्वीराज चौहान (पृथ्वीराज तृतीय) शासक बना।
- इस वंश का यह सबसे महान शासक था।

Pariksha Manthan

- दिल्ली के शासक अनंगपाल के पुत्र के अभाव में पृथ्वीराज चौहान को अपना उत्तराधिकारी चुना। इसी के समय दिल्ली चौहानों की राजधानी बनी।
- पृथ्वीराज चौहान का सबसे प्रबल शत्रु जयचन्द था।
- 1191 में तराईन के प्रथम युद्ध में इसने मुहम्द गोरी को पराजित किया लेकिन 1192 में तराईन के द्वितीय युद्ध में मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया।
- पृथ्वीराज के दरबार में जयनायक भट्ट जैसे विद्वान रहते थे। जिसने 'पृथ्वी राज विजय' की रचना की।
- पृथ्वी राज का दराबारी कवि चन्द्रबरदायी था जिसने 'पृथ्वीराज रासों' की रचना की।

गाहड़वाल वंश

- गाहड़वाल प्रतिष्ठान (झूँसी)/कौशाम्बी के चन्द्रवंशियों की सन्तान थे।
- सर्वप्रथम 1085 ई. में चन्द्रदेव ने चन्देल शासक कीर्तवर्मनके सेनापति गोपाल को पराजित कर अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।
- इसने वाराणसी को अपनी राजधानी बनायी।
- इसने कन्नौज को भी जीतकर अपने राज्य में शामिल किया।
- गोविन्द चन्द्र इस वंश का पहला महान शासक हुआ। इसने युवराज काल में ही तुर्कों के आक्रमण से वाराणसी रक्षा की।
- इसका महासान्धिविग्रहिक (विदेश मंत्री) लक्ष्मीधर प्रकाण्ड विद्वान था जिसने 'कृत्यकल्पतरु' नामक ग्रंथ की रचना की।
- इसके बाद विजय चन्द्र शासक बना इसने वाराणसी के स्थान पर कन्नौज को अपनी राजधानी बनायी।
- इसके बाद जयचन्द शासक बना यह इस वंश का सबसे महान शासक था।
- 1194 ई. में मुहम्मद गोरी ने इसके राज्य पर आक्रमण किया परिणामस्वरूप चन्दावर का युद्ध हुआ जिसमें जयचन्द पराजित हुआ और मारा गया।
- जयचन्द के दरबार में संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान श्री हर्ष रहता था जिसने 'नैषधचरित' तथा 'खंडन खंड खाद्य' की रचना की।

दक्षिण भारत

संगम युग

- सुदूर दक्षिण में कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियों के दक्षिण के भू-भाग को प्राचीनकाल में त्रामिरदेश या तमिलकम् प्रदेश के नाम से जाना जाता था।
- इस क्षेत्र में प्राचीनकाल से ही चोल, पांड्य एवं चेर नामक तीन शक्तियाँ शासन करती थीं।
- **संगम**-संगम तमिल कवियों के मंडल या सम्मेलन को कहा जाता था। 8वीं शताब्दी के एक तमिल ग्रंथ इड़ैयनार अगप्पोरुल पर लिखित भाष्य के अनुसार कुल तीन संगम हुए।

संगम	स्थल	अध्यक्ष
प्रथम संगम	मदुरा	ऋषि अगात्तियार
द्वितीय संगम	कपाटपुरम् /अलैवे	तोलकाप्पियार
तृतीय संगम	मदुरा	नक्कीरार

संगम साहित्य

- संगम साहित्य अंतिम रूप से द्वितीय शताब्दी ई. से लेकर छठी शताब्दी ई. के बीच में रचे गये।
- संगम साहित्य तमिल भाषा में लिखे गये हैं तमिल भाषा दक्षिण भारत की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध भाषा है।

Pariksha Manthan

- प्रथम संगम का कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। द्वितीय संगम का एक मात्र ग्रंथ तोलकाप्पियम् उपलब्ध है। शेष सभी तृतीय संगम से सम्बन्धित हैं।

चोल वंश

- दक्षिण पूरब में चोलों का उदय हुआ।
- इनकी राजधानी उरैयूर थी।
- इस वंश का सबसे महान शासक करिकाल था। करिकाल का शाब्दिक अर्थ है जले हुए पैर वाला।
- रुद्रकन्नार जैसे विद्वान इसके दरबार में रहते थे।
- करिकाल ने सिंचाई हेतु अनेक तालाबों का निर्माण कराया।

पांड्य वंश

- दक्षिण में पांड्यों का उदय हुआ। इनकी राजधानी मदुरा थी।
- इस वंश का प्रथम ज्ञात शासक नेडियोन था जिसका अर्थ है लम्बे कद वाला। इसी ने सागर पूजा की परम्परा प्रारम्भ की थी।
- इस वंश का सबसे महान शासक नेडुज्जेलियान तलैयालंगानम् था।

चेर वंश

- चेरों का उदय दक्षिण-पश्चिम भारत में हुआ।
- इनकी दो राजधानियां थीं, वांजि एवं तोंडी।
- चेरों का प्रथम ऐतिहासिक शासक उदियंजीरल था।
- चेरों का राजचिन्ह धनुष था।

महत्वपूर्ण तथ्य

- संगम ग्रंथ मणिमेखलै में मदुरा नगर का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है।
- तमिल विद्वान पेरुन्देवनार ने महाभारत का तमिल में अनुवाद किया।
- तीनों संगमों का आयोजन पांड्य राज्य में हुआ था। इसके संरक्षक भी पांड्य शासक थे।
- तगडूर के शासक आदिगैमन ने दक्षिण भारत में गन्ने की खेती प्रारम्भ कराई थी।

खरीदने के लिए लॉगऑन करें

www.manthanprakashan.in

चालुक्य वंश

- संगम युगीन चोल, पांड्य एवं चेर वंश के पतन के बाद दक्षिण भारत में नई शक्तियों का उदय हुआ, इनमें चालुक्य प्रमुख थे।
- इनके पूर्वज चलुक या चुल्क के नाम पर इस वंश का नाम चालुक्य वंश पड़ा।
- चालुक्यों की शक्ति का केन्द्र बादामी या वातापी था। बाद में इनकी शाखायें बनी।

बादामी का चालुक्य वंश

- इस वंश का संस्थापक जयसिंह था। इसने राष्ट्रकूटों एवं कदम्बों से संघर्ष कर सत्ता स्थापित किया।
- इसी ने बादामी पर अधिकार करके यहां एक दुर्ग का निर्माण कराया।

पुलकेशिन द्वितीय

- यह इस वंश का सबसे महान शासक हुआ।
- इसने अपने चाचा मंगलेश की हत्या करके गद्दी प्राप्त की।
- इसने उत्तर भारत के सबसे शक्तिशाली राजा हर्षवर्धन को नर्मदा नदी के तट पर पराजित कर परमेश्वर की उपाधि धारण की।
- रविकीर्ति द्वारा रचित ऐहोल अभिलेख से पुलकेशिन द्वितीय की हर्षवर्धन पर विजय की जानकारी मिलती है।
- इसी के शासन काल में 636 ई. में अरबों का भारत पर पहला आक्रमण थाना बंदरगाह पर हुआ था। इसने अरबों को पराजित कर भगा दिया।
- फारस के शासक खुशरो द्वितीय का दूतमंडल इसके दरबार में आया था।
- इसके शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग बादामी आया था।

पल्लव वंश

- दक्षिण में सातवाहन साम्राज्य के पतन के बाद पल्लव वंश का उदय हुआ।
- पल्लव मूलतः दक्षिण भारत के ही निवासी थे। ये भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण थे।
- प्रारम्भ में ये सातवाहनों के सामंत थे बाद में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर लिया।

शिव स्कंद वर्मा

- यह पल्लव वंश का प्रथम शासक था। इसने कांची को अपनी राजधानी बनाकर शासन किया।

विष्णुगोप

यह गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का समकालीन था। प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से पता चलता है कि समुद्रगुप्त ने इसे पराजित किया था।

सिंह विष्णु

- इसके समय से पल्लव वंश की महानता एवं गौरव के युग की शुरुआत हुई।
- इसने अवनिसिंह की उपाधि धारण की।
- इसी के दरबार में महाकवि भारवि रहते थे।

महेन्द्रवर्मन प्रथम

- इसका शासनकाल राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था।
- चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय से यह पराजित हुआ।
- इसने 'मत्तविलास प्रहसन' नामक ग्रंथ की रचना की।

नरसिंह वर्मन प्रथम 'मामल्ल'

- यह इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं महान शासक था।
- इसके शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग कांची आया था।

Pariksha Manthan

शंकराचार्य 788 - 820 ई.

जीवन परिचय

- जन्म- 788 ई. में केरल में पूर्णा नदी के तट पर बसे कालड़ी ग्राम में।
- पिता - शिवगुरु, माता- सुभद्रा
- गुरु - गोविन्दपाद
- बद्रिकाश्रम में ही बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखा।
- महिष्मती (म. प्र.) में मंडन मिश्र एवं उनकी पत्नी भारती को शास्त्रार्थ में पराजित किया।
- तुंगभद्रा नदी के तट पर शृंगेरी मठ की स्थापना की।
- पुरी (उड़ीसा) में गोवर्धन मठ की स्थापना की।
- द्वारिका (गुजरात) में शारदा मठ की स्थापना की।
- बद्रिकाश्रम में इन्होंने ज्योतिर्मठ की स्थापना की।
- 32 वर्ष की आयु में केदारनाथ क्षेत्र में इनकी मृत्यु हुई।

शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ

1. शृंगेरी	-	शृंगेरी मठ
2. पुरी	-	गोवर्धन मठ
3. द्वारिका	-	शारदा मठ
4. बद्रिकाश्रम	-	ज्योतिर्मठ

खरीदने के लिए लॉगऑन करें

www.manthanprakashan.in

चोल साम्राज्य

- नौवीं शताब्दी के मध्य में पुनः चोलों का उदय हुआ।

विजयालय 850 - 871 ई.

- विजयालय चोल साम्राज्य का संस्थापक था।
- पल्लवों की अधीनता में उरैयूर को केन्द्र बनाकर अपनी शक्ति का विस्तार प्रारम्भ किया।
- मुत्तरैयरों को पराजित कर उनसे तंजौर छीन लिया एवं तंजौर को अपनी राजधानी बनाई। इस उपलक्ष्य में इसने नरकेसरी की उपाधि धारण की।

आदित्य प्रथम 871-907 ई.

- यह पल्लव शासक अपराजितवर्मन के अधीन था।
- साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा के कारण अपराजितवर्मन के विरुद्ध इसने विद्रोह कर दिया। इसी विद्रोह में इसने अपराजितवर्मन की हत्या कर दी एवं पल्लव राज्य पर अधिकार कर लिया। इस उपलक्ष्य में इसने कोदंडराम की उपाधि धारण की।
- राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय ने अपनी पुत्री का विवाह आदित्य प्रथम के साथ किया।

परान्तक प्रथम 907-955 ई.

- गद्दी पर बैठते ही राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय के साथ युद्ध हुआ।
- इसके जीवन के अंतिम वर्षों में राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय ने इसके राज्य पर आक्रमण किया। परिणामस्वरूप तट्टोलम का युद्ध हुआ जिसमें परान्तक प्रथम पराजित हुआ।

राजराज प्रथम 985-1014 ई.

- यह इस वंश का पहला महान शासक हुआ।
- राजराज प्रथम ने लंका अभियान किया एवं यहां के शासक महेन्द्र पंचम को पराजित कर उत्तरी लंका पर अधिकार कर लिया।
- इसने उत्तरी लंका की राजधानी पोलोन्नरुवा को बनाई और इसका नया नाम जननाथ मंगलम् रखा।
- राजराज प्रथम के काल से ही चोल चालुक्य संघर्ष की शुरुआत हुई।
- इसने चालुक्य शासक सत्याश्रय को पराजित कर वेंगी पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।
- राजराज प्रथम द्वारा मालद्वीव एवं कलिंग विजय का भी उल्लेख मिलता है।

राजेन्द्र प्रथम 1014-44 ई.

- यह इस वंश का सबसे महान शासक हुआ।
- इसने लंका अभियान किया और यहां के शासक महेन्द्र पंचम को पूर्णतः पराजित कर सम्पूर्ण लंका जीतकर चोल राज्य में मिला लिया और महेन्द्र पंचम को बन्दी बनाकर अपने कारागार में रखा।
- इसने दक्षिण-पूर्व एशिया स्थित कटाह राज्य (श्रीविजय) पर आक्रमण किया और यहां के शासक संग्राम विजय तुंगवर्मन को पराजित कर बन्दी बना लिया।
- दक्षिण-पूर्व एशिया विजय के उपलक्ष्य में इसने कडारकोंड की उपाधि धारण की।
- राजेन्द्र प्रथम अपने पुत्र विक्रम के नेतृत्व में बंगाल अभियान किया और यहां के शासक महीपाल को पराजित किया।
- बंगाल की खाड़ी को चोलों की झील कहा जाने लगा।
- राजेन्द्र प्रथम इस विजय को स्मारक विजय बनाने हेतु 'गंगैकोंडचोल' की उपाधि धारण की और गंगैकोंडचोलपुरम नामक नगर बसाया और इसे अपनी राजधानी बनाई।

राजाधिराज प्रथम-1044-1052 ई.

- चालुक्य शासक सोमेश्वर प्रथम को पराजित कर उसकी राजधानी कल्याणी में राज्याभिषेक कराया और इस उपलक्ष्य में विजय राजेन्द्र की उपाधि धारण की।
- चोल शासको में इसी ने अश्वमेघ यज्ञ किया था।

Pariksha Manthan

कुलोतुंग प्रथम 1070-1122 ई.

- इसका लंका नरेश विजयबाहु के साथ लम्बा संघर्ष चला। अंततः दोनों में संधि हो गई और इसने लंका को चोल प्रभुत्व से मुक्त कर दिया।
- इसने अपने राज्य की समस्त भूमि की पैमाइश कराई एवं कर निर्धारण की लाभकारी प्रणाली प्रारम्भ की। इसने छोटे-छोटे अनेक करों को समाप्त कर 'शुगंदवित्त' (करों को हटाने वाला) की उपाधि धारण की।
- कैंटन (चीन) के बौद्ध विहार को इसने 6 लाख मुद्रा दान स्वरूप दिया।

कुलोतुंग द्वितीय 1135-1150 ई.

- यह कट्टर शैव था। इसने चिदंबरम् स्थित नटराज मंदिर के प्रांगण में स्थित भगवान विष्णु की मूर्ति को समुद्र में फेंकवा दिया था।

कुलोतुंग तृतीय 1179-1216 ई.

- यह इस वंश का अंतिम महान शासक हुआ। इसके शासनकाल में भीषण अकाल पड़ा।
- अकाल के समय में व्यापक राहत कार्यवाही की प्रजा में धन एवं अनाज के वितरण के साथ इसने बांधों एवं तालाबों का निर्माण कराया। अतः यह अपने लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए जाना जाता है।

चोलकालीन साहित्य

- चोल काल में तमिल भाषा का अत्यधिक विकास हुआ। इस काल में तमिल भाषा में अनेक ग्रंथ रचे गये।

लेखक	-	रचनायें
जयगोंदार	-	कलिंगत्तुपर्णि
शैक्किलार	-	पेरियपुराणम्
ओतुकुत्तन	-	कुलोतुंग शोलनउला
कम्बन	-	रामावतारम् (तमिल रामायण)

चोलकालीन मंदिर

मंदिर	निर्माता	स्थान
1. विजयालय चोलीश्वर मंदिर	विजयालय	नर्तमालै
2. सुन्दरेश्वर मंदिर	आदित्य प्रथम	तिरुक्ट्टलै
3. नागेश्वर मंदिर	आदित्य प्रथम	कुम्बकोनम्
4. बाल सुब्रमण्यम् मंदिर	आदित्य प्रथम	पुदुककोटै
5. कोरंगनाथ मंदिर श्रीनिवासनल्लूर	परान्तक प्रथम	
6. बृहदीश्वर (राजराजेश्वर) मंदिर	राजराज प्रथम	तंजौर
7. बृहदीश्वर मंदिर	राजेन्द्र प्रथम	गंगैकोंडचोलपुरम
8. ऐरावतेश्वर मंदिर	राजराज द्वितीय	दारासुरम्
9. कम्पहरेश्वर मंदिर	कुलोतुंग तृतीय	त्रिभुवनम्

खरीदने के लिए लॉगऑन करें
www.manthanprakashan.in

Pariksha Manthan

करेंट अफेयर्स की राष्ट्रीय पत्रिका

परीक्षा मंथन®

empowering aspirants since 1984

e-book series

Buy ONLINE
manthanprakashan.in
www.instamojo.com/manthanprakashan

Follow us on Facebook
www.facebook.com/parikshamanthan
www.facebook.com/groups/parikshamanthan

आधुनिक भारत का इतिहास

- IAS, UPPCS, UKPCS,
- PCSJ, CGPCS, RAS,
- JKPCS, BPSC,
- MPPCS, CDS, SSC,
- RAILWAY etc.

परीक्षा मंथन®

ई-बुक श्रृंखला-3

सामान्य अध्ययन

आधुनिक भारत का इतिहास

संस्करण-2019-20

(संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग, लोअर सबॉर्डिनेट, यूडीए-एलडीए, पीसीएस (जे), कर्मचारी चयन आयोग, रेलवे भर्ती बोर्ड, एनडीए, सीडीएस, सीपीएफ, एलआईसी, जीआईसी, बी-एड, यूजीसी-नेट तथा अन्य सभी परीक्षाओं हेतु एक सम्पूर्ण संदर्भ ग्रन्थ)

मूल्य : ₹ 70/-

(सत्तर रुपए मात्र)

मंथन प्रकाशन

7R/5 कैलाशपुरी कॉलोनी, ताशकंद मार्ग, (स्प्रिंग डेल नर्सरी स्कूल के सामने),

सिविल लाइन्स, इलाहाबाद - 211001

मोबाइल नं. : 09335151971

Website: www.manthanprakashan.in ; www.instamojo.com/manthanprakashan

Facebook: www.facebook.com/parikshamanthan

वैधानिक सूचना

संपादक की लिखित अनुमति के बिना 'परीक्षा मंथन : E-book श्रृंखला-आधुनिक भारत का इतिहास' से किसी सामग्री का न तो अनुकरण किया जा सकता है और न ही इसे किसी रूप में पुनः किसी माध्यम द्वारा प्रकाशित या प्रसारित किया जा सकता है। 'परीक्षा मंथन : E-book श्रृंखला-आधुनिक भारत का इतिहास' में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है। समस्त वाद-प्रतिवाद इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायिक क्षेत्राधिकार के अधीन ही मान्य होंगे।

Parikshamanthan

परीक्षा मंथन®

ई-बुक श्रृंखला- 3

सामान्य अध्ययन

आधुनिक भारत का इतिहास

अनुक्रमणिका

- भारत में यूरोपीय वाणिज्य का प्रारम्भ/भारत में यूरोपियों का आगमन....3
- बंगाल में अंग्रेजी प्रभुसत्ता....9
- सिक्ख राज्य एवं आँग्ल-सिक्ख युद्ध....15
- भारत में ब्रिटिश राज्य का आर्थिक प्रभाव....21
- 1857 का विद्रोह....23
- कृषक आन्दोलन....27
- आधुनिक शिक्षा का विकास....29
- 19वीं शताब्दी पुनर्जागरण....30
- मुस्लिम सुधार आन्दोलन....33
- गवर्नर एवं गवर्नर जनरल/वायसराय....36
- राष्ट्रीय आन्दोलन (1885-1947 ई.)....44
- कांग्रेस के उदय में सहायक कारक....46
- कांग्रेस की स्थापना....47
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महत्वपूर्ण अधिवेशन....48
- बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी तथा बहिष्कार आन्दोलन....53
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आन्दोलन....55
- होमरूल आन्दोलन....56
- क्रान्तिकारी आन्दोलन....57
- विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन....59
- द्वितीय चरण का क्रान्तिकारी आन्दोलन....60
- कांग्रेस आन्दोलन का तीसरा चरण (1919-1947 ई.)....62
- रौलेट एक्ट (1919 ई.)....65
- खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन (1920-22 ई.)....66
- साइमन कमीशन....68
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930 ई.)....71
- 1937 का प्रान्तीय चुनाव....75
- भारत छोड़ो आन्दोलन (1942)....77
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम (1947 ई.)....84

Pariksha Manthan

आधुनिक भारत का इतिहास

भारत में यूरोपीय वाणिज्य का प्रारम्भ/भारत में यूरोपियों का आगमन

- मध्यकाल में भारत को पश्चिमी देशों से जोड़ने वाले दो समुद्री मार्ग थे—

  1. फारस की खाड़ी वाला मार्ग
  2. लाल सागर वाला मार्ग

- दो कारणों से लाल सागर का मार्ग दुष्कर था—

  1. मार्ग में अत्यधिक कुहरा पड़ना
  2. मार्ग में चट्टानों का पड़ना

- ज्यादातर व्यापार फारस की खाड़ी से जाने वाले मार्ग से होता था जिसे अधिक प्राथमिकता दी जाती थी।
- एशिया से यूरोप को जाने वाली वस्तुएं अनेक राज्यों एवं मार्गों से होकर गुजरती थी और हर राज्य को चुंगी और मार्ग कर देने पड़ते थे।
- यूरोप के व्यापार में इटली के व्यापारियों का एकाधिकार था, इसके कारण यूरोप के नवीन राज्य व्यापार से वंचित थे।
- 1453 ई. में तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया की विजय कर ऑटोमन साम्राज्य की स्थापना की और फारस की खाड़ी वाले मार्ग पर इनका नियंत्रण स्थापित हो गया और फिर तुर्कों ने इस क्षेत्र से होने वाले यूरोपीय व्यापार में दिक्कतें पैदा करने लगे।
- भौगोलिक खोजों एवं व्यापारिक मार्गों के आविष्कार में पुर्तगाल अग्रणी था। यहाँ का शासक प्रिंस हेनरी द नेविगेटर ने इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- 1486 ई. में एक पुर्तगाली नाविक बार्थ लोम्युडेज ने अफ्रीका स्थित उत्तमाशा द्वीप (केप ऑफ गुड होप) खोज निकाला।
- 1492 ई. में स्पेन की सहायता से कोलम्बस नामक एक नाविक भारत की खोज के लिए अटलांटिक महासागर में जोखिम से भरी यात्रा प्रारम्भ की। अन्ततः इसने अमेरिका की खोज की।
- 1498 ई. में एक पुर्तगाली वास्कोडिगामा उत्तमाशा अन्तरीप के रास्ते से होकर भारत पहुँचा जो एक सीधा मार्ग था।

यूरोपियों के भारत आगमन का क्रम

देश	वर्ष	कम्पनी का नाम
1.पुर्तगाली	1498 ई.	एस्तादो-द-इण्डिया
2.डच	1605 ई.	विरिंगदे-ओस्त-इंडिशे
3.ब्रिटिश	1608 ई.	द गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज
4.डेनिश	1616 ई.	डेनिश-ईस्ट इंडिया कम्पनी
5.फ्रांसीसी	1667 ई.	कम्पनी-द-इंड-ओरियंटल

पुर्तगाली

- पुर्तगाल द्वारा यूरोप और भारत के बीच सीधे समुद्री मार्ग खोजने में आर्थिक एवं धार्मिक कारण सक्रिय थे। आर्थिक कारण में व्यापार करना और धार्मिक कारण में एशिया में ईसाई धर्म का प्रचार करना।
- सर्वप्रथम 1498 ई. में वास्कोडिगामा भारत में कालीकट बंदरगाह (केरल-मालाबार तट) पहुँचा। यहाँ पहले से बसे हुए अरबी व्यापारियों द्वारा वैमनस्य का रवैया अपनाया लेकिन कालीकट के राजा जमोरिन ने इसका स्वागत किया और मसाले तथा जड़ी-बूटियाँ ले जाने की अनुमति प्रदान की।

Pariksha Manthan

- 1500 ई. में अल्वारेज केब्रल के नेतृत्व में पुर्तगालियों का दूसरा अभियान दल भारत गया, ये भी मसाला आदि लेकर पुर्तगाल पहुँचा।
- 1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया और इसी वर्ष इसने **कोचीन** में पुर्तगालियों की प्रथम फैक्ट्री की स्थापना की। अर्थात् भारत में प्रथम पुर्तगाली बस्ती बसाई।
- 1505 ई. में पुर्तगाली सरकार ने एक नई नीति अपनाई जिसके द्वारा भारत में एक गवर्नर की नियुक्ति की गयी। इस संदर्भ में पहला गवर्नर अल्मीडा बना।

अल्मीडा (1505-09 ई.)

- अल्मीडा ने **कोचीन** का दुर्गीकरण कराया तथा इसे अपना मुख्यालय बनाया।
- 1508-09 ई. में इसने गुजरात, मिस्र और तुर्की के संयुक्त मुस्लिम जल बेड़े को पराजित कर द्वीव पर अधिकार कर लिया।

अल्बूकर्क (1509-15 ई.)

- अल्बूकर्क भारत में पुर्तगाली सत्ता का वास्तविक संस्थापक था।
- इसने 1510 ई. में बीजापुर से **गोवा** को जीत लिया और किलेबंदी करवाई। एक शक्ति के केन्द्र के रूप में विकास हुआ।

वास्कोडिगामा (1524-29 ई.)

- वास्कोडिगामा 1524-29 ई. तक यहाँ का गवर्नर रहा और 1529 ई. में गोवा में इसकी मृत्यु हो गयी।
- गोवा में ही वास्कोडिगामा की कब्र बनाई गयी।
- सेंट जेबियर ईसाई संत की कब्र भी गोवा में है।

नुनो-द-कुन्हा (1529-38 ई.)

- यह अल्बूकर्क का वास्तविक उत्तराधिकारी था। इसने 1530 ई. में कोचीन की जगह गोवा को अपनी राजधानी बनाई।
- कुन्हा ने मद्रास के निकट सैन्थोम तथा बंगाल में **हुगली** में पुर्तगाली बस्तियों की स्थापना करके भारत के पूर्वी तट की ओर पुर्तगाली वाणिज्य का विकास किया।

पुर्तगालियों की देन

- भारत में प्रेस (छापाखाना) पुर्तगालियों की देन है।
- तम्बाकू की खेती सर्वप्रथम 1508 ई. में दक्षिण भारत में पुर्तगालियों ने शुरु करवाई फिर उत्तर भारत में शाहजहाँ के काल में आई।
- भारत में पपीता, अनन्नास, लीची, संतरा, आलू, शकरकंद, मूँगफली, काजू और बादाम की खेती पुर्तगालियों की देन थी।

प्रमुख पुर्तगाली गवर्नर

1. अल्मीडा 1505-09 ई.	— मिस्र, तुर्की एवं गुजरात की संयुक्त मुस्लिम जल बेड़े को पराजित किया।
	— कोचीन का दुर्गीकरण
	— केन्नानोर में पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना।
2. अल्बूकर्क 1509-15 ई.	— 1510 ई. में गोवा को जीतकर पुर्तगाली आधिपत्य की स्थापना।
	— भारत में पुर्तगाली सत्ता का वास्तविक संस्थापक।
3. नुनो-द-कून्हा 1529-38 ई.	— कोचीन के स्थान पर गोवा को राजधानी बनाया।
	— पूर्वी तट की ओर पुर्तगाली वाणिज्य का विस्तार।
	— हुगली एवं सेन्थोम में पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना।

डच

- डच हालैण्ड/नीदरलैण्ड के निवासी थे। सर्वप्रथम 1595 ई. में कार्नेलियस हाउटमैन के नेतृत्व में डचों का पहला

Pariksha Manthan

अभियान दल सुमात्रा पहुंचा।

- 1602 ई. में विभिन्न डच कम्पनियों को मिला करके हालैण्ड की सरकार ने युनाइटेड ईस्ट इंडिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड के नाम से एक व्यापारिक संस्थान की स्थापना की।
- सर्वप्रथम 1605 ई. में डच नौसेना नायक वाँ-देर-हेग के नेतृत्व में डचों का पहला अभियान दल भारत को भेजा और पूर्वी तट पर स्थित मसुलीपत्तनम में इन्होंने अपनी पहली फैक्ट्री स्थापित की।
- 1610 ई. में इन्होंने पूर्वी तट पर स्थित **पूलीकट** को अपनी फैक्ट्री बनाई और इसे अपना मुख्यालय भी बनाया। ये लोग यहाँ स्वर्ण पैगोडा (सोने की मुद्रा) ढालते थे।
- 1653 ई. में डचों ने बंगाल स्थित **चिनसुरा** में अपनी फैक्ट्री स्थापित की। बंगाल में यह डचों का सबसे बड़ा केन्द्र था।

डचों द्वारा भारत में स्थापित फैक्ट्रियाँ

वर्ष	स्थान
1.1605 ई.	मसुलीपत्तनम (आं. प्र.)
2.1606 ई.	पेत्तोपोली (आं. प्र.)
3.1610 ई.	पूलीकट (आं. प्र.)
4.1616 ई.	सूरत (गुजरात)
5.1627 ई.	पीपली (प. बंगाल)
6.1653 ई.	चिन्सुरा (प. बंगाल)
7.1658 ई.	कासिम बाजार, बालासोर एवं नेगपत्तम

- डच लोग भारत से सूती वस्त्र, नील, शोरा, कच्च रेशम, अफीम, नमक और चावल का निर्यात करते थे।
- डच लोग भारत से मसाला का निर्यात नहीं करते थे।

डचों द्वारा भारत से निर्यात की जाने वाली वस्तुयें

सूती वस्त्र	नील
शोरा	कच्चा रेशम
अफीम	चावल
नमक	

अंग्रेज

- एलिजाबेथ-I का शासनकाल ब्रिटिश इतिहास काल में स्वर्णिम युग के नाम से जाना जाता है। यह कई दृष्टियों में महत्वपूर्ण रहा।
- इस काल में व्यापारिक उन्नति के लिए भी अनेक प्रयास किए गए। महारानी एलिजाबेथ-I के समय 31 दिसम्बर, 1600 ई. को एक विशाल व्यापारिक संघ की स्थापना हुई, जिसका नाम रखा गया–द गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ मार्चेंट ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टु द ईस्ट इंडीज। इस कम्पनी में अनेक शेयर होल्डर थे।
- कम्पनी की पहली यात्रा 1601 ई. में हुई जब कम्पनी के जहाज इण्डोनेशिया गए।
- सर्वप्रथम 1608 ई. में कैप्टन हाकिंस के नेतृत्व में कम्पनी का पहला प्रतिनिधिमण्डल हेक्टर नामक जल जहाज से भारत में **सूरत** पहुँचा और यहाँ पर अंग्रेजों की पहली अस्थाई फैक्ट्री की स्थापना की।
- कैप्टन हॉकिन्स सूरत से **जहाँगीर** के दरबार पहुँचा जहाँगीर ने इसे **400 का मनसब** तथा **खॉन/इंग्लिश खॉन** की उपाधि दी।
- 1611 ई. में अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर स्थित **मसुलीपत्तनम** में अपनी दूसरी फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1613 ई. में सूरत की फैक्ट्री को स्थायित्व प्राप्त हुआ।
- 1615 ई. में ब्रिटिश सम्राट जेम्स-I के राजदूत के रूप में **सर टामस रो** जहांगीर के दरबार में आया। यह तीन वर्षों तक (1618 ई. तक) जहाँगीर के दरबार में रहा।

इसने व्यापार करने से सम्बंधित तथा व्यापार करों के छूट से संबंधित दो लाइसेंस कम्पनी के लिए प्राप्त किया।

- 1632 ई. में अंग्रेजों ने गोलकुण्डा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह से 500 पौण्ड वार्षिक कर देने के बदले गोलकुण्डा के सभी बंदरगाहों से व्यापार करने का अधिकार प्राप्त किया। लाभकारी फरमान होने के कारण इसे सुनहरा फरमान के नाम से जाना जाता है।
- 1639 ई. में चंद्रगिरि के शासक से अंग्रेजों ने मद्रास को पट्टे पर प्राप्त किया। यहाँ पर अंग्रेजों ने सेंट जार्ज नामक किले का निर्माण कराया था।
- 1661 ई. में ब्रिटेन के सम्राट चार्ल्स-II का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ हुआ। इस उपलक्ष्य में पुर्तगालियों से दहेज रूप में बम्बई चार्ल्स-II को प्राप्त हुआ।
- 1669 ई. में चार्ल्स-II ने बम्बई को 10 पौण्ड वार्षिक किराए पर कम्पनी को दे दिया और फिर कम्पनी ने औंगियार को अपना अधिकारी नियुक्त कर बम्बई के गाँव का शहरीकरण करवा दिया।
- 1698 ई. में अंग्रेजों ने बंगाल के एक जमींदार इब्राहिम खाँ से 1200 रु. में तीन गाँव की जमींदारी खरीद ली। ये गाँव थे–गोविन्दपुर, सूतानती और कोलकाता।
- यहीं तीनों गाँव विकसित होकर कलकत्ता नगर बसा। कलकत्ता नगर को बसाने का **श्रेय जॉब चारनाक** को जाता है।
- 1700 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम किले का निर्माण हुआ और यह पूर्वी भारत के सभी बस्तियों का केन्द्र बन गया। फोर्ट विलियम का प्रथम अध्यक्ष सर चार्ल्स आयर था।
- 1715 ई. में कम्पनी का एक प्रतिनिधि मण्डल जॉन सरमन की अध्यक्षता में मुगल सम्राट फर्रुखशियर के दरबार में पहुँचा। इस प्रतिनिधि मंडल में **हेमिल्टन नामक एक चिकित्सक** भी था।
- हेमिल्टन ने फर्रुखशियर को एक गम्भीर रोग से मुक्ति दिलाई थी। इससे प्रसन्न होकर फर्रुखशियर ने 1717 ई. में एक फरमान द्वारा कम्पनी को अनेक रियायतें प्रदान की।

अंग्रेजों द्वारा भारत में स्थापित फैक्ट्रियाँ

वर्ष	स्थान
1.1608 ई.	सूरत (अस्थायी रूप में) (स्थायित्व 1613 में)
2.1611 ई.	मसुलीपत्तनम्
3.1616 ई.	अहमदाबाद, बुरहानपुर आगरा में
4.1632 ई.	गोलकुंडा में
5.1633 ई.	बालासोर एवं हरिहरपुर (उड़ीसा)
6.1639 ई.	मद्रास
7.1651 ई.	हुगली
8.1669 ई.	बम्बई
9.1700 ई.	कलकत्ता

डेनिस

- डेनिस डेनमार्क के निवासी थे, जो 1616 ई. में भारत आया और बंगाल स्थित सेरामपुर में अपनी बस्ती स्थापित की। यही भारत में इनका मुख्य केन्द्र था।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी से सम्बन्धित तथ्य

- जहाँगीर ने कैप्टन हाकिन्स को इंग्लिश खाँ की उपाधि देकर, इसका विवाह एक आर्मीनियन स्त्री से करवा दिया था।
- भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज जॉन मिल्डेन हॉल था।
- फ्रांसिस डे नामक अंग्रेज ने मद्रास को पट्टे पर चन्द्रगिरि के राजा से प्राप्त किया।

Pariksha Manthan

- गेराल्ड औंगियार को बम्बई नगर का संस्थापक माना जाता है।
- अंग्रेजी कम्पनी की प्रथम प्रेसीडेन्सी की स्थापना सूरत में हुई।

फ्रांसीसी

- फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना लुई-XIV के शासन काल में इसके मंत्री कोल्बर्ट के प्रयासों से 1664 ई. में हुई।
- सर्वप्रथम 1667 ई. में फ्रांसिस कॉरो के नेतृत्व में फ्रांसीसियों का पहला अभियान दल भारत में सूरत पहुँचा और यहीं पर इन्होंने अपनी पहली फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1669 ई. में फ्रांसीसियों ने पूर्वी तट पर स्थित मसुलीपत्तनम् में अपनी दूसरी फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1673 ई. में बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खाँ से एक जमीन प्राप्त की, इसी जमीन पर चंद्रनगर नामक प्रसिद्ध फ्रांसीसी बस्ती का विकास हुआ।
- 1701 ई. में फ्रांसीसियों ने पाण्डिचेरी को अपना मुख्यालय बनाया और यहाँ का पहला गवर्नर फ्रेंसिस मार्टिन था।
- 1735 ई. में ड्यूमा फ्रांसीसी गवर्नर बनकर पाण्डिचेरी आया, इसके समय में फ्रांसीसी व्यापार का अत्यधिक विकास हुआ।

आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष/कर्नाटक के युद्ध

कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1746-48 ई.)

- 18वीं शताब्दी तक कोरोमण्डल तट की भूमि को कर्नाटक के नाम से जाना जाता था। यह हैदराबाद के निजाम के अधीन एक प्रांत था, यहाँ के प्रांतपति को नवाब कहा जाता था।
- सर्वप्रथम 1746 ई. में बारनेट के नेतृत्व में अंग्रेजी जलबेड़े ने कुछ फ्रांसीसी जलपोतों को पकड़कर अपने कब्जे में ले लिया।
- डूप्ले ने इसकी शिकायत कर्नाटक के नवाब से किया लेकिन नवाब ने डूप्ले के किसी बात का ध्यान नहीं दिया।
- अतः डूप्ले ने अंग्रेजी बस्ती मद्रास का घेरा डाल दिया। अब अंग्रेजों ने नवाब का संरक्षण चाहा, नवाब ने डूप्ले को मद्रास से हटने के लिए कहा लेकिन डूप्ले नहीं माना परिणामस्वरूप नवाब ने फ्रांसीसियों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और फिर एक युद्ध सेंटथोम का युद्ध हुआ।
- सेंटथोम का युद्ध 1748 ई. में कर्नाटक के नवाब एवं फ्रांसीसियों के बीच लड़ा गया।
- 1748 ई. में यूरोप में एक्स-ला-शैपेल की संधि द्वारा आस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध का अंत हुआ और इसी संधि के द्वारा कर्नाटक के प्रथम युद्ध का अंत हो गया।

कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1748-54 ई.)

- इस युद्ध का मुख्य कारण दोनों कम्पनियों का भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप रहा।
- 1748 ई. में हैदराबाद के निजाम-उल-मुल्क आसफजाह की मृत्यु होने से उत्तराधिकार के लिए संघर्ष प्रारम्भ हुआ।
- निजाम-उल-मुल्क की मृत्यु के बाद इनका पुत्र नासिरजंग हैदराबाद का निजाम बना, इसी समय नासिरजंग का एक भांजा मुजफ्फरजंग ने निजाम पद की दावेदारी प्रस्तुत की।
- इसी समय 1748 ई. में मराठों ने चंदा साहब को रिहा कर दिया और यह कर्नाटक में अपने उत्तराधिकार की माँग की।
- इसी समय सर्वप्रथम डूप्ले ने निजाम पद के लिए मुजफ्फरजंग और नवाब पद के लिए चंदा साहब का साथ दिया।
- मुजफ्फरजंग, चंदा साहब और डूप्ले की संयुक्त सेनाओं ने 1749 ई. में कर्नाटक पर आक्रमण कर अम्बूर की लड़ाई में अनवरुद्दीन को पराजित कर मार डाला। अनवरुद्दीन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी मुहम्मद अली ने भागकर त्रिचनापल्ली के दुर्ग में शरण ली।

Pariksha Manthan

- फ्रांसीसियों के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर अंग्रेज भी शांत नहीं रहे, उन्होंने निजाम पद के लिए नासिरजंग एवं कर्नाटक के नवाब पद के लिए मुहम्मद अली को समर्थन दिया।
- 1750 ई. में नासिरजंग अंग्रेजों के सहयोग से कर्नाटक पर आक्रमण किया और त्रिगुट मित्र शक्तियों को पराजित कर दिया लेकिन इसी समय नासिरजंग की सेना ने विद्रोह कर दिया और इसी विद्रोह में नासिरजंग की हत्या कर दी गई। इसका लाभ उठाकर फ्रांसीसियों ने (डूप्ले) मुजफ्फरजंग को हैदराबाद का निजाम घोषित कर दिया।
- 1752 ई. में क्लाइव के नेतृत्व में अर्काट पर आक्रमण किया और चंदा साहब के पुत्र राजा साहब के नेतृत्व वाली सेना को पराजित कर अर्काट पर अधिकार कर लिया। यह खबर सुनकर चंदा साहब त्रिचनापल्ली भाग गया लेकिन तंजौर के राजा ने उसकी हत्या कर दी।
- 1754 ई. में फ्रांसीसी सरकार ने डूप्ले को वापस बुला लिया और उसके स्थान पर **गोदेहो** को गवर्नर बनाकर भारत भेजा।
- गोदेहो आते ही युद्ध समाप्ति की घोषणा कर दी और अन्ततः 1755 ई. में पाण्डिचेरी की संधि द्वारा यह युद्ध समाप्त हो गया।
- पांडिचेरी की संधि द्वारा दोनों कम्पनियों ने भारतीय नरेशों के झगड़े में हस्तक्षेप न करने का वादा किया।

कर्नाटक का तृतीय युद्ध (1756-63 ई.)

- 1756 ई. में यूरोप में आस्ट्रिया एवं प्रशा के बीच सप्तवर्षीय युद्ध प्रारम्भ हुआ, इस युद्ध में एक बार फिर अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध हुआ।
- 1756 ई. में दोनों कम्पनियाँ एक दूसरे की बस्तियों पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिया लेकिन वास्तविक युद्ध की शुरुआत तब हुई जब 1758 ई. में फ्रांसीसी सरकार ने काउंट-डी-लैली को कमांडर-इन-चीफ बनाकर भारत भेजा। इसके आने से युद्ध को गति मिली।
- इस युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध 1760 ई. में वांडीवास का युद्ध था जो आयरकूट के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना और काउंट-डी-लैली की नेतृत्व वाली फ्रांसीसी सेना के बीच हुआ।
- इस युद्ध में अंग्रेज विजयी रहे, इसके बाद पाण्डिचेरी सहित लगभग सभी फ्रांसीसी बस्तियों का अंत हो गया।
- 1763 ई. में पेरिस की संधि द्वारा सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हुआ और इसी संधि द्वारा कर्नाटक का तृतीय युद्ध भी समाप्त हो गया।

कर्नाटक के युद्ध

युद्ध का नाम	वर्ष	कारण	समाप्ति	परिणाम
1.प्रथम कर्नाटक युद्ध	1746-48	आस्ट्रियाई उत्तराधिकार का प्रश्न एवं अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों में अमेरिका में युद्ध	1748 में एक्स-ला-शैपेल की संधि द्वारा	अंग्रेज एवं कर्नाटक के नवाब की पराजय
2.द्वितीय कर्नाटक युद्ध	1748-54	दोनों कम्पनियों द्वारा भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप	1755 में पांडिचेरी की संधि द्वारा	अंग्रेजों की अच्छी स्थिति
3.तृतीय कर्नाटक युद्ध	1756-63	यूरोप का सप्तवर्षीय युद्ध	1763 की पेरिस क़ी संधि द्वारा	अंग्रेजों की विजय

महत्वपूर्ण युद्ध			
युद्ध का नाम	वर्ष	किसके मध्य	परिणाम
1.सेंट थोम का युद्ध	1748 ई.	कर्नाटक के नवाब एवं फ्रांसीसियों के बीच	फ्रांसीसी विजय
2.अम्बूर का युद्ध	1749 ई.	डूप्ले, मुजफ्फरजंग एवं चंदा साहब के त्रिगुट एवं कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के मध्य	त्रिगुट विजय
3.अर्काट का युद्ध	1752 ई.	क्लाइव के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना एवं चंदा साहब के पुत्र राजा साहब के बीच	अंग्रेज विजय
4.वांडीवास का युद्ध	1760 ई.	अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों के बीच	अंग्रेज विजय

महत्वपूर्ण तथ्य

- सर्वप्रथम ब्रिटिश शासन ने 1593 में लीवेंट कम्पनी को स्थल मार्ग से भारत में व्यापार करने का पहला अधिकार प्रदान किया था। 31 दिसम्बर 1600 ई. को महारानी एलिजाबेथ प्रथम के अनुमोदन से "द गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट ऑफ लन्दन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज" नाम से एक व्यापारिक संस्थान को सर्वप्रथम समुद्री मार्ग से व्यापार करने का अधिकार पत्र प्रदान किया गया।
- डचों ने पुर्तगालियों को पराजित कर उनसे कोच्चि प्राप्त किया था तथा 1663 ई. में डचों ने फोर्ट विलियम का निर्माण कराया था। 1814 ई. में कोच्चि को ब्रिटिश उपनिवेश में शामिल किया गया था।
- अंग्रेजी शासनकाल में बिहार अफीम उत्पादन हेतु प्रसिद्ध था। भारत में अफीम की तस्करी की जाती थी।

बंगाल में अंग्रेजी प्रभुसत्ता

- 1717 ई. में मुर्सिदकुली खाँ बंगाल का सूबेदार/नवाब बना। इसी समय से व्यवहारिक रूप में स्वतंत्र कार्य करने लगा। इसने ढाका के स्थान पर मुर्शिदाबाद को अपनी राजधानी बनाई। यह बंगाल का पहला नवाब था जिसने अंग्रेजों द्वारा दस्तक/अधिकार पत्र का दुरुपयोग किया।
- 1727 ई. में मुर्शिदकुली खाँ की मृत्यु के बाद शुजाउद्दौला बंगाल का नवाब बना। यह अत्यन्त न्यायप्रिय नवाब था जो 1732 ई. में अलीवर्दी खाँ को बिहार का उपसूबेदार नियुक्त किया।
- 1739 ई. में शुजाउद्दौला की मृत्यु के बाद इसका पुत्र सरफराज खाँ नवाब बना। इसके समय 1740 ई. में अलीवर्दी खाँ ने विद्रोह कर दिया और इसी विद्रोह में सरफराज खाँ मारा गया और अलीवर्दी खाँ बंगाल का नवाब बना।

अलीवर्दी खाँ (1740-56 ई.)

- इसने यूरोपियों की उपमा मधुमक्खियों से की है। इसके अनुसार–"यदि इन्हें न छेड़ा जाय तो यह शहद देगें, यदि इन्हें छेड़ा जाएगा तो ये काट-काटकर मार डालेंगे।"
- अलीवर्दी खाँ के कोई पुत्र न होने के कारण इसने अपनी सबसे छोटी पुत्री के पुत्र सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

सिराजुद्दौला (1756-57 ई.)

- सिराजुद्दौला का अंग्रेजों के साथ संबंध बिगड़ गए क्योंकि अंग्रेजों ने नवाब के शत्रुओं को शरण दे रखी थी और नवाब के मना करने के बावजूद भी बस्तियों का दुर्गीकरण कर रहे थे।
- इसी के कारण सिराजुद्दौला रुष्ट हो गया और 15 जून, 1756 ई. को नवाब कलकत्ता स्थित फोर्टविलियम पर आक्रमण कर दिया, 5 दिनों के युद्ध के बाद 20 जून, 1756 ई. को फोर्टविलियम पर अधिकार कर लिया और अंग्रेज भागकर फुल्टा नामक टापू में शरण ली।

काल कोठरी की घटना (20 जून, 1756 ई.)

- इस घटना का उल्लेख एक अंग्रेज अधिकारी हॉलवेल ने किया है।
- हॉलवेल के अनुसार- 20 जून की रात्रि को नवाब ने 146 अंग्रेज बंदियों को एक कोठरी में बंद कर दिया। इसमें दूसरे दिन 123 अंग्रेजों की मृत्यु हो गयी और हॉलबेल सहित 23 अंग्रेज जीवित रहे।
- संभवतः यह हॉलवेल की मनगढ़ंत कहानी है क्योंकि इसकी पुष्टि अन्य स्रोतों से नहीं होती।

प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757 ई.)

- प्लासी भागीरथी नदी के तट पर स्थित है, यह युद्ध क्लाइव की नेतृत्व वाली एक छोटी सी अंग्रेजी सेना और नवाब सिराजुद्दौला की 50 हजार सेना के साथ हुआ।
- युद्ध प्रारम्भ होते ही मीरजाफर अपनी सेना लेकर अलग हो गया अंततः इस युद्ध में नवाब सिराजुद्दौला पराजित होकर मुर्शिदाबाद भाग गया लेकिन नवाब को मुर्शिदाबाद में पकड़कर वध कर दिया गया।
- इसके बाद मीरजाफर बंगाल का नवाब बना और क्लाइव को व्यक्तिगत रूप से बहुत धन मिला। इस तरह प्लासी के युद्ध ने भारत में अंग्रेजी प्रभुसत्ता की नींव डाल दी।
- कम्पनी को 24 परगना जिले की दीवानी प्राप्त हुई।

क्लाइव का नवाब के विरुद्ध षड़यंत्र

- नवाब सिराजुद्दौला के प्रमुख अधिकारी उससे असंतुष्ट थे, इसका लाभ उठाकर क्लाइव ने नवाब के विरुद्ध एक षड़यंत्र रचा।
- इस षड़यंत्र में नवाब के मुख्य सेनापति मीरजाफर दीवान रायदुर्लभ और एक सैनिक अधिकारी यारलतीफ तथा बंगाल का एक व्यापारी जगत सेठ सम्मिलित थे।

मीरजाफर (1757-60 ई.)

- 1760 ई. में क्लाइव इंग्लैंड वापस चला गया, इसके स्थान पर बेन्सिटार्ट बंगाल का गवर्नर बनकर भारत आया।
- बेन्सिटार्ट ने नवाब बदलने का निश्चय किया, इसके लिए इसने मीरजाफर की दामाद मीरकासिम से समझौता किया।
- समझौते के अनुसार मीरकासिम को नवाब बनाया जाएगा बदले में मीरकासिम कम्पनी को वर्द्धवान, मिदनापुर और चटगाँव जिलों की दीवानी और अधिकारियों को धन देगा।
- इसके बाद वेन्सिटार्ट ने मीरजाफर के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह मीरकासिम को नायब सूबेदार नियुक्त कर दे और प्रशासन के सारे अधिकार सौंप दे।
- इससे असंतुष्ट होकर मीरजाफर ने नवाब पद से इस्तीफा दे दिया और मीरकासिम नवाब बन गया।

मीरकासिम (1760-63 ई.)

- मीरकासिम ने मुर्शिदाबाद के स्थान पर मुंगेर को अपनी राजधानी बनाई। इसने मुंगेर में तोपखाना एवं बंदूक निर्माण करने का कारखाना स्थापित किया।
- इसने अपनी सेना को यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित करने के लिए एक जर्मन अधिकारी बाल्टर रीनहार्ड (समरु) को नियुक्त किया।

Manthan

- 1763 ई. में मीरकासिम ने संपूर्ण बंगाल को व्यापार कर से मुक्त कर दिया, इस घटना से अंग्रेज आग बबूला हो गए और अंग्रेजों ने मीरजाफर को पुनः नवाब घोषित कर मीरकासिम के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया।
- 1765 ई. में क्लाइव पुनः भारत आया और इसने बंगाल के नवाब, मुगल सम्राट व अवध के नवाब से अलग-अलग संधियाँ की।
- सर्वप्रथम क्लाइव ने बंगाल के नवाब नजमुद्दौला से संधि की। संधि के अनुसार- प्रशासन के सारे अधिकार कम्पनी के हाथों में होगा, नवाब को प्रतिवर्ष 53 लाख रुपए सालाना कम्पनी देगी। इस प्रकार बंगाल में द्वैध शासन लागू हो गया।

बक्सर का युद्ध (23 अक्टूबर, 1764 ई.)

- मीरकासिम अंग्रेजों से परास्त होकर शुजाउद्दौला के पास पहुँचा, इस समय वहाँ मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय भी उपस्थित थे, इन तीनों ने अंग्रेजों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चे का निर्माण किया और तीनों अपनी सेना लेकर बक्सर पहुँचे और अंग्रेजों से युद्ध किया।
- अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो ने किया।
- इस युद्ध में संयुक्त मोर्चे की शक्तियाँ पराजित हुई और मीरकासिम युद्ध भूमि से भाग गया जबकि शुजाउद्दौला और शाहआलम द्वितीय ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इलाहाबाद की प्रथम संधि (12 अगस्त 1765 ई.)

- इलाहाबाद की प्रथम संधि मुगल सम्राट शाहआलम-II से हुई, इस संधि की मुख्य शर्तें इस प्रकार हैं—
  1. कम्पनी अवध के नवाब से इलाहाबाद एवं कड़ा दो जिले लेकर मुगल सम्राट को देगें।
  2. कम्पनी मुगल सम्राट को 26 लाख रुपए पेंशन के रूप में देगी।
  3. मुगल सम्राट बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी कम्पनी को प्रदान करेगा।

इलाहाबाद की दूसरी संधि (16 अगस्त, 1765 ई.)

- यह संधि अवध के नवाब शुजाउद्दौला से हुई, इस संधि की मुख्य शर्तें इस प्रकार थी—
  1. कम्पनी अवध के नवाब से इलाहाबाद एवं कड़ा का जिला प्राप्त करके मुगल सम्राट को दे दिया।
  2. अवध के नवाब पर हर्जाने के रूप में 50 लाख रुपए एवं चुनार का किला कम्पनी प्राप्त करेगी।
  3. कम्पनी को अवध में कर मुक्त व्यापार करने का अधिकार होगा।
  4. अवध की सुरक्षा के लिए अवध में एक अंग्रेजी सेना रखी जाएगी जिसका खर्च अवध का नवाब देगा।
- 1765-1772 ई. तक बंगाल में द्वैध शासन चलता रहा। 1772 में वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का गवर्नर बनकर आया, इसमें द्वैध शासन को समाप्त कर बंगाल में कंपनी का शासन स्थापित कर दिया।

आंग्ल-मैसूर संघर्ष

- 18वीं शताब्दी के मध्य में मैसूर में चिक्का कृष्णराज नामक शासक शासन कर रहा था लेकिन वास्तविक शक्ति नंदराज के हाथों में थी।
- इसी समय मैसूर की सेना में हैदर अली नामक एक व्यक्ति सिपाही के रूप में भर्ती हुआ जो एक दिन मैसूर का शासक बना।

हैदर अली

- हैदर अली का जन्म 1721 ई. में बुडिकोटा नामक स्थान पर हुआ था, इसके पिता फतेहमुहम्मद मैसूर की सेना में एक सिपाही थे जो एक युद्ध में मारे गए। बड़ा होने पर हैदर अली मैसूर की सेना में भर्ती हुआ।
- हैदर अपने गुण और योग्यता के कारण 1755 ई. में डिंडीगुल का फौजदार नियुक्त हुआ। डिंडीगुल के फौजदार के रूप में फ्रांसीसियों के सहयोग से एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना किया।

Pariksha Manthan

- 1759 ई. में मराठों ने मैसूर पर आक्रमण किया, हैदर के नेतृत्व में मैसूर की सेना मराठों को पराजित कर मैसूर से बाहर खदेड़ दिया।
- 1760 ई. में चिक्का कृष्णराज की मृत्यु के बाद हैदर अली मैसूर का स्वतंत्र शासक बन गया।
- अंग्रेज प्रारम्भ से ही हैदर को अपना शत्रु मानते थे क्योंकि हैदर ने अपने उत्कर्ष में फ्रांसीसियों की मदद ली थी।

प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69 ई.)

- इस युद्ध का मुख्य कारण मद्रास की अंग्रेजी सरकार तथा मैसूर के बीच कर्नाटक का सीमा विवाद था।
- सर्वप्रथम 1767 ई. में जोसेफ स्मिथ के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने मैसूर में आक्रमण किया। प्रारम्भ में हैदर पराजित हुआ लेकिन बाद में इसने अंग्रेजी सेना को पराजित कर मद्रास तक पीछा करते हुए आया अन्ततः अंग्रेजों ने संधि की याचना की परिणामतः मद्रास की संधि हुई।

मद्रास की संधि (1769 ई.)

- यह संधि हैदर अली और मद्रास की अंग्रेजी सरकार के बीच हुयी। इसकी शर्तें निम्न थीं—
  1. एक दूसरे के जीते हुए क्षेत्र एक दूसरे को वापस किए जाएंगे।
  2. हैदर अली अंग्रेज बंदियों को रिहा करेगा।
  3. अंग्रेज हैदर अली को युद्ध का हर्जाना देंगे।
- इस युद्ध में अंग्रेजों की अजेयता को समाप्त कर दिया।

द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84 ई.)

- इस युद्ध का मुख्य कारण अंग्रेजों ने फ्रांसीसी बंदरगाह माही पर अधिकार कर लिया जो हैदर के राज्य के अंतर्गत था।
- इस घटना से हैदर अली अंग्रेजों से नाराज हो गया और अंग्रेजों के मित्र राज्य कर्नाटक पर आक्रमण कर दिया।
- कर्नाटक के नवाब मुहम्मद अली हैदर के विरुद्ध अंग्रेज से सहायता मांगी। अंग्रेजों ने दो सेनापतियों के नेतृत्व में दो अलग-अलग सेनाएँ कर्नाटक भेजी। रास्ते में हैदर के पुत्र टीपू ने हेक्टर मुनरो की नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना को रोककर युद्ध करने लगा जिससे एक ही सेना कर्नाटक पहुँच सकी।
- परिणामस्वरूप अरन्दी में हैदर ने कर्नल बेली के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना को पराजित किया।
- 1782 ई. में अंग्रेजों ने आयरकूट के नेतृत्व में एक सेना मैसूर पर आक्रमण किया और पोर्टोनोवा के युद्ध में हैदर को पराजित किया। युद्ध में घायल होने के बाद हैदर की मृत्यु हो गयी।
- हैदर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र टीपू मैसूर का शासक बना। इसने युद्ध को जारी रखा और 1783 ई. में इसने ब्रिग्रेडियर मैथ्यूज के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना को पराजित किया लेकिन इसी समय यूरोप में एक संधि के कारण फ्रांसीसियों ने टीपू का साथ छोड़ दिया और टीपू ने अंग्रेजों से एक संधि कर लिया।

मंगलौर की संधि (1784 ई.)

- इस संधि के द्वारा द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध समाप्त हो गया।
- इस संधि के द्वारा एक-दूसरे के जीते हुए क्षेत्र एक-दूसरे को वापस कर दिए गए। टीपू ने अंग्रेज बंदियों को रिहा कर दिया।

तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92 ई.)

- इस युद्ध का तात्कालिक कारण अइकोटा और क्रेंगानूर के दो दुर्ग डचों से टीपू खरीदना चाहता था लेकिन अंग्रेजों के मित्रराज्य त्रावणकोर ने खरीद लिया। इस कार्य से टीपू नाराज होकर त्रावणकोर पर आक्रमण कर दिया।
- इसी समय गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस ने मराठा तथा निजाम से संधि करके सम्मिलित रूप से मैसूर पर

Pariksha Manthan

आक्रमण कर दिया।

- कार्नवालिस मैसूर के अनेक क्षेत्रों को जीतकर श्रीरंगपट्टनम को घेर लिया। बाध्य होकर टीपू ने अंग्रेजों से संधि कर ली।

श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792 ई.)

- इस संधि के द्वारा तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध समाप्त हो गया।
- इस संधि के द्वारा टीपू का आधा राज्य ले लिया गया जिसे अंग्रेज, मराठे व निजाम आपस में बाँट लिए।
- टीपू पर 3 करोड़ का हर्जाना लगाया गया, टीपू के पास धन न होने के कारण उसके दो पुत्रों को कार्नवालिस के पास बंधक के रूप में रख दिया और टीपू की सेना को भी सीमित कर दिया गया।

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799 ई.)

- इस युद्ध का कारण अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली टीपू के पास सहायक संधि स्वीकार करने का प्रस्ताव भेजा जिसे टीपू ने अस्वीकार कर दिया। परिणामतः 1799 ई. में लार्ड वेलेजली ने मैसूर पर आक्रमण कर दिया।
- वेलेजली ने टीपू के अनेक क्षेत्रों को विजित करते हुए श्रीरंगपट्टनम के दुर्ग को घेर लिया। टीपू अंग्रेजों से युद्ध करते हुए दुर्ग के द्वार पर ही मारा गया और मैसूर अंग्रेजों के नियंत्रण में आ गया।
- अंग्रेजों ने बोद्यार वंश के दो वर्षीय बालक कृष्णराज को मैसूर का शासक घोषित किया और इसे सहायक संधि स्वीकार कराकर मैसूर पर अपना प्रभाव स्थापित कर दिया।
- 1834 ई. में विलियम बैंटिक ने मैसूर को जीतकर अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया।

आँग्ल-मैसूर युद्ध – एक दृष्टि में

युद्ध का नाम	वर्ष	कारण	समाप्ति	परिणाम
1. प्रथम आँग्ल-मैसूर युद्ध	1767-69 ई.	अंग्रेजों एवं हैदर के बीच कर्नाटक का सीमा विवाद	मद्रास की संधि 1769 में	अंग्रेज पराजित
2. द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1780-84 ई.	अंग्रेजों द्वारा फ्रांसीसी बन्दरगाह माही पर अधिकार करना	मंगलौर की संधि 1784 में	अनिर्णित
3. तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1790-92 ई.	टीपू द्वारा त्रावणकोर पर आक्रमण	श्रीरंगपट्टनम की संधि 1792	टीपू की पराजय
4. चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध	1799 ई.	टीपू द्वारा सहायक संधि स्वीकार न किया जाना	टीपू का वध	टीपू की पराजय

टीपू सुल्तान (1782-1799 ई.)

- हैदर अली के मृत्यु के बाद 1782 में टीपू सुल्तान बना।
- टीपू ने 1787 में बादशाह की उपाधि धारण की और अपने नाम के सिक्के चलाये। इसने वर्ष/महीनों के हिन्दू नामों के स्थान पर अरबी नामों का प्रयोग किया तथा एक नये पंचांग (कलेंडर) का प्रचलन किया।
- फ्रांसीसी क्रांति के फलस्वरूप जब कुछ फ्रांसीसी सैनिकों ने श्रीरंगपट्टनम में जैकोबिन क्लब बनाने का प्रस्ताव किया तो इसने सहर्ष स्वीकार किया।
- यह स्वयं जैकोबिन क्लब का सदस्य बना और अपने आपको नागरिक टीपू कहलाने लगा।
- टीपू सुल्तान धर्म सहिष्णु शासक था। इसने शृंगेरी के मंदिर की मरम्मत एवं शारदा देवी की मूर्ति स्थापना के लिए धन प्रदान किया।

आंग्ल-मराठा युद्ध

- पेशवा बाला जी बाजीराव की मृत्यु के बाद मराठा राज्य आंतरिक षड़यंत्रों का केन्द्र बनने लगा।
- पेशवा माधवराज के समय में उसके चाचा रघुनाथराव मराठा साम्राज्य के विभाजन की माँग की जिसे पेशवा माधवराव ने ठुकरा दिया।
- नाना फड़नवीस के नेतृत्व में मराठा सरदारों ने अल्पायु माधवराव नारायण को पेशवा बना दिया और प्रमुख मराठा सरदारों को मिलाकर एक ''बाराभाई परिषद'' का गठन करके प्रशासन चलाना प्रारम्भ कर दिया।
- प्रमुख मराठा सरदारों की इस चुनौती का सामना करने में अपने को असमर्थ पाकर रघुनाथराव उर्फ राघोबा पूना से भागने के लिए मजबूर हो गया।
- रघुनाथ राव बम्बई जाकर नाना फड़नवीस (पूना दरबार) के विरुद्ध बम्बई की अंग्रेजी सरकार से सहायता माँगी। इसके इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास ने प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।
- बम्बई के अंग्रेजी सरकार रघुनाथराव को पेशवा बनाने के लिए सूरत की संधि की।

प्रथम आँग्ल-मराठा युद्ध (1775-1782 ई.)

- सूरत की संधि के अनुसार कर्नल किटिंग के नेतृत्व में एक अंग्रेजी सेना सूरत पहुँची।
- 18 मई 1775 ई. को आरस के मैदान में अंग्रेजों एवं मराठों के बीच भीषण युद्ध हुआ, जिसमें मराठे पराजित हुए लेकिन अंग्रेजों का मराठा क्षेत्र पर अधिकार नहीं हो सका।
- 1778 ई. में बम्बई की अंग्रेजी सरकार ने पुनः मराठों से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। वारेन हेस्टिंग्स ने भी बंगाल से एक सेना इनकी सहायता के लिए भेज दिया।
- तेलगाँव के युद्ध में बम्बई की अंग्रेजी सेना मराठों से पराजित हो गई।
- परिणामस्वरूप 1779 में बड़गाँव की संधि हुई।

सालबाई की संधि (17 मई 1782 ई.)

- यह संधि पूना दरबार एवं अंग्रेजों के बीच हुई।
- इसके द्वारा प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध समाप्त हुआ।
- मुख्य शर्तें इस प्रकार थीं—
  1. सेलसेट द्वीप एवं थाना का दुर्ग अंग्रेजों को दिया जायेगा।
  2. अंग्रेज रघुनाथ राव का साथ छोड़ेंगे।
  3. रघुनाथ राव पर खर्च की गई राशि 12 लाख रुपये पूना दरबार अंग्रेजों को देगा।
  4. राघोबा को साढ़े तीन लाख रुपये वार्षिक पेंशन दी जायेगी।
  5. बम्बई एवं दक्षिण में एक दूसरे के जीते हुए क्षेत्र एक दूसरे को वापस किये जायेंगे।
- इस संधि के द्वारा 20 वर्ष की शांति रही।

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-1805 ई.)

- 1800 ई. में नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद पूना दरबार षडयंत्रों का केन्द्र बन गया।
- पेशवा बाजीराव II एवं दौलतराव सिंधिया ने होल्कर के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाकर उसे नीचा दिखाना चाहा।
- 1802 में पूना के निकट हुए युद्ध में होल्कर ने संयुक्त सेना को पराजित कर दिया और रघुनाथ राव के दत्तक पुत्र अमृतराव के बेटे विनायक राव को पेशवा घोषित किया।
- परिणामस्वरूप पेशवा बाजीराव II अंग्रेजों के पास पहुँचा और सहायता की माँग की परिणामस्वरूप बेसीन की संधि हुई।
- दौलत राव सिंधिया अप्पाजी भोंसले एवं यशवंत राव होल्कर ने पेशवा का विरोध किया जिसके कारण द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध प्रारम्भ हो गया।

Pariksha

- लार्ड वेलेजली ने सर्वप्रथम सिंधिया एवं भोंसले की सेना को पराजित किया। दोनों ने अंग्रेजों से अलग-अलग संधि कर लिया।
- 1805 ई. में अंग्रेजों ने यशवंत राव होल्कर को भी पराजित कर दिया, परिणामस्वरूप इसने भी अंग्रेजों से संधि कर लिया।

तृतीय आँग्ल-मराठा युद्ध (1817-18 ई.)

- यह युद्ध लार्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में लड़ा गया।
- अंग्रेजों ने 1817 ई. में सिंधिया से ग्वालियर की संधि की जिसके अनुसार सिंधिया पिंडारियों के दमन में अंग्रेजों का सहयोग करेगा और चम्बल नदी के दक्षिण-पश्चिम राज्यों से अपना अधिकार समाप्त करेगा।
- जून 1817 में अंग्रेजों ने पेशवा से पूना की संधि की जिसके द्वारा पेशवा ने मराठों की प्रधानता त्याग दी। इससे पहले भोंसले ने भी अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर लिया था।
- 1817 में ही संधि का उल्लंघन करके पेशवा भोंसले एवं होल्कर ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की।
- परिणामस्वरूप किर्की में पेशवा, सीताबर्डी में भोंसले तथा महीदपुर में होल्कर अंग्रेजों से पराजित हुए।
- जनवरी 1818 में होल्कर अंग्रेजों से मंदसौर की संधि करके राजपूत राज्यों से अपने अधिकार वापस ले लिये।
- पेशवा बाजीराव II कोरेगाँव एवं अष्टी के युद्ध में पराजित होने के बाद आत्मसमर्पण कर दिया।
- अंग्रेजों ने पेशवा का पद समाप्त कर पेशवा के राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।
- पेशवा को 4 लाख रुपये वार्षिक पेंशन देकर कानपुर के निकट बिठूर में रहने की आज्ञा दी गई। यहीं 1853 में पेशवा बाजीराव II की मृत्यु हो गई।

आँग्ल-मराठा युद्ध : एक नजर में

युद्ध	समय	संधि जिससे युद्ध प्रारम्भ हुआ	संधि जिससे युद्ध समाप्त हुआ	पेशवा	गवर्नर जनरल
प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध	1775-82 ई.	सूरत की संधि 1775	सालबाई की संधि 1782	माधवराव नारायण	वारेन हेस्टिंग्स
द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध	1803-05 ई.	बेसीन की संधि 1802 ई.	राजघाट की संधि 1805	बाजीराव II	जार्जबालों एवं वेलेजली
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध	1817-18 ई.	—	—	बाजीराव II	लार्ड हेस्टिंग्स

सिक्ख राज्य एवं आँग्ल-सिक्ख युद्ध

- सिक्खों का प्रथम राजनीतिक नेता बँदा बहादुर था। 1716 ई. में इसने मुगल सेना के सामने आत्मसमर्पण किया लेकिन इसका वध कर दिया गया।
- बँदा बहादुर के बाद सिक्ख नेतृत्वविहीन हो गये।
- इसी समय से सिक्खों ने शर्बत खालसा एवं गुरुमत्ता की प्रथाओं को प्रारम्भ किया।
- वैशाखी एवं दीपावली पर वर्ष में दो बार सिक्खों ने अपनी सभायें करनी प्रारम्भ की, ये सभायें ही शर्बत खालसा कहलाती थीं। इन सभाओं में जो निर्णय होते थे उसे गुरु का मत मानकर गुरमत्ता पुकारा गया।
- 1748 में कपूर सिंह ने दल खालसा संगठन की स्थापना की।

- दल खालसा में 1753 ई. में प्रारम्भ हुई राखी प्रथा ने इसकी वित्तीय स्थिति को मजबूत किया।
- राखी प्रथा के अन्तर्गत प्रत्येक गाँव से उपज का 1/5 भाग लेकर दल खालसा उसकी सुरक्षा का दायित्व स्वीकार करता था। यही तथ्य सिक्खों के राजनीतिक अधिकारों का आधार बना।
- सिक्खों ने अपने छोटे राज्यों का निर्माण किया जिन्हें मिस्ल पुकारा जाता था।

रणजीत सिंह

- पंजाब में सिक्ख राज्य के वास्तविक संस्थापक राजा रणजीत सिंह थे।
- ये सिक्खों के पहले सार्वभौम शासक हुए जिन्होंने पंजाब के एक बड़े क्षेत्र पर अधिकार करके मुल्तान पेशावर कश्मीर एवं लद्दाख तक अपने राज्य का विस्तार किया।

रणजीत सिंह की उपलब्धियाँ

जन्म — 1780 ई.

पिता — महासिंह

मिस्ल — शुकरचकिया

1797 — काबुल के शासक जमानशाह का पंजाब पर आक्रमण

— रणजीत सिंह के नेतृत्व में सिक्ख सेना ने जमानशाह को पराजित किया।

- अब रणजीत सिंह सिक्खों के नेता बन गये।
- रणजीत सिंह ने जमानशाह की 12 तोपें जो चिनाब नदी में गिर गई थीं उन्हें निकलवा कर वापस भिजवाया।
- इस सेवा के बदले में जमानशाह ने रणजीत सिंह को लाहौर पर अधिकार करने की अनुमति दे दी।
- 1799 में लाहौर पर अधिकार कर लिया और लाहौर को अपनी राजधानी बनाई।
- 1806 में रणजीत सिंह एवं जनरल लेक के बीच संधि हुई। शर्तें इस प्रकार हैं—
  1. रणजीत सिंह होल्कर को अमृतसर छोड़ने को कहे।
  2. अंग्रेज पंजाब से अपनी सेना हटायेंगे।
  3. रणजीत सिंह के मित्रवत बने रहने पर अंग्रेज उसके क्षेत्र पर आक्रमण नहीं करेंगे।

रणजीत सिंह का साम्राज्य विस्तार

- 1809 ई. में रणजीत ने कांगड़ा विजय की।
- 1813 ई. में अफगान अमीर शाहशुजा से कश्मीर को अपने संरक्षण में ले लिया तथा शाहशुजा से कोहिनूर हीरा भी प्राप्त किया।
- 1813 ई. में अटक को जीत लिया तथा 1818 ई. में मुल्तान विजय की।
- 1819 ई. में अफगान गवर्नर जब्बर खाँ को पराजित कर कश्मीर पर अधिकार कर लिया।
- 1820-21 ई. में डेरा गाजी खाँ, डेरा स्माइल खाँ तथा लेह को जीत लिया।
- 1832 में पेशावर की विजय की।
- 1833-34 में मुजारी कबीले को पराजित कर शिकारपुर पर अधिकार कर लिया। लेकिन इसे अंग्रेजों को दे दिया।
- 1839 ई. में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी।

रणजीत सिंह के उत्तराधिकारी-1839-49 ई.

1. खड़ग सिंह	रणजीत सिंह का पुत्र	1839-40
2. शेर सिंह	रणजीत सिंह का पुत्र	1841-43
3. दिलीप सिंह (अल्पवयस्क थे)	रणजीत सिंह के पुत्र	1843-49

आँग्ल-सिक्ख युद्ध

- दिलीप सिंह के शासन काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना आंग्ल-सिक्ख युद्ध था।

- अल्पवयस्क दिलीप सिंह की माँ रानी जिन्दन संरक्षिका के रूप में शासन कर रही थीं।
- इस समय खालसा सेना काफी शक्तिशाली हो गई थी जिस कारण लाहौर दरबार उनसे डरने लगा था।
- सेना को नियंत्रित करने के लिए रानी जिन्दन एवं उनके सलाहकारों ने खालसा सेना को अंग्रेजों के साथ युद्ध में झोंक दिया।
- यह सोचकर की यदि खालसा सेना विजयी हुई तो क्षेत्र विस्तार होगा और यदि पराजित हुई तो राजनीति में दखल देना छोड़ देगी।

प्रथम आँग्ल-सिक्ख युद्ध (1845-46)

- इस युद्ध के अन्तर्गत चार लड़ाइयाँ लड़ी गई—
  1. मुदकी का युद्ध 1845 ई.
  2. फिरोजपुर का युद्ध 1845 ई.
  3. अलीवाल का युद्ध 1846 ई.
  4. सुबराँव का युद्ध 1846 ई.
- इन चारों युद्धों में सिक्ख सेना पराजित हुई।

लाहौर की संधि (9 मार्च 1846 ई.)

- यह संधि अंग्रेजों एवं दिलीप सिंह के बीच हुई। शर्तें—
  1. दिलीप सिंह को रानी जिन्दन की संरक्षता में राजा स्वीकार किया गया।
  2. सतलज के पूरब के प्रदेश व जालंधर के द्वाब क्षेत्र पर अंग्रेजों का आधिपत्य होगा।
  3. लाहौर दरबार पर डेढ़ करोड़ का जुर्माना लगाया गया।
  4. 50 लाख रुपये नगद एवं एक करोड़ के बदले कश्मीर गुलाब सिंह के हाथों बेच दिया गया।
  5. सिक्ख सैनिकों की संख्या कम एवं निश्चित कर दी गई।
  6. लाहौर में एक अंग्रेज रेजीडेंट की नियुक्ति की गई।
  7. अंग्रेजों के परामर्श के बिना किसी विदेशी को सेना में नहीं रखा जायेगा।

भैरववाल की संधि (16 दिसम्बर, 1846 ई.)

- 1846 में सिक्खों ने पुनः विद्रोह कर दिया, अंग्रेजी सेना ने इस विद्रोह का दमन करके दिलीप सिंह से पुनः एक संधि की। शर्तें—
  1. रानी जिन्दन की संरक्षता समाप्त कर दी गई और उन्हें डेढ़ लाख रुपये वार्षिक पेंशन देने का प्रावधान किया गया।
  2. अंग्रेज रेजीडेंट की अध्यक्षता में 8 सिक्ख सरदारों की एक परिषद बनाई गई जो शासन की देखभाल करेगी।
  3. लाहौर में एक अंग्रेजी सेना रखी जायेगी जिसका खर्च दिलीप सिंह देंगे।

द्वितीय आँग्ल सिक्ख युद्ध (1848-49 ई.)

- इसके अन्तर्गत तीन लड़ाईयाँ लड़ी गईं—
  1. रामनगर का युद्ध 1848 ई. अंग्रेज विजयी हुए
  2. चिलियाँवाला का युद्ध 1849 ई. इसमें सिक्ख विजयी हुए
  3. गुजरात नगर का युद्ध 1849 ई. अंग्रेज विजयी हुए
- सिक्ख सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया।
- अंग्रेजों का सेनापति ह्यूगौफ था।

- 1849 ई. में सिक्ख राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।
- दिलीप सिंह को पेंशन देकर रानी जिन्दन के साथ इंग्लैंड भेज दिया गया।

कम्पनी शासन के अंतर्गत प्रशासनिक व्यवस्था

भू-राजस्व व्यवस्था

- 1757 के प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों द्वारा भू-राजस्व वसूल करना प्रारम्भ किया गया।

- सर्वप्रथम 1772 ई. में वारेन हेस्टिंग्स ने बंगाल में द्वैधशासन समाप्त कर भू-राजस्व वसूल करना शुरु किया।
- 1772 ई. में वारेन हेस्टिंग्स ने 'पंचवर्षीय बंदोबस्त' लागू किया जिसमें प्रत्येक क्षेत्र का राजस्व पाँच वर्ष के लिए निर्धारित किया गया और 1777 ई. में यह व्यवस्था समाप्त हो गयी।
- 1777 ई. में जब यह व्यवस्था समाप्त हुई तो उसकी जगह इसने 'एक वर्षीय बंदोबस्त' लागू किया। इस व्यवस्था में प्रतिवर्ष भू-राजस्व निर्धारित होता था जो 1789-90 ई. तक चलती रही।

ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भूमि बन्दोबस्त

बन्दोबस्त	प्रारम्भ	क्षेत्र	प्रतिशत
1. स्थायी बन्दोबस्त	1793 ई.	बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उ. कर्नाटक, वाराणसी	19%
2. रैय्यतवाड़ी बन्दोबस्त	1792 ई.	मद्रास, बम्बई, पूर्वी बंगाल, असम, कुर्ग क्षेत्र	51%
3. महड़वाड़ी बन्दोबस्त	1822 ई.	संयुक्त प्रांत, मध्य प्रांत एवं पंजाब	30%

स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था

- स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था का जनक **कार्नवालिस** था।
- लार्ड कार्नवालिस ने 1790 ई. में 10 वर्षीय बंदोबस्त लागू किया। निदेशक मंडल की अनुमति मिलने के बाद **1793 ई.** में स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था में परिवर्तित हो गयी, इसी को **जमींदारी व्यवस्था** व **इस्तमरारी व्यवस्था** भी कहा जाता है।
- इस व्यवस्था में जमींदार को भूमि का स्वामी माना गया अतः जमींदार भी कर देने के लिए उत्तरदायी होगा।
- 1790 ई. में जिस क्षेत्र की इकाई से सरकार को कर प्राप्त होता था उस कर का 10/11 भाग जमींदार को देना होता था। जमींदारों को किसानों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए स्वतंत्र कर दिया गया।
- यह व्यवस्था बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा बाद में वाराणसी क्षेत्र व उत्तरी कर्नाटक में लागू किया गया। यह पूरे ब्रिटिश भारत के 19% भाग पर लागू थी।
- इस व्यवस्था में जमींदारों ने किसानों का अत्यधिक शोषण किया। स्थाई बंदोबस्त वाले क्षेत्रों को लगभग 4 करोड़ रुपए वार्षिक कर प्राप्त होता था जबकि जमींदार किसानों से 60 करोड़ वसूल करता था। इसी को **दूरवासी व्यवस्था** भी कहा जाता था जो उपजमींदार के द्वारा अतिरिक्त शोषण किया गया।

रैय्यतबाड़ी बंदोबस्त व्यवस्था

- इस व्यवस्था में सरकार ने सीधे किसानों के साथ राजस्व संबंध निर्धारित किया।
- इस व्यवस्था के जनक **कर्नल रीड** एवं **थामस मुनरो** थे।
- इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य सरकारी आय में वृद्धि करना तथा कृषक हितों में वृद्धि करना था।
- सर्वप्रथम 1792 ई. में कर्नल रीड एवं थामस मुनरो ने इस व्यवस्था को दक्षिण भारत में बारा महल जिले में लागू की।
- 1820 ई. में यह व्यवस्था पूरे मद्रास प्रांत में लागू कर दी गयी और थामस मुनरो को इस व्यवस्था का गवर्नर नियुक्त किया गया।
- 1825 ई. में यह व्यवस्था बम्बई प्रांत में लागू हो गयी।
- यह व्यवस्था मद्रास, बम्बई, पूर्वी बंगाल, असम एवं कुर्ग क्षेत्र में लागू हुयी। यह पूरे ब्रिटिश भारत के 51% भू-भाग पर लागू हुई।

Pariksha Manthan

- इस व्यवस्था में सरकार ने उपज के मूल्य का 1/2 भाग कर निर्धारित किया। सरकार व्यवहारिक रूप में आधे से अधिक कर वसूल करते थे।
- इस व्यवस्था में किसान को भूमि का स्वामी माना गया और उसे भूमि को बेचने, गिरवी रखने का अधिकार दिया गया।
- इस व्यवस्था में हर 30 वर्ष बाद भूमि सर्वेक्षण की व्यवस्था या पुनर्मूल्यांकन की व्यवस्था की गई।

महलवाड़ी बंदोबस्त व्यवस्था

- इस समय महल से तात्पर्य गाँव अथवा जागीर से था। इस व्यवस्था में सरकार गाँव एवं जागीर के साथ राजस्व संबंध स्थापित किया।
- इस व्यवस्था के जनक हॉल्ट मैकेंजी थे, 1822 ई. में यह व्यवस्था कानूनी रूप से शुरु हुई।
- इस व्यवस्था में सरकार ने प्रत्येक गाँव के उपज के मूल्य का 50% कर निर्धारित किया।
- इस व्यवस्था में भी किसानों को भूमि का स्वामी माना गया, उसे भूमि को बेचने अथवा गिरवी रखने का अधिकार प्राप्त था।
- इसी व्यवस्था में सर्वप्रथम मानचित्रों तथा रजिस्टरों का प्रयोग किया गया।
- यह व्यवस्था संयुक्त प्रांत, मध्य प्रांत तथा पंजाब में लागू हुई। यह ब्रिटिश भारत के 30% भू-भाग पर लागू हुई।
- इस व्यवस्था में गाँव के मुखिया को राजस्व वसूल करने का अधिकार दिया गया जिससे गाँव का मुखिया किसानों का शोषण किया और किसानों से बेगार भी करवाने लगे।

अंग्रेजों की न्याय व्यवस्था

- भारत में आधुनिक न्याय व्यवस्था के जनक **वारेन हेस्टिंग्स** थे, इसने प्रत्येक जिले में एक दीवानी न्यायालय और एक फौजदारी न्यायालय की स्थापना की।
- दीवानी न्यायालय जिला कलेक्टर के अधीन था लेकिन फौजदारी न्यायालय एक भारतीय न्यायाधीश के अधीन था।
- इन दोनों न्यायालय के ऊपर दो न्यायालय सदर दीवानी न्यायालय और सदर निजामत न्यायालय गवर्नर जनरल के अधीन थे।
- सदर दीवानी न्यायालय की अपील लंदन के प्रिवी कौंसिल में होती थी जबकि फौजदारी न्यायालय की अंतिम न्यायालय सदर निजामत होती थी।
- वारेन हेस्टिंग्स के बाद लार्ड कार्नवालिस ने न्याय-व्यवस्था में व्यापक सुधार किया। इसने **1793 ई.** में **कार्नवालिस कोड (कार्नवालिस संहिता)** का निर्माण किया जिसमें **शक्ति पृथक्करण का सिद्धांत** लागू किया।
- कार्नवालिस ने जिला के कलेक्टर से दीवानी न्यायालय के न्याय अधिकार अलग कर दिया।
- कार्नवालिस ने जिला फौजदारी न्यायालय में एक यूरोपीय न्यायाधीश नियुक्त किया।
- दीवानी न्यायालय के ऊपर कार्नवालिस ने चार प्रांतीय दीवानी न्यायालय की स्थापना की। जो हैं—

  1. कलकत्ता
  2. ढाका
  3. मुर्शिदाबाद
  4. पटना

- कार्नवालिस ने जिला फौजदारी न्यायालय के ऊपर सर्किट कोर्ट (दौरा न्यायालय) की स्थापना की जो अस्थाई न्यायालय था।

लार्ड हेस्टिंग्स

- इसके समय में निचले स्तर के न्यायिक पदों का भारतीयकरण शुरू हुआ।

Pariksha Manthan

- इस संदर्भ में यह कहा गया कि यदि क्षेत्रीय स्तर पर न्याय व्यवस्था उपलब्ध कराना है तो क्षेत्रीय स्तर पर भारतीयों को न्यायिक पदों में नियुक्त किया जाय।

लार्ड विलियम बैंटिक

- इसके समय में न्यायिक व्यवस्था में अत्यधिक सुधार किए गए और न्याय व्यवस्था का केन्द्रीकरण किया गया।
- इसी के समय 1833 के अधिनियम द्वारा यह व्यवस्था की गयी कि बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया और यह भी व्यवस्था की गई कि गवर्नर जनरल एवं उसकी कार्यकारिणी पूरे ब्रिटिश भारत के लिए कानून बनाएंगे।
- इसने कार्नवालिस के सर्किट कोर्ट को समाप्त कर दिया।
- इसके दो कार्य—
  1. आगरा में एक अपीलीय न्यायालय की स्थापना।
  2. इलाहाबाद में सदर दीवानी एवं सदर निजामत की स्थापना।
- इसने भारतीय कानून को संचित करने तथा इसमें सुधार लाने के लिए 1833 ई. में लार्ड मैकाले की अध्यक्षता में प्रथम विधि आयोग की स्थापना की।
- लार्ड डलहौजी के समय में 1853 का अधिनियम आया इसने पुनः विधि आयोग गठित करने की सलाह दी।
- 1854 में मैकाले के नेतृत्व में द्वितीय विधि आयोग का गठन किया गया। इसी आयोग की संस्तुति पर 1858-61 ई. तक भारतीय दण्ड संहिता, भारतीय सिविल संहिता, भारतीय सिविल कार्य संहिता की रचना हुई।
- इसके बाद 1862 ई. में उच्च न्यायालय अधिनियम पारित किया गया जिसके आधार पर प्रमुख प्रांतों में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गयी।
- 1935 के अधिनियम द्वारा दिल्ली में एक संघीय न्यायालय की स्थापना की गयी।

न्यायिक सुधार से सम्बन्धित बातें

प्रथम विधि आयोग	1833 में	मैकाले की अध्यक्षता में
द्वितीय विधि आयोग	1854 में	मैकाले की अध्यक्षता में
भारतीय दण्ड संहिता भारतीय सिविल संहिता भारतीय सिविल कार्य संहिता		1858-61 ई. के बीच में लिखा गया
उच्च न्यायालय अधि.	1862 ई.	उच्च न्यायालयों की स्थापना
संघीय न्यायालय की स्थापना	1935 के अधि. द्वारा	1937 में

शिक्षा व्यवस्था

- कम्पनी के प्रारम्भिक ब्रिटिश शासक जो भारतीय संस्कृति से प्रभावित थे। वे लोग प्राच्यवादी कहलाए। इनका मानना था कि यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान को भारतीयों को उन्हीं की भाषा में शिक्षित किया जाय।
- 1780-81 ई. में वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा की स्थापना की जिसमें फारसी और अरबी का अध्ययन होता था।
- 1784 ई. में सर विलियम जोंस ने कलकत्ता में रायल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की जिसका उद्देश्य प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति को उजागर करना था।
- 1782 ई. में जोनाथन डंकन ने वाराणसी में एक संस्कृत कालेज की स्थापना की।
- 1813 के अधिनियम द्वारा कम्पनी को निर्देश दिया गया कि ये भारत में प्रतिवर्ष कम से कम एक लाख रुपए शिक्षा के क्षेत्र में खर्च करें।

आंग्ल-प्राच्य विवाद

- अन्ततः लार्ड विलियम बैंटिक ने आंग्लवादी नेता मैकाले के विचारों से सहमत हुआ और 1835 में पहली बार सरकारी शिक्षा नीति की घोषणा की जिसमें कहा गया कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगा।

Pariksha Man

प्रमुख शिक्षा आयोग, गठन वर्ष तथा उनके मुख्य प्रावधान		
आयोग का नाम	**वर्ष**	**मुख्य प्रावधान**
चार्ल्स वुड का डिस्पैच (लार्ड डलहौजी का गवर्नर जनरल के काल में)	1854 ई.	यह भारत की भावी शिक्षा के लिए एक वृहत योजना थी। इसे प्रायः भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। इसके मुख्य प्रावधानों में पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार, उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी माध्यम तथा प्राथमिक शिक्षा के लिए जनभाषा, शिक्षा के लिए निजी प्रयत्नों को प्रोत्साहन, महिला शिक्षा को प्रोत्साहन तथा कलकत्ता, मद्रास एवं मुम्बई में तीन विश्वविद्यालय की स्थापना शामिल था।
हंटर शिक्षा आयोग (लार्ड रिपन के काल में)	1882-83 ई.	इसके मुख्य प्रावधानों में स्थानीय भाषा में प्राथमिक शिक्षा पर जोर, शिक्षा के लिए उपकर, माध्यमिक स्तर पर साहित्यिक शिक्षा के साथ-साथ व्यवहारिक शिक्षा तथा महिला शिक्षा को प्रोत्साहन करने की बात की गई।
शिक्षा नीति प्रस्ताव	1913 ई.	निरक्षरता समाप्त करने की नीति, निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था तथा सभी प्रान्तों में कम से कम एक विश्वविद्यालय की स्थापना।
सैडलर विश्वविद्यालय आयोग	1917-19 ई.	बारह वर्षीय स्कूली शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा के बाद स्नातक की उपाधि तथा अध्यापकों के प्रशिक्षण की उचित व्यवस्थाएं आदि।
हार्टोग समिति	1929 ई.	प्राथमिक शिक्षा में सुधार, केवल प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा आदि का प्रावधान।
शिक्षा की सार्जेन्ट योजना	1944 ई.	देश में प्रारम्भिक विद्यालय तथा हाईस्कूल की स्थापना का प्रावधान, 6 से 11 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था आदि।

- अंतिम रूप से लार्ड ऑकलैण्ड के समय में आंग्ल-प्राच्य विवाद समाप्त हो गया।
- इसी काल में अधोमुखी निश्यंदन सिद्धांत/विप्रवेशन सिद्धांत प्रकाश में आया। यह सिद्धांत बेंटिक के समय शुरु की गई और इसी के समय इसे सरकारी मान्यता भी दी गयी।
- अधोमुखी निश्यंदन सिद्धांत का उद्देश्य सर्वप्रथम उच्च वर्ग को शिक्षित किया जाय, इस वर्ग के शिक्षित होने पर छन-छन कर शिक्षा का प्रभाव जनसाधारण तक पहुँचेगा।

वुड का घोषणा-पत्र (1854)

- ब्रिटिश संसद में भारत की शिक्षा की प्रगति की जाँच के लिए 1853 ई. में बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष चार्ल्स वुड की अध्यक्षता में 1854 में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी जिसे वुड का घोषणा-पत्र कहा जाता है।
- इस घोषणा-पत्र को आधुनिक शिक्षा की आधारशिला माना जाता है जिसमें श्रेणीबद्ध शिक्षण संस्थाओं की स्थापना का प्रावधान किया गया।

भारत में ब्रिटिश राज्य का आर्थिक प्रभाव

उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण

- अंग्रेजों ने जब भारत को अपना उपनिवेश बनाया तो इसकी विभिन्न प्रकार से शोषण करने की योजना बनायी।
- आर. पी. दत्त की रचना आज का भारत का औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। इसमें अंग्रेजों की शोषण प्रवृत्ति के तीन चरणों में विभक्त किया गया है—

1. वाणिज्यिक पूँजीवाद का चरण
2. औद्योगिक पूँजीवाद का चरण

Pariksha

3. वित्तीय पूँजीवाद का चरण

वाणिज्यिक पूँजीवाद का चरण (1757-1813)

- इस चरण में कम्पनी ने अपने तीन लक्ष्य निर्धारित किये—

  1. भारतीय व्यापार पर एकाधिकार

  2. भारतीय सत्ता पर नियंत्रण स्थापित कर सरकारी राजस्व पर कब्जा करना।

  3. भारतीय हस्तशिल्प उद्योग पर नियंत्रण।

  कम्पनी तीनों लक्ष्य प्राप्त करने में सफल रही।

औद्योगिक पूँजीवाद का चरण (1813-58 ई.)

- 18वीं शताब्दी के अन्त में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति हुई इस चरण में कम्पनी का उद्देश्य भारत को एक अधीनस्थ बाजार के रूप में विकसित करना था। साथ ही भारत को एक ऐसे उपनिवेश की भूमिका भी अदा करनी थी जो इंग्लैण्ड के कारखानों के लिए कच्चा माल उपलब्ध करता रहे। इस तरह इंग्लैण्ड के कारखानों में निर्मित सस्ती वस्तुएँ भारत के बाजारों में बिखेर दी गयीं जिसकी प्रतियोगिता में भारतीय वस्तुएँ ठहर नहीं सकी। इस तरह भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों का विनास हुआ।
- 1813 के अधिनियम द्वारा कम्पनी का व्यापारिक एकाधिकार भारत से समाप्त कर दिया और इंग्लैण्ड के सौदागरों के लिए बाजार खोल दिये गये।

वित्तीय पूँजीवाद का चरण (1858-1947 ई.)

- इंग्लैण्ड में इस समय तक अत्यधिक पूँजी जमा हो चुकी थी। इंग्लैण्ड में और अधिक औद्योगीकरण का तात्पर्य था मजदूरों की सौदेबाजी क्षमता में वृद्धि जिससे उद्योगपतियों के मुनाफे पर प्रभाव पड़ता।
- यह वह समय था जब मार्क्स तथा एंजिल्स का द कम्युनिस्ट मेनीफेस्टो अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हो गया।
- अंग्रेजों ने भारत में पूँजी निवेश करने का निश्चय किया। भारत पर पकड़ मजबूत बनाने के लिए इन्होंने सार्वजनिक ऋण को माध्यम बनाया।
- अंग्रेजों की सबसे ज्यादा पूँजी रेलवे विकास में लगी जिसका उद्देश्य भारत की प्रगति न होकर साम्राज्य की सुरक्षा और आर्थिक लाभ कमाना था।

भारतीय हस्तशिल्प उद्योग का विनाश

- 1600 से 1757 तक कम्पनी की भारतीय वस्तुएँ बाहर ले जाते थे और बदले में सोना-चाँदी लाते थे।
- भारतीय वस्तुओं के आधिक्य से घबरा कर ब्रिटिश सरकार को ऐसे कानून बनाने पड़े जिससे इंग्लैण्ड में भारतीय वस्तुओं की बिक्री कम हो जाये।
- राबिन्सन क्रूसो नामक उपन्यास के लेखक डैफो ने यह शिकायत की थी कि भारतीय कपड़े हमारे घरों में सोने के कमरों में प्रवेश कर गया है।
- कम्पनी के कार्यकर्ता ने भारतीय बुनकरों पर दबाव डालकर कम मूल्य पर कपड़ा तैयार करने के लिए बाध्य किया। दबाव को प्रभावशाली बनाने के लिए कम्पनी के कार्यकर्ता बुनकरों को पेशिगी रूपये देने की प्रथा प्रारम्भ की और उनमें एक शर्त नामा लिखवा लेते थे। इस प्रथा को ददनी प्रथा के नाम से जाना जाता है। इससे अनेकों बुनकर अपना व्यवसाय छोड़कर मजदूरी करने लगे।
- 18वीं शताब्दी के अन्त में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति शुरू हुई। अब इंग्लैण्ड के कारखानों में निर्मित सस्ती वस्तुएँ भारतीय बाजारों में भेज दी गयी। भारत की हाथ की बनी वस्तुएँ ठहर न सकी परिणामस्वरूप भारतीय हस्तशिल्प उद्योग का विनाश हुआ, बहुत से लोग मजदूरी करने लगे जिनके पास पैसा था खेत खरीद लिया। जो साधन विहीन थे वह कृषि मजदूर बन गये इस तरह कृषि पर दबाव पड़ा और देश गरीब हो गया।

Pariksha Manthan

धन निष्कासन का सिद्धांत

- धन निष्कासन सिद्धांत का सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक 'द पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया, में प्रतिपादित किया।
- दादा भाई नौरोजी ने धन निष्कासन की चर्चा सर्वप्रथम 2 मई, 1867 ई. को लंदन में ईस्ट इण्डिया एसोशिएसन की बैठक में पढ़े गए अपने एक लेख 'इंग्लैण्ड डेब्ट टु इण्डिया' में किया।
- धन निष्कासन के सिद्धांत को कांग्रेस ने सर्वप्रथम 1896 ई. में कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में स्वीकार किया गया।
- धन निष्कासन का विरोध करने वाले एम. जी. रानाडे और आर.सी. दत्त थे।
- कार्लमार्क्स के अनुसार–''भारत में ब्रिटिश आर्थिक नीति घिनौनी है।''
- अंग्रेज नागरिक **सेलबन** के अनुसार–''हमारी अर्थव्यवस्था एक स्पंज के समान है जो भारतीय अर्थव्यवस्था को सोख लेती है और फिर टेम्स नदी के किनारे निचोड़ देती है।''
- धन निष्कासन का विरोध करने वाले समाचार पत्रों में 'अमृत बाजार पत्रिका' (शिशिर कुमार घोष) महत्वपूर्ण है।
- भारत का सर्वाधिक धन गृह व्यय के रूप में इंग्लैण्ड गया।

1857 का विद्रोह

- सुरेन्द्र नाथ सेन को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकारी इतिहासकार बनाया गया था।
- 1857 के विद्रोह के समय इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया और प्रधानमंत्री पार्मस्टन तथा भारत का गवर्नर लार्ड कैनिंग था।
- 1857 के विद्रोह की योजना भारत के बिठूर (कानपुर) में तैयार की गई जिसमें नाना साहब और अजीमुल्ला खाँ थे। इसके बाद अजीमुल्ला खाँ लंदन गए और वहाँ रह रहे भारतीयों से भी समर्थन प्राप्त किया।
- 1857 के विद्रोह का प्रतीक कमल का फूल और रोटी था। विद्रोही हरे रंग के झण्डे का प्रयोग किए।

1857 के विद्रोह का स्वरूप

- अनेक ब्रिटिश इतिहासकार इस विद्रोह को सैनिक विद्रोह, मुस्लिम षड़यंत्र तथा धर्मांधों का ईसाईयों के विरुद्ध विद्रोह आदि मानते हैं।
- अधिकांश भारतीय इतिहासकार इसे भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ा गया प्रथम स्वतंत्रता संग्राम या राष्ट्रीय आंदोलन मानते हैं।
- यह पूर्णतः राष्ट्रीय आंदोलन नहीं था क्योंकि राष्ट्रीय भावना से सभी लोग प्रेरित भी नहीं थे फिर भी यह राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण था क्योंकि सभी का उद्देश्य भारत से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना था।

कारण

राजनीतिक कारण

- मुगल सम्राटों के अधिकारों का ह्रास
- डलहौजी ने 1856 ई. में अवध के शासक वाजिद अलीशाह पर कुप्रशासन का आरोप लगाकर अवध को अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर लिया और अवध के नवाब वाजिद अलीशाह को कलकत्ता निर्वासित कर दिया।
- लार्ड डलहौजी ने भारतीय नरेशों को पुत्र को गोद लेने का निषेध किया और राज्यों को हड़प लिया।

  जैसे—सतारा; संभलपुर; जैतपुर; बघात; झाँसी; उदयपुर
- नाना साहब की पेंशन बंद करना।

आर्थिक कारण

- यहाँ अंग्रेजों की भू-राजस्व नीति के कारण लोगों का

Pariksha Manthan

अत्यधिक शोषण हुआ और इनकी आर्थिक नीतियों के कारण अकाल और महामारी पैदा हुई जिससे सर्वाधिक संख्या में लोगों की मृत्यु हो गयी।

सामाजिक एवं धार्मिक कारण

- अंग्रेज भारतीयों का बहुत अपमान करते थे, ये भारतीयों को नश्ली गाली देते थे।
- एक अंग्रेज अधिकारी **एडवर्ड** के अनुसार–हमारा भारत में अधिकार करने का उद्देश्य लोगों को इसाई बनाना था।
- 1850 ई. में लेक्स लोकी कानून (धार्मिक अयोग्यता संबंधी कानून) पारित किया गया। इसके अनुसार जो हिन्दू ईसाई धर्म स्वीकार करेगा उसे उसके पैतृक उत्तराधिकारों से वंचित नहीं किया जाएगा।

सैनिक कारण

- भारतीय सेना में 2 लाख 38 हजार भारतीय सैनिक व 45 हजार यूरोपीय सैनिक थे जिसमें भारतीय सैनिकों की संख्या अधिक थी। सैनिकों में असंतोष का सबसे बड़ा कारण भेद-भाव की नीति थी।
- 1854 ई. में डाकघर सुधार अधिनियम पारित हुआ। इसके द्वारा सैनिकों की निःशुल्क डाक सेवा समाप्त कर दी गयी।
- कैनिंग सरकार ने सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम 1856 ई. में पारित किया जिससे सैनिकों में असंतोष फैल गया।

तात्कालिक कारण

- 1856 ई. में ब्रिटिश सरकार ने सैनिकों को ब्राउन बेस्ड बंदूक की जगह न्यू इनफील्ड राइफल प्रयोग करने के लिया दिया जिसमें चर्बीयुक्त कारतूस लगी होती थी जिसे दाँत से खींचना पड़ता था।
- सर्वप्रथम बंगाल में अफवाह फैली कि इन कारतूसों में गाय एवं सूअर की चर्बी लगाई गयी है बाद में जब सरकार ने कारतूसों को मंगाना शुरू किया तो शक हकीकत में बदल गया।
- सर्वप्रथम बंगाल में स्थित दमदम के सैनिकों ने कारतूसों के प्रयोग करने से इंकार कर दिया।
- 28 मार्च, 1857 ई. को बैरकपुर छावनी के 34वीं रेजीमेंट के एक सिपाही मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूस के विरोध में आगे आया और इसने एडजुटेंट लेफ्टीनेंट बाग की गोली मारकर हत्या कर दी तथा सर्जेंट ह्यूरसन को गोली मारकर घायल कर दिया।
- मंगल पांडे को 10 अप्रैल, 1857 ई. को फाँसी दे दी गई और यही विरोध विद्रोह में बदल गया।

विद्रोह का प्रारम्भ

- 24 अप्रैल, 1857 ई. को मेरठ छावनी के कुछ भारतीय सैनिक कारतूस लेने से इंकार कर दिया परिणामस्वरूप उन पर मुकदमा चला और 9 मई, 1857 ई. को 85 सैनिकों को नौकरी से बर्खास्त करके सजा सुनाई गई।
- 10 मई, 1857 ई. को मेरठ स्थित सभी सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और अपने सैनिकों को रिहा कराकर अस्त्र-शस्त्र की लूटपाट की।

दिल्ली

- मेरठ के सभी विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे और यहाँ अंग्रेजी सेना को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। विद्रोहियों ने बहादुरशाह जफर को अपना सम्राट घोषित किया।
- 20 सितम्बर 1857 ई. को हड्सन के नेतृत्व में एक अंग्रेजी सेना दिल्ली पहुँची और विद्रोहियों को पराजित कर पुनः दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- बहादुरशाह जफर हुमायूँ के मकबरे में जा छिपा अन्ततः मृत्युदण्ड न देने के शर्त में आत्मसमर्पण कर दिया। इसे रंगून भेज दिया गया जहाँ 1862 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।

Pariksha Manthan

लखनऊ

- लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व नवाब वाजिद अली शाह की पत्नी बेगम हजरत महल ने किया। इनकी देखरेख में बिरजिश कादर को अवध का नवाब घोषित किया गया।
- मार्च, 1858 ई. में कैम्पवेल के नेतृत्व में एक सेना लखनऊ पहुँची, इसने विद्रोहियों को पराजित कर लखनऊ पर अधिकार कर लिया।
- बेगम हजरत महल गिरफ्तारी से बचने के लिए नेपाल चली गयी।

कानपुर

- कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व नाना साहब (धोंधुपंत) ने किया जिन्हें पेशवा घोषित किया गया।
- नाना साहब की तरफ से लड़ने की जिम्मेदारी तात्या टोपे को दी गयी थी जिनका वास्तविक नाम रामचंद पांडुरंग था।
- दिसम्बर, 1857 ई. में कैम्पवेल के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना कानपुर पहुँची और फिर से कानपुर में अधिकार कर लिया।
- नाना साहब नेपाल भाग गए जबकि तात्या टोपे गिरफ्तार कर लिए गए, अन्ततः इनको फांसी हो गयी।

झाँसी

- झाँसी में विद्रोह का नेतृत्व गंगाधर राव की विधवा पत्नी रानी लक्ष्मीबाई ने किया।
- मार्च, 1858 ई. में ह्यूरोज के नेतृत्व में एक अंग्रेजी सेना झाँसी पहुँची। रानी लक्ष्मीबाई ह्यूरोज से युद्ध किया लेकिन कुछ गद्दारों के कारण यह पराजित हुई।
- झाँसी से रानी ग्वालियर पहुँची और ग्वालियर के कुछ विद्रोहियों के सहयोग से इन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। पीछे से ह्यूरोज अपनी सेना के साथ ग्वालियर पहुँचा और रानी के साथ युद्ध किया। कोटा एवं मोरार के युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुई।

जगदीशपुर (बिहार)

- यहाँ के विद्रोह का नेतृत्व यहाँ के जमींदार 80 वर्षीय बाबू कुँअर सिंह ने किया था।

इलाहाबाद

- यहाँ के विद्रोह का नेतृत्व मौलवी लियाकत अली ने किया, इन्हें इलाहाबाद का सूबेदार घोषित किया गया।

1857 के विद्रोह के महत्वपूर्ण केन्द्र

केन्द्र	नेतृत्व	विद्रोह का दमन/नेतृत्व
दिल्ली	बहादुरशाह जफर	हडसन
लखनऊ	बेगम हजरत महल	कैम्पवेल
कानपुर	नाना साहब	कैम्पवेल
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज
जगदीशपुर (बिहार)	कुँवर सिंह	विलियम टेलर/ विंसेट आयर
इलाहाबाद	मौलवी लियाकत अली	जनरल नील
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला शाह	कैम्पवेल
बरेली	खान बहादुर खान	कैम्पवेल
गोरखपुर	गजाधर सिंह/ निजाम मुहम्मद	स्थानीय सेना
मंदसौर (म.प्र.)	फिरोजशाह	स्थानीय सेना
कोटा (राज.)	जयदयाल एवं हरदयाल	स्थानीय सेना
असम	कन्दर्पेश्वर सिंह/ मनीराम दत्ता	स्थानीय सेना
कुल्लू (हिमांचल प्रदेश)	वीरसिंह/प्रताप सिंह	स्थानीय सेना
मथुरा	देवी सिंह	स्थानीय सेना
मेरठ	कदमसिंह	स्थानीय सेना

Pariksha Manthan

फैजाबाद

- यहाँ के विद्रोह का नेतृत्व मौलवी अहमदुल्लाशाह ने किया पूरे विद्रोह में यही एक विद्रोही थे जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध **जेहाद** का नारा दिया और गुरिल्ला पद्धति से युद्ध किया।

1857 के विद्रोह से सम्बन्धित विचार

- 'यह एक सैनिक विद्रोह था' —लारेंस एवं शीले
- 'यह धर्मान्धों का ईसाईयों के विरुद्ध युद्ध था' —एल.ई.आर. रीज
- 'यह बर्बरता एवं सभ्यता के बीच युद्ध था' —टी.आर. होम्स
- 'यह अंग्रेजों के विरुद्ध मुस्लिम षडयंत्र था' —आउट्रम एवं टेलर
- 'यह भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ा गया प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था' —वी. डी. सावरकर एवं अशोक मेहता
- 'यह आन्दोलन राष्ट्रीय विद्रोह था' —डिजरैली
- 'इन देशी नरेशों एवं सरदारों ने इस तूफान के आगे तरंगरोध का कार्य किया अन्यथा हम एक ही झोंके में उड़ गये होते' —लार्ड कैनिंग
- 'यहाँ पर सोई हुई महिला सभी विद्रोहियों में एक मात्र मर्द है' —ह्यूरोज (रानी लक्ष्मीबाई के बारे में)

विद्रोह के असफलता के कारण

1. विद्रोह का सीमित स्वरूप।
2. देशी नरेशों एवं सरदारों की गद्दारी।
3. कुशल नेतृत्व का अभाव।
4. निश्चित उद्देश्यों का अभाव।
5. विद्रोहियों के पास सीमित साधन।
6. जन समर्थन का अभाव।
7. अंग्रेजी सेना का कुशल नेतृत्व।

1857 के विद्रोह से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- विद्रोह से पहले अजीमुल्ला खाँ लंदन एवं तुर्की गये थे। कुस्तुन्तुनिया में उनकी मुलाकात ब्रिटिश पत्रकार डब्लू.एच. रसेल से हुई थी।
- बेगम हजरत महल के साथ सिकंदरबाग में वीरांगना ऊदादेवी ने युद्ध किया था।
- तात्या टोपे को 1859 में फांसी दी गई जो इस विद्रोह की अंतिम घटना थी।
- 1857 के विद्रोह के झंडा गीत की रचना अजीमुल्ला खाँ ने की थी। जो इस प्रकार था—

हम हैं इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा।
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।।

- 1857 ई. के विद्रोह में राजस्थान में अजमेर, नीमच, आऊवा आदि स्थलों में विद्रोह हुए थे लेकिन जयपुर विद्रोह का केन्द्र नहीं था।
- अंग्रेज राजपूत राज्यों में 1857 के विद्रोह को दबाने में सफल रहे क्योंकि स्थानीय शासकों ने क्रांतिकारियों का साथ नहीं दिया था।

आदिवासी विद्रोह/जनजातीय आन्दोलन

- आदिवासियों का अपना कानून हुआ करता था लेकिन अंग्रेजी राज्य विस्तार के पश्चात उनके व्यक्तिगत कानूनों में पुलिस एवं प्रशासन का हस्तक्षेप होने लगा, जिसके कारण वे दुखी थे।
- आदिवासी बाहरी लोगों को दिकू कहते थे जिसका तात्पर्य उन लोगों से था जो उन्हें परेशान करते थे। जैसे महाजन, ठेकेदार, जमींदार, अधिकारी आदि।
- दस्तकार, ग्वाले और स्थानीय राजाओं को दिकू नहीं माना जाता था।
- आदिवासी विद्रोह प्रमुख कारण आर्थिक था।

Manthan

प्रमुख आदिवासी विद्रोह					
विद्रोह का नाम	वर्ष	नेतृत्व	कारण	क्षेत्र	परिणाम
1. महाराष्ट्र का भील विद्रोह	1820 से 1857 तक	दशरथ, हिरिया, सेवरम	आर्थिक कारण	महाराष्ट्र	अंग्रेजों द्वारा दमन
3. संथाल विद्रोह	1855-56	सिद्धू एवं कान्हू	आर्थिक शोषण	दामन-ए-कोह (बिहार में भागलपुर से लेकर राजमहल तक)	अंग्रेजों द्वारा दमन
4. मुंडा विद्रोह	1874 से 1900 ई.	बिरसा मुंडा	आर्थिक एवं धार्मिक	दक्षिणी बिहार का छोटा नागपुर क्षेत्र	अंग्रेजों द्वारा दमन
5. कोल विद्रोह	1831-32 ई.	बुद्धू भगत	आर्थिक शोषण	छोटा नागपुर क्षेत्र	अंग्रेजों द्वारा दमन
7. खौड़ विद्रोह	1846-55 ई.	चक्र विशोई	मोरिया प्रथा को रोकने का प्रयास	उड़ीसा	अंग्रेजों द्वारा दमन

अन्य प्रमुख विद्रोह				
विद्रोह	वर्ष	नेतृत्व	कारण/स्थान	विशेष
1. सन्यासी विद्रोह	1763-1800 ई.	शंकराचार्य के अनुयायी (गिरि सम्प्रदाय)	ब्रिटिश शोषण बंगाल में	आनंद मठ का कथानक इसी विद्रोह पर आधारित है।
3. पागलपंथी विद्रोह	1813-31 ई.	टीपू	ब्रिटिश शोषण बंगाल में	टीपू शेरपुर का राजा बन गया।
4. फैराजी आन्दोलन	1820-31 ई.	हाजी शरियत उल्ला एवं टीटू	ब्रिटिश शोषण बंगाल में	—
5. वहाबी आन्दोलन	1820-1880 ई.	सैय्यद अहमद	धार्मिक कारण अनेक क्षेत्रों में	यह आंदोलन मुसलमानों के लिए था।
6. कूका आन्दोलन	1840-1872 ई.	सेन साहब एवं बाबा रामसिंह कूका	धार्मिक एवं राजनीतिक पंजाब में	रामसिंह कूका को रंगून भेज दिया गया।
7. नामधारी आन्दोलन	1863-72 ई.	बाबा रामसिंह कूका	धार्मिक पंजाब में	—

कृषक आन्दोलन

- ब्रिटिश शासन ने भारतीय किसानों पर सर्वाधिक कहर ढाया।
- जमींदारों ने भी किसानों पर अत्यधिक अत्याचार किया, उनसे बेगार लिया जाने लगा और मनमाने ढंग से अवैध लगान वसूली का दुश्चक्र चल पड़ा।
- उपरोक्त कारणों से किसान आन्दोलनों का विस्फोट समय-समय पर अलग-अलग स्थानों पर दीर्घकालिक असंतोष एवं तात्कालिक कारणों से होता रहा।

19वीं शताब्दी के कृषक आन्दोलन				
विद्रोह	वर्ष	नेतृत्व	क्षेत्र	परिणाम
1. नील विद्रोह	1859-60 ई.	दिगम्बर विश्वास, विष्णु विश्वास	बंगाल	किसानों का यह आन्दोलन सफल रहा।
2. पावना विद्रोह	1873 ई.	ईशान चन्द्र राय, केशव चन्द्र राय	बंगाल	आंशिक सफलता मिली।
3. दक्कन उपद्रव	1875 ई.	पूना जिले के किसानों द्वारा नेतृत्व	महाराष्ट्र	आंशिक सफलता मिली।

नील आन्दोलन (1859-60 ई.)

- बंगाल के अंग्रेज नील उत्पादक (निलहे) किसानों को जबरन नील की खेती करने को बाध्य किया और उसकी बहुत कम कीमत किसानों को देते थे। इससे किसानों में अत्यधिक असंतोष था।
- बंगाल के नदिया जिले के गोविन्दपुर गाँव के एक नील उत्पादक के दो भूतपूर्व कर्मचारियों दिगम्बर विश्वास एवं विष्णु विश्वास के नेतृत्व किसानों ने नील आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- हिन्दू पैट्रियाट के सम्पादक हरिश्चन्द्र मुखर्जी ने इस आन्दोलन के लिए काफी कार्य किया।
- दीनबन्धु के नाटक नील दर्पण में किसानों के शोषण का वर्णन किया गया है।
- सरकार ने 1860 में सी. टोनकार की अध्यक्षता में नील आयोग का गठन किया। इस आयोग में एक भारतीय सदस्य ब्रिटिश इंडिया एसो. के चन्द्रमोहन चटर्जी थे।

20वीं शताब्दी के किसान आन्दोलन				
विद्रोह	वर्ष	नेतृत्व	क्षेत्र	परिणाम
2. संयुक्त प्रांत का किसान आन्दोलन	1918 ई.	गौरीशंकर मिश्र, इन्द्र नारायण द्विवेदी मदन मोहन मालवीय	अवध एवं आगरा	आंशिक सफलता
3. अवध किसान सभा का आन्दोलन	1920 ई.	बाबा रामचन्द्र	अवध क्षेत्र में	दमन कर दिया गया।
4. एका आन्दोलन	1921-22 ई.	मदारी पासी एवं सहदेव	हरदोई, बाराबंकी बहराइच, सीतापुर	दमन कर दिया गया।

एका आन्दोलन

- 1921-22 में हरदोई, बाराबंकी, बहराइच एवं सीतापुर के किसानों ने मदारी पासी एवं सहदेव के नेतृत्व में एका आन्दोलन चलाया।
- इस आन्दोलन का कारण अत्यधिक लगान वृद्धि एवं गैर कानूनी रूप से किसानों से खेत छीनना था।
- पुलिस ने जमींदारों के हितों की रक्षा के लिए इस आन्दोलन का दमन कर दिया।

बारदोली सत्याग्रह

- गुजरात के बारदोली ताल्लुका में सरकार ने 27% राजस्व में वृद्धि कर दी थी।
- इस आन्दोलन का नेतृत्व वल्लभ भाई पटेल ने किया।
- इस आन्दोलन में महिलाओं की सक्रिय भूमिका रही। मनीबेन पटेल, शारदा बेन शाह, मीठू बेन पेटिट और शारदा मेहता जैसी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- बारदोली की महिलाओं एवं गाँधीजी ने वल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि दी।

अखिल भारतीय किसान संगठन की स्थापना (1936 ई.)

- अखिल भारतीय किसान संगठन की स्थापना 1936 ई. में लखनऊ में हुई। इसका नाम अखिल भारतीय किसान सभा रखा गया।
- इसका पहला सम्मेलन अप्रैल 1936 में लखनऊ में हुआ।
- अखिल भारतीय किसान सभा के अध्यक्ष स्वामी सहजानंद सरस्वती एवं महासचिव प्रो. एन. जी. रंगा थे।
- अखिल भारतीय किसान सभा ने भारत से ब्रिटिश शासन का उन्मूलन एवं भारत की स्वाधीनता अपना लक्ष्य घोषित किया।
- 1 सितम्बर 1936 ई. को किसान दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।
- 1938 में आन्ध्र प्रदेश के गुन्टूर जिले में निदुब्रोल नामक स्थान पर प्रथम भारतीय किसन स्कूल खोला गया।
- 1942 ई. तक किसान आन्दोलन एवं राष्ट्रीय आन्दोलन साथ-साथ चलते रहे।

आधुनिक शिक्षा का विकास

- डेक्कन एजुकेशनल सोसाइटी की स्थापना से संबंधित थे बी.जी. तिलक। 1884 ई. में इसकी औपचारिक रूप में स्थापना वी. के. चिपलूंणकर, बी. जी. तिलक, एम. बी. नामजोशी ने मिलकर की थी।
- स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन के समय राष्ट्रीय शिक्षा का भी प्रचार-प्रसार हुआ। इस समय अनेक राष्ट्रीय स्कूलों की स्थापना हुई। इन राष्ट्रीय स्कूलों में किस प्रकार की शिक्षा दी जाये, इसको निर्धारित करने के लिए 15 अगस्त 1906 को 'नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन' अर्थात् राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना की गई।
- सर विलियम जोंस ने 1789 ई. में कालीदास के प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था। सर विलियम जोंस कलकत्ता हाईकोर्ट के जज के रूप में भारत आये थे। 1784 ई. में इन्होंने कलकत्ता में रायल एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की थी।
- 1854 के चार्ल्स वुड के डिस्पैच को आधार बनाकर लार्ड कैनिंग के समय में लंदन विश्वविद्यालय के तर्ज पर 1857 में तीन विश्वविद्यालय भारत में स्थापित किये गये। ये थे—कलकत्ता, मद्रास एवं बम्बई।

Pariksha

19वीं शताब्दी पुनर्जागरण

(सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन)

- पुनर्जागरण आधुनिक भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है जिसने भारतीयों को आत्मनिरीक्षण करने के लिए विवश किया।

पुनर्जागरण के कारण

1. भारत की सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति

- 18वीं शताब्दी का भारतीय समाज अंधविश्वासों के जाल में जकड़ा हुआ था। समाज कठोर जाति प्रथा पर आधारित था। छूआछूत का परम्परा अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी जिससे भारतीय समाज उच्च एवं निम्न दो वर्गों में विभक्त हो गया था।
- समाज में सती प्रथा, कन्यावध, विधवा व्यवस्था, पर्दा प्रथा, अशिक्षा जैसी कुरीतियाँ विद्यमान थीं। इन्हीं कारणों से सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन की आवश्यकता पड़ी।

2. ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार

- 1813 के अधिनियम द्वारा ईसाई मिशनरियों का भारत में आने, यहाँ बसने तथा प्रचार-प्रसार करने की अनुमति मिली।
- इसी समय से भारत में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार में तेजी आई। बड़ी संख्या में निम्न वर्ग के हिन्दुओं को ईसाई बनाया जाने लगा। इससे हिन्दुओं में प्रतिक्रिया हुई और सुधार का कार्य प्रारम्भ हुआ।

3. प्राच्यवादियों पर प्रभाव

- प्राच्यवादी वे अंग्रेज विद्वान थे जो प्राचीन भारतीय संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित थे।
- प्राच्यवादियों ने भारतीय इतिहास, धर्म, दर्शन, कला का अध्ययन किया और प्राचीन उपलब्धियों को प्रकाश में लाने में योगदान दिया। इससे भारतीयों में आत्म गौरव व आत्म सम्मान की भावना जागृत हुई।

4. अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य विचारधारा का प्रभाव

- भारत में अंग्रेजी प्रभुत्व की स्थापना के साथ ही पाश्चात्यीकरण (आधुनिकीकरण) की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई।
- इसका प्रभाव कलकत्ता, मद्रास एवं बम्बई में पहले पड़ा। इससे एक नये वर्ग का उदय हुआ, जिसे मध्य वर्ग कहा गया।

प्रमुख सुधारक 'राजा राममोहन राय'

- बंगाल से शुरु हुए सुधार आन्दोलन का नेतृत्व राजा राममोहन राय ने किया।
- इसी कारण इन्हें भारत के नवजागरण का अग्रदूत सुधार आन्दोलनों का प्रवर्तक और आधुनिक भारत का पहला महान नेता कहा जाता है।

राजा राममोहन राय : एक दृष्टि में

- जन्म 1774 ई. में बंगाल में।
- प्रथम ग्रंथ फारसी भाषा में 'तोहफल-उल-मुहीद्दीन'
- 1817 ई. में डच घड़ी साज डेविड हेयर के सहयोग से कलकत्ता में हिन्दू कालेज की स्थापना की।
- 1825 ई. में कलकत्ता में वेदान्त कालेज की स्थापना की।
- 1828 ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना की।
- 1829 ई. में इन्हीं के प्रयासों से सरकार ने सती प्रथा निषेध कानून पारित किया।
- 1830 ई. में मुगल सम्राट अकबर II ने इन्हें राजा की उपाधि दी और इंग्लैंड भेजा।
- 1833 ई. में इंग्लैंड में इनकी मृत्यु हुई और वहीं हिन्दू परंपरा के अनुसार इनका दाह संस्कार किया गया।

Pariksha Manthan

- इनका पहला ग्रंथ फारसी भाषा में ''तोहफत-उल-मुहीद्दीन (एकेश्वरवादियों को उपहार) प्रकाशित हुआ। इसमें मूर्तिपूजा का विरोध किया गया और एकेश्वरवाद को सब धर्मों का मूल बताया।
- 1828 ई. में इन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की जिसका उद्देश्य राजा राममोहन राय की मान्यताओं के अनुसार हिन्दू धर्म में सुधार करना था।
- इन्होंने समाज-सुधार एवं शिक्षा के विकास पर अत्यधिक बल दिया।

ब्रह्म समाज

- 1828 ई. ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राममोहन राय ने किया।
- 1833 ई. में राजा राममोहन राय की मृत्यु के बाद इसका नेतृत्व द्वारिकानाथ टैगोर के हाथों में आया।
- केशवचन्द्र सेन की उदारता के कारण ब्रह्म समाज में फूट पड़ गई। 1865 में देवेन्द्रनाथ टैगोर ने इन्हें आचार्य के पद से हटा दिया।
- केशवचन्द्र सेन ने भारतीय ब्रह्म समाज की स्थापना की।
- केशवचन्द्र सेन के प्रयासों से सरकार 1872 ई. में ब्रह्म विवाह ऐक्ट पारित किया।
- 1878 ई. में भारतीय ब्रह्म समाज में फूट पड़ गई। केशवचन्द्र के अनेक अनुयायी मिलकर साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना की जिसके अध्यक्ष बने आनन्द मोहन बसु।

ब्रह्म समाज	संस्थापक	राजा राममोहन राय
आदि ब्रह्म समाज	संस्थापक	देवेन्द्र नाथ टैगोर
भारतीय ब्रह्म समाज	संस्थापक	केशवचन्द्र सेन
साधारण ब्रह्म समाज	संस्थापक	आनन्द मोहन बसु एवं उनके सहयोगी

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

- इनकी विद्वता के कारण इन्हें विद्यासागर की उपाधि मिली।
- समाज सुधार के क्षेत्र में इनका सबसे बड़ा काम विधवा विवाह को कानूनी मान्यता दिलाने में थी।
- इन्हीं के प्रयासों से ब्रिटिश सरकार ने 1856 में 'विधवा पुनर्विवाह अधिनियम' पारित किया।
- स्त्री शिक्षा के विकास में भी इनका योगदान महत्वपूर्ण है। इन्होंने बेथून स्कूल के निरीक्षक की हैसियत से 35 बालिका विद्यालयों की स्थापना की।

यंग बंग आन्दोलन

- यंग बंग आन्दोलन के प्रवर्तक हेनरी विवियन डेरोजियो थे।
- डेरेजियन आधुनिक पाश्चात्य विचारों से प्रभावित थे।
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने हेनरी विवियन डेरोजियो को आधुनिक सभ्यता का अग्रदूत और अपनी जाति के पिता के रूप में स्वीकार किया।

प्रार्थना समाज

- 1867 ई. में केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से आत्माराम पाँडुरंगा ने इसकी स्थापना बम्बई में की।
- 1869 ई. में महादेव गोविन्द राना डे एवं आर. जी. भंडारकर जैसे लोग इसके सदस्य बनें।

परम हँस मंडली

- 1849 ई. में आत्माराम पांडुरंग ने बम्बई में परम हँस मंडली की स्थापना की।
- इसके अन्य प्रमुख सदस्यों में दादोबा पांडुरंग एवं बालकृष्ण जयकर थे।
- यह एकेश्वरवाद एवं विश्व बन्धुत्व की अवधारणा पर आधारित थी।
- यह ईसाई धर्म के अनुष्ठानों की नकल करते थे। इससे इन पर जनता को संदेह होने लगा। अतः 1860 ई. में परमहँस मंडली समाप्त हो गई।

- एम. जी. राना डे इसके वास्तविक संस्थापक थे। इन्हें महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है।

थियोसोफिकल सोसायटी

- इसकी स्थापना 1875 ई. में एक रूसी महिला एच.पी. ब्लावात्सकी एवं एक अमेरिकी सैनिक अधिकारी एच.एस. आल्काट ने मिलकर न्यूयार्क में की थी।
- इसके संस्थापक 1879 में भारत आये एवं मद्रास के निकट अड्यार में 1882 ई. में इसका मुख्यालय स्थापित किया।
- 1893 में एनी बेसेंट शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने अमेरिका गई।
- 1907 में एनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष बनीं।
- 1898 में एनी बेसेंट ने बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू कालेज की स्थापना की जो 1916 ई. में मदनमोहन मालवीय के प्रयासों से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया।

आर्य समाज

- आर्य समाज की स्थापना 1875 ई. में स्वामी दयानंद सरस्वती (मूलशंकर) ने बम्बई में की।
- 1877 ई. में इन्होंने अपना मुख्यालय लाहौर में बनाया।
- स्वामी जी ने वेदों की तरफ लौट चलो का नारा दिया।
- इन्होंन छुआछूत जन्म मूलक जाति व्यवस्था, बाल विवाह का विरोध किया।
- स्वामी दयानंद सरस्वती को भारत का मार्टिन लूथर कहा जाता है।
- 1874 ई. में इन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रंथ हिन्दी में प्रकाशित की।
- आर्य समाज द्वारा शुद्धि आन्दोलन चलाया गया। इसके माध्यम से जो हिन्दू ईसाई अथवा मुसलमान बन गये थे। उनकी इच्छा से उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में लाया गया।
- 1886 ई. में लाला हँसराज ने लाहौर में दयानंद-एंग्लो-वैदिक स्कूल की स्थापना की जो 1889 में कालेज के रूप में परिवर्तित हो गया।
- 1902 ई. में मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद) ने हरिद्वार के निकट काँगड़ी में गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना की।

रामकृष्ण मिशन

- इसके संस्थापक स्वामी विवेकानंद (नरेन्द्रनाथ दत्त) थे।
- यह रामकृष्ण परमहँस के प्रमुख शिष्यों में से एक थे।
- 1893 ई. में स्वामी विवेकानंद अमेरिका गये और शिकागो के प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया।
- इनके प्रभावशाली भाषणों को सुनकर अमेरिकी अखबार न्यूयार्क हेराल्ड ने लिखा था, विवेकानंद निश्चित रूप से विश्व धर्म सम्मेलन में सबसे प्रमुख व्यक्तित्व हैं।
- पश्चिमी देशों के लोग इन्हें "साइक्लोनिक माँक ऑफ इंडिया" कहकर पुकारते थे।
- 1897 ई. में इन्होंने बड़ा नगर (बारानगर) में रामकृष्ण मठ नामक एक संस्था की स्थापना की।
- 1899 ई. में बेल्लूर (पं. बंगाल) में एक मठ की स्थापना की।

रामकृष्ण मठ—यह ऐसे योग्य और आदर्श सन्यासी तैयार करते हैं जो धर्म प्रचार के मुख्य आधार है।

रामकृष्ण मिशन—यह समाज सेवा, पुस्तकों आदि द्वारा स्वामी रामकृष्ण परमहँस एवं स्वामी विवेकानंद के विचारों का प्रचार-प्रसार सम्पूर्ण विश्व में करते हैं।

Pariksha Manthan

मलाबारी प्रस्ताव

- हिन्दू कन्याओं के विवाह की न्यूनतम आयु निश्चित करवाने के लिए बम्बई के एक पारसी बहरामजी मलाबारी आगे आये।
- 1884 में इन्होंने एक लघु पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें हिन्दू कन्या के विवाह की उम्र कम से कम 12 वर्ष करने का प्रस्ताव रखा। इसे ही मलाबारी प्रस्ताव कहते हैं।
- 1891 में वायसराय की परिषद में यह प्रस्ताव रखा गया अन्ततः यह न्यूनतम अवस्था बिल पारित हो गया।
- हिन्दू कन्या के विवाह की न्यूनतम आयु 12 वर्ष कर दी गई।
- बालगंगाधर तिलक ने इस प्रस्ताव का विरोध किया था।

शारदा ऐक्ट (1929 ई.)

- 1929 ई. में अजमेर के निवासी हर विलास शारदा के प्रयत्नों से बाल विवाह निषेध कानून बना जिसे शारदा ऐक्ट के नाम से जाता है। इसके अनुसार विवाह के समय बालक की आयु 18 वर्ष एवं कन्या की आयु 14 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए।

मुस्लिम सुधार आन्दोलन

अलीगढ़ आन्दोलन

- अलीगढ़ आन्दोलन के प्रवर्तक सर सैय्यद अहमद खाँ थे।
- सर सैय्यद अहमद खाँ पाश्चात्य संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित थे। इन्होंने बताया कि कुरान में ऐसी कोई बात नहीं है जो मुसलमानों को अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने या पश्चिमी संस्कृति के सम्पर्क में आने से रोके।

सर सैय्यद अहमद खाँ

- जन्म 1817 ई. में दिल्ली में। 1839 ई. में आगरा कमिश्नरी में नाइब मुंशी के पद पर नियुक्ति।
- 1841 ई. में मुंशिफ की परीक्षा पास की। मुंसिफ के रूप में मैनपुरी में नियुक्ति।
- 1857 के विद्रोह के समय में बिजनौर में सदर अमीन के पद पर नियुक्त थे।
- 1864 ई. में गाजीपुर में एक 'साइन्टिफिक सोसायटी' की स्थापना की। बाद में इसका कार्यालय अलीगढ़ में स्थानांतरित कर दिया गया।
- 'साइन्टिफिक सोसायटी' का कार्य अंग्रेजी पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद करना था।
- 1875 ई. में इन्होंने अलीगढ़ में अलीगढ़ मोहम्मडन एंग्लो ओरियंटल स्कूल की स्थापना की जो 1878 में कालेज एवं 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया।
- 1886 ई. में मोहम्मडन एजुकेशनल कान्फ्रेंस एवं 1888 में इंडियन पैट्रियाटिक एसोसिएशन की स्थापना की।
- 1898 ई. में अलीगढ़ में इनकी मृत्यु हुई।
- ये अपने विचारों का प्रचार-प्रसार 'तहजीब-उल-अखलाक' नामक पत्रिका में करते थे।

देवबन्द आन्दोलन

- देवबन्द आन्दोलन के प्रवर्तक मुहम्मद कासिम ननौत्वी एवं रशीद अहमद गंगोही थे। इन्होंने देवबन्द में (सहारनपुर) एक स्कूल खोला जिसका उद्देश्य था- मुस्लिमों के लिए धार्मिक नेता प्रशिक्षित किया जाना।
- देवबन्द स्कूल में अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य संस्कृति पूर्णतः वर्जित थी।
- इस आन्दोलन के दो मुख्य उद्देश्य थे—1. मुसलमानों में कुरान एवं हदीस की शुद्ध शिक्षा का प्रसार करना। 2. ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध जेहाद (धर्मयुद्ध) की भावना की जीवित रखना।
- देवबन्द आन्दोलन अलीगढ़ आन्दोलन के विरुद्ध था।
- देवबन्द आन्दोलन ने कांग्रेस की स्थापना का स्वागत किया जबकि अलीगढ़ आन्दोलन कांग्रेस एवं हिन्दुओं का विरोधी था।

अहमदिया आन्दोलन

- अहमदिया आन्दोलन के प्रवर्तक मिर्जा गुलाम अहमद थे।
- इन्होंने पंजाब में कांदियान नामक स्थान से 1889 में यह आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- यह आन्दोलन उदारवादी सिद्धान्तों पर आधारित था।
- इन्होंने अपने ग्रंथ बहरीन-ए-अहमदिया में अपने सिद्धान्तों का वर्णन किया है।
- 1891 में मिर्जा गुलाम अहमद ने अपने आपको 'मसीह-उल-मौऊद' अर्थात् मसीहा घोषित किया।
- 1904 में इन्होंने अपने आपको श्रीकृष्ण का अवतार घोषित किया।

महत्वपूर्ण तथ्य

- स्वामी विवेकानंद ने 'ज्ञानयोग' 'कर्मयोग' तथा 'राजयोग' नामक पुस्तकें लिखीं।
- 'बहुजन समाज' का संस्थापक मुकुंदराव पाटिल एवं शंकरराव जाधव ने 1910 के बाद की थी। बहुजन समाज ब्राह्मण विरोधी एवं कांग्रेस विरोधी था।
- 'सत्य शोधक समाज' की स्थापना 1873 ई. में ज्योतिबा फुले ने महाराष्ट्र में की थी। इसमें इन्होंने पाखंडी ब्राह्मणों एवं उनके अवसरवादी धर्म ग्रंथों से निम्न जातियों की रक्षा की आवश्यकता पर बल दिया था। इन्होंने सत्य-शोधक समाज के माध्यम से गैर ब्राह्मण आन्दोलन का प्रचार-प्रसार किया।
- 1843 के एक्ट V ने भारत में गुलामी अर्थात् दास प्रथा को गैर कानूनी बना दिया था।
- ''अच्छा शासन स्वशासन का स्थानापन्न नहीं है।'' यह कथन स्वामी दयानंद सरस्वती का था।
- 'देव समाज' के संस्थापक शिवनारायण अग्निहोत्री थे। इन्होंने 1887 ई. में इसकी स्थापना लाहौर में की थी। ये प्रारम्भ में ब्रह्म समाज के अनुयायी थे।

भारत में समाचार-पत्रों का इतिहास

- भारत में प्रिंटिंग प्रेस लाने का श्रेय पुर्तगालियों को जाता है। 1557 ई. में गोवा के कुछ पादरी लोगों ने भारत की पहली पुस्तक छापी।
- भारत में प्रथम समाचार-पत्र निकालने का श्रेय जेम्स ऑगस्टस हिक्की को मिला। उसने 1780 ई. में बंगाल गजट (Bengal Guzette) का प्रकाशन किया किन्तु कम्पनी सरकार की आलोचना के कारण उसका प्रेस जब्त कर लिया गया।
- 1818 ई. में ब्रिटिश व्यापारी जेम्स सिल्क बर्किंघम ने 'कलकत्ता जनरल' का सम्पादन किया।
- बर्किंघम ही वह पहला प्रकाशक था जिसने प्रेस को जनता के प्रतिबिम्ब के स्वरूप में प्रस्तुत किया। प्रेस का आधुनिक रूप उसी की देन है।
- पहला भारतीय अंग्रेजी समाचार-पत्र 1816 ई. में कलकत्ता में गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा बंगाल गजट नाम से निकाला गया।

ब्रिटिश भारत के प्रमुख समाचार पत्र				
प्रकाशन वर्ष	**पत्र/पत्रिका**	**संस्थापक**	**स्थान**	**भाषा**
1780 ई.	बंगाल गजट	जे.के. हिक्की	कलकत्ता	अंग्रेजी
1818 ई.	दिग्दर्शन	मार्शमेन	कलकत्ता	बंगाली
1821 ई.	संवाद कौमुदी	राजा राममोहन राय	कलकत्ता	बंगाली
1822 ई.	मिरातुल अखबार	राजा राममोहन राय	कलकत्ता	फारसी
1853 ई.	हिन्दू पेट्रियाट	गिरीश चन्द्र घोष, हरिशचन्द्र मुखर्जी	कलकत्ता	अंग्रेजी
1859 ई.	सोम प्रकाश	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	कलकत्ता	बंगाली
1861 ई.	इण्डियन मिरर	देवेन्द्रनाथ टैगोर, मनमोहन घोष	कलकत्ता	अंग्रेजी
1861 ई.	टाइम्स ऑफ इण्डिया	अंग्रेजी प्रेस	बम्बई	अंग्रेजा
1868 ई.	अमृत बाजार पत्रिका	मोतीलाल घोष, शिशिर घोष	कलकत्ता	बंगाली
1873 ई.	बंग दर्शन	बंकिम चन्द्र चटर्जी	कलकत्ता	बंगाली
1878 ई.	हिन्दू	वी. राघवाचारी	मद्रास	अंग्रेजी
1879 ई.	बंगाली	एस.एन. बनर्जी	कलकत्ता	अंग्रेजी
1881 ई.	केसरी	केलकर	बम्बई	मराठी
1903 ई.	इण्डियन ओपिनियन	महात्मा गाँधी	द. अफ्रीका	अंग्रेजी
1905 ई.	इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट	श्यामजी कृष्ण वर्मा	लंदन	अंग्रेजी
1906 ई.	युगान्तर	बारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र पन्त (संपादक)	कलकत्ता	बंगाली
1910 ई.	प्रताप	गणेश शंकर विद्यार्थी	कानपुर	हिन्दी
1913 ई.	गदर	लाला हरदयाल	सेनफ्रांसिस्को	अंग्रेजी एवं अन्य भाषा में
1914 ई.	कामनव्हील	ऐनी बेसेंट	बम्बई	अंग्रेजी
1914 ई.	न्यू इण्डिया	ऐनी बेसेंट	बम्बई	अंग्रेजी
1919 ई.	इंडिपेन्डेंट	मोतीलाल नेहरू	इलाहाबाद	अंग्रेजी
1919 ई.	नवजीवन	महात्मा गाँधी	अहमदाबाद	गुजराती
1919 ई.	यंग इंडिया	महात्मा गाँधी	अहमदाबाद	अंग्रेजी
1933 ई.	हरिजन	महात्मा गाँधी	पुणे	हिन्दी

महत्वपूर्ण तथ्य

- गाँधीजी द्वारा शुरू किया गया एक साप्ताहिक पत्र 'हरिजन' का प्रथम अंक 11 फरवरी 1933 को पूना के यरवदा सेन्ट्रल जेल से प्रकाशित किया गया था।
- वर्ष 1920 में लाहौर से लाला लाजपतराय द्वारा उर्दू में वंदे मातरम् नामक समाचार पत्र प्रारम्भ किया गया था। यह दैनिक पत्र था। इसके अतिरिक्त ये अंग्रेजी में 'दि पीपुल' नामक साप्ताहिक पत्र भी निकालते थे।
- 1 नवंबर 1913 ई. को अमेरिका के सैन्फ्रैंसिस्को नगर से गदर पत्र का प्रथम अंक उर्दू में प्रकाशित हुआ। यह पत्र अंग्रेजी, हिन्दी एवं गुरूमुखी भाषा में भी प्रकाशित होता था। इसका उद्देश्य भारतीय सेना में विशेषकर सिक्खों में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध बगावत की भावना पैदा करना था।
- लार्ड वेलेजली ने सर्वप्रथम 1799 ई. में प्रेस सेंसरशिप लागू की थी। इसने समाचार पत्रों के पत्रेक्षण अधिनियम 1799 पारित कर समाचार पत्रों पर युद्धकालीन सेंसर लागू कर दिया था। 1818 ई. में लार्ड हेस्टिंग्स ने इस अधिनियम को समाप्त कर दिया था।

गवर्नर एवं गवर्नर जनरल/वायसराय

राबर्ट क्लाइव

1757-60 (प्रथम कार्यकाल)

1765-67 (द्वितीय कार्यकाल)

- राबर्ट क्लाइव बंगाल का पहला गवर्नर बना।
- 1765 में अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं शाह आलम के साथ इलाहाबाद की संधि की। मुगल बादशाह शाह आलम ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी का अधिकार 1765 में कम्पनी को दे दिया।
- 1765 में बंगाल में द्वैध शासन प्रारम्भ हुआ।
- 1766 में इसने घोषणा की कि दोहरा भत्ता उन सेना अधिकारियों को दिया जायेगा जो बंगाल एवं बिहार सीमा क्षेत्र के बाहर सेवा दे रहे हैं।

वारेन हेस्टिंग्स (1772-85)

- वारेन हेस्टिंग्ज ने 1772 में क्लाइव के द्वैध शासन को समाप्त किया और बंगाल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सत्ता स्थापित की।
- 1773 के रेग्यूलेटिंग ऐक्ट द्वारा इसे बंगाल का पहला गवर्नर जनरल बनाया गया।
- वारेन हेस्टिंग्ज ने मुगल सम्राट को मिलने वाली 26 लाख रुपये की वार्षिक पेंशन बंद करवा दी, साथ ही इलाहाबाद तथा कड़ा जिले को मुगल बादशाह से लेकर 50 लाख रुपये में अवध के नवाब शुजाउद्दौला को बेच दिया। ये सब अवध के नवाब के साथ 1773 की बनारस की संधि के बाद हुआ।
- 1773 के रेग्यूलेटिंग ऐक्ट द्वारा कलकत्ता में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई, जिसके अधिकार क्षेत्र के दायरे में कलकत्ता के सभी लोग आते थे।
- कलकत्ता के बाहर के विवादों का निपटारा यह अदालत तभी करती थी, जब इसके लिए दोनों पक्ष सहमत थे।
- कलकत्ता में एक सदर दीवानी और एक सदर निजामत अदालत की स्थापना की गई।
- प्रथम मराठा-आंग्ल युद्ध तथा सालबाई की संधि (1782) इसी के शासनकाल में सम्पन्न हुई।
- 1781 में हेस्टिंग्ज ने कलकत्ता में मुस्लिम शिक्षा के लिए एक मदरसे की स्थापना की।
- इसके ही समय में 1782 में जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत विद्यालय की स्थापना करवायी।
- इसी के समय 1784 में "द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल" की स्थापना सर विलियम जोंस ने की।

Pariksha Manthan

लार्ड कार्नवालिस (1786-93 ई.)

- कार्नवालिस ने 'कानून की विशिष्टता' का नियम जो इससे पूर्व नहीं था, भारत में लागू किया।
- कार्नवालिस ने 1793 में प्रसिद्ध 'कार्नवालिस कोड' कार्नवालिस संहिता का निर्माण करवाया जो 'शक्तियों के पृथकीकरण' सिद्धांत पर आधारित थी।
- कार्नवालिस संहिता को प्रस्तुत कर कार्नवालिस ने जिला कलेक्टरों से न्यायिक एवं फौजदारी शक्तियों को वापस ले लिया। अब उनके पास राजस्व संबंधी अधिकार ही शेष रह गया था।
- कार्नवालिस ने जिला दीवानी न्यायालयों के लिए एक नये पद जिला न्यायाधीश का सृजन किया जो सभी दीवानी मामले देखता था।
- इसने भारतीय न्यायाधीशों की अध्यक्षता वाली जिला फौजदारी अदालतों को समाप्त कर दिया और यूरोपीय अदालतों की स्थापना की।
- कार्नवालिस को भारत में नागरिक सेवा का जनक माना जाता है।
- इसने उच्च प्रशासनिक पदों पर भारतीयों की नियुक्ति बन्द कर दिया।
- तृतीय मैसूर युद्ध (1790-92) तथा श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792) इसी के शासनकाल में हुआ।
- 1793 में कार्नवालिस ने 'स्थायी बंदोबस्त' प्रणाली बंगाल तथा बिहार में लागू की जिससे अब जमींदारों को भू-राजस्व का 10/11 भाग कम्पनी को तथा 1/11 भाग अपनी सेवाओं के लिए अपने पास रखना था।

सर जॉनशोर (1793-98)

- सर जॉनशोर के समय में ब्रिटिश संसद ने 1793 का चार्टर एक्ट पास किया।
- ये तटस्थ नीति का पोशक था।
- यह अपनी अहस्तक्षेप नीति के लिए प्रसिद्ध था। इसने केवल अवध के मामले में हस्तक्षेप किया।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805 ई.)

- लॉर्ड वेलेजली अपनी 'सहायक संधि' प्रणाली के कारण प्रसिद्ध हुआ।
- इसकी नीतियों का लक्ष्य भारत में ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना करना था। इसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार को अपना लक्ष्य बनाया।
- सहायक संधि में शामिल होने वाले राज्यों में कम्पनी एक सहायक सेना रखती थी एवं संबंधित राज्य में एक ब्रिटिश रेजीमेंट को नियुक्त किया जाता था।
- हालांकि वेलेजली से पूर्व भारत में सहायक संधि का प्रयोग डुप्ले (फ्रांसीसी) ने किया था।
- सहायक संधि करने वाला पहला राज्य हैदराबाद के निजाम थे।
- वेलेजली के समय चौथा आंग्ल मैसूर युद्ध लड़ा गया और 1799 में टीपू सुल्तान को हराने के पश्चात् इसने मैसूर पर कब्जा कर लिया।
- 1799 में इसने मेंहदी अली नामक दूत को फारस के शाह के दरबार में भेजा।
- लार्ड वेलेजली ने कलकत्ता में नागरिक सेवा में भर्ती किए गए युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए 'फोर्ट विलियम कालेज' की स्थापना की।
- वेलेजली 'बंगाल के टाइगर' नाम से प्रसिद्ध था।

लार्ड कार्नवालिस (1805)

- यह इसका दूसरा कार्यकाल था परंतु तीन माह बाद गाजीपुर में इसकी मृत्यु हो गई। यहीं इसकी कब्र बनी हुई है।

सर जार्ज बार्लो (1805)

- इसने अहस्तक्षेप की नीति का कड़ाई से पालन किया।

Pariksha Manthan

- इसी के समय में होल्कर के साथ संधि (राजपुराघाट की संधि, 1805) में हुई।
- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध समाप्त हुआ।

लार्ड मिन्टो प्रथम (1807-13)

- 1809 में मिन्टो ने चार्ल्स मेटकाफ को महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में भेजा जहां अमृतसर की संधि हुई।
- इसके समय में चार्टर ऐक्ट 1813 पारित हुआ।
- इसी ने बुन्देलखण्ड और नागपुर के विद्रोहों को समाप्त किया।

लॉर्ड हेस्टिंग्ज (1813-23)

- इसने अहस्तक्षेप नीति का अंत करके भारत में राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया।
- इसके समय में आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814-16) गोरखा युद्ध लड़ा गया।
- इसके समय में पिंडारियों का दमन हुआ।
- जान मेल्कॉम ने पिंडारियों को मराठा शिकारियों के साथ शिकारी कुत्तों की उपमा दी है।
- इसके समय में पेशवा की संधि, 1817 में सिंधिया के साथ संधि तथा 1818 में होल्कर के साथ मंदसौर की संधि हुई।
- इसके शासनकाल में मद्रास में रैय्यतवाड़ी व्यवस्था (1820) का प्रारम्भ गवर्नर थामस मुनरो के द्वारा हुआ।

लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-28)

- इसके समय में प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26) लड़ा गया जिसमें बर्मी सेनायें पराजित हुईं।
- 1826 में दोनों के मध्य यान्डबू की संधि हुई, इससे कम्पनी के नियंत्रण वाले क्षेत्रों का विस्तार हुआ।
- इसके समय में 1824 में बैरकपुर की सैनिक छावनी में विद्रोह हुआ जिसका कारण था भारतीय सैनिकों द्वारा बर्मा जाकर युद्ध करने से इन्कार, क्योंकि समुद्र पार जाना इनके धर्म के विरुद्ध था।

लार्ड विलियम बैंटिक (1828-35)

- विलियम कैवेंडिश बैंटिक भारत के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- कार्नवालिस द्वारा स्थापित प्रान्तीय न्यायालयों तथा दौरा न्यायालयों को इसने समाप्त कर दिया और इनके स्थान पर संभागीय आयुक्त नियुक्त किए गए।
- इलाहाबाद में सदर दीवानी और सदर निजामत अदालतें स्थापित की गईं।
- बैंटिक ने तत्कालीन भारत में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया।
- सामाजिक सुधार के क्षेत्र में सती प्रथा की समाप्ति इसका प्रशंसनीय कार्य था।
- बैंटिक ने सती प्रथा की समाप्ति हेतु बनाये गए कानून की धारा 17 को दिसम्बर 1829 में लागू कर विधवाओं के जलने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया।
- इसके समय में ठगी प्रथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में फैली थी। इसकी समाप्ति के लिए बैंटिक ने कर्नल स्लीमन तथा स्थानीय रियासतों की मदद से 1830 तक ठगी प्रथा का अंत कर दिया।
- 1833 के चार्टर ऐक्ट के बाद बैंटिक को बंगाल के गवर्नर जनरल के स्थान पर भारत का गवर्नर जनरल कहा जाने लगा।
- 1835 में मैकाले के प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया गया और शिक्षा का माध्यम तथा उच्च स्तरीय प्रशासन की भाषा अंग्रेजी निश्चित हुई।

सर चार्ल्स मेटकॉफ (1835-36)

- इसे समाचार पत्रों के मुक्तिदाता के रूप में जाना गया।

Pariksha Manthan

लार्ड ऑकलैण्ड (1836-42)

- इसके काल की प्रमुख घटना थी प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध (1838-42)।
- ऑकलैण्ड ने भारत के विभिन्न स्कूलों में अनेक छात्रवृत्तियां प्रदान कीं।
- इसने सभी प्रारंभिक स्कूलों में शिक्षा का माध्यम उस क्षेत्र की प्रादेशिक भाषा रखी।
- 1839 में इसने मांडवी राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।
- 1839 में ऑकलैण्ड ने कलकत्ता से दिल्ली तक ग्रांड ट्रक रोड का निर्माण शुरु करवाया।

लार्ड एलनबरो (1842-44)

- इसके काल में 1842 में प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध समाप्त हुआ।
- इसके समय की महत्वपूर्ण उपलब्धि सिंध का अंग्रेजी राज्य में विलय (1843) था।

लार्ड हार्डिंग (1844-48)

- भारत में इसका कार्यकाल मुख्यतः प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1845-46) के लिए स्मरणीय हैं, जिसमें अंग्रेजों ने विजय प्राप्त की और लाहौर पर अधिकार कर लिया।
- हार्डिंग द्वारा खोंड जनजाति द्वारा नरबलि देने की कुप्रथा का दमन किया गया, जो एक महान उपलब्धि थी।
- इसने सती प्रथा के प्रचलन पर प्रतिबंध लगाया।

लार्ड डलहौजी (1848-56)

- इसके समय में ब्रिटिश साम्राज्य का अत्यधिक विस्तार हुआ।
- द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1848-49) तथा 1849 में पंजाब का ब्रिटिश राज्य में विलय डलहौजी की प्रथम सफलता थी। इस युद्ध के विषय में डलहौजी ने कहा था कि 'सिखों ने युद्ध मांगा है, यह युद्ध प्रतिशोध सहित लड़ा जायेगा।'
- इसके समय में द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1852) लड़ा गया जिसमें अंग्रेजों ने बर्मियों को पराजित कर लोअर बर्मा और पेंगू पर अधिकार कर लिया।
- डलहौजी के शासनकाल को उसके व्यपगत सिद्धांत (Doctrine of lapse) अर्थात् राज्य हड़प नीति के कारण अधिक याद किया जाता है। इसने तत्कालीन भारतीय रजवाड़ों को तीन भागों में बाँटा—
  - (i) वे रजवाड़े जो किसी के नियंत्रण में नहीं थे, न ही किसी को कर देते थे, वे बिना अंग्रेजी हस्तक्षेप के गोद ले सकते थे।
  - (ii) वे रजवाड़े जो मुगल सम्राट अथवा पेशवा के नियंत्रण में थे, परंतु डलहौजी के समय में अंग्रेजों के अधीन थे, उन्हें गोद लेने से पहले अंग्रेजों से अनुमति लेना आवश्यक था।
  - (iii) वे भारतीय रियासतें जो अंग्रेजों की बदौलत ही जीवित थी, इनको गोद लेने का अधिकार ही नहीं था।
- इस सिद्धांत द्वारा सर्वप्रथम 1848 में सतारा का विलय किया गया। 1849 में जैतपुर एवं संभलपुर, 1850 में बघात, 1852 में उदयपुर, 1853 में झांसी एवं 1854 में नागपुर का विलय किया गया।
- 1853 में इसने हैदराबाद के निजाम पर धनराशि बकाया होने का आरोप लगाकर उससे बरार छीन लिया।
- 1856 में अवध को कुप्रशासन का आरोप लगाकर अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया गया तथा यहां के नवाब वाजिद अली शाह को 12 लाख रुपये वार्षिक पेंशन देकर कलकत्ता निर्वासित कर दिया गया।

Pariksha Manthan

डलहौजी द्वारा विलय किए गए राज्य	
राज्य	**वर्ष**
सतारा	1848
जैतपुर, संभलपुर	1849
बघात	1850
उदयपुर	1852
झांसी	1853
नागपुर	1854
करौली	1855
अवध (कुशासन के आरोप में)	1856

- इसी के समय में शिमला को भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनायी जानी प्रारम्भ की गई।
- रेलवे का विकास इसके प्रयासों का प्रतिफल था। डलहौजी को भारत में रेलवे का जनक माना जाता है क्योंकि इसी के प्रयत्नों के फलस्वरूप महाराष्ट्र में 1853 में बम्बई से थाणे का प्रथम रेलगाड़ी चलाई गई।
- डाक सुधार के क्षेत्र में इसने पहली बार भारत में डाक टिकटों का प्रचलन करवाया। 1854 में पारित 'पोस्ट आफिस ऐक्ट' द्वारा तीनों प्रेसीडेन्सियों में डाकघरों की अच्छी देख-रेख के लिए एक-एक महानिदेशकों की नियुक्ति की गई।
- डलहौजी ने पृथक रूप से भारत में पहली बार 'सार्वजनिक निर्माण विभाग' की स्थापना की।
- 1854 में इसने लोकसेवा विभाग की स्थापना की।
- इसी के समय में भारतीय प्रशासनिक सेवा (I.C.S.) की प्रतियोगी परीक्षाएं शुरू हुई।
- इसके समय में 1855 में संथाल विद्रोह हुआ।

लार्ड कैनिंग (1856-62)

- लार्ड कैनिंग भारत में कम्पनी द्वारा नियुक्त अंतिम गवर्नर जनरल तथा ब्रिटिश सम्राट के अधीन नियुक्त भारत का पहला वायसराय था।
- 1857 का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विद्रोह इसी के शासनकाल में हुआ।
- भारत का पहला विश्वविद्यालय (कलकत्ता विश्वविद्यालय) 1857 में तथा बाद में बम्बई में तथा मद्रास में स्थापित हुए।
- लार्ड मैकाले द्वारा प्रस्तावित भारतीय दण्ड संहिता 1858 में आवश्यक परिवर्तनों के साथ 1861 में लागू कर दिया गया।
- 1861 का भारतीय परिषद अधिनियम कैनिंग के समय में आया, जिसमें गवर्नर जनरल के काउंसिल के सदस्यों की संख्या 4 से बढ़ाकर 5 कर दी गई।
- इसी के समय 1858 में भारतीय दण्ड संहिता तथा 1859 में सिविल दण्ड प्रक्रिया संहिता पारित हुआ।
- कैनिंग ने सैनिक तथा असैनिक व्यय में कमी कर दी तथा नोट (रुपये) का प्रचलन किया।
- सामाजिक सुधारों के अंतर्गत विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 कैनिंग के समय ही पास हुआ।
- सार्वजनिक सुधारों के तहत रेल लाइनों, सड़कों तथा नहरों का निर्माण कराया।
- न्यायिक सुधारों के अंतर्गत कैनिंग ने 1861 में हाईकोर्ट ऐक्ट पारित किया जिसके अंतर्गत बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।
- इसने भारत में दास प्रथा को गैर कानूनी बनाया।

लार्ड एल्गिन (1862-63)

- इसकी सबसे महत्वपूर्ण सफलता थी वहाबियों के आन्दोलन का दमन।
- इसके समय में विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

Pariksha Manthan

- 1863 में पंजाब में इसकी मृत्यु हो गई।

सर जॉन लारेंस (1864-69)

- इसके समय में भूटान का महत्वपूर्ण युद्ध (1864) हुआ जिसमें भूटान पराजित हुआ। अंततः दोनों पक्षों के बीच संधि हो गई।
- 1865 में इसके द्वारा यूरोप के साथ दूर संचार व्यवस्था के लिए भारत व यूरोप बीच प्रथम समुद्री टेलीग्राफ सेवा शुरू की गई।

लार्ड मेयो (1869-72)

- मेयो ने 1870 में भारत में वित्तीय विकेन्द्रीकरण की शुरुआत की।
- इसने बजट घाटे को कम किया तथा आयकर की दर को 1% से बढ़ाकर 2.5% कर दिया।
- 1871 में भारत में पहली बार जनगणना मेयो के ही समय में शुरु हुआ। यह प्रायोगिक जनगणना थी जो रिपन के काल 1881 से नियमित रूप से शुरू हुई।
- इसने बम्बई एवं मद्रास में नमक कर में वृद्धि कर दी।
- इसी के समय भारतीय सांख्यिकी सर्वेक्षण विभाग की स्थापना हुई।
- 1872 में मेयो की अण्डमान में एक अफगान द्वारा चाकू मारकर हत्या कर दी गई। मेयो पहला भारतीय वायसराय था जिसकी हत्या कार्यकाल के दौरान उसके ऑफिस में की गई।

लार्ड नार्थब्रुक (1872-76)

- इसके समय में 1872 का प्रसिद्ध कूका विद्रोह हुआ।
- बंगाल एवं बिहार में भयानक अकाल पड़ा।
- 1873 में इसने घोषणा की कि 'मेरा उद्देश्य करों को हटाना तथा अनावश्यक वैधानिक कार्यवाहियों को बंद करना है।'
- इसने अफगानिस्तान के संदर्भ में अहस्तक्षेप नीति का पालन किया।
- इसके समय में स्वेज नहर खुल जाने के कारण भारत और ब्रिटेन के मध्य व्यापार में वृद्धि हुई।
- इसी के समय 1875 में प्रिंस ऑफ वेल्स (किंग एडवर्ड सप्तम्) भारत यात्रा पर आये।

लार्ड लिटन (1876-80)

- इसी के समय 1876-78 तक भारत में भीषण अकाल पड़ा। सबसे अधिक प्रभाव मद्रास, बम्बई, मैसूर, हैदराबाद, पंजाब तथा मध्य भारत में पड़ा।
- इसी के समय में 1878 में वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट पारित कर भारतीय भाषा में समाचार-पत्रों को प्रतिबंधित कर दिया।
- वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट को एस.एन. बनर्जी ने 'आकाश से होने वाला वज्रपात कहा है।'
- इसी के समय में सिविल सेवा परीक्षा की उम्र 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दी गई जिसका उद्देश्य भारतीयों को प्रतियोगिता में प्रवेश से रोकना था।
- इसने कपास पर लगे आयात शुल्क को कम कर दिया।

लार्ड रिपन (1880-84

- इसे ग्लैडस्टोन के नेतृत्व वाली लिबरल पार्टी द्वारा नियुक्त किया गया।
- 1881 का प्रथम फैक्टरी ऐक्ट इसी के समय पारित हुआ।
- रिपन के सुधार कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य था— 'स्थानीय स्वशासन' की शुरुआत।
- यह भारतीयों को स्वायत्त शासन की शिक्षा देना चाहता था, जिससे आगे चलकर वे स्वयं अपने शासन का भार संभाल सकें।

Pariksha Manthan

- चर्चित इल्बर्ट-विधेयक 1883 में रिपन के समय प्रस्तुत किया गया।
- इल्बर्ट-बिल पर हुए विवाद के कारण रिपन ने कार्यकाल समाप्त होने से पूर्व त्याग-पत्र दे दिया।
- इसने नगरों में नगरपालिका का गठन किया।
- रिपन अपने बारे में प्रायः कहता था, ''मेरा मूल्यांकन मेरे कार्यों से करना न कि मेरे शब्दों से।''

लार्ड डफरिन (1884-88)

- डफरिन ने किसानों के हितों की रक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया।
- इसके शासनकाल की महत्वपूर्ण घटना थी—तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1885-88) जिसमें बर्मा पराजित हुआ तथा डफरिन ने बर्मा को जीतकर अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।
- 1886 में अवध और 1887 में पंजाब में टेनेंसी ऐक्ट पारित किया गया।
- 1885 में भारतीय स्त्रियों की रक्षा के लिए लेडी डफरिन फण्ड स्थापित किया गया।
- इसी के समय में 1885 में ए.ओ. ह्यूम ने 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना की।

लार्ड लैन्सडाउन (1888-94)

- लैन्सडाउन ब्रिटिश साम्राज्य की सीमा को बढ़ाना चाहता था।
- इसने मार्टिमर डूरंड की अध्यक्षता में एक विशिष्ट मण्डल अफगानिस्तान भेजा, जिनके प्रयास से 1893 में भारत व अफगानिस्तान के बीच एक रेखा निश्चित की गई जो 'डूरंड रेखा' के नाम से जानी जाती है।
- इसी के समय दूसरा फैक्ट्री ऐक्ट (1891) लाया गया जिसके तहत स्त्रियों को 11 घण्टे प्रतिदिन से अधिक काम करने पर प्रतिबंध लगाया गया।

लार्ड एल्गिन द्वितीय (1894-99)

- इसी के समय में 1895 से 98 तक मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा पंजाब में भीषण अकाल पड़ा।
- इसी के समय 1895 में तिलक द्वारा शिवाजी उत्सव की घोषणा की गई।
- 1896 में इसी के समय बम्बई में प्लेग फैला।
- 1897 में चापेकर बन्धुओं द्वारा पूना में दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी गई।
- इसी के समय 1899 में मुंडा विद्रोह हुआ।

लार्ड कर्जन (1899-1905)

- 1899-1900 में जो अकाल पड़ा, इसके लिए कर्जन ने सर एन्टोनी मैकडोनल्ड की अध्यक्षता में अकाल आयोग स्थापित किया।
- 1901 में सर कॉलिन स्कॉट मानक्रीफ की अध्यक्षता में एक सिंचाई आयोग की स्थापना की गई।
- 1902 में सर एण्ड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में एक पुलिस आयोग गठित किया गया, ताकि प्रत्येक प्रान्त के पुलिस प्रशासन की जाँच पड़ताल की जा सके।
- पुलिस विभाग में 'क्रिमिनल इन्वेस्टीगेशन डिपार्टमेन्ट' (C.I.D.) की स्थापना कर्जन के समय में हुई।
- 1902 में सर टॉमस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग गठित किया गया और 1904 में इसके आधार पर भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया।
- 1904 में 'सहकारी उधार समिति' अधिनियम पारित किया गया, जिसके अंतर्गत कृषकों को थोड़ी ब्याज दर पर उधार मिल सकता था।
- 1899 में 'भारतीय टंकण तथा पत्र-मुद्रण' अधिनियम के अनुसार अंग्रेजी पौंड भारत में विधिग्राह्य बन गया और इसका मूल्य 15 रुपये निश्चित हुआ।

Pariksha Manthan

- कर्जन ने किचनर से विवाद होने के कारण ही 1905 में त्याग-पत्र दे दिया।
- कर्जन के भारत विरोधी कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य था–1905 में बंगाल का विभाजन।
- इसने 1905 में भारत लोक सेवा मण्डल तथा रेलवे बोर्ड का गठन किया।

लार्ड मिन्टो द्वितीय (1905-10)

- इसी के समय 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई।
- 1907 में सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन हुआ।
- 30 अप्रैल, 1908 को खुदीराम बोस को फांसी की सजा दी गई।
- 1909 में एस.पी. सिन्हा वायसराय कार्यकारिणी में नियुक्त हुए।

लार्ड हार्डिंग द्वितीय (1910-16)

- इनके समय में 1911 में बंगाल विभाजन निरस्त कर दिया गया।
- 1911 में दिल्ली में बंगाल विभाजन रद्द तथा भारत की राजधानी दिल्ली से हस्तांतरित करने की घोषणा।
- इसी के समय 1912 में दिल्ली राजधानी बनी।
- 1915 में इसी के समय गदर आंदोलन का प्रारंभ तथा डिफेंस ऑफ इण्डिया अधिनियम पारित हुआ।
- 1915 में ही गोपाल कृष्ण गोखले तथा फिरोज शाह मेहता का देहान्त हो गया।
- 4 अगस्त, 1914 को इसी के समय प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत हुई।
- 1916 में हार्डिंग को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का कुलाधिपति नियुक्त किया गया।

लार्ड चेम्सफोर्ड (1916-21)

- 1916 में इसके समय तिलक और एनी बेसेन्ट द्वारा क्रमशः अप्रैल एवं सितंबर में होमरूल लीग की स्थापना।
- 1916 में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ पैक्ट हुआ।
- इसी के समय 1917 में गांधी जी का चंपारण सत्याग्रह शुरू हुआ।
- 1917 में ही शिक्षा पर सैडलर आयोग की नियुक्ति की गई।
- इसी के समय 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ।
- 1919 का रौलेट ऐक्ट इसी के समय पारित हुआ।
- 1919 को ही मॉण्टेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम लाया गया।
- अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना (1920) इसी के समय की गई।
- 1920 में इसी के समय भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ।

लार्ड रीडिंग (1921-26)

- इसके समय में नवम्बर 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये।
- 1921 में भारत के दक्षिणी-पश्चिमी समुद्र तट पर मोपला विद्रोह इसी के समय हुआ।
- 5 फरवरी, 1922 को चौरी-चौरा काण्ड हुआ।
- रीडिंग के समय में 1922 में 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' ने कार्य करना आरम्भ किया।
- 1924 में कानपुर में अखिल भारतीय साम्यवादी दल का गठन हुआ।
- 9 अगस्त, 1925 का काकोरी डकैती काण्ड रीडिंग के समय ही हुआ।

लार्ड इरविन (1926-31)

- इसके समय 1928 में साइमन कमीशन भारत आया।

Pariksha Manthan

- 1928 में बम्बई में सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन हुआ।
- 1928 में ही मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ, जिसे नेहरू रिपोर्ट कहा गया।
- 12 मार्च, 1930 को गाँधी जी द्वारा ऐतिहासिक 'डाण्डी यात्रा' प्रारंभ की गई।
- 5 मार्च, 1931 को गाँधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर हुए।

लार्ड विलिंगटन (1931-36)

- 1 सितम्बर से 1 दिसंबर, 1931 तक द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन लन्दन में विलिंगटन के समय में हुआ। इस सम्मेलन में गाँधीजी ने कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया।
- 25 सितम्बर, 1932 को गाँधीजी और अम्बेडकर के बीच पूना समझौता हुआ।
- विलिंगटन के समय में ही दिसम्बर, 1932 में तृतीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन हुआ।
- 1 अगस्त, 1933 में गाँधीजी ने दोबारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया।
- भारत सरकार अधिनियम (4 अगस्त, 1935) इसी के समय पास किया गया।

लार्ड लिनलिथगो (1936-44)

- भारत में नियुक्त अंग्रेज गवर्नर जनरलों में इनका कार्यकाल सबसे लम्बा था।
- पहला आम चुनाव (1936-37) में हुआ। पांच प्रांतों में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ। दो प्रांतों में समर्थन से बनायी। कुल 8 प्रांतों में कांग्रेस की सरकार बनी।
- 8 अगस्त, 1940 को वायसराय द्वारा अगस्त प्रस्ताव लाया गया।
- 1941 में रवीन्द्रनाथ टैगोर की मृत्यु हो गई।
- लिनलिथगो के समय 1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया।
- 9 अगस्त, 1942 में गाँधी जी, अबुल कलाम आजाद जैसे नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

लार्ड वेवेल (1944-47)

- 1945 में शिमला समझौता हुआ।
- मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन योजना को अस्वीकार किया तथा 16 अगस्त, 1946 को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' मनाया।
- 2 सितम्बर, 1946 को जवाहर लाल के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन हुआ।
- 9 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा की प्रथम बैठक हुई।

लार्ड माउन्टबेटन (मार्च 1947–जून 1948 तक)

- वायसराय माउन्टबेटन ने 'जून थर्ड प्लान' के अनुसार 3 जून, 1947 को भारत के विभाजन की घोषणा की।
- 7 अगस्त, 1947 को संविधान सभा (पाकिस्तान) ने जिन्ना को अध्यक्ष चुना।
- 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ।

राष्ट्रीय आन्दोलन (1885-1947 ई.)

राष्ट्रवाद का उदय

- धार्मिक तथा विचारधारा की एकता की चेतना तो प्राचीन तथा मध्ययुगीन भारत में थी, परन्तु यह राजनीतिक तथा आर्थिक चेतना की एकता थी जिसने 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद को जन्म दिया।

Pariksha Manthan

राष्ट्रवाद के उदय के कारण

1. भारत का राजनीतिक एवं प्रशासनिक एकीकरण।
2. अंग्रेजों द्वारा भारत का आर्थिक शोषण।
3. अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य विचारधारा।
4. 19वीं शताब्दी का पुनर्जागरण।
5. यातायात एवं संचार माध्यमों का विकास।
6. प्रेस एवं समाचार पत्रों की भूमिका।
7. अन्तर्राष्ट्रीय घटनायें।
8. ब्रिटिश सरकार के प्रतिक्रियावादी कार्य।
9. विदेशी दासता का प्रभाव।
10. समकालीन साहित्य की भूमिका।

कांग्रेस के उदय से पहले की राजनीतिक संस्थायें

संगठन का नाम	स्थापना वर्ष/स्थान	संस्थापक/पदाधिकारी	उद्देश्य	महत्वपूर्ण कार्य
1. लैंड होल्डर्स सोसायटी भारत की प्रथम राजनीतिक संस्था थी।	1838 ई. में कलकत्ता में	भारतीय नेता एवं गैर सरकारी अंग्रेज भारतीय सचिव–प्रसन्न कुमार ठाकुर अंग्रेज सचिव–विलियम काब्री थे।	जमींदारों के हितों को आगे बढ़ाना	यह संस्था जमींदारों के हितों के साथ-साथ अन्य वर्गों के प्रतिनिधित्व करने का प्रयत्न
2. ब्रिटिश इंडिया सोसायटी	1839 ई. में लंदन में	विलियम एडम एवं अन्य अंग्रेज अध्यक्ष लार्ड ब्राम	भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की नीतियों का विरोध करना	इस संस्था ने ''ब्रिटिश इंडियन एडवोकेट'' नामक अखबार निकालना प्रारम्भ किया।
3. ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन मुखपत्र (हिन्दू पैट्रियाट)	1851 ई. में कलकत्ता में	देवेन्द्र नाथ टैगोर व अन्य मिलकर अध्यक्ष-राजा राधाकान्त देव	ब्रिटिश भारत के सामान्य हितों को आगे बढ़ाना तथा यहाँ के लोगों की स्थिति में सुधार करना था।	नील विद्रोह के लिए कमीशन नियुक्त करने की माँग—1860 में अकाल पीड़ितों के लिए धन एकत्र किया। —1860 में आय कर लगाने का विरोध किया।
4. बाम्बे एसोसिएशन	1852 में बम्बई में	जगन्नाथ शंकर	भारतीय हितों की सुरक्षा	
5. ईस्ट इंडिया एसोसिएशन	1866 में लंदन में	दादाभाई नौरोजी	ब्रिटिश जनता एवं संसद को भारतीय विषयों से अवगत कराना।	1869 में इसकी शाखा बम्बई में स्थापित हुई।

संगठन का नाम	स्थापना वर्ष/स्थान	संस्थापक/पदाधिकारी	उद्देश्य	महत्वपूर्ण कार्य
6. पूना सार्वजनिक सभा इसका मुख पत्र 'क्वार्टली जनरल' था (त्रैमासिक था)	1870 में पूना में	गणेश वासुदेव जोशी	जनता को यह बताना कि सरकार के वास्तविक उद्देश्य क्या हैं और अपने अधिकार कैसे प्राप्त कर सकते हैं।	अनेक आन्दोलनों में भाग लिया।
7.इंडियन एसोसिएशन	1876 ई. में कलकत्ता में	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी अध्यक्ष-मनमोहन घोष सचिव-आनंद मोहन बसु	देश में जनमत की एक शक्तिशाली संस्था का निर्माण करना, हिन्दू एवं मुसलमानों के बीच मैत्री भावस्थापित करना।	सिविल सर्विस आन्दोलन -1877 —वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट के विरोध में आन्दोलन
8.मद्रास महाजन सभा	1884 में मद्रास में	अध्यक्ष-पी.रंगिया नायडू सचिव-बी. राघवाचारी एवं आनंद चार्लू।	प्रशासनिक सुधार भारतीय हितों की सुरक्षा	—
9. बाम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन	1885 में बम्बई में	काशीनाथ त्रयंबक बदरुद्दीन तैय्यबजी फिरोजशाह मेहता	भारतीय हितों की सुरक्षा हेतु	—

कांग्रेस के उदय में सहायक कारक

लिटन के कारनामे

लिटन की घोर प्रतिक्रियावादी नीति ने भारत को 1857 के विद्रोह से भी भयंकर विद्रोह के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। इस सन्दर्भ में लिटन के प्रमुख कारनामे थे—

1. दिल्ली दरबार

- ब्रिटेन की डिजरैली सरकार ने 1876 में रानी विक्टोरिया को हिन्दुस्तान का कैसर-ए-हिन्द घोषित किया।
- 1877 में बड़ी ठाठ से दिल्ली दरबार लगाया गया जबकि यहां पर लोग दुर्भिक्ष एवं महामारी से पीड़ित थे।

2. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट

- 14 मार्च 1878 को लिटन ने देशी भाषाओं के समाचार पत्रों का गला घोंटने के लिए एक कानून पारित किया। सारे देश में इसका जोरदार विरोध हुआ।

3. सिविल सर्विसेज में उम्र घटाना

- 1877 में ब्रिटिश सरकार सिविल सर्विसेज में उम्र 21 वर्ष से घटाकर अधिकतम 19 वर्ष कर दिया। इससे भारतीयों में व्यापक आक्रोश पैदा हुआ। इण्डियन एसोसिएशन ने इसके विरोध में सिविल सर्विस आन्दोलन चलाया।

Pariksha

4. आर्म्स एक्ट (1879 ई.)

- इस एक्ट के जरिए लिटन सरकार ने भारतवासियों से अपने घर में साधारण हथियार रखने का अधिकार छीन लिया।

इल्बर्ट बिल (1883)

- रिपन के कानूनी सलाहकार सी.पी. इल्बर्ट द्वारा सर्वोच्च विधान परिषद में यह विधेयक पेश किया गया। विधेयक भारतीय जिला मजिस्ट्रेटों या सेशन जजों को यूरोपीय अभियुक्तों के मामले पर विचार का अधिकार दिया जाना था। यही गोरों के विद्रोह का कारण बना। इसके खिलाफ गोरों ने "यूरोपियन एण्ड एंग्लो इण्डियन डिफेंस एसोसिएशन" बनाया। इसके सामने ब्रिटेन की सरकार और रिपन दोनों झुके और समझौता कर लिया गया।
- विधेयक का सार पूर्ववत बनाये रखा गया लेकिन यूरोपियों को सुविधा दी गई कि वे ज्यूरी की मांग कर सकते हैं जिसके कम से कम आधे सदस्य यूरोपियन होंगे।
- अब भारतवासियों ने समझ लिया कि वे अंग्रेजों के समान अधिकार आसानी से नहीं पा सकते थे। इसके लिए लड़ना होगा और आन्दोलन करना होगा, जिसके लिए शक्तिशाली संगठन की आवश्यकता है।

कांग्रेस की स्थापना

- भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस की स्थापना देश में एक बड़े आन्दोलन का नेतृत्व करने तथा ब्रिटिश सरकार के लिए सुरक्षा कपाट के रूप में हुआ।
- भारतीय सिविल सेवा से 1882 में सेवानिवृत्ति के बाद ए.ओ. ह्यूम ने भारतीयों की राजनीतिक समस्याओं के निराकरण हेतु कांग्रेस की स्थापना की।
- 1884 ई. में ए. ओ. ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय संघ (इंडियन नेशनल यूनियन) की स्थापना की।
- 28-31 दिसम्बर 1885 ई. को बम्बई के ग्वारिया टैंक स्थित गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में यह सम्मेलन प्रारम्भ हुआ।
- यहाँ पर दादाभाई नौरोजी के प्रस्ताव पर इंडियन नेशनल यूनियन का नाम बदलकर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया। इस प्रकार कांग्रेस का जन्म हुआ।
- कांग्रेस की स्थापना की पहली सार्वजनिक घोषणा 5 दिसम्बर, 1885 को मद्रास से प्रकाशित होने वाले 'द हिन्दू' नामक अखबार में की गई।

कांग्रेस की स्थापना के समय

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री	ग्लैडस्टन
भारत के वायसराय	लार्ड डफरिन
बम्बई के गवर्नर	लार्ड रे

कांग्रेस के प्रारम्भिक उद्देश्य

1. भारत के सभी वर्गों और समुदायों को संगठित कर एक राष्ट्र की भावना पैदा करना।
2. राष्ट्रीय जीवन के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में कृत्रिम उन्नति का प्रयत्न करना।
3. भारत के प्रति अन्यायपूर्ण परिस्थितियों को समाप्त करके भारत एवं ब्रिटेन के सम्बन्धों को मजबूत बनाना।
4. जनता की माँगों का सूत्रीकरण करना एवं उसका प्रस्तुतीकरण करना।

Pariksha Manthan

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महत्वपूर्ण अधिवेशन

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	कार्य/प्रमुख उपलब्धि
1885	बम्बई	व्योमेश चन्द्र बनर्जी	कांग्रेस की स्थापना ए.ओ. ह्यूम द्वारा की गई। इस बैठक में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।
1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	इस बैठक के बाद वायसराय डफरिन ने कांग्रेस के सदस्यों को उद्यान भोज दिया।
1887	मद्रास	बदरुद्दीन तैय्यबजी	इस अधिवेशन में 11 प्रस्ताव स्वीकृत किए गये। इस अधिवेशन में सब्जेक्ट्स कमेटी का गठन किया गया।
1888	इलाहाबाद	जार्ज यूले	यह पहला अवसर था जब किसी यूरोपियन ने कांग्रेस की अध्यक्षता की। इस अधिवेशन में ''मुसलमान कांग्रेस के साथ रहे'' का फरमान शेज रजा हुसैन ने जारी किया। इसी अधिवेशन के विरोध में सर सैय्यद अहमद खां ने 1888 ई. में ही यूनाइटेड इण्डिया पेट्रियाटिक एसोसिएशन की स्थापना की।
1898	मद्रास	आनंद मोहन बोस	इसी अधिवेशन के दौरान कर्जन वायसराय बनकर आया।
1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	कांग्रेस के मंच से 'स्वराज' शब्द का प्रयोग दादाभाई नौरोजी ने इसी अधिवेशन में किया।
1907	सूरत	रासबिहारी घोष	इसी अधिवेशन में अध्यक्ष पद को लेकर नरम दल व गरम दल में विवाद उत्पन्न हो गया। यह अधिवेशन निरस्त कर दिया गया।
1911	कलकत्ता	पं. बिशन नारायण दर	इसी अधिवेशन में रविन्द्र नाथ टैगोर की रचना (भारत का राष्ट्रगान) जन-गण-मन पहली बार गाया गया।
1916	लखनऊ	अम्बिका चरण मजुमदार	इसी अधिवेशन में नरमपंथी व गरमपंथी कांग्रेस एक हो गए।
1917	कलकत्ता	श्रीमती ऐनी बेसेन्ट	कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष।
1922	गया	सी.आर. दास	इसी अधिवेशन के बाद 1923 में स्वराज्य पार्टी का गठन हुआ। इस अधिवेशन के पश्चात् 1923 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में दिल्ली में बुलाया गया।
1924	बेलगाँव	महात्मा गांधी	इसी अधिवेशन में गांधी-दास पैक्ट के अनुसार, स्वराज पार्टी को यह अधिकार दिया गया कि वह कांग्रेस के अविभाज्य अंग के रूप में रहकर विधान मण्डलों में प्रवेश ले तथा सरकार की नीतियों का विरोध करे। गांधी जी केवल एकमात्र इसी अधिवेशन के अध्यक्ष रहे।

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	कार्य/प्रमुख उपलब्धि
1925	कानपुर	सरोजनी नायडू	यह पहला अधिवेशन था जब किसी भारतीय महिला ने अध्यक्षता की।
1928	कलकत्ता	पं. मोतीलाल नेहरू	इस अधिवेशन में नेहरू रिपोर्ट पर मुख्य प्रस्ताव पारित किया गया। इसी अधिवेशन में रियासतों में उत्तरदायी सरकार की मांग की गई।
1929	लाहौर	पं. जवाहर लाल नेहरू	इस अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित किया, जिसमें कहा गया था, कि कांग्रेस विधान की धारा 1 में 'स्वराज' शब्द का अर्थ पूर्ण स्वाधीनता होगा।
1930 ई. में कांग्रेस का कोई अधिवेशन नहीं हुआ।			
1934	बम्बई	डा. राजेन्द्र प्रसाद	इसी अधिवेशन में गांधी जी ने अपना इस्तीफा देकर कांग्रेस से सन्यास ले लिया।
1939	त्रिपुरी (मध्य प्रदेश)	पहले सुभाष चन्द्र बोस बाद में राजेन्द्र प्रसाद	इसी अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष के लिए सुभाष चन्द्र बोस व महात्मा गांधी के उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैय्या के बीच मतदान हुआ, जिसमें सुभाष चन्द्र जीत गये लेकिन उन्होंने त्यागपत्र दे दिया, तब राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष बने।
1948	जयपुर	पट्टाभि सीतारमैय्या	इस अधिवेशन का अभिभाषण गोकुल भट्ट द्वारा पढ़ा गया। इस अधिवेशन का आरंभ वंदे मातरम् व राष्ट्रगान से शुरू हुआ।

कांग्रेस में प्रथम

- कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष—डब्ल्यू.सी. बनर्जी थे।
- कांग्रेस के प्रथम मुसलमान अध्यक्ष—बदरुद्दीन तैय्यबजी।
- प्रथम यूरोपियन जिसने कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की—जार्ज यूले।
- प्रथम महिला जिसने कांग्रेस के अधिवेशन को सम्बोधित किया—कादम्बिनी गांगुली।
- प्रथम यूरोपियन महिला तथा प्रथम महिला अध्यक्ष जिसने कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की—ऐनी बेसेन्ट।
- जिस अधिवेशन में पहली बार भारत का राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' गाया गया—1896 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में (इस अधिवेशन के अध्यक्ष रहमतुल्ला सयानी ने स्वयं इसे गाया था), वंदे मातरम् बंकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास आनंदमठ से उद्धृत है।
- भारत की आजादी के समय जे.बी. कृपलानी कांग्रेस के अध्यक्ष थे।
- स्वतंत्रता के बाद 1947 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन नई दिल्ली में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।
- कांग्रेस के सबसे ज्यादा समय तक तथा सबसे कम उम्र के अध्यक्ष थे—अबुल कलाम आजाद (1940-45 ई.)।

प्रमुख यूरोपियन जिन्होंने कांग्रेस की अध्यक्षता की

- जार्ज यूले—1888 में इलाहाबाद में कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष।
- अल्फ्रेड वेब—1894 में मद्रास अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- हेनरी कार्टन—1904 में बम्बई अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- ऐनी बेसेन्ट—1917 में कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्ष रहीं।

कांग्रेस के संबंध में महत्वपूर्ण वक्तव्य

- कांग्रेस लड़खड़ाकर गिर रही है, भारत में रहते हुए मेरी इच्छा है कि मैं इसके शांतिपूर्ण अवसान में अपना सहयोग दे सकूं—वायसराय कर्जन
- कांग्रेस लार्ड डफरिन के दिमाग की उपज है—लाला लाजपत राय
- कांग्रेस एक प्रकार की याचना करने वाली संस्था है—बिपिन चन्द्र पाल
- यदि वर्ष में एक बार मेंढक की तरह टर्रायेंगे, तो कुछ नहीं मिलेगा—बाल गंगाधर तिलक

कांग्रेस का प्रथम चरण का आन्दोलन (1885-1905 ई.)

उदारवादी चरण (1885-1905 ई.)

- कांग्रेस के राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रथम चरण को (1885-1905) उदारवादी राष्ट्रीयता का काल माना जाता है।
- कांग्रेस की स्थापना के साथ ही उदारवादी नेताओं ने ब्रिटिश सरकार से अनेक प्रशासनिक, संवैधानिक तथा आर्थिक सुधारों की माँग की।
- उदारवादियों ने अनेक प्रशासनिक सुधारों का लक्ष्य रखा। भारतीय शासन की जाँच के लिए रॉयल कमीशन की नियुक्ति का प्रस्ताव रखा। सिविल सेवा के भारतीयकरण, उसकी परीक्षा भारत व इंग्लैंड में एक साथ कराये जाने तथा उम्मीदवारों की आयु सीमा में वृद्धि की माँग की गई।
- उदारवादियों ने प्राथमिक एवं तकनीकी शिक्षा के प्रसार पर अधिक व्यय करने की माँग की तथा आयकर एवं नमक कर में कमी तथा आबकारी कर में वृद्धि की माँग की।
- उदारवादी कांग्रेसी नेताओं ने वायसराय एवं भारत सचिव की कार्यकारिणी तथा प्रान्तीय विधान परिषदों के विस्तार तथा उसमें भारतीयों को प्रतिनिधित्व देने की माँग की। अन्य प्रान्तों के लिए विधान परिषदों के गठन की माँग की।
- उदारवादी नेताओं ने कृषि बैंकों की स्थापना करने, मुक्त व्यापार की नीति को समाप्त करने की माँग की।
- सैनिक एवं असैनिक व्यय में कमी करने तथा भारत से धन निष्कासन रोकने की माँग की।
- इस चरण में कांग्रेस प्रतिवर्ष अधिवेशन करती थी जहाँ प्रस्ताव पारित किये जाते थे। इन प्रस्तावों को भारत सरकार भारत सचिव, ब्रिटिश सरकार तथा क्राउन के पास प्रार्थना-पत्र के रूप में भेजा जाता था।
- प्रारम्भिक कांग्रेसी नेता अपने विचारों तथा कार्यक्रमों को इंग्लैंड में प्रचार को बहुत महत्व देते थे।
- इनका मानना था कि इंग्लैंड में रहने वाले अंग्रेज भारतीय अंग्रेजों की तुलना में अधिक उदार एवं न्यायप्रिय हैं। अतः वे भारत के हित में अवश्य कदम उठायेंगे।
- उदारवादियों का सबसे बड़ा योगदान आर्थिक क्षेत्र में रहा। इन्होंने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की एक सशक्त आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत की।
- दादाभाई नौरोजी एवं रमेशचन्द्र दत्त तथा डी.ई. वाचा ने धन निष्कासन सिद्धान्त को लोकप्रिय बनाया।

उदारवादी अथवा नरमपंथी नेता

दादाभाई नौरोजी	—	दीनशा-इ-वाचा
फिरोजशाह मेहता	—	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
बदरुद्दीन तैय्यब जी	—	रमेश चन्द्र दत्त
गोपालकृष्ण गोखले	—	डा. रासबिहारी घोष
आदंनमोहन बसु	—	मनमोहन घोष

Pariksha Manthan

कांग्रेस के प्रथम चरण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए ए.ओ. ह्यूम ने व्योमेश चन्द्र बनर्जी का नाम प्रस्तावित किया और के.टी. तैलंग ने अनुमोदन किया।
- कांग्रेस का द्वितीय अधिवेशन कलकत्ता में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में हुआ। इसी अधिवेशन में इंडियन एसोसिएशन का कांग्रेस में विलय हो गया।
- द्वितीय अधिवेशन में ही 'स्टैंडिंग कमेटी'' गठित करने का प्रस्ताव लाया गया।
- कांग्रेस का तृतीय अधिवेशन मद्रास में सैय्यद बदरुद्दीन तैय्यबजी की अध्यक्षता में हुआ। यह कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष थे।
- इस अधिवेशन में पहली बार स्थानीय भाषाओं में (हिन्दी, तमिल आदि) भाषण हुआ।
- कांग्रेस का चौथा अधिवेशन इलाहाबाद में जार्ज यूल की अध्यक्षता में हुआ। यह कांग्रेस के प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष थे।
- इलाहाबाद अधिवेशन 1888 में पहली बार कांग्रेस के संविधान का निर्माण हुआ।
- बम्बई अधिवेशन में ब्रिटेन के हाउस ऑफ कामन्स के सदस्य चार्ल्स ब्रैडला भी सम्मिलित हुए।
- बम्बई अधिवेशन में कादाम्बिनी गाँगुली सम्मेलन को सम्बोधित करने वाली प्रथम महिला थी। ये प्रथम भारतीय स्नातक महिला थीं।
- जुलाई 1889 में इंडियन नेशनल कांग्रेस की ब्रिटिश इकाई की स्थापना लंदन में हुई। इसने 'इंडिया' नामक पत्र निकालना प्रारम्भ किया।
- 1900 ई. में लार्ड कर्जन ने भारत सचिव को लिखा कि ''भारत में कांग्रेस लड़खड़ाकर धराशायी हो रही है, भारत में रहते हुए मेरी महान महत्वाकांक्षा है कि मैं इसके शांतिपूर्ण मृत्यु में सहयोग कर सकूँ।''

कांग्रेस आन्दोलन का द्वितीय चरण (1905-1919 ई.)

उग्रवादी/गरमपंथी चरण (1905-1919 ई.)

- 19वीं सदी के अंत में उदारवादी राजनीति की आलोचना होने लगी थी। इसी के साथ भारतीय राजनीति में उग्रवादी चरण का उद्भव हुआ।
- उग्रवादी आन्दोलन के उदय में समकालीन अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कारक सक्रिय रहे।
- उदारवादियों ने अपने लेखों के माध्यम से ब्रिटिशराज के वास्तविक चेहरे का बेनकाब कर दिया।
- उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारत की गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक पिछड़ेपन, अकाल, ऋणग्रस्तता आदि सभी का मूल कारण ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियाँ हैं।
- कांग्रेस की नीतियों तथा उसकी उपलब्धियों के प्रति जन-असंतोष से भी उग्रवाद के उदय में सहायता मिली।
- उग्र नेताओं का मानना था कि कांग्रेस की आवेदन-निवेदन की नीति से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है।
- अमेरिका, फ्रांस, जर्मन एवं इटली के राष्ट्रीय आन्दोलनों की सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि संवैधानिक तरीकों से स्वराज की प्राप्ति नहीं हो सकती।
- इथोपिया द्वारा 1896 में इटली की पराजय तथा 1904-05 में जापान द्वारा रूस की पराजय ने यूरोपीय अजेयता के सिद्धान्त को ध्वस्त कर दिया।
- इन घटनाओं ने राष्ट्रवादियों में आत्मविश्वास जगा दिया तथा औपनिवेशिक सरकार से संघर्ष को प्रेरित किया।
- महात्मा गाँधी ने 'हिन्द स्वराज' नामक अपनी पुस्तक में लिखा कि बंगाल विभाजन के बाद ही भारतीयों में वास्तविक जागृति आयी, जिसके लिए हमें लार्ड कर्जन को धन्यवाद देना चाहिए।

Manthan

उग्र राष्ट्रवाद के उदय के कारक

1. ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीतयाँ।
2. कांग्रेस की आवेदन-निवेदन नीति की असफलता।
3. पश्चिमीकरण के विरुद्ध प्रतिक्रिया
4. अन्तर्राष्ट्रीय घटनायें
5. लार्ड कर्जन के कारनामे

गरम दल के नेता

1. बाल गंगाधर तिलक
2. लाला लाजपतराय
3. विपिन चन्द्र पाल

— इन तीनों को सम्मिलित रूप से लाल-बाल-पाल कहा जाता था

4. अरविन्द घोष

उदारवादी एवं गरमपंथियों में अन्तर

नरमपंथी (उदारवादी)	गरमपंथी (उग्रवादी)
• नरमपंथी भारत के लिए औपनिवेशिक प्रशासन में सुधार चाहते थे।	• गरमपंथी स्वराज्य चाहते थे। ये अंग्रेजों पर विश्वास नहीं करते थे।
• नरमपंथी संवैधानिक तरीके जैसे—प्रार्थना, आवेदन, अपील के द्वारा ब्रिटिश सरकार से रियायत प्राप्त करना चाहते थे।	• उग्रवादी जन आंदोलन, बहिष्कार स्वेदेशी व राष्ट्रीय शिक्षा के द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना चाहते थे।
• उदारवादी पश्चिमी शिक्षा संस्कृति के प्रशंसक थे तथा उसी के आधार पर भारत का निर्माण करना चाहते थे।	• उग्रवादी प्राचीन भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ मानते तथा पश्चिमी संस्कृति को हेय समझते थे।
• उदारवादी राष्ट्रीय आंदोलन शिक्षित व उच्च शहरी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था।	• उग्रवादी आंदोलन को मध्य व निम्न मध्यम वर्ग तथा सामान्य जनता तक ले जाना चाहते थे।
• उदारवादी धर्मनिरपेक्षता के समर्थक थे।	• सम्भवतः उग्रवादी धर्म के साथ राजनीति को जोड़कर जनाधार तैयार करना चाहते थे।

बंगाल विभाजन के संबंध में विभिन्न विचार

- ब्रिटिश समाचार पत्र स्टैंडर्ड ने बंग भंग को प्रतिवाद का ठोस मामला कहा।
- **मानचेस्टर गार्जियन ने लिखा**—बंगाल के टुकड़े-टुकड़े करने की योजना के लिए उनके समर्थन का औचित्य स्पष्ट करना कठिन है और इसके लिए उन्हें क्षमा करना तो और भी मुश्किल है।
- **'हितवादी'** ने लिखा—कर्जन ने भारतीयों को अग्नि-परीक्षा में डालकर उनमें नया जीवन फूँका है।
- **अमृत बाजार पत्रिका** ने लिखा—''बंग भंग द्वारा हजारों या लाखों ही नहीं करोड़ों लोगों की राष्ट्रीय भावना को मनमाने ढंग से जैसी ठेस पहुँचायी गयी है उसकी और कोई मिसाल नहीं मिलेगी।''
- **सोनार बाँग्ला** ने लिखा—बंगाल के लोग एक होकर उड़ जायें और फिरंगी बुलबुल का घोंसला नोचकर उसे गंगा में प्रवाहित कर दें।
- **सुरेन्द्रनाथ बनर्जी** ने कहा कि यह घोषणा हमारे ऊपर बम के गोले की भाँति गिरी।

बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी तथा बहिष्कार आन्दोलन

- उस समय बंगाल की आबादी 7 करोड़ 85 लाख थी जो गुलाम भारत की आबादी का 1/4 थी। उस समय बंगाल में आजकल के पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश, बिहार और उड़ीसा शामिल थे।
- भारत सरकार ने बंगाल का विभाजन करके एक नवीन प्रान्त बनाया जिसमें बंगाल के चटगांव, ढाका और राजशाही जिला के पूरे क्षेत्र, माल्दा जिला, त्रिपुरा का पहाड़ी राज्य और असम सम्मिलित किए गए। इस प्रांत को पूर्वी बंगाल और असम नाम से पुकारा गया।
- भारत सरकार का कहना था कि बंगाल सूबा बहुत बड़ा है। इस कारण प्रशासकीय सुविधा के लिए विभाजन आवश्यक है।
- लार्ड कर्जन के अनुसार अंग्रेजी हुकूमत का यह प्रयास कलकत्ता को सिंहासनच्युत करना था। बंगाली आबादी का बँटवारा करना था। एक ऐसे केन्द्र को समाप्त करना था जहाँ से बंगाल व पूरे देश में कांग्रेस पार्टी का संचालन होता था व साजिशें रची जाती थीं।
- भारत सरकार के तत्कालीन गृह-सचिव **रिसले** का कथन था ''अविभाजित बंगाल एक बड़ी ताकत है तथा विभाजन होने से यह कमजोर हो जायेगा। हमारा उद्देश्य बंगाल का बँटवारा करना है जिससे हमारे दुश्मन बँट जायें व कमजोर पड़ जायें।''
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, कृष्ण कुमार मित्र, पृथ्वीशचन्द्र राय व अन्य नेताओं ने विभाजन प्रस्ताव के खिलाफ बंगाली, हितवादी, संजीवनी जेसे अखबारों व पत्रिकाओं के माध्यम से आन्दोलन छेड़ा।
- 19 जुलाई, 1905 को बंगाल विभाजन की घोषणा कर दी गई। घोषणा के तुरन्त बाद बंगाल के लगभग सभी कस्बों में विरोध सभायें आयोजित की गईं।
- 7 अगस्त, 1905 को कलकत्ता के टाउन हाल में एक ऐतिहासिक बैठक में स्वदेशी आन्दोलन की विधिवत घोषणा की गई। इस बैठक में बहिष्कार प्रस्ताव पारित हुआ। इससे पहले 13 जुलाई, 1905 को सर्वप्रथम संजीवनी नामक साप्ताहिक पत्रिका में बहिष्कार को अपनाने का सुझाव दिया गया।
- 1 सितम्बर को सरकार ने यह घोषणा की कि विभाजन 16 अक्टूबर में लागू होगा।
- 28 सितम्बर, 1905 को कलकत्ता के निकट कालीघाट के मंदिर में 50,000 लोगों ने शपथ ली कि वे विदेशी वस्तुओं का प्रयोग नहीं करेंगे।
- 16 अक्टूबर, 1905 का दिन पूरे बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया। रवीन्द्रनाथ टैगोर के सुझाव पर सम्पूर्ण बंगाल में यह दिन रक्षाबन्धन दिवस के रूप में मनाया गया। लोगों ने गंगा स्नान किया और सड़कों पर वंदे मातरम् गाते हुए प्रदर्शन किया।
- महाराष्ट्र मे तिलक व उनकी पुत्री केतकर ने इस आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- इस आन्दोलन की एक विशेषता यह भी थी कि महिलाओं ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया था।
- परन्तु यह आन्दोलन बंगाल के किसानों को प्रभावित नहीं कर सका। वस्तुतः यह आन्दोलन शहरों के उच्च व मध्यम वर्ग तक ही सीमित रहा।
- स्वदेशी माल की सप्लाई के लिए अनेक स्थानों पर स्वदेशी स्टोर खोले गए। सर्वप्रथम आचार्य प्रफुल्लचन्द राय ने बंगाल केमिकल स्वदेशी स्टोर खोला।
- बंगाल विभाजन विरोधी आन्दोलन ने राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा दिया।

Pariksha Manthan

- 8 नवंबर 1905 को रंगपुर नेशनल स्कूल की स्थापना हुई।
- बंगाल में राष्ट्रीय शिक्षा को फैलाने में सबसे बड़ा कार्य डॉन सोसायटी ने किया। यह विद्यार्थियों का संगठन था। इसके सचिव सतीश चन्द्र मुखर्जी थे।
- रवीन्द्र नाथ टैगोर, द्विजेन्द्र लाल राय, मुकुन्द दास के लिखे गए गीत आन्दोलनकारियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने। टैगोर ने उस समय बांग्लादेश के स्वाधीनता संघर्ष को तेज करने के लिए प्रेरणा स्रोत का जो गीत लिखा था **'आमार सोनार बांग्ला'** वह 1971 में बांग्लादेश का राष्ट्रगान बना।
- कला के क्षेत्र में अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय कला पर पाश्चात्य आधिपत्य को तोड़ा तथा स्वदेशी पारम्परिक कलाओं व अजन्ता की चित्रकला से प्रेरणा लेनी शुरू की।
- 1906 में स्थापित इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरिएण्टल आर्ट्स की पहली छात्रवृत्ति भारतीय कला के मर्मज्ञ नन्दलाल बोस को मिली।

दिल्ली दरबार (1911)

- दिसम्बर 1911 में ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम का दिल्ली आगमन हुआ।
- 12 दिसम्बर को दिल्ली में एक दरबार आयोजित हुआ। यहाँ तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंग ने सम्राट की ओर से घोषणा की—"बंग विभाजन रद्द कर दिया जायेगा।"
- भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली बनाई गई जो 1912 में क्रियान्वित हुई।

कांग्रेस विभाजन

- बंगाल विभाजन के बाद उत्पन्न परिस्थितियों का एक प्रत्यक्ष परिणाम कांग्रेस के अन्दर नरमपंथियों और राष्ट्रवादियों के मध्य विरोध था।
- 1905 में बनारस अधिवेशन में गोखले ने बंग भंग की आलोचना की थी और स्वदेशी आन्दोलन का समर्थन किया। यहां पर पहला झगड़ा प्रिंस ऑफ वेल्स के प्रस्ताव पर हुआ। लाला लाजपतराय और तिलक ने इसका विरोध किया फिर भी नरमपंथी इस प्रस्ताव को पास कराने में सफल रहे।
- नरमपंथियों व राष्ट्रवादियों के बीच दरार 1906 के अधिवेशन में और बढ़ गई। तिलक का सुझाव था कि लाला लाजपतराय को अध्यक्ष बनाया जाये। नरमपंथियों ने दादा भाई नौरोजी का अध्यक्ष बना दिया। अंततः मामला शांत हो गया।
- सूरत अधिवेशन में राष्ट्रवादी लाला लाजपतराय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे परन्तु नरम दल वालों ने रासबिहारी घोष को प्रत्याशी बनाया। तिलक घोष के अध्यक्ष पद के चुनाव के लिए राजी हो गये जिसके लिए इन्होंने दो शर्तें रखीं—
  1. कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में जो प्रस्ताव स्वराज्य स्वदेशी बहिष्कार के बारे में पास किया गया था, उन्हें फिर से पास किया जाए।
  2. घोष के भाषण के जिस अंश में राष्ट्रवादियों की आलोचना है उसे हटा दिया जाए।
- नरमपंथी किसी भी प्रकार के समझौते के लिए तैयार नहीं हुए तथा रासबिहारी घोष अध्यक्ष बने।
- तिलक ने सारा दोष अपने ऊपर ले लिया फिर भी नरमपंथी न माने। नरमपंथी राष्ट्रवादियों की आपत्ति के बावजूद अपने को 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' कहते रहे जबकि राष्ट्रवादी अपने आपको 'नेशनलिस्ट पार्टी' कहने लगे।

Pariksha Manthan

नरमदल एवं गरमदल के बीच दूरी बढ़ाने वाले कारक

- 1893 में तिलक ने गणपति समारोह (गणेश उत्सव) का प्रयोग राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए किया।
- 1895 शिवाजी समारोह को राष्ट्रीय त्योहार के रूप में तिलक ने स्थापित किया।
- 1895 के पूना अधिवेशन में तिलक ने तत्कालीन कांग्रेस नेतृत्व पर साफ आरोप लगाया कि वह कांग्रेस को आम जनता तक नहीं ले जाना चाहते हैं।
- 1896-97 में महाराष्ट्र में अकाल पड़ा। अकालग्रस्त किसानों को तिलक ने भू-राजस्व देने से मना कर दिया सरकार ने किसानों को भड़काने के आरोप में तिलक को डेढ़ वर्ष की सजा सुनाई।
- राजनीतिक कारणों से देश के लिए जेल जाने वाले पहले व्यक्ति बाल गंगाधर तिलक थे जो 1883 में जेल गये थे।
- तिलक ने अपने पत्र केसरी में 4 जुलाई 1904 के अंक में लिखा कि ''हमारा श्रम किसी भी तरह सफल नहीं होगा, यदि हम साल में एक बार मेढकों की तरह टर्र-टर्र करते रहेंगे।''

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आन्दोलन

- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हिन्दुस्तान के राजनीतिक मंच पर कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इनमें कांग्रेस में गरम दल का विलय, कांग्रेस-मुस्लिम लीग पैक्ट तथा होमरूल आन्दोलन महत्वपूर्ण है।

युद्ध काल में कांग्रेस के अधिवेशन

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष
1914	मद्रास	भूपेन्द्रनाथ बसु
1915	बम्बई	एस. पी. सिन्हा
1916	लखनऊ	अम्बिका चरण मजूमदार
1917	कलकत्ता	एनी बेसेंट

कांग्रेस में गरमदल का विलय

- 1908 से 1915 तक कांग्रेस नरमदल की पार्टी बनी रही, इस बीच में कांग्रेस की लोकप्रियता में भारी कमी आई।
- 1914 में तिलक माण्डले जेल से रिहा होकर पूना आये। गोखले गरम दल वालों को कांग्रेस में शामिल करने के उद्देश्य से तिलक से मिले, तिलक ने गोखले से कहा कि ''कांग्रेस सबकी है, वह किसी पार्टी को दिया गया उपहार नहीं है। मैं पहले देश को तैयार करुँगा फिर कांग्रेस में प्रवेश करुँगा और उस पर कब्जा कर लूँगा'', इस उत्तर से गोखले संशय में पड़ गए।
- 1915 में गोखले व मेहता की मृत्यु हो गई जिससे कांग्रेस में गरम दल का विरोध ठंडा पड़ गया।
- 27-30 दिसंबर, 1915 के कांग्रेस अधिवेशन बम्बई में कांग्रेस के संविधान में ऐसा परिवर्तन किया गया जिससे गरम दल वालों को शामिल किया जा सके, इसमें महत्वपूर्ण योगदान एनी बेसेंट का था।
- गरम दल वाले 1907 के बाद पहली बार कांग्रेस में शामिल हुए जिसमें तिलक को पूना सार्वजनिक सभा ने अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा था।

कांग्रेस-मुस्लिम लीग पैक्ट

- युद्ध के समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना कांग्रेस-मुस्लिम लीग पैक्ट थी जिसमें जिन्ना व तिलक का सबसे महत्वपूर्ण योगदान था।

- इस पैक्ट के निम्न कारण थे :—
  1. ब्रिटेन द्वारा तुर्की से युद्ध किये जाने के कारण भारतीय मुसलमान असंतुष्ट थे।
  2. मुस्लिम लीग का पुराना नेतृत्व समाप्त हो गया, अब नेतृत्व मुसलमानों के अंग्रेजी शिक्षित मध्यम वर्ग के हाथ में था।
- मुस्लिम लीग तथा कांग्रेस का साथ-साथ कार्य करने तथा स्वराज्य लाने की विचारधारा 1914 से आरम्भ हो गई थी तथा इसी के परिणामस्वरूप दिसम्बर 1915 में कांग्रेस व मुस्लिम लीग का अधिवेशन एक साथ बम्बई में हुआ। यहां मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मजहरूल हक् थे तथा कांग्रेस के अध्यक्ष एस.पी. सिन्हा थे।
- 1916 में कांग्रेस व मुस्लिम लीग का अधिवेशन लखनऊ में साथ-साथ हुआ। इसमें लीग के अध्यक्ष मु. अली जिन्ना व कांग्रेस के ए.सी. मजूमदार थे। दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई जिसे लखनऊ समझौता या कांग्रेस-लीग पैक्ट कहते हैं। इसमें 19 सूत्रीय ज्ञापन तैयार किया गया और ब्रिटिश सरकार से स्वराज्य की मांग की गई।
- कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की शर्तों को स्वीकार किया, अल्पसंख्यकों को उनकी जनसंख्या से अधिक अनुपात में उन्हें विधान परिषद में स्थान देने, साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व प्रणाली अपनाने और यदि कोई प्रस्ताव किसी सम्प्रदाय विशेष पर प्रभाव डालता है व उसका विरोध उस सम्प्रदाय के तीन चौथाई सदस्य करेंगे तो इस प्रस्ताव पर विचार नहीं होगा।
- समझौते में यह निहित था कि भारत विभिन्न समुदायों का देश है और उनके हित अलग-अलग हैं।
- आर0सी0 मजूमदार के अनुसार, "1916 में कांग्रेस ने सचमुच 30 वर्ष के बाद पाकिस्तान की नींव डाली।"

होमरूल आन्दोलन

1. तिलक की होमरूल लीग

- तिलक ने होमरूल लीग की स्थापना 28 अप्रैल 1916 को बेलगाँव में की। इसके अध्यक्ष जोसेफ बैपटिस्टा और सचिव एन.सी. केलकर हुए। इसके कमेटी के सदस्यों में जी.एस. खापर्डे, बी.एस. मुंजे और आर.पी. करण्डीकर थे।
- तिलक की होमरूल लीग का क्षेत्र बम्बई को छोड़कर, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बरार व मध्य प्रांत था।
- इनका नारा 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है हम इसे लेकर रहेंगे' लोगों के बीच अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ।

2. एनी बेसेंट की होमरूल लीग

- सितम्बर 1916 में एनी बेसेंट ने एक होमरूल लीग बनाई।
- मोतीलाल नेहरू तथा तेजबहादुर सप्रू जैसे नेता इनके होमरूल लीग में शामिल थे।

बाल गंगाधर तिलक

- 1897 ई. में अपने समाचार-पत्र केसरी में प्लेग कमिश्नर की हत्या को उचित ठहराने के कारण उन पर राजनीतिक कारणों से 18 माह की सजा दी गई।
- 1908 ई. में पुनः 6 वर्ष के लिए माण्डले जेल (बर्मा) भेजा गया। जेल में रहकर उन्होंने गीता रहस्य (जिसका दूसरा नाम कर्मठ) की रचना की। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'ओरायन' तथा Arctic Home in the Vedas की रचना की थी।
- तिलक ने कलकत्ता अधिवेशन (1906 ई.) में कहा : "हम हथियार द्वारा नहीं बल्कि बहिष्कार द्वारा अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे। उन्होंने टैक्स (कर) न देने की भी बात कही।
- 31 जुलाई-1अगस्त, 1920 को तिलक की मृत्यु हो गई।

Pariksha Manthan

- एनी बेसेंट ने अपने होमरूल का प्रचार अपने दैनिक पत्र न्यू इण्डिया और कॉमन विल के माध्यम से किया जिसमें न्यू इण्डिया का प्रमुख योगदान रहा।
- एनी बेसेंट भी भारत की पूर्ण स्वतंत्रता नहीं चाहती थीं। इनकी होमरूल लीग अखिल भारतीय थी। एनी बेसेंट स्वयं इसकी अध्यक्ष थीं तथा रामा स्वामी अय्यर इसके सचिव थे।

माँटेंग्यू घोषणा

- तिलक के भीषण आन्दोलन से जनता पूरे जोश से भरी थीं तभी 20 अगस्त, 1917 को भारत सचिव माँटेंग्यू के प्रस्ताव की घोषणा की गई जिसमें ब्रिटिश शासन का लक्ष्य स्वशासित संस्थाओं का क्रमिक विकास था।
- जुलाई 1918 में माँटेंग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट प्रकाशित हुई।
- माँटेंग्यू घोषणा को कांग्रेस ने असंतोषजनक व निराशाजनक माना परन्तु नरमवादी नेताओं ने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के नेतृत्व में 17 अगस्त 1918 को एक सभा करके इस रिपोर्ट का स्वागत किया।
- नरमवादी नेताओं ने कांग्रेस से अलग होकर अखिल भारतीय उदारवादी संघ की स्थापना की। माँटेंग्यू ने इसकी स्थापना के लिए खुद ही इनको प्रोत्साहित किया था। इस प्रकार कांग्रेस का दूसरा विभाजन 1918 को हो गया।

कांग्रेस के द्वितीय चरण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- बंगाल विभाजन कर बनाये गये नये प्रांत पूर्वी बंगाल एवं असम का लेफ्टीनेंट गवर्नर बैमफील्ड फुलर को बनाया गया था।
- बंगाल विभाजन के समय सर्वाधिक स्पष्ट वक्ता पत्र 'संध्या' था।
- 1904 में विश्वविद्यालय अधिनियम के विरोध में 'डॉन सोसायटी' की स्थापना हुई थी।
- 1906 का कांग्रेस अधिवेशन कलकत्ता में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में हुआ। यही पर पहली बार कांग्रेस स्वराज्य की माँग की।
- कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी के सचिव मुहम्मद अली जिन्ना ने अध्यक्षीय भाषण पढ़ा था।
- 1908 में तिलक को 'रिम्स हार्डिंग' नामक जहाज से मांडले जेल भेजा गया।
- 1906 में गठित अरुण्डेल कमेटी की सिफारिश पर बंगाल विभाजन रद्द कर दिया गया था।
- 1907 का सूरत अधिवेशन कांग्रेस का 23वाँ अधिवेशन था जिसे रद्द कर दिया गया था।
- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान जिन्ना के पत्र 'कामरेड' को बंदकर उन्हें छिंदवाड़ा जेल भेज दिया गया।
- 1908 में तिलक को गिरफ्तार किये जाने पर जिन्ना उनके वकील के रूप में जोरदार वकालत की थी।
- 1914 में एनी बेसेंट कांग्रेस में शामिल हुईं।
- सर सुब्रमण्यम अय्यर ने एनी बेसेंट की गिरफ्तारी के विरोध में सर की उपाधि त्याग दी। ऐसा करने वाले यह प्रथम भारतीय थे।
- लाला लाजपतराय ने अमेरिका में होमरूल लीग की स्थापना की और वहाँ से 'यंग इंडिया' नामक पत्र निकाला।
- उदारवादियों ने माँटेंग्यू घोषणा को **भारत का मैग्नाकार्टा** कहा है।

क्रान्तिकारी आन्दोलन

- देश की स्वतंत्रता के लिए भारत में दो समानांतर आन्दोलन चले।
- पहला संवैधानिक आन्दोलन था जिसका नेतृत्व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कर रही थी, और दूसरा हिंसात्मक एवं क्रांतिकारी संघर्ष था जिसका नेतृत्व क्रांतिकारी कर रहे थे।
- दोनों आन्दोलन अलग थे लेकिन दोनों का उद्देश्य एक

Pariksha Manthan

ही था भारत की स्वतंत्रता।

क्रांतिकारी आन्दोलन के उदय के कारण

1. ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियाँ।
2. कांग्रेस की आवेदन-निवेदन नीति की असफलता।
3. अन्तर्राष्ट्रीय घटनायें।
4. बंगाल विभाजन
5. स्वदेशी-बहिष्कार आन्दोलन का क्रूरतापूर्ण दमन।

- 19वीं शताब्दी के अंत एवं 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरुआत हुई।

प्रथम चरण का क्रान्तिकारी आन्दोलन (1897 ई.)

महाराष्ट्र

व्यायाम मंडल

- इसकी स्थापना 1897 में दामोदर हरि चापेकर एवं बालकृष्ण हरि चापेकर (चापेकर बंधु) ने पूना में की थी। इसका उद्देश्य विशुद्ध राजनीतिक था।
- दामोदर हरि चापेकर एवं कुछ अन्य साथियों ने पूना में 22 जून 1897 को रैंड एवं आर्यस्ट नामक दो अंग्रेज अधिकारियों की गोली मारकर हत्या कर दी।

अभिनव भारत

- 1899 में नासिक में गणपति उत्सव मनाने के सिलसिले में मित्रमेला की स्थापना हुई।
- सावरकर बन्धु (गणेश दामोदर सावरकर एवं विनायक दामोदर सावरकर) इसके प्रमुख सदस्य बने।
- 1904 में नासिक में वी.डी. सावरकर ने '**अभिनव भारत**' की स्थापना की।
- अभिनव भारत की शाखायें महाराष्ट्र के अतिरिक्त कर्नाटक एवं मध्य प्रांत में भी फैली थीं।
- 1909 में गणेश दामोदर सावरकर को मित्रमेला के लिए कविताओं की दो पुस्तकें लिखने के कारण आजीवन निर्वासन की सजा सुनाई गई।
- वी.डी. सावरकर को लंदन से गिरफ्तार करके नासिक लाया गया और अनेक लोगों के साथ इन पर मुकदमा चला जिसे नासिक षडयंत्र केस के नाम से जाना जाता है।
- वी.डी. सावरकर को आजीवन निर्वासन की सजा सुनाई गई।
- नासिक षडयंत्र केस ने महाराष्ट्र के क्रान्तिकारियों की कमर तोड़ दी।

बंगाल

अनुशीलन समिति

- बंगाल में क्रान्तिकारियों का पहला महत्वपूर्ण संगठन अनुशीलन समिति बना।
- 1903 ई. में इसकी स्थापना कलकत्ता में प्रमथनाथ मित्र एवं सतीश चन्द्र बोस ने मिलकर की थी।
- इसके अध्यक्ष प्रमथनाथ मित्र एवं उपाध्यक्ष अरविन्द घोष एवं चितरंजन दास थे।
- बारीन्द्र घोष ने 1905 में भवानी मंदिर एवं 1907 में वर्तमान रणनीति नामक पुस्तक प्रकाशित की।
- अनुशीलन समिति के बारीन्द्र गुट ने क्रान्ति का खुलकर प्रचार-प्रसार करने के लिए 1906 में युगान्तर नामक पत्र निकालना प्रारम्भ किया।
- 1908 में युगान्तर के प्रकाशन पर रोक लगा दी गई।
- 30 अप्रैल 1908 को मुजफ्फरपुर में खुदीराम बोस एवं प्रफुल्ल चाकी ने यहाँ के जिला जज डी.एच. किंग्सफोर्ड को मारने के लिए बम फेंका दुर्भाग्य से जिस गाड़ी पर बम गिरा उस पर कैनेडी की पत्नी एवं पुत्री बैठी थीं, दोनों की मृत्यु हो गई।
- खुदीराम बोस गिरफ्तार कर लिये गये और इन्हें फांसी की सजा दी गई। ये सबसे कम उम्र में फांसी पर चढ़ने वाले क्रांतिकारी थे प्रफुल्ल चाकी स्वयं को गोली मार ली।

Pariksha Manthan

उ. प्र., पंजाब एवं दिल्ली

भारत माता समिति

उ. प्र., पंजाब एवं दिल्ली में क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रणेता जतीन्द्र मोहन चटर्जी थे। इन्होंने 1904 में सहारनपुर में भारत माता समिति की स्थापना की।

- इनके साथ अजीत सिंह, लाला हरदयाल, सूफी अंबाप्रसाद और मास्टर अमीर चन्द्र जैसे क्रान्तिकारी जुड़ गये।
- अजीत सिंह ने मुहिब्बाने-वतन नामक अपनी भी एक क्रान्तिकारी संस्था स्थापित की थी।
- जतीन्द्र मोहन चटर्जी के बाद इस क्षेत्र के क्रान्तिकारी आन्दोलन का नेतृत्व मास्टर अमीर चन्द्र के हाथों में आया।
- मास्टर अमीरचन्द्र के साथ बंगाल के क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस, बसंत विश्वास मन्मथ विश्वास आदि जुड़ गये।
- 23 दिसम्बर, 1912 को दिल्ली में वायसराय हार्डिंग पर बम फेंका गया। दुर्भाग्य से बम दूर गिरा और हार्डिंग बच गया।

विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन

इंग्लैंड में

- लंदन में जनवरी 1905 में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इंडिया होमरूल लीग की स्थापना की। और उसका मुख्य पत्र इंडियन सोशियोलाजिस्ट निकालना प्रारम्भ किया। इसमें उन्होंने स्पष्ट कहा कि इसका उद्देश्य भारत के लिए स्वराज्य प्राप्त करना है।
- इस होमरूल लीग के अध्यक्ष श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा उपाध्यक्ष अब्दुल्ला सुहरावर्दी थे।
- लंदन में श्यामजी कृष्ण वर्मा भारतीयों के लिए इंडिया हाउस नामक हास्टल की स्थापना की, जो क्रान्तिकारियों का अड्डा बन गया।
- लंदन में 1 जुलाई, 1909 को मदनलाल ढींगरा ने कर्जन वायली की गोली मारकर हत्या कर दी। ढींगरा को फांसी दे दी गई।

पेरिस

- ब्रिटेन के हाउस ऑफ कामन्स में इंडिया हाउस के बारे में प्रश्न उठे। इस स्थिति को समझते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ब्रिटेन छोड़कर पेरिस आ गये।
- पेरिस में श्यामजी कृष्ण वर्मा की सहयोगी मैडम भीकाजी कामा थीं। इन्होंने यूरोप एवं अमेरिका में ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के विरुद्ध प्रचार-प्रसार किया।
- 1907 में स्टुटगार्ड में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में भाग लिया। यहाँ पर इन्होंने भारत में ब्रिटिश शोषण पर भाषण दिया। यहाँ पर इन्होंने भारत का राष्ट्रीय तिरंगा फहराया जिसका रंग हरा पीला और लाल था।

अमेरिका

गदर आन्दोलन

- गदर दल के संस्थापक लाला हरदयाल थे। इन्होंने 1 नवंबर 1913 को अमेरिका के सैनफ्रैंसिस्को नगर में गदर दल की स्थापना की।
- इस दल ने गदर नामक पत्र भी प्रकाशित किया। प्रारम्भ में यह उर्दू एवं गुरुमुखी में प्रकाशित होता था। बाद में यह हिन्दी एवं अंग्रेजी में भी प्रकाशित होने लगा।

तोषामारु कांड

- गदर दल के कुछ सदस्य तोषामारु नामक जहाज से भारत लौट रहे थे। जब जहाज सिंगापुर में रुका तो यहाँ एक क्रान्तिकारी परमानंद के भाषण से अनेक भारतीय सैनिकों में राष्ट्रीय भावना जागृत हुई।
- सिंगापुर लाइट इन्फेन्ट्री के जवानों ने चिश्ती खाँ एवं उण्डे खाँ के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया और अंग्रेजी सैनिक अड्डों पर कब्जा कर लिया और तिरंगा झंडा लहराया।
- इसे सिंगापुर क्रान्ति के नाम से जाना जाता है।

Pariksha Manthan

कामागाटामारु कांड

- इस कांड के नेता पंजाब के गुरुदित्त सिंह थे।
- इन्होंने मार्च 1914 में एक जापानी जहाज कामागाटामारु को किराये पर लिया और हांगकांग से इसमें 376 यात्रियों को लेकर कनाडा स्थित बैकुंवार को रवाना हुआ।
- 23 मई 1914 को यह जहाज बैंकुवार पहुँचा लेकिन कनाडा के अधिकारियों ने यात्रियों को उतरने की अनुमति नहीं दी।
- 23 जुलाई 1914 को यह जहाज बैकुंवार से भारत के लिए रवाना हुआ। रास्ते में दो भारतीय क्रान्तिकारी भगवान सिंह एवं बरकतुल्ला ने जोशीला भाषण देकर यात्रियों को भारत में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ बगावत करने को कहा।
- 29 सितम्बर, 1914 को यह जहाज कलकत्ता पहुँचा। यहाँ यात्रियों ने हंगामा मचा दिया जिसमें पुलिस कार्यवाही हुई।
- सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 20 यात्री मारे गये। 202 यात्रियों को जेल भेज दिया गया। गुरिदित्त सिंह सहित शेष भागने में सफल रहे।

अंतरिम सरकार–दिसम्बर 1915

- अलीगढ़ में जन्में राजा महेन्द्र प्रताप का वास्तविक नाम खड्गसिंह था।
- भारतीय क्रान्तिकारियों में देश को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से सर्वाधिक विदेश यात्रा इन्होंने ही की थी।
- ये जर्मन सम्राट विलियम कैशर से सहायता के लिए मिले।
- दिसम्बर 1915 में काबुल में भारत की अंतरिम सरकार की स्थापना राजा महेन्द्र प्रताप ने की।
- ये स्वयं अंतरिम सरकार के अध्यक्ष (राष्ट्रपति) तथा बरकतुल्ला प्रधानमंत्री बने।
- जर्मनी ने इस सरकार को मान्यता दी थी। यह सरकार 1919 तक चली।

द्वितीय चरण का क्रान्तिकारी आन्दोलन

- द्वितीय चरण का क्रान्तिकारी आन्दोलन गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन की असफलता एवं 1917 की रूसी क्रान्ति के कारण प्रारम्भ हुआ।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन

- 1924 में कानपुर में शचीन्द्रनाथ सान्याल के नेतृत्व में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना हुई।
- इसका उद्देश्य सशस्त्र क्रान्ति के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेंकना था।
- 8 सितम्बर, 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में इसके सदस्यों ने एक सभा करके समाजवाद को अपना लक्ष्य घोषित किया और संगठन का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन कर दिया।

काकोरी षडयंत्र केस

- 9 अगस्त, 1925 को सहारनपुर से आने वाली 8 डाडन ट्रेन को काकोरी रेलवे स्टेशन के पास रोककर क्रान्तिकारियों ने ट्रेन में रखे सरकारी खजाने को लूट लिया।
- इसके कुछ अभियुक्त गिरफ्तार कर लिए गये और उन पर काकोरी षडयंत्र केस के नाम पर मुकदमा चला।
- क्रान्तिकारियों की तरफ से चन्द्रभान गुप्त ने पैरवी की जो उ. प्र. के मुख्यमंत्री बने थे।
- 4 क्रान्तिकारियों को फांसी दी गई वे थे—

1. रामप्रसाद बिस्मिल	गोरखपुर में
2. अशफाक उल्ला	फैजाबाद में
3. रोशनसिंह	इलाहाबाद (नैनी) में
4. राजेन्द्र लाहिड़ी	गोंडा में

Pariksha

नवजवान भारत सभा

- 1926 ई. में भगतसिंह, छबीलदास और यशपाल आदि नवयुवकों ने नवजवान भारत सभा की स्थापना लाहौर में किया।
- इसके अध्यक्ष रामकिशन, महामंत्री भगतसिंह तथा प्रचारमंत्री भगवती चरण बोहरा थे।
- भगवतीचरण बोहरा ने **'बम का दर्शन'** नामक पुस्तिका लिखी। बाद में एक बम दुर्घटना में ही इनकी मृत्यु हो गई।

साण्डर्स हत्याकांड (1928 ई.)

- साइमन कमीशन के विरोध में लाला लाजपतराय पुलिस के लाठीचार्ज से घायल हुए और अन्ततः इनकी मृत्यु हो गई।
- इनकी मृत्यु का बदला लेने के लिए भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव और जयगोपाल ने एस्कार्ट को मारने का निश्चय किया। परन्तु गलती से गोली साण्डर्स और उसके रीडर चन्दन सिंह को लगी और दोनों की मृत्यु हो गई।
- बाद में जयगोपाल ने गद्दारी की और क्रान्तिकारियों के सारे राज पुलिस को बता दिया। पुलिस ने इसे सरकारी गवाह बना लिया।

केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंकना

- 8 अप्रैल, 1929 को भगतसिंह एवं बटुकेश्वरदत्त ने लोक सुरक्षा विधेयक के विरोध में केन्द्रीय विधानसभा में बम फेंका क्योंकि गवर्नर जनरल ने केन्द्रीय विधानसभा की नामंजूरी के बाद भी इस विधेयक को पासकर दिया था जबकि इससे नागरिक स्वतंत्रताओं का घोर हनन हो रहा था।
- क्रान्तिकारी अपना उद्देश्य इसके द्वारा बहरों को सुनाना बताया। यह बम नुकसान पहुँचाने वाला नहीं था।
- भगतसिंह एवं बटुकेश्वर दत्त दोनों ने अपनी गिरफ्तारी दी।
- इस कांड के लिए इन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।
- 23 मार्च, 1931 को भगतसिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को लाहौर में फांसी दे दी गई।

चटगाँव रिपब्लिकन आर्मी

- इसके संस्थापक सूर्यसेन थे। जो 'मास्टर दा' के नाम से प्रसिद्ध थे।
- इस संगठन के अन्य महत्वपूर्ण सदस्य थे गणेश घोष, लोकनाथ बाउल, अनंत सिंह, कल्पना दत्ता, प्रीतिलता वाडेकर आदि।
- अप्रैल 1930 में गणेश घोष के नेतृत्व में चटगाँव शस्त्रागार पर हमला किया और अस्त्र-शस्त्र लूट लिया।
- पहाड़तल्ला स्थित यूरोपीय क्लब में प्रीतिलता ने हमला किया। लेकिन गिरफ्तारी के भय से इन्होंने पोटैशियम सायनाइड खाकर आत्महत्या कर ली।
- 1933 में सूर्यसेन को गिरफ्तार कर लिया गया और 1934 में इन्हें फांसी दे दी गई।

- 27 फरवरी, 1931 को चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से घिर जाने के कारण स्वयं गोली मारकर शहीद हो गये।

माइकल ओ डायर हत्याकांड (1940 ई.)

- लंदन के कैक्सटन हाल में ईस्ट इंडिया एसो. तथा रवायल सेन्ट्रल एशियन सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में 13 मार्च, 1940 को एक सभा हो रही थी।
- ऊधम सिंह जिन्होंने जलियाँवाला बाग हत्याकांड को अपनी आँखों से देखा था। माइकल ओ डायर को गोली मारकर हत्या कर दी। इन्हें फांसी दे दी गई।

Pariksha Manthan

मुस्लिम लीग की स्थापना

- दिसम्बर 1906 में मुस्लिम एजुकेशन कान्फ्रेन्स के सिलसिले में विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधि ढाका में एकत्र हुए।
- ढाका के नवाब सलीमुल्ला मुस्लिम समुदाय के हितों की देखभाल के लिए एक केन्द्रीय संगठन गठित किये जाने का प्रस्ताव दिया।
- 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इस सभा की अध्यक्षता नवाब बकर-उल-मुल्क ने की।
- मुस्लिम लीग का संविधान करांची में दिसम्बर 1907 में बनाया गया। इसके निम्न उद्देश्य थे—
  1. भारत के मुसलमानों में ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी को बढ़ाना तथा सरकार के प्रति गलतफहमी को दूर करना।
  2. भारत के मुसलमानों के राजनीतिक एवं अन्य अधिकारों की रक्षा करना, तथा उनकी मांगों को सरकार के समक्ष विनम्रतापूर्वक रखना।
- सर आगा खाँ को मुस्लिम लीग का स्थायी अध्यक्ष चुना गया जो 1913 तक इसके अध्यक्ष रहे।

दो राष्ट्र का सिद्धान्त

- मुसलमान एवं हिन्दू एक राष्ट्र नहीं है बल्कि दो राष्ट्र है। (जिन्ना)
- 1930 में मुस्लिम लीग का अधिवेशन इलाहाबाद में हुआ यहाँ पर मुहम्मद इकबाल ने मुसलमानों के लिए पृथक राज्य की माँग की। इन्हें दो राष्ट्र सिद्धान्त (Two Nation Theory) का जनक माना जाता है।

पाकिस्तान

- मुसलमानों के पृथक देश जिसे **पाकिस्तान** कहा जाये इस प्रकार का निश्चित विचार कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी चौधरी रहमत अली के मन में उत्पन्न हुआ।
- इसके अनुसार पंजाब, उ. प. सीमा प्रान्त, कश्मीर, सिन्ध तथा बलूचिस्तान को भारतीय मुसलमानों का राष्ट्रीय देश होना चाहिए। और इसे पाकिस्तान कहा जाये।
- पाकिस्तान शब्द इनमें से प्रथम चार प्रान्तों के प्रथम तथा पाँचवे प्रांत के अन्तिम अक्षरों को लेकर बनाया गया है।
- 1933 में चौधरी रहमत अली ने 4 पेज का एक पम्पलेट प्रकाशित किया जिसमें प्रथम बार पाकिस्तान शब्द का प्रयोग किया गया।
- 1940 के मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में जिसकी अध्यक्षता मु. अली जिन्ना ने की, पाकिस्तान प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव को फजलुल हक ने प्रस्तुत किया।

कांग्रेस आन्दोलन का तीसरा चरण (1919-1947 ई.)

गाँधी युग (1919-47 ई.)

- भारतीय राजनीति के क्षितिज पर महात्मा गाँधी का उदय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है।
- गाँधी जी का भारतीय राजनीति में प्रवेश रोलेट ऐक्ट के विरोध में 1919 ई. में हुआ।
- 1915 में भारत आगमन के समय यहाँ कि परिस्थितियाँ इनके अनुकूल थीं।

महात्मा गाँधी

- महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई. को गुजरात प्रांत के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था।
- इनका वास्तविक नाम मोहनदास था। इनके पिता का नाम करमचन्द्र गाँधी था तथा माता का नाम पुतलीबाई था।
- 13 वर्ष की आयु में इनका विवाह कस्तूरबा के साथ हुआ था।

Pariksha

- 1888 ई. में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ये इंग्लैंड गये।
- 1891 में इन्हें बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त हुई और इसी वर्ष ये भारत आ गये।
- इसके बाद इन्होंने राजकोट में वकालत प्रारम्भ की।
- 1893 में एक गुजराती व्यापारी दादा अब्दुल्ला के मुकदमे के पैरवी के लिए दक्षिण अफ्रीका गये।
- महात्मा गाँधी के जीवन में ''मोरित्सबर्ग कांड' से महत्वपूर्ण परिवर्तन आया।
- जब वे डरबन से प्रिटोरिया रेलवे कोच के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा कर रहे थे तो मोरित्सबर्ग नामक स्थल में एक अंग्रेज ने उन्हें जबरदस्ती प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतार दिया।
- 1894 में इन्होंने नटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की।
- 1901 में गाँधी भारत आये एवं कलकत्ता कांग्रेस में सम्मिलित हुए, 1902 में पुनः दक्षिण अफ्रीका चले गये।
- 1903 में गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से **'इंडियन ओपीनियन'** नामक पत्र निकालना प्रारम्भ किया।
- 1904 में डरबन से 84 मील दूर फीनिक्स में आश्रम की स्थापना की।
- 1906 में गाँधी जी पहली बार दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह दर्शन का विकास किया। परवाना कानून के विरुद्ध इन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन किया।
- इन्होंने अपने सत्याग्रह दर्शन में सत्य के साथ अहिंसा को भी स्थान दिया अर्थात् अहिंसा पर आधारित सत्य के लिए संघर्ष करना ही सत्याग्रह है।
- 1908 में गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका में ही पहली बार जेल गये।
- 1909 में इंग्लैंड से द० अफ्रीका आते समय जल जहाज में ही इन्होंने 'हिन्द स्वराज' नामक पुस्तक गुजराती भाषा में लिखा। इस पुस्तक में इन्होंने स्वराज की व्याख्या की है।
- 1910 में इन्होंने जोहाँसबर्ग में 'टालस्टाय फार्म' की स्थापना की। जर्मनी के केलनबेक इन्हें जमीन प्रदान की थी।
- 1914 में प्रथम विश्व युद्ध के समय में इंग्लैंड गये और लंदन में रहने वाले भारतीयों को सम्मिलित कर एक 'एम्बुलेंस कोर' का गठन किया। जिसका कार्य था युद्ध भूमि में घायल ब्रिटिश सैनिकों को ढोकर अस्पताल तक पहुँचाना।
- ब्रिटिश सरकार ने गाँधीजी के इस सेवा के बदले में 1915 में कैशर-ए-हिन्द की उपाधि दी।
- जनवरी 1915 में गाँधी जी भारत आये और अपने राजनीतिक गुरु गोपालकृष्ण गोखले के सुझाव पर अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की। जिसका उद्देश्य था भारतवासियों को सत्याग्रह दर्शन से परिचित कराना।

महात्मा गाँधी — पुस्तकें व पत्र

1909 में	हिन्द स्वराज	गुजराती भाषा में लिखा
1919 में	नवजीवन (पत्र दैनिक)	गुजराती एवं हिन्दी में प्रकाशित किया
1919 में	यंग इंडिया (पत्र साप्ताहिक)	अंग्रेजी में प्रकाशित किया
1925 में प्रारम्भ किया	द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरीमेंट विद ट्रुथ	अंग्रेजी में आत्मकथा
1933 में	हरिजन (साप्ताहिक पत्र)	अंग्रेजी एवं हिन्दी में

महात्मा गाँधी से सम्बन्धित विशिष्ट तथ्य

- गाँधी जी अपना पहला सार्वजनिक भाषण 1889 में लंदन में निरामिषहारियों की एक सभा में दिया।
- 1899 में गाँधी जी बोअर के युद्ध में अंग्रेजों की सहायता की।
- गाँधीजी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर को 'गुरुदेव' की उपाधि दी।

Pariksha Manthan

- गाँधीजी ने 1920 में अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की।
- गाँधी जी ने 1920 में कैशर-ए-हिन्द उपाधि का त्याग किया।
- इन्होंने 1925 में **'अखिल भारतीय चरखा बुनकर संघ'** की स्थापना की।
- 1934 में इन्होंने **'अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ'** की स्थापना की।
- 1932 में इन्होंने हरिजन संघ की स्थापना की एवं 1933 में साबरमती आश्रम को **हरिजन संघ** को दान में दे दिया।
- हरिजन संघ के अध्यक्ष **घनश्याम दास बिड़ला** थे।
- महात्मा गाँधी को पहली बार **राष्ट्रपिता** सुभाषचन्द्र बोस ने एवं **बापू** जवाहर लाल नेहरू ने कहा था।
- महात्मा गाँधी का सबसे प्रिय भजन ''वैष्णव जन को तैनू कहिए'' इसकी रचना गुजराती कवि नरसी मेहता ने किया था।
- महात्मा गाँधी के चार पुत्र थे, उनके पाँचवे पुत्र के नाम से गुजराती व्यवसायी **जमनालाल बजाज** प्रसिद्ध थे।
- गाँधी जी की हत्या 30 जनवरी, 1948 को दिल्ली के बिरला भवन में प्रार्थना सभा में जाते हुए शाम को नाथूराम गोडसे ने कर दी। गाँधी जी का अंतिम संस्कार **राजघाट** में किया गया।

गांधीजी के भारत में सत्याग्रह सम्बन्धी प्रयोग

चम्पारन आन्दोलन (अप्रैल 1917)

- 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेज बागान मालिकों ने किसान से यह करार करा लिया था कि वे अपनी भूमि के 3/20 हिस्से पर नील की खेती अवश्य करेंगे, इसी को तिनकठिया पद्धति भी कहा जाता है।
- 19वीं शताब्दी के अंत तक जर्मनी के रासायनिक रंगों ने नील बाजार को खत्म कर दिया था।
- चम्पारन के यूरोपीय बागान मालिक अपने कारखाने बन्द करने के लिए बाध्य हुए और किसान भी नील की खेती से मुक्ति चाहते थे।
- 1917 में चम्पारन के राजकुमार शुक्ल ने अपने प्रयासों द्वारा गांधीजी को चम्पारन बुलाया।
- गांधीजी के चम्पारन पहुँचने पर कमिश्नर ने तुरंत चले जाने को कहा परन्तु गांधीजी नहीं माने। अंततः उन्हें चम्पारन के गाँव में जाने की छूट दे दी गई। यहां पर गांधीजी के सहयोगी महादेव देसाई, जे.बी. कृपलानी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, बृज किशोर, मजहरुल हक और नरहरि पारिख थे।
- गांधीजी आयोग को ये समझाने में पूर्णतः सफल रहे कि तिनकठिया प्रणाली समाप्त होनी चाहिए और जो धन अवैध रूप से वसूला गया है उसके लिए हर्जाना दिया जाना चाहिए।
- अंग्रेज निलहों ने 25% वापस करने के लिए राजी हो गए और गांधीजी ने इसे स्वीकार कर लिया।

अहमदाबाद का मिल मजदूर आन्दोलन (1918 ई.)

- चम्पारन के बाद गांधीजी ने अहमदाबाद के मिल मजदूर आन्दोलन के समर्थन में आन्दोलन किया। यहां का विवाद प्लेग बोनस को लेकर था।
- जब प्लेग की समाप्ति हुई तो मिल मालिक बोनस को समाप्त करना चाहते थे। मजदूरों ने इसका विरोध किया तथा गांधीजी ने मजदूरों को हड़ताल पर जाने को कहा और ये घोषणा की कि उन्हें 35% बोनस मिलना चाहिए क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध के कारण महंगाई काफी बढ़ चुकी थी।
- गांधी जी अनशन पर बैठ गए तब मिल मालिकों ने यह मामला न्यायाधिकरण को सौंपने का फैसला किया।

न्यायाधिकरण ने 35% बोनस देने का फैसला सुनाया और इस तरह गांधीजी का यह सत्याग्रह भी सफल रहा।

खेड़ा आन्दोलन (गुजरात) 1918 ई.

- खेड़ा जिले में फसल नष्ट हो जाने के बाद भी सरकार किसानों से लगान वसूल रही थी। यह खबर गांधी जी को प्राप्त हुई, तब वह सर्वेंट ऑफ इण्डिया सोसायटी के सदस्य बिट्ठल भाई पटेल के साथ यहां पहुँचे।
- इस मामले की जांच के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि लगान माफ कर देना चाहिए, गांधीजी ने किसानों से लगान न देने के लिए कहा।

महत्वपूर्ण तथ्य

- महात्मा गांधी ने भारत में अपना पहला जनभाषण 1917 में चम्पारण में दिया।
- दक्षिण अफ्रीका में जब गांधीजी डरबन से प्रिटोरिया जा रहे थे तो 'पीटरमारित्सबर्ग' रेलवे स्टेशन पर एक अंग्रेज ने इन्हें प्रथम श्रेणी के डिब्बे से फेंक दिया था। इससे गांधीजी को यह व्यक्तिगत अनुभव मिला कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ कितना दुर्व्यवहार होता है।
- महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले ने इन्हें आदेशित किया था कि वह भारत में प्रथम वर्ष ''खुले कान पर मुँह बंद कर'' व्यतीत करें।
- गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में 1903 में ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। गांधीजी ने 1903 में जोहांसबर्ग में लॉ फर्म स्थापित किया था, यहीं पर इन्होंने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत प्रतिपादित किया था।
- गांधीजी रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' से सर्वाधिक प्रभावित हुए थे।

रौलेट एक्ट (1919 ई.)

- 1917 में सर सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में एक कमेटी यह जाँच करने के लिए नियुक्त की गई कि भारत में किस स्तर तक क्रांतिकारी आन्दोलन सम्बन्धी षड़यंत्र फैले हुए हैं और इनका मुकाबला करने के लिए कैसे कानूनों की आवश्यकता है।
- 18 मार्च, 1919 को रौलेट एक्ट स्वीकृत हुआ जिसकी अवधि 3 वर्ष रखी गई।
- इसका अधिकृत नाम 'क्रांतिकारी एवं अराजकतावादी अपराध अधिनियम, 1919' था।
- इस एक्ट से गांधी जी को अत्यन्त आघात पहुँचा जिसके कारण वे अंग्रेजी सरकार के विरोधी हो गए। इसके विरोध में गाँधी जी देशव्यापी सत्याग्रह करने का निर्णय लिया।
- सत्याग्रह आन्दोलन की तिथि 6 अप्रैल, 1919 निर्धारित की गई।
- अमृतसर में 10 अप्रैल को पंजाब कांग्रेस के दो प्रमुख नेता डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के खिलाफ टाउन हॉल और पोस्ट ऑफिस पर हमले किये गए। प्रशासन ने सेना बुलाई और नगर प्रशासन का दायित्व जनरल डायर को सौंप दिया। डायर ने जनसभायें आयोजित करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

Pariksha Manthan

जलियांवाला बाग नरसंहार (1919 ई.)

- पंजाब के दो लोकप्रिय नेता डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के बाद जनता का आक्रोश तेज हो गया। कई जगह हिंसाएं हुई।
- अमृतसर शहर में 13 अप्रैल, 1919 ई. को संध्या पांच बजे जलियांवाला बाग में विशाल सभा में रौलेट एक्ट, डॉ. सत्यपाल आदि के बारे में भाषण चल रहा था तभी सैन्य अधिकारी ब्रिगेडियर जनरल 'रोगिनाल्ड डायर' ने फौज द्वारा भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। इस घटनाकाण्ड में लगभग 1500 लोग मारे गये, वैसे सरकारी आंकड़ों के अनुसार मारे गए लोगों की संख्या 379 और घायलों की संख्या 1200 बताई गई थी।
- जलियांवाला बाग नरसंहार के विरोध में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त सर या 'नाइटहुड' की उपाधि वापस कर दी। शंकरन नायर ने वायसराय की परिषद से इस्तीफा दे दिया।
- जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के समय पंजाब प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ डायर था, जिसकी हत्या 1940 ई. में ऊधम सिंह ने लंदन में कर दी। ऊधम सिंह को पकड़कर मृत्युदण्ड दे दिया गया।
- हंसराज नामक व्यक्ति ने सभा बुलाई थी। यह सरकारी गवाह बन गया था।
- जलियांवाला बाग नरसंहार के समय भारत का वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड (1916-21 ई.) था।
- ब्रिटिश सरकार ने जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड की जांच हेतु हण्टर कमेटी 1919 ई. (अध्यक्ष जी.सी. हण्टर) की स्थापना की।
- इसी आधार पर जनरल डायर को सेना की नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया।

खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन (1920-22 ई.)

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद मुसलमानों एवं हिन्दुओं में एक आश्चर्यजनक एकता आई। प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की मित्र राज्यों द्वारा पराजित हुआ और उसके साम्राज्य के अधिकांश भाग को ब्रिटेन और फ्रांस ने आपस में बांट लिया।
- भारतीय मुसलमान तुर्की के सुल्तान जो खलीफा भी था, इस दृष्टि से वह संसार के मुसलमानों का धार्मिक प्रधान भी था उसकी स्थिति के प्रति सशंकित हो गये।
- भारतीय मुसलमानों ने मौलाना मुहम्मद अली और शौकत अली मौलाना आजाद, हकीम अजमल खाँ और हसरत मोहानी के नेतृत्व में एक खिलाफत समिति की स्थापना की। इसका उद्देश्य तुर्की साम्राज्य के बँटवारे के खिलाफ खलीफा के पक्ष में आन्दोलन करना था।
- खिलाफत समिति के अध्यक्ष बम्बई के सेठ छोटानी थे।
- 1919 में दिल्ली तथा 1920 में केन्द्रीय खिलाफत समिति ने कलकत्ता अधिवेशन में सरकार के साथ सहयोग न करने का प्रस्ताव स्वीकार किया।
- गांधीजी ने खिलाफत के प्रश्न को हिन्दुओं और मुसलमानों को एक राष्ट्रीय मंच पर लाने के अवसर के रूप में देखा।
- 1 अगस्त, 1920 को खिलाफत समिति ने असहयोग आन्दोलन शुरू कर दिया, गांधीजी प्रथम व्यक्ति थे जो 'कैसर-ए-हिन्द' को त्यागकर उसमें सम्मिलित हुए।
- असहयोग आन्दोलन का विरोध कुछ कांग्रेसी सदस्यों ने किया। वे साम्राज्यवादियों के विरुद्ध संघर्ष को अनावश्यक मानते थे।

Pariksha

- एनी बेसेंट, बिपिन चन्द्र पाल, जी. एस. खरपड़े ने इसी समय कांग्रेस छोड़ दिया।
- चितरंजन दास, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू और राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी वकालत छोड़ दी। विधर्मियों के स्कूल छोड़ने के कारण अनेक राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किए गए। इनमें गुजरात, बिहार, काशी विद्यापीठ, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ और जामिया मिलिया स्थापित हुए।
- असहयोग आन्दोलन को चलाने के लिए तिलक स्वराज्य फंड स्थापित किया गया और 6 माह के अन्दर ही इसमें 1 करोड़ रुपये एकत्र हुए।
- इसी समय ब्रिटेन के राजकुमार (प्रिंस ऑफ वेल्स) ने 17 नवम्बर, 1921 को बम्बई में प्रवेश किया, उस दिन पूरे बम्बई में हड़ताल हुई।
- 1921 में अहमदाबाद में कांग्रेस अधिवेशन अजमल खां की अध्यक्षता में हुआ। इस अधिवेशन में कांग्रेस की सदस्यता की उम्र घटाकर 18 वर्ष कर दी गई।
- 1921 तक गांधी जी के अतिरिक्त सभी मुख्य कांग्रेसी नेता जेल में थे।
- 1 फरवरी, 1922 को गांधी जी ने वायसराय लार्ड रीडिंग के पास अल्टीमेटम भेजा कि अगर एक सप्ताह के अन्दर दमन बन्द न किया गया और आन्दोलनकारियों को रिहा न किया गया तो वे सामूहिक रूप से बारदोली में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ करेंगे। इससे पहले कि कोई जन आन्दोलन होता एक घटना घट गई।

चौरी-चौरा काण्ड

- 5 फरवरी, 1922 को गोरखपुर जिले में चौरी-चौरा में किसानों के जुलूस पर पुलिस द्वारा गोली चलाने पर भीड़ ने थाने को जला दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए।
- गुजरात के बारदोली में 12 फरवरी, 1922 को कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में सभी कार्यप्रणाली रोकने का निर्णय लिया गया और जनता को रचनात्मक कार्य करने का निर्देश दिया गया।
- इस प्रकार यह आन्दोलन समाप्त हो गया और गांधी जी को गिरफ्तार कर लोगों को भड़काकर बगावत करने के आरोप में मुकदमा चलाकर उन्हें 6 वर्ष की सजा दी गई। यहीं गांधी जी ने कहा था कि बुराई के साथ असहयोग उतना ही अच्छा है जितना अच्छाई के साथ सहयोग।
- असहयोग आन्दोलन का तुरन्त कोई परिणाम न निकला परन्तु इस आन्दोलन ने पहली बार भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आन्दोलन बनाया।
- गांधी जी द्वारा आन्दोलन एकाएक रोक देने से लोग चकित रह गए। गांधी जी की आलोचना की गई।

स्वराज दल

- असहयोग आन्दोलन के समाप्त होने के बाद कांग्रेस के सामने यह प्रश्न था कि 1919 के ऐक्ट द्वारा घोषित विधान परिषदों के चुनावों में भाग लिया जाये या नहीं।
- चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने इन सभाओं में प्रवेश कर असहयोग करने की बात रखी। ये लोग परिवर्तनवादी कहलाए।
- राजेन्द्र प्रसाद, सी. राजागोपालाचारी, बल्लभ भाई पटेल जैसे नेताओं ने परिषदों में प्रवेश करने की नीति का विरोध किया। ये लोग अपरिवर्तनवादी कहलाए।
- दिसम्बर 1922 में सी.आर. दास की अध्यक्षता में गया (बिहार) में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। इसमें कौंसिल में प्रवेश न लेने का निर्णय हुआ परिणामस्वरूप चितरंजन दास ने त्यागपत्र दे दिया।
- किन्तु परिवर्तनवादियों ने हार नहीं मानी तथा मार्च 1923 में इलाहाबाद में अपने समर्थकों का अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया और एक नवीन राजनीतिक दल 'कांग्रेस खिलाफत स्वराज दल' की स्थापना की। फैसला हुआ कि नई पार्टी कांग्रेस के अन्दर रहेगी लेकिन चुनाव लड़ेगी, इसके अध्यक्ष सी.आर. दास तथा महासचिव मोतीलाल नेहरू थे।

Pariksha Manthan

गांधी दास पैक्ट

- फरवरी 1924 में गांधी जी जेल से रिहा कर दिये गए। ये मई में चितरंजन दास व मोतीलाल नेहरू से बम्बई में मिले।
- नवम्बर 1924 में गांधी जी, सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू ने एक संयुक्त वक्तव्य दिया जो गांधी दास पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इसमें कहा गया कि असहयोग अब राष्ट्रीय कार्यक्रम न रहेगा।
- स्वराज पार्टी को अधिकार दे दिया गया कि वह कांग्रेस के नाम पर और कांग्रेस के अभिन्न अंग के रूप में विधान सभाओं के अन्दर काम करें।
- गांधी जी के जिम्मे आल इण्डिया स्पिनर्स एसोसिएशन को संगठित करने और सारे देश में चरखे और करघे का प्रचार करने का काम दिया गया।
- इस पैक्ट की मुख्य बातों की पुष्टि बेलगांव अधिवेशन (1924) में की गई, इसके अध्यक्ष गांधी जी थे।

साइमन कमीशन

- 1919 के एक्ट में 10 वर्ष पर इसकी समीक्षा का प्रावधान था किन्तु 1929 में ब्रिटेन में आम चुनाव होने के कारण सरकार ने नवम्बर 1927 में ही इसकी स्थापना की घोषणा कर दी।
- कमीशन में ब्रिटिश संसद के 7 सदस्य सम्मिलित थे तथा साइमन इसके अध्यक्ष थे।
- ये सदस्य कंजर्वेटिव लिबरल एवं लेबर पार्टी के प्रतिनिधि थे। कमीशन के सभी सदस्य यूरोपीय थे और भारत में इसके विरोध का यही सबसे बड़ा कारण था।
- साइमन कमीशन 3 फरवरी, 1928 को विलायत से बम्बई पहुँचा, यहाँ इसका स्वागत देशव्यापी आम हड़ताल से हुआ, जब कमीशन दिल्ली पहुँचा तो वहाँ काले झण्डों और 'गो बैक साइमन' के नारों के साथ स्वागत किया गया और केन्द्रीय विधानसभा ने साइमन का स्वागत करने से मना कर दिया।
- साइमन जब लाहौर पहुँचा तो लाला लाजपत राय के नेतृत्व में इसके खिलाफ प्रदर्शन किया गया। पुलिस के लाठी चार्ज के कारण ही कुछ दिनों बाद लाला जी की मृत्यु हो गई।
- लखनऊ में कमीशन विरोधी प्रदर्शन में जवाहर लाल नेहरू और गोविंद बल्लभ पंत की भी पिटाई की गई।
- साइमन कमीशन दो बार भारत आया पहली बार फरवरी 1928 में आया लेकिन 31 मार्च, 1928 को वापस चला गया। दूसरी बार अक्टूबर 1928 में आया और 13 अप्रैल 1929 को वापस इंग्लैंड चला गया।
- साइमन कमीशन का अधिकृत नाम भारतीय वैधानिक आयोग था।
- साइमन कमीशन के सहयोग को लेकर मुस्लिम लीग में फूट पड़ गई। और मुहम्मद शफी के नेतृत्व में मुस्लिम लीग का एक गुट सहयोग के पक्ष में मुस्लिम लीग से अलग हो गया।

साइमन कमीशन के सदस्य

अध्यक्ष	जॉन साइमन	लिबरल पार्टी
सदस्य	बर्नहम	कंजरवेटिव पार्टी
सदस्य	स्ट्रेथकोना	कंजरवेटिव पार्टी
सदस्य	लेन फोक्स	कंजरवेटिव पार्टी
सदस्य	कैडेगन	कंजरवेटिव पार्टी
सदस्य	एटली	लेबर पार्टी
सदस्य	बर्नोन हार्ट शोर्न	लेबर पार्टी

Pariksha Manth

सर्वदलीय सम्मेलन एवं नेहरू रिपोर्ट (1928 ई.)

- साइमन कमीशन में किसी भारतीय को न रखे जाने का कारण बताते हुए सरकार ने यह कहा कि भारतीयों में पारस्परिक मतभेद अधिक है।
- इसी अवसर पर भारत सचिव लार्ड बर्किन हेड ने भारतीयों को यह चुनौती दी कि वे एक ऐसे संविधान का निर्माण करें जिससे सभी भारतीय दल सहमत हों।
- कांग्रेस ने इस चुनौती को स्वीकार कर सर्वदल सम्मेलन बुलाने का निर्णय लिया।
- कांग्रेस द्वारा बुलाया गया सर्वदल सम्मेलन दिल्ली में मार्च 1928 में आरम्भ हुआ। सभी दलों ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश सरकार के साथ समझौता वार्ता तभी चलायेंगे जब अधिराज्य देने का वायदा किया जाए।
- सर्वदल सम्मेलन का तीसरा सम्मेलन मई 1928 में डा. अन्सारी की सदारत में हुआ। इसमें मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक कमेटी नियुक्त की गई और उसे एक जुलाई 1928 के पहले भारत के संविधान के सिद्धांतों का एक मसविदा तैयार करने का काम सौंपा।
- 9 सदस्यीय इस कमेटी के मुख्य सदस्यों में अली इमाम, तेज बहादुर सप्रू और सरदार मंगल सिंह थे।
- 29 राजनीतिक संगठनों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।
- इस कमेटी ने अपना मसविदा जुलाई 1928 में प्रकाशित किया। इतिहास में यह नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है। इसका आधार डोमीनियन स्टेट्स था। नेहरू रिपोर्ट के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
- भाषा के आधार पर प्रान्तों के गठन तथा प्रान्तों के स्वायत्त शासन देने की बात कही गई, सारी शक्ति केन्द्रीय विधानसभा के प्रति उत्तरदायी भारत सरकार के हाथ में रखी गई। केवल विदेशी मामलों और सुरक्षा को ब्रिटिश नियंत्रण में रखा गया था।
- नागरिक अधिकारों के बारे में कहा गया कि लोगों को भाषण देने, समाचार-पत्र निकालने, सभाएं करने, संगठन बनाने आदि की स्वतंत्रता प्राप्त थी।
- अलग साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व का विरोध किया गया।
- सभी बालिगों को मतदान का अधिकार दिया गया।
- मुस्लिम लीग ने हिन्दू-मुस्लिम समझौते की सिफारिशों को ठुकरा दिया और प्रस्तावित संविधान को पास करने से इंकार कर दिया, बदले में जिन्ना ने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए मार्च 1929 में एक 14 सूत्रीय मांग पत्र रखा जिसमें पृथक निर्वाचक मण्डल केन्द्र व प्रदेशों में सीटों का आरक्षण, रोजगार में मुसलमानों के लिए आरक्षण और नए बहुसंख्यक मुस्लिम प्रदेशों की स्थापना प्रमुख मांग थी।
- जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस डोमिनियन स्टेट्स से संतुष्ट नहीं थे, ये पूर्ण स्वाधीनता चाहते थे।
- 1928 के कलकत्ता अधिवेशन में कहा गया कि यदि सरकार नेहरू रिपोर्ट 31 दिसम्बर, 1930 तक स्वीकार नहीं करेगी तो कांग्रेस अहिंसक असहयोग आन्दोलन शुरू करेगी लेकिन सुभाष चन्द्र बोस एवं जे. एल. नेहरू के दबाव के कारण यह समय 31 दिसम्बर, 1929 कर दिया।

महत्वपूर्ण तथ्य

- सर्वप्रथम भारत के लिए औपनिवेशिक स्वराज की मांग सर तेजबहादुर सप्रू एवं जयकर ने की थी क्योंकि ये दोनों नेहरू रिपोर्ट तैयार करने वाली समिति के सदस्य थे। नेहरू रिपोर्ट का आधार औपनिवेशिक स्वराज्य (डोमेनियन स्टेट्स) था।
- औपनिवेशिक स्वराज्य की जगह पूर्ण स्वराज्य की मांग को प्रभावशाली बनाने के लिए जवाहर लाल नेहरू एवं सुभाषचन्द्र बोस ने मिलकर 1928 ई. में 'इंडिपेंडेंस फॉर लीग' का गठन किया।

Pariksha Manthan

आल इण्डिया इन्डिपेंडेंस लीग

- भारत के लिए पूर्ण स्वाधीनता के लिए नवम्बर 1928 में इसकी स्थापना की गई। इसने नेता जवाहर लाल नेहरू व सुभाष चन्द्र बोस थे।
- दिसम्बर 1929 में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में हुआ, इस अधिवेशन के अध्यक्ष गांधी जी चुने गए थे लेकिन उन्होंने अपनी जगह जवाहर लाल नेहरू को अध्यक्ष बनाया।
- इस अधिवेशन में स्पष्ट कहा गया कि नेहरू रिपोर्ट को लागू करने की अवधि समाप्त हो गई तथा अब पूर्ण स्वाधीनता की मांग बुलंद की गई।
- कांग्रेस की नई वर्किंग कमेटी की बैठक 2 जनवरी, 1930 को हुई जिसमें 26 जनवरी, 1930 को पूर्ण स्वाधीनता दिवस सारे भारत में मनाने का आदेश दिया गया।
- लाहौर अधिवेशन में सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने की घोषणा की गई तथा संघर्ष का कार्य गांधी जी पर छोड़ दिया गया और इस तरह राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व गांधी जी के हाथों में दे दिया गया।

नेहरू कमेटी के सदस्य		
अध्यक्ष	—	मोती लाल नेहरू
सदस्य	—	अली इमाम
सदस्य	—	शुएब कुरैशी
सदस्य	—	तेजबहादुर सप्रू
सदस्य	—	सुभाष चन्द्र बोस
सदस्य	—	सरदार मंगल सिंह
सदस्य	—	एन.एम. जोशी
सदस्य	—	एम.एस. आणे
सदस्य	—	एम.आर. जयकर

भारत के कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना

- भारत में वामपंथी आन्दोलन का उदय आधुनिक उद्योगों के विकास, दो विश्वयुद्धों के मध्यकाल में आर्थिक मंदी की भयावहता तथा रूस में 1917 ई. को बोल्शेविक क्रान्ति के परिणामस्वरूप हुआ था।
- मानवेन्द्र नाथ राय (नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य) ने सोवियत संघ की यात्रा कर रूसी कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्ध स्थापित कर अक्टूबर 1920 ई. में ताशकन्द में "भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी।"
- राजा महेन्द्रप्रताप के नेतृत्व में भारतीयों का पहला प्रतिनिधि मंडल लेनिन से मिला था।
- भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के उद्देश्य से एम.एन. राय अप्रैल 1922 ई. में भारत आये।
- भारत में साम्यवादी पार्टी की स्थापना की दिशा में प्रयत्नरत नेताओं को 1924 ई. में बन्दी बनाकर कानपुर षडयंत्र केस के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया।
- कानपुर षड़यंत्र केस के अन्तर्गत साम्यवादी नेता मानवेन्द्र नाथ राय, सिंगार वेरू चेट्टियार, मुजफ्फर अहमद, श्रीपद अमृत डांगे, गुलाम हुसैन, रामचरण लाल शर्मा पर सरकार के विरुद्ध षडयंत्र रचने, क्रान्तिकारी गतिविधियों को संचालित करने, भारत में क्राउन की सत्ता को उखाड़ने का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया।
- अंततः 1 दिसम्बर, 1925 ई. को भारत में साम्यवादी दल की स्थापना की घोषणा की गई।
- भारत के लिए पूर्ण स्वाधीनता की मांग करने वाली यह पहली पार्टी थी।
- इस पार्टी ने घोषणा की थी कि —"राजनीतिक स्वतंत्रता एक साधन है और आर्थिक स्वतंत्रता एक लक्ष्य।"
- 1927 ई. में भारत में पहली बार 1 मई को मई दिवस मनाया गया जो भारत में मजदूरों की बढ़ती हुई राजनीतिक चेतना की सूचक थी।

Pariksha Manthan

- इन बन्दी नेताओं में तीन ब्रिटिश नागरिक भी थे, ये थे— फिलिप स्प्रेट, वेन ब्रैडले, लेस्टर हचिन्सन।

ट्रेड यूनियन

- 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में आधुनिक मजदूर वर्ग का उदय हुआ।
- एन.एम. लोखंडे ने 1890 में 'बाम्बे मिल हैंड्स एसोसिएशन की स्थापना की, जिसे प्रायः भारत में गठित प्रथम मजदूर संगठन कहा जाता है। यद्यपि यह ट्रेड यूनियन नहीं था।
- नियमित सदस्यता और शुल्क के साथ पहला व्यवस्थित श्रम संघ 'मद्रास श्रमिक संघ' था, जिसकी स्थापना वी.पी. वाडिया ने 1918 में मद्रास में की थी। यह कपड़ा उद्योग से सम्बन्धित था। यही भारत का पहला ट्रेड यूनियन था।
- गाँधीजी 1918 में अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन की स्थापना की। यह उस समय की सबसे बड़ी ट्रेड यूनियन थी।
- मजदूर संघ आन्दोलन की सबसे महत्वपूर्ण घटना 'आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' (एटक) की स्थापना है। जिसे 21 अक्टूबर, 1920 को एन.एम. जोशी ने किया।
- एटक का प्रथम अधिवेशन 1920 में बम्बई में लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में हुआ।
- 1919 ई. में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की स्थापना की गई। जिसमें सरकार, उद्योगपतियों तथा मजदूरों के प्रतिनिधि एकत्र होकर मजदूरों की भलाई के प्रश्नों पर विचार करते थे।
- एटक के प्रतिनिधि के रूप में एन.एम. जोशी अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन में भेजे गये।
- 1925 में सर्वप्रथम कलकत्ता में प्रान्तीय स्तरीय मजदूर किसान पार्टी बनी।
- 1928 में बम्बई में सूती कपड़ा मिलों में एक बड़ी आम हड़ताल मजदूरों ने की, इसमें कम्यूनिस्टों के नेतृत्व वाली गिरनी कामगार यूनियन ने महत्वपूर्ण स्थिति हासिल की।
- 1928 के अंत तक इसकी सदस्य संख्या 32 से बढ़कर 54 हजार हो गई।
- 1928 में झरिया आन्दोलन के समय तक AITUC में भी वामपन्थियों की स्थिति प्रभावशाली हो गई।
- 1929 में एन.एम. जोशी के नेतृत्व में कुछ लोग (AITUC) से बाहर आ गए और इन लोगों ने इण्डियन ट्रेड यूनियन फेडरेशन की स्थापना की। दन्तोपन्त थेंगडी ने सर्वप्रथम ट्रेड यूनियन के मंच से वर्ग संघर्ष की शुरुआत की।
- इण्डियन ट्रेड यूनियन फेडरेशन, 1935 में एटक (AITUC) में मिल गए और 1938 में इनका पहला संयुक्त अधिवेशन नागपुर में हुआ।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मजदूर गतिविधियाँ कुछ हद तक रुक गईं लेकिन 1945 के बाद इनकी गतिविधियाँ पुनः तेज हुईं।
- कांग्रेस राष्ट्रवादियों ने 1947 में AITUC से निकलकर इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930 ई.)

- 30 जनवरी 1930 को गाँधीजी अपने पत्र यंग इंडिया में 11 सूत्रीय माँग सरकार के सामने रखी। परन्तु वायसराय लार्ड इर्विन इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।
- 6 मार्च, 1930 को गाँधीजी लार्ड इर्विन को पत्र लिखा जिसमें माँगे न स्वीकृत किये जाने पर सविनय अवज्ञा आन्दोलन करने की धमकी दी। लेकिन लार्ड इर्विन ने पुनः कोई ध्यान नहीं दिया।
- 12 मार्च, 1930 को गाँधी जी अपने 78 चुने हुए अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से प्रसिद्ध दांडी यात्रा प्रारम्भ की।

Pariksha Manthan

- 5 अप्रैल, 1930 को गाँधीजी दांडी पहुँचे और 6 अप्रैल, 1930 को दांडी में अवैध रूप से नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा। इसके बाद सम्पूर्ण देश में नमक सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।
- 5 मई, 1930 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर पूना के यरवदा जेल में रखा गया।
- गाँधी जी ने यह घोषणा की थी कि वे धराशना (गुजरात) के नमक कार्यशाला में धावा बोलकर नमक कानून तोड़ेंगे।
- 31 मई, 1930 को गाँधी जी के द्वारा आह्वान किये गये इस आन्दोलन को सरोजनी नायडू, दोस्त इमाम साहब, गाँधीजी के पुत्र मणिलाल गाँधी हजारों कार्यकर्ताओं के साथ धराशना के नमक कार्यशाला में धावा बोला, इन पर पुलिस ने भीषण लाठीचार्ज किया।
- अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर धराशना के नृशंस लाठी चार्ज का आँखों देखा वर्णन अपने पत्र न्यू फ्रीमैन में किया है।
- खान अब्दुल गफ्फार खाँ (सीमांत गाँधी) अहिंसक आन्दोलनकारियों का एक दल तैयार किया जिसे 'खुदाई खिदमतगार' के नाम से जाना जाता है।
- खुदाई खिदमतगार के सदस्य लाल रंग की वर्दी पहनते थे अतः इन्हें लाल कुर्ती के नाम से जाना जाता है और इनके आन्दोलन को लालकुर्ती आन्दोलन कहा जाता है।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र मणिपुर में भी यह आन्दोलन चला। यहाँ पर नागाओं ने यदुनाग के नेतृत्व में ब्रिटिश शासकों से पूर्ण असहयोग एवं कर बन्दी का आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन को जिया-तरंग आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।
- यदुनाग के बाद उसकी बहन गैडनिल्यू (रानी गिडालू) ने नागा आन्दोलन का नेतृत्व किया। इन्हें गिरफ्तार कर आजीवन कारावास की सजा दी गई।
- इनके बारे में जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है कि 'एक दिन ऐसा आयेगा जब पूरा देश इन्हें (गैडनिल्यूको) स्नेहपूर्वक स्मरण करेगा।
- छतरपुर में करबन्दी आन्दोलन चला। यहाँ आन्दोलन का नेतृत्व डाकू मंगल सिंह ने किया।
- तमिलनाडु में सी. राजगोपालाचारी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह चला, इन्होंने त्रिचनापल्ली से लेकर वेदारण्य की पद यात्रा की।
- महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं मध्य भारत में जंगल नियमों के उल्लंघन का आन्दोलन चला।

महत्वपूर्ण तथ्य

- दांडी मार्च में महात्मा गांधी के साथ अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर भी था।
- 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने प्रसिद्ध डाँडी मार्च प्रारम्भ किया। 78 अनुयायियों के साथ गांधीजी साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से गुजरात के समुद्र तट पर स्थित डांडी की यात्रा प्रारम्भ की। 78 अनुयायियों में सर्वाधिक 31 अनुयायी गुजरात से थे। उत्तर प्रदेश से 8 अनुयायी सम्मिलित हुए थे। बिहार से केवल एक अनुयायी गिरिवरधारी चौधरी सम्मिलित हुए थे।
- महात्मा गांधी ने 12 मार्च 1930 को डांडी यात्रा प्रारम्भ की और 5 अप्रैल 1930 को ये डांडी पहुंचे और यहाँ आये हुए सभी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा था कि ''शक्ति के विरुद्ध अधिकार की इस लड़ाई में मैं विश्व की सहानुभूति चाहता हूँ।''
- नमक सत्याग्रह के समय 5 मई 1930 ई. को गांधीजी के गिरफ्तार हो जाने के बाद, आन्दोलन के नेता के रूप में उनका स्थान अब्बास तैय्यबजी ने लिया था।

Pariksha Manthan

गाँधी जी की 11 सूत्रीय माँगे

1. रुपये की विनिमय दर घटाकर 1 शिलिंग 4 पेंस कर दी जाये।
2. भू-राजस्व में 50% की कमी की जाये।
3. सिविल अधिकारियों के वेतन में 50% की कमी की जाये।
4. सैनिक खर्च में 50% की कमी की जाये।
5. रक्षात्मक शुल्क लगाया जाये और आयात में कमी की जाये।
6. नमक कर समाप्त किया जाये।
7. तटीय यातायात रक्षा विधेयक पारित किया जाये।
8. सी.आई.डी. विभाग समाप्त किया जाये।
9. भारतीयों को आग्नेय अस्त्र का लाइसेंस दिया जाये।
10. नशीली वस्तुओं के विक्रय को बंद किया जाये।
11. उन सभी राजनीतिक बंदियों की रिहाई की जाये जिन पर हत्या का आरोप न हो।

दांडी मार्च

- दांडी गुजरात प्रांत के नौसारी जिले में स्थित है।
- साबरमती आश्रम से दांडी की दूरी 241 मील है।
- गाँधीजी साबरमती से दांडी 24 दिनों के बाद 5 अप्रैल, 1930 को पैदल चलकर पहुँचे।
- 6 अप्रैल को प्रातः इन्होंने दांडी समुद्र तट पर नमक बनाकर नमक कानून तोड़े।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन (1930-31 ई.)

- यह सम्मेलन 12 नवंबर, 1930 से लेकर 19 जनवरी, 1931 ई. तक चला।
- यह सम्मेलन सेंट जेम्स पैलेस लंदन में आयोजित हुआ।
- इसका उद्घाटन ब्रिटिश सम्राट जार्ज V ने किया। इस समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सर रैम्जे मैक्डोनाल्ड थे जो सम्मेलन के अध्यक्ष भी थे।
- इस सम्मेलन में कुल 89 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिनमें 16 ब्रिटिश राजनयिक दलों और शेष 73 भारत का प्रतिनिधित्व करते थे। भारतीय देशी रियासतों के 16 नरेशों ने इसमें भाग लिया।
- कांग्रेस का कोई भी प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित नहीं हुआ।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन में दल व उनके प्रतिनिधि

उदारवादी दल	टी.बी. सप्रू एवं सी.वाई. चिंतामणि
हिन्दू महासभा	एम.आर. जयकर एवं बी.एस. मुंजे
मुस्लिम लीग	सर आगा खाँ, मुहम्मद शफी एवं मुहम्मद अली जिन्ना।
दलित वर्ग	डा. बी.आर. अंबेडकर
एंग्लो इंडियन	के.टी. पॉल
सिक्ख	सरदार सम्पूर्ण सिंह

गाँधी-इर्विन पैक्ट (1931 ई.)

- यह समझौता 5 मार्च, 1931 को वायसराय इर्विन एवं गाँधीजी के बीच दिल्ली में हुआ। अतः इसे दिल्ली पैक्ट के नाम से जाना जाता है।
- समझौते के मुख्य बिन्दु इस प्रकार थे—
  1. गाँधीजी सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित करेंगे।
  2. कांग्रेस द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेगी।
  3. सरकार उन सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा करेगी जिन पर हिंसा का कोई मुकदमा नहीं है।
  4. राजनीतिक बंदियों की जब्त की गई संपत्ति वापस की जायेगी।
  5. भारतीयों का नमक बनाने का अधिकार प्राप्त हुआ।
- इस समझौते के बारे में कहा जाता है कि गाँधी जी तीन क्रान्तिकारियों भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को फांसी से नहीं बचा सके।
- इस समझौते में टी.बी. सप्रू एवं जयकर की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931)

- सुभाषचन्द्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन (1931) को महात्मा गांधी की लोकप्रियता और सम्मान की पराकाष्ठा माना है।
- 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन के लिए, जिसकी अध्यक्षता सरदार पटेल कर रहे थे, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने मूल अधिकारों तथा आर्थिक कार्यक्रम पर संकल्प प्रारूपित किया था।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931 ई.)

- इस सम्मेलन का आयोजन 7 सितंबर, 1931 से 1 दिसंबर, 1931 तक लंदन में हुआ।
- इस सम्मेलन में कुल 31 प्रतिनिधि उपस्थित हुए।
- कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में गाँधीजी उपस्थित हुए।
- गाँधी एस.एस. राजपूताना नामक जहाज से लंदन गये।
- उदारवादी दल के टी.बी. सप्रू एवं मुस्लिम लीग के मु. अली जिन्ना तथा दलित नेता बी.आर. अंबेडकर सम्मिलित हुए।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में साम्प्रदायिक समस्या उभरकर सामने आयी।
- बिना किसी नतीजे के यह सम्मेलन समाप्त हुआ।
- गाँधी जी वापस भारत लौट आये और कहा मैं खाली हाथ लौटा हूँ परन्तु मैंने अपने देश की इज्जत को बट्टा नहीं लगने दिया।

साम्प्रदायिक पंचाट (कम्युनल अवार्ड) 1932 ई.

- 16 अगस्त, 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैक्डोनाल्ड ने साम्प्रदायिक पंचाट की घोषणा की।
- इस निर्णय के तहत अल्पसंख्यक समुदायों के लिए प्रांतीय विधानमंडलों में पृथक निर्वाचक मंडल की व्यवस्था की गई थी।
- दलित वर्ग को अल्पसंख्यक मानकर हिन्दुओं से अलग कर दिया गया था।
- इसका उद्देश्य साम्प्रदायिक फूट को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय आन्दोलन को कमजोर करना था।

पूना पैक्ट (26 सितम्बर, 1932)

- गाँधी जी दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल बनाये जाने से बहुत दुखी हुए और 20 सितम्बर, 1932 से पूना के यरवदा जेल में आमरण अनशन प्रारम्भ किया।
- मदनमोहन मालवीय, डा. राजेन्द्र प्रसाद एवं सी. राजगोपालाचारी के प्रयासों से पूना में गाँधी जी एवं डा. अंबेडकर के मध्य एक समझौता हुआ।
- समझौते के अनुसार दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल समाप्त कर दिया गया।
- प्रान्तों में दलितों के लिए सुरक्षित सीटें 71 से बढ़ाकर 147 कर दी गईं।
- इस समझौते पर गाँधीजी एवं डा. अंबेडकर के हस्ताक्षर हुए।

महत्वपूर्ण तथ्य

- 'हरिजन सेवक संघ' का पूर्व नाम ऑल इंडिया एंटी अनटचेबिलिटी लीग था। समाज से छुआछूत को समाप्त करने हेतु गांधीजी ने 30 सितम्बर 1932 को इसकी स्थापना की थी। बाद में इसी का नाम 'हरिजन सेवक संघ' पड़ा।
- 26 सितम्बर 1932 को हुए पूना पैक्ट के बाद गांधीजी 30 सितम्बर 1932 को 'आल इंडिया एंटी अनटचेबिलिटी लीग' की स्थापना की, जो बाद में 'हरिजन सेवक संघ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके प्रथम अध्यक्ष घनश्याम दास बिड़ला थे।
- मैक्डोनॉल्ड के साम्प्रदायिक पंचाट ने मुसलमानों, दलितों एवं सिक्खों को पृथक चुनाव क्षेत्र एवं आरक्षित सीटें आवंटित की थीं, लेकिन बौद्धों को नहीं की थी।

Pariksha

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने 1920 ई. में 'दलित वर्गों का संघ' स्थापित किया था। इसके अतिरिक्त डा. अम्बेडकर ने 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की भी स्थापना की थी और 1927 में 'बहिष्कृत भारत' नामक पत्रिका का भी प्रकाशन मराठी भाषा में किया था।

तृतीय गोलमेज सम्मेलन

- यह गोलमेज सम्मेलन 17 नवंबर, 1932 से 24 दिसंबर, 1932 तक लंदन में आयोजित हुआ।
- इस सम्मेलन में कुल 46 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- इसमें कांग्रेस तथा इंग्लैंड की लेबर पार्टी ने भाग नहीं लिया।
- इस सम्मेलन में सरकार ने ऐसे किसी व्यक्ति को आमंत्रित नहीं किया जिससे सरकार का विरोध हो सकता था।
- मु. अली जिन्ना को भी आमंत्रित नहीं किया था। ज्यादातर प्रतिनिधि उदारवादी एवं साम्प्रदायिक दल के थे।
- डा. अंबेडकर एवं टी.बी. सप्रू उपस्थित हुए।

श्वेत पत्र

- इस सम्मेलन के बाद मार्च 1933 में ब्रिटिश सरकार ने एक श्वेत पत्र प्रकाशित किया, जिसमें भारत के नये संवैधानिक उपबन्धों का उल्लेख था।
- अप्रैल 1933 में ब्रिटिश संसद के दोनों सदनों की एक संयुक्त प्रवर समिति बनाई गई जिसके अध्यक्ष लार्ड लिनलिथगो थे।
- प्रवर समिति का कार्य श्वेतपत्र के उपबन्धों का मूल्यांकन करना था।
- 11 नवंबर, 1934 को प्रवर समिति की रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसके आधार पर ब्रिटिश संसद में एक विधेयक प्रस्तुत किया गया।
- 1935 में भारतीय शासन अधिनियम पारित हुआ।

कांग्रेस समाजवादी पार्टी

- जय प्रकाश नारायण एवं आचार्य नरेन्द्र देव ने 1934 ई. में बम्बई में कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना की।
- कांग्रेस की अप्रगतिवादी नीतियों से असंतुष्ट होकर 1931 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में बिहार समाजवादी दल और 1933 में बृजलाल के नेतृत्व में पंजाब समाजवादी दल का गठन हुआ।
- इन संगठनों को मिलाकर बम्बई में 1934 ई. में कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना की गई।

1937 का प्रान्तीय चुनाव

- 1935 के अधिनियम की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी। प्रान्तों को पूर्ण स्वायत्तता दिया जाना।
- 1935 के अधिनियम के बनते ही अनेक क्षेत्रीय पार्टियों का गठन प्रारम्भ हो गया।
- बंगाल में फजलुल हक के नेतृत्व में प्रजा कृषक पार्टी का गठन हुआ।
- पंजाब में अफसर हुसैन के नेतृत्व में यूनियनिस्ट पार्टी का गठन हुआ।
- महाराष्ट्र एवं मध्य प्रान्त में डा. बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व में स्वतंत्र कामगार दल की स्थापना हुई।
- 1937 में ब्रिटिश भारत के 11 प्रान्तों में चुनाव हुए। कांग्रेस भी इस चुनाव में सम्मिलित हुई।
- कांग्रेस को मद्रास, म. प्रान्त, संयुक्त प्रांत, बिहार एवं उड़ीसा में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ तथा बम्बई में केवल एक सीट से पूर्ण बहुमत से पीछे थी। प्रारम्भ में छह प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार बनी।

- बंगाल में प्रजा कृषक पार्टी मुस्लिम लीग के सहयोग से फजलुल हक के नेतृत्व में सरकार बनाई।
- पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी ने मुस्लिम लीग के सहयोग से सिकन्दर हयात खाँ के नेतृत्व में सरकार बनाई।
- सिन्ध में अब्दुल्ला हारुन के नेतृत्व में स्वतंत्र दल की सरकार बनी।
- कांग्रेस ने कुल 8 प्रान्तों में सरकार बनाई। इसने अपने शासन काल में प्राथमिक शिक्षा के विकास, किसानों के ऋण की समस्या तथा राजनीतिक बन्दियों की रिहाई से सम्बन्धित कार्य किये।
- मुस्लिम लीग आरोप लगाया कि कांग्रेस शासित प्रान्तों में मुसलमानों पर अत्याचार किया जा रहा है।
- 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ, ब्रिटिश सरकार ने भारत को भी विश्व युद्ध में सम्मिलित कर दिया और कांग्रेस के बहुत पूछे जाने के बाद भी युद्ध के उद्देश्यों को स्पष्ट नहीं किया।
- नवंबर 1939 में आठों प्रान्तों की कांग्रेसी सरकार ने 28 महीने के शासन के बाद इस्तीफा दे दिया।
- मुस्लिम लीग ने 22 दिसम्बर, 1939 को मुक्ति दिवस मनाया।

अगस्त प्रस्ताव 1940

- द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों का सहयोग पाने के उद्देश्य से 8 अगस्त, 1940 को वायसराय लिनलिथगो ने अपने प्रस्तावों की घोषणा की जिसे अगस्त प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है।
- इसके मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
  1. केन्द्र में वायसराय की नई कार्यकारिणी का गठन किया जायेगा जिसमें भारतीयों को भी सम्मिलित किया जायेगा।
  2. भारतीयों को अपना संविधान बनाने का अधिकार है युद्ध के बाद एक संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जायेगा।
  3. भारतीयों को सम्मिलित करते हुए एक भारत रक्षा समिति का गठन किया जायेगा।
  4. भारतीयों का शासन किसी ऐसे दल या समुदाय को नहीं सौंपा जायेगा जिसका विरोध कोई प्रभावशाली दल या वर्ग करेगा।
- कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग दोनों ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। क्योंकि कांग्रेस पूर्णस्वराज्य की माँग कर रही थी तथा मुस्लिम लीग पाकिस्तान की माँग कर रही थी और इस प्रस्ताव में ये दोनों चीजें नहीं थी।

व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940 ई.)

- अगस्त प्रस्ताव के विरोध में तथा द्वितीय विश्व युद्ध से अपने को अलग सिद्ध करने के लिए कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ किया।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह की विचारधारा गाँधीजी की थी अर्थात् गाँधीजी जिस व्यक्ति को नामित करेंगे वही व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ करेगा।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह 17 अक्टूबर, 1940 को पवनार आश्रम (महाराष्ट्र) से प्रारम्भ हुआ।
- पहले सत्याग्रही विनोबा भावे तथा दूसरे सत्याग्रही जवाहर लाल नेहरू थे।

अटलांटिक चार्टर

- अगस्त 1941 में अटलांटिक चार्टर की घोषणा हुई जिसे ब्रिटेन एवं अमेरिका ने संयुक्त रूप से जारी किया था।
- इसमें कहा गया था कि ये सब कौमों के शासन के रूप में जिसके मातहत वे रहेंगी चुनने के अधिकार का आदर करते हैं। उन लोगों को स्वराज पुनः दिया जाये जिनसे बलपूर्वक छीना गया है।
- इस घोषणा से भारतीय नेताओं को आशा बँधी लेकिन 9 सितम्बर, 1941 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल की घोषणा ने भारतीयों की आशा पर पानी फेर दिया जिसमें चर्चिल ने कहा था कि अटलांटिक चार्टर भारत, बर्मा जैसे एशियाई उपनिवेशों में लागू नहीं होगा।

Pariksha Manthan

क्रिप्स प्रस्ताव (1942 ई.)

- जापान मित्र राष्ट्रों के विरोध में युद्ध कर रहा था जिससे भारत की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया।
- कांग्रेस ने कहा कि वह सरकार के साथ तभी सहयोग करेगी जब ब्रिटेन युद्ध के बाद भारत को स्वतंत्र करने का वचन दे।
- जब जापान ने सिंगापुर एवं रंगून पर कब्जा कर लिया तब इस अवसर पर अमेरिकी राष्ट्रपति रुजवेल्ट ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल पर दबाव डाला कि वह भारतीयों से समझौता करें।
- तब चर्चिल सर स्टेफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक मिशन की घोषणा की जिसे क्रिप्स मिशन के नाम से जाना जाता है।
- मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया इसमें कुल 3 सदस्य थे—सर स्टेफर्ड क्रिप्स, ए.बी. एलेक्जेंडर एवं लार्ड पैंथिक लारेंस।
- क्रिप्स प्रस्ताव के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
  1. एक नये भारत संघ का निर्माण किया जायेगा, जिसका स्तर अधिराज्य का होगा।
  2. युद्ध के बाद एक संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जायेगा जिसमें ब्रिटिश भारत एवं देशी रियासतों के प्रतिनिधि होंगे।
  3. जातीय एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान की जायेगी।
- कांग्रेस एवं मुस्लिम दोनों ने इसे ठुकरा दिया।
- जवाहर लाल नेहरू ने इसे दिवालिया बैंक का अग्रिम तिथि का चेक कहा है।
- गाँधी जी ने इसे अग्रिम तिथि का चेक कहा है।

भारत छोड़ो आन्दोलन (1942)

- इसे अगस्त क्रांति भी कहा जाता है।
- गांधी जी का यह मानना था कि अंग्रेज भारत छोड़ दें तो भारत की सभी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जायेंगे।
- 7 व 8 अगस्त, 1942 को बम्बई में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद ने की। यहीं पर भारत छोड़ों आन्दोलन का प्रस्ताव पास किया गया।
- गांधी जी ने अपने भाषण में कहा कि मैंने कांग्रेस का साथ निभाने का प्रण किया है, कांग्रेस या तो कार्य करेगी या मर जायेगी अर्थात् 'करो या मरो' का नारा दिया। यहां गांधी जी ने कहा कि हम अपनी गुलामी स्थायी बनाया जाना देखने के लिए जिंदा नहीं रहेंगे।
- 8 अगस्त की मध्यरात्रि के बाद ही सरकार ने बड़े कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी की योजना बना ली। 9 अगस्त की सुबह गांधी जी एवं कांग्रेस के अन्य कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए।
- इस आन्दोलन में हिंसा और अहिंसा का मिश्रण देखने को मिला। सरकार ने इसका कठोरतापूर्वक दमन किया, परिणामस्वरूप इस आन्दोलन में एक भूमिगत संगठनात्मक ढाँचा भी तैयार हो गया।
- रेडिया प्रसारण का सर्वप्रथम कार्य, आन्दोलन शुरु होने के 5 दिन बाद ही 14 अगस्त से सर्वप्रथम उषा मेहता ने प्रारम्भ किया। अन्य एक केन्द्र बाबू भाई चला रहे थे, जबकि राम मनोहर लोहिया नियमित रूप से कांग्रेस रेडियो पर बोलते थे। नवम्बर 1942 में पुलिस ने इसे खोज निकाला और जब्त कर लिया। इस अपराध में उषा मेहता व बाबू भाई को 4 वर्ष की सजा हुई।
- गांधी जी को आगा खां पैलेस, पूना में कैद किया गया था। 10 फरवरी, 1944 से उन्होंने 21 दिन का उपवास

Pariksha Manthan

आरम्भ किया, इसका देश पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

- जनता ने सरकार पर गांधी जी को रिहा करने के लिए दबाव डाला। विदेशी समाचार-पत्रों और संस्थाओं ने भी गांधी जी की रिहाई का सुझाव दिया परन्तु चर्चिल ने कहा कि जब हम दुनिया में हर जगह जीत रहे हैं तो ऐसे समय में एक बुड्ढे के सामने कैसे झुक सकते हैं जो हमेशा से हमारा दुश्मन रहा है।
- गांधी जी को बाद में बीमारी के आधार पर 6 मई, 1944 को छोड़ दिया गया।
- भारत छोड़ो आन्दोलन की एक विशेषता यह भी थी कि इस दौरान देश के कुछ भागों में समानान्तर सरकार की स्थापना हुई। पहली ऐसी सरकार बलिया में चित्तू पाण्डे के नेतृत्व में बनी।
- मिदनापुर जिले (बंगाल) के तामलूक में गठित जातीय सरकार 1944 तक चलती रही। सतारा की सरकार सबसे दीर्घजीवी रही, यह 1945 तक कार्यरत रही, इसके नेता वाई.वी. चौहान एवं नाना पाटिल थे।
- ब्रिटिश शासन का विरोध इतने प्रबल रूप में भारतीय जनता द्वारा पहली बार हुआ।
- डा. ईश्वरी प्रसाद के अनुसार—अगस्त की क्रांति सरकार के विरुद्ध प्रजा का विरोध था, इसकी तुलना फ्रांस के इतिहास में ब्रैस्टिल के पतन से या रूस की अक्टूबर क्रान्ति से भी की जा सकती है।

भारत छोड़ो आन्दोलन के समय बनी समानान्तर सरकारें

बलिया (उ. प्र.)	चित्तू पाण्डेय के नेतृत्व में
तामलुक (बंगाल)	सतीश सावंत के नेतृत्व में (तामलुक जातीय सरकार)
सतारा	नाना पाटिल एवं वाई.वी. चव्हाण (सर्वाधिक दीर्घ जीवी)

भारत छोड़ो आन्दोलन से अलग रहने वाले दल

मुस्लिम लीग	आर.एस.एस.
वामपंथी	अकाली दल
साम्यवादी	यूनियनिस्ट पार्टी
उदारवादी	जस्टिस पार्टी
हिन्दू महासभा	ईसाई समुदाय

सी.आर. फार्मूला (1944 ई.)

- राजगोपालाचारी जिन्हें सी.आर. के नाम से जाना जाता है। इन्होंने साम्प्रदायिक समस्या के समाधान के लिए मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की माँग को स्वीकार करने की सोची।
- कांग्रेस ने इनके इस विचार को स्वीकार नहीं किया। परिणामस्वरूप इन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर पाकिस्तान के सम्बन्ध में निहित योजना तैयार की।
- योजना के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—

1. युद्ध के दौरान मु0 लीग को पूर्ण स्वाधीनता की माँग का समर्थन करना चाहिए। और संक्रमणकाल के दौरान अस्थायी सरकार बनाने में कांग्रेस का सहयोग करना चाहिए।
2. युद्ध के बाद मुस्लिम बहुमत के क्षेत्रों का निर्धारण एक आयोग द्वारा होगा, जहाँ बाद में जनमत द्वारा यह निर्णय लिया जायेगा कि वे अलग राज्य चाहते हैं या नहीं।
3. जनसंख्या का कोई भी स्थानांतरण ऐच्छिक आधार पर होगा।
4. यह बातें तभी लागू होंगी जब इंग्लैंड सत्ता भारत को सौंप देगा।

- गांधी जी ने इसी फार्मूले के आधार पर जिन्ना से वार्ता की लेकिन कोई समझौता नहीं हो सका।

Pariksha Manthan

आजाद हिन्द फौज

- द्वितीय विश्व युद्ध के बीच भारतीयों में राष्ट्रीय भावना को उद्वेलित करने में आजाद हिन्द फौज की प्रमुख भूमिका रही। आजाद हिन्द फौज की स्थापना सितम्बर 1942 ई. में कैप्टन मोहन सिंह ने कर ली थी, किन्तु अक्टूबर 1943 ई. में सिंगापुर में सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज सरकार की स्थापना कर इसमें नई जान डाली।
- जापान ने अंडमान एवं निकोबार को जीतकर आजाद हिन्द फौज को सौंप दिया। सुभाष ने अंडमान का नाम स्वराज और निकोबार का नाम शहीद रखा।
- आजाद हिन्द फौज के गिरफ्तार सैनिकों तथा अधिकारियों मेजर शहनवाज खां, कर्नल प्रेम सहगल और कर्नल गुरु दयाल सिंह आदि पर नवंबर 1945 ई. में दिल्ली के लाल किले में अंग्रेजी सरकार ने मुकदमा चलाया। आजाद हिन्द फौज के अधिकारियों को बचाने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में तेज बहादुर सप्रू, आसफ अली, कैलाश नाथ काटजू, जवाहर लाल नेहरू को लेकर आजाद हिन्द फौज बचाव समिति का गठन किया। उपरोक्त लोगों के वकालत करने के बाद भी ब्रिटिश अदालत ने आजाद हिन्द फौज के अधिकारियों को फांसी की सजा सुनाई। किन्तु जन आन्दोलनों व विरोधी तेवरों को देखकर तत्कालीन वायसराय लार्ड वेवेल ने उक्त अधिकारियों की सजा माफ कर दी।

सुभाष चन्द्र बोस

- सुभाष चन्द्र बोस का जन्म कटक (उड़ीसा) के एक बंगाली परिवार में 23 जनवरी, 1897 ई. को हुआ था।
- 1919 ई. में दर्शनशास्त्र से स्नातक (प्रथम श्रेणी से पास) करने के बाद वे उसी वर्ष आई.सी.एस. की परीक्षा देने इंग्लैण्ड गये और उसी परीक्षा में (1920 ई. में) उन्होंने चौथा स्थान प्राप्त किया।
- भारत में रौलेट ऐक्ट, जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड जैसे अंग्रेजी शासन के कृत्यों को देखकर उन्होंने अप्रैल 1921 ई. में आई.सी.एस. से त्यागपत्र दे दिया और भारत आ गए।
- सुभाष चितरंजन दास से मिले और उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मान लिया।
- चितरंजन दास इन्हें ''ए यंग ओल्डमैन'' कहा करते थे।
- भारत आकर महात्मा गांधी के कहने पर उन्होंने अपने राजनीतिक गुरु देशबन्धु चितरंजन दास के साथ मिलकर 1921 ई. में इंग्लैण्ड के युवराज के आगमन का बहिष्कार कार्यक्रम चलाया, जिसके लिए उन्हें 1924 ई. में देश निकाला देकर माण्डले जेल में भेज दिया गया। 1927 ई. में खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें रिहा किया गया।
- 1931 में इन्हें नव जवान भारत सभा का अध्यक्ष चुना गया।
- 1935 ई. में उनकी पुस्तक 'दि इण्डियन स्ट्रगल' प्रकाशित हुई।
- 1938 ई. में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन की अध्यक्षता की थी तथा त्रिपुरी अधिवेशन में उन्होंने महात्मा गांधी समर्थित पट्टाभि सीतारमैय्या को हराया और अध्यक्ष बने। लेकिन महात्मा गांधी से मतभेद हो जाने के कारण 1939 ई. में कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया और इसी वर्ष कांग्रेस के अन्दर 'फारवर्ड ब्लाक' का गठन किया।
- 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में पट्टाभि सीतारमैय्या को पराजित कर पुनः अध्यक्ष चुने गये।
- 1940 ई. में ब्रिटिश शासन द्वारा उनके घर में ही नजरबन्द किये जाने पर वे पठान जियाउद्दीन के वेश में घर से निकलकर बर्लिन शहर (जर्मनी) पहुँचे, वहाँ उन्होंने हिटलर व उसके सचिव रिबेट्रोप से मुलाकात की।

Pariksha Manthan

जर्मनी की जनता ने उन्हें 'नेताजी' के उपनाम से सम्बोधित किया।

- आजाद हिन्द फौज में एक हजार स्त्री सैनिकों वाली रानी झांसी रेजीमेंट भी शामिल थी जिसका कमान लक्ष्मी स्वामीनाथन को सौंपी गई थी।
- सुभाष चन्द्र बोस ने जापानी (टोकियो) रेडियो से भारत की स्वतंत्रता का प्रथम संदेश दिया था।
- सुभाष 2 जुलाई, 1943 ई. को सिंगापुर पहुंचे और 5 जुलाई, 1943 ई. को रासबिहारी बोस ने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता लीग की अध्यक्षता का भार सौंपा, अब सुभाष चन्द्र बोस 'नेताजी' कहलाने लगे।
- सुभाष चन्द्र बोस ने जर्मनी जाने के लिए ओरलैण्डो मजोट्टा के नाम से पासपोर्ट बनवाया था।
- सुभाष चन्द्र बोस का प्रसिद्ध नारा था—दिल्ली चलो और तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।

देशी रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति (1906-47 ई.)

- 1906 ई. के बाद देशी राज्यों के प्रति ब्रिटिश शासन की नीति बदली और उन्होंने देशी नरेशों के प्रति "अधीनस्थ सहयोग की नीति" अपनाई।
- वायसराय लार्ड मिन्टो ने देशी राज्यों पर "दबाव कम करने की नीति" अपनाई।
- मौंटफोर्ड रिपोर्ट के कुछ समय बाद देशी नरेशों के मण्डल की स्थापना 1921 ई. में की गई जिसे "चेम्बर ऑफ प्रिंसेज" कहा गया। इससे देशी राज्यों को ब्रिटिश शासन ने अपने पक्ष में करने की कोशिश की।
- देशी नरेशों के साथ भारत सरकार के सम्बंधों पर विचार करने के लिए 1927 ई. में बटलर कमेटी की नियुक्ति की गई।
- इस कमेटी ने ब्रिटिश ताज और देशी नरेशों के बीच सीधे सम्बंध स्वीकार किये।
- 1935 ई. के ऐक्ट में पहली बार देश में संघ स्थापित करने के लिए ब्रिटिश भारतीय क्षेत्रों के अलावा देशी राज्यों के प्रतिनिधियों के लिए भी सीटें निर्धारित की गई।
- 1947 ई. में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सभी देशी राज्य स्वतंत्र हो गये। अतः कांग्रेस सरकार ने निश्चित नीति बनानी तय की। उधर संवैधानिक स्थिति से कुछ देशी राज्यों यथा ट्रावनकोर, कोचिन, भोपाल, जूनागढ़ आदि ने अपनी स्वतंत्र सत्ता की घोषणा कर दी, लेकिन जवाहर लाल नेहरू व सरदार वल्लभ भाई पटेल ने दृढ़ता से भारतीय रियासतों को भारतीय संघ में शामिल कराया।

प्रमुख नारे

- स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है—लोकमान्य तिलक
- वन्दे मातरम्—बंकिम चन्द्र चटर्जी
- तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा, जय हिन्द, दिल्ली चलो—सुभाष चन्द्र बोस
- करो या मरो, सत्य और अहिंसा मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है—महात्मा गांधी
- इंकलाब जिन्दाबाद—भगत सिंह
- वेदों की ओर लौटो—स्वामी दयानंद सरस्वती
- सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा—मुहम्मद इकबाल
- जन-गण-मन अधिनायक जय हे—रवीन्द्र नाथ टैगोर की रचना गीतांजली से उद्धृत
- आराम हराम है—पं. जवाहर लाल नेहरू

Pariksha Manthan

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय लिखी गई महत्वपूर्ण पुस्तकें व उनके लेखक

- यंग इण्डिया—महात्मा गांधी
- अनहैप्पी इण्डिया—लाला लाजपत राय
- इण्डिया डिवाइडेड—राजेन्द्र प्रसाद
- डिस्कवरी ऑफ इण्डिया—पं. जवाहर लाल नेहरू
- ग्लिम्पसज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री—पं. जवाहर लाल नेहरू
- नील दर्पण—दीनबन्धु मित्र
- गीता रहस्य—बाल गंगाधर तिलक
- सत्यार्थ प्रकाश—दयानंद सरस्वती
- इण्डिया विन्स फ्रीडम—अबुल कलाम आजाद
- अलहिलाल—अबुल कलाम आजाद
- आनंदमठ, कुण्डली—बंकिम चन्द्र चटर्जी
- इण्डिया टुडे—रजनी पाम दत्त
- एलन आक्टोवियन ह्यूम—विलियम वुडेनबर्न
- इण्डियन रेनेशा—सी.एफ. एण्ड्रूज
- इण्डियन स्ट्रगल—सुभाष चन्द्र बोस
- गीतांजली, गोरा—रवीन्द्रनाथ टैगोर
- पावर्टी एण्ड अन ब्रिटिश रूल आफ इण्डिया—दादा भाई नौरोजी
- पाकिस्तान ऑर द पार्टिसन ऑफ इण्डिया—मूक नायक वी.आर. अम्बेडकर
- टेलिजन एण्ड सोशल रिफॉर्म्स—एम.जी. रानाडे
- फ्रीडम एटमिडनाइट—लैपियर
- न्यू इण्डिया—ऐनी बेसेन्ट
- आवर इण्डियन मुसलमान—डब्ल्यू.डब्ल्यू. हंटर
- ए नेशन इन मेकिंग—सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
- भारत विभाजन के गुनहगार—डॉ. राम मनोहर लोहिया
- द स्टोरी आफ माई लाइफ—मोरारजी देसाई
- इण्डिया एण्ड इंडियन मिशन—अलेक्जेंडर डफ
- द स्कोप आफ हैप्पीनेस—विजय लक्ष्मी पंडित
- अभ्युदय—मदन मोहन मालवीय
- वार ऑफ इण्डिया इंडिपेंडेंस—वीर सावरकर
- द ग्रेट रिबेलियन—अशोक मेहता
- सिपॉय म्यूटिनी रिवोल्ट ऑफ 1857—आर.सी. मजूमदार
- समाजवादी क्यों—जय प्रकाश नारायण
- भारत-भारती—मैथिलीशरण गुप्त

स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख व्यक्तियों के उपनाम

व्यक्ति	उपनाम	व्यक्ति	उपनाम
पं. मदन मोहन मालवीय	महामना	बालगंगाधर तिलक	लोकमान्य
राजगोपालाचारी	राजाजी	जय प्रकाश नारायण	लोकनायक
भगत सिंह	शहीदे आजम	दादाभाई नौरोजी	ग्रैंड ओल्डमैन ऑफ इण्डिया
वल्लभ भाई पटेल	लौह पुरुष	मुहम्मद अली जिन्ना	कायदे आजम
रवीन्द्र नाथ टैगोर	गुरुदेव	वल्लभ भाई पटेल	सरदार
मैथिलीशरण गुप्त	राष्ट्रकवि	जिन्ना	'हिन्दू-मुस्लिम एकता के राजदूत' (सरोजिनी नायडू द्वारा)
चितरंजन दास	देशबन्धु		
अब्दुल गफ्फार खाँ	सीमान्त गांधी		

वेबेल योजना (1945 ई.)ह

- लार्ड वेबेल विश्व युद्ध में भारतीयों का सहयोग पाने के लिए 14 जून, 1945 को अपनी योजना की घोषणा की जिसे वेबेल योजना के नाम से जाना जाता है। इसके मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—

  1. केन्द्र में एक नई कार्यकारिणी का गठन किया जायेगा जिसमें वायसराय एवं कमांडर इन चीफ को छोड़कर सभी सदस्य भारतीय होंगे।
  2. रक्षा एवं विदेश विभाग को छोड़कर सभी विभाग भारतीयों के हाथ में होंगे।
  3. कार्यकारिणी में 40% सवर्ण हिन्दु, 40% मुसलमान एवं 20% अन्य वर्ग के सदस्य होंगे।
  4. वायसराय को मंत्रियों की राय ठुकराने का अधिकार होगा लेकिन अकारण राय नहीं ठुकरायेगा।

शिमला सम्मेलन (25 जून, 1945 ई.)

- वेबेल योजना पर विचार विमर्श करने हेतु वायसराय ने शिमला में एक सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन में कुल 21 नेताओं ने भाग लिया।
- इस सम्मेलन में मुस्लिम सदस्य चुनने के मुद्दे पर सम्मेलन असफल हो गया।
- कांग्रेस ने एक मुस्लिम अबुल कलाम आजाद को कार्यकारिणी में रखने के लिए चुना लेकिन जिन्ना ने कहा कि मुस्लिम सदस्य चुनने का अधिकार केवल मुस्लिम लीग को है।
- इसी मुद्दे पर यह योजना असफल हो गई।

कैबिनेट मिशन योजना (1946 ई.)

- भारत की राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली 19 फरवरी, 1946 को ब्रिटिश कैबिनेट मंत्रियों का एक मिशन भेजने की घोषणा की।
- इस मिशन के सदस्य थे—भारत सचिव लार्ड पैंथिक लारेंस व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष सर स्टेफर्ड क्रिप्स तथा नौसेना प्रमुख ए.वी. एलेक्जेंडर।
- चूँकि ये सभी सदस्य ब्रिटिश सरकार के कैबिनेट सदस्य थे अतः इसे कैबिनेट मिशन के नाम से जाना जाता है।
- इसका उद्देश्य सत्ता के हस्तांतरण से सम्बन्धित लघुकालीन एवं दीर्घकालीन व्यवस्था का निर्माण करना।
- कैबिनेट मिशन 23 मार्च, 1946 को भारत पहुँचा और 5 सप्ताह तक विभिन्न दलों एवं वर्गों के नेताओं से वार्ता की लेकिन कोई निष्कर्ष नहीं निकला।
- अंततः कैबिनेट मिशन ने 16 मई, 1946 को अपनी तरफ से एक योजना प्रस्तुत जिसे हम कैबिनेट मिशन योजना के नाम से जानते हैं। इसके मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
- ब्रिटिश भारत एवं देशी रियासतों को मिलाकर भारत संघ का निर्माण किया जायेगा।
- संघ की व्यवस्थापिका एवं कार्यपालिका प्रान्तों तथा देशी राज्यों के प्रतिनिधियों से मिलकर गठित होगी।
- संविधान बनाने के लिए एक संविधान सभा का गठन होगा।
- संविधान सभा के सदस्यों की संख्या 389 होगी। जिसमें 292 सदस्य ब्रिटिश भारत के, 93 सदस्य देशी रियासतों के और 4 सदस्य चीफ कमिश्नर प्रांतों के होंगे।
- प्रत्येक प्रान्त से 10 लाख की जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि होगा।
- प्रत्येक प्रान्त के लिए निर्धारित स्थान जनसंख्या के आधार पर मुस्लिम, सिक्ख व सामान्य आधार पर विभाजित किये जायेंगे।
- एक अंतरिम सरकार का गठन किया जायेगा जिसमें सभी दलों के लोगों को सम्मिलित किया जायेगा।
- यदि कोई दल नहीं सम्मिलित होना चाहे तो भी अंतरिम सरकार का गठन होगा।

Pariksha Manthan

अंतरिम सरकार का गठन

- संविधान निर्माण का कार्य पूरा होने तक देश का प्रशासन चलाने के लिए एक अंतरिम सरकार की व्यवस्था की बात कैबिनेट मिशन में की गई थी।
- प्रारम्भ कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग दोनों ने कैबिनेट मिशन योजना स्वीकार कर ली।
- लेकिन जब संविधान सभा के परिणाम सामने आये तो मुस्लिम लीग अपनी कमजोर स्थिति को देखते हुए कैबिनेट मिशन योजना मानने से इंकार कर दिया। और अपनी पाकिस्तान की माँग पुनः दोहराई।
- 16 अगस्त, 1946 को मुस्लिम लीग ने "प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस" मनाया। इस अवसर पर भीषण साम्प्रदायिक दंगे हुए।
- 24 अगस्त, 1946 को वायसराय ने अंतरिम सरकार गठित करने की घोषणा की।
- 2 सितंबर, 1946 को अंतरिम सरकार ने कार्य करना प्रारंभ किया।
- प्रारम्भ में मुस्लिम लीग अंतरिम सरकार में सम्मिलित नहीं हुई।
- लेकिन अक्टूबर 1946 में सरकार को असहयोग करने के उद्देश्य से सरकार में सम्मिलित होने का निर्णय लिया।
- मुस्लिम लीग के लियाकत अली को वित्त मंत्री बनाया गया जो सरकार को अत्यधिक असहयोग किये।

अंतरिम सरकार के सदस्य

1. जवाहर लाल नेहरू	7. शरतचन्द्र बोस
2. सरदार वल्लभ भाई पटेल	8. डॉ. जॉन मथाई
3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	9. सरदार बलदेव सिंह
4. एम. आसफ अली	10. सर शफात खाँ
5. सी. राजगोपालाचारी	11. सैय्यद अली जहीर
6. जगजीवन राम	12. सी.एच. भाभा

बाद में शरत चन्द्र बोस, सर शफात खाँ एवं सैय्यद अली जहीर ने त्यागपत्र दे दिया।

- मुस्लिम लीग के 5 प्रतिनिधि थे—लियाकल अली, राजा गजनफर अली, अब्दुल रब निस्तार, आई.आई. चन्द्रीगर, योगेन्द्रनाथ मंडल

एटली की घोषणा (20 फरवरी, 1947 ई.)

- 20 फरवरी 1947 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने ब्रिटिश संसद में (हाउस ऑफ कामंस में) एक ऐतिहासिक घोषणा करते हुए कहा कि अंग्रेज जून 1948 से पहले ही उत्तरदायी लोगों को सत्ता सौंपकर भारत छोड़ देंगे।
- अपने भाषण के अंत में एटली ने लार्ड वेबेल के स्थान पर लार्ड माउंटबेटेन को भारत का गवर्नर जनरल बनाने की घोषणा की और कहा कि माउंटबेटेन मार्च 1947 में कार्यभार ग्रहण कर भारतीयों के हाथों में शासन का उत्तरदायित्व सौंपेंगे।
- जवाहर लाल नेहरू ने एटली की घोषणा का स्वागत करते हुए इसे एक बुद्धिमत्तापूर्ण एवं साहसपूर्ण निर्णय बताया।

माउण्टबेटेन योजना (3 जून, 1947 ई.)

- 22 मार्च, 1947 को ब्रिटिश भारत के 34वें एवं अंतिम गवर्नर जनरल लार्ड माउंटबेटेन भारत आये और सत्ता हस्तांतरण के कार्य में लग गये।
- लगभग दो महीने के वार्ता के पश्चात लार्ड माउण्टबेटेन इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारत का विभाजन अनिवार्य है।
- यद्यपि गाँधी जी एवं मौलाना अबुल कलाम आजाद विभाजन के सख्त खिलाफ थे।
- गाँधी जी ने विभाजन को रोकने के लिए लार्ड माउण्टबेटेन को यह सुझाव भेजा कि मु. अली जिन्ना को प्रधानमंत्री बना दिया जाये और उन्हें कैबिनेट चुनने का अधिकार दे दिया जाये लेकिन जवाहर लाल नेहरू एवं पटेल ने इसका विरोध किया।

iksha Manthan

- माउण्टबेटेन अथवा 3 जून की योजना के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
  1. पंजाब, बंगाल व आसाम के बँटवारे हेतु एक सीमा आयोग का गठन होगा।
  2. देशी रियासतों को यह निर्णय लेना होगा कि वे भारत में रहना चाहते हैं या पाकिस्तान में।
  3. सिन्ध एवं बलूचिस्तान के सन्दर्भ में प्रान्तीय विधानमंडल सीधे निर्णय लेंगे।
  4. बंगाल एवं पंजाब की विधानसभाओं को दो भागों में विभाजित किया जायेगा। एक मुस्लिम बाहुल्य जिले दूसरे में बाकी जिले के प्रतिनिधि होंगे।
- माउण्टबेटेन योजना के आधार पर 22 जून, 1947 को एक विधेयक तैयार किया गया।
- 4 जुलाई, 1947 को विधेयक को ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया।
- 15 जुलाई, 1947 को हाउस ऑफ कामंस में तथा 16 जुलाई, 1947 को हाउस लार्ड्स में विधेयक पारित हो गया।
- 18 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश सम्राट जार्ज VI ने विधेयक पर हस्ताक्षर कर दिया, इस तरह भारत स्वतंत्रता अधिनियम पारित हो गया।

भारत स्वतंत्रता अधिनियम (1947 ई.)

- भारत एवं पाकिस्तान नाम से दो डोमेनियन की स्थापना होगी।
- देशी नरेश भारत अथवा पाकिस्तान में अपनी इच्छानुसार मिल सकते हैं। यदि न मिलना चाहें तो ब्रिटेन के साथ पूर्ववत सम्बन्ध बने रहेंगे।
- प्रत्येक डोमेनियन की विधानसभा को अपने क्षेत्र के लिए कानून बनाने का अधिकार होगा।
- 15 अगस्त, 1947 के बाद ब्रिटिश संसद द्वारा पारित कोई भी कानून किसी भी डोमेनियन में लागू नहीं होगा।
- भारत के राज्य क्षेत्र में उन क्षेत्रों को छोड़कर जो पाकिस्तान में सम्मिलित होंगे ब्रिटिश भारत के सभी प्रांत सम्मिलित होंगे।
- पाकिस्तान के राज्य क्षेत्र में पश्चिमी पंजाब, पूर्वी बंगाल, सिन्ध बलूचिस्तान और उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत शामिल होंगे।
- दोनों डोमेनियन का संचालन 1935 के अधिनियम के अनुसार तब तक होगा जब तक कि संविधान सभा इसकी वैकल्पिक व्यवस्था नहीं कर देता।
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम के अनुसार 14 अगस्त, 1947 को भारत का विभाजन कर पाकिस्तान का निर्माण किया गया।
- पाकिस्तान के प्रथम गवर्नर जनरल मु. अली जिन्ना एवं प्रधानमंत्री लियाकत अली बने।
- 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लार्ड माउण्टबेटेन तथा प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू बने।
- स्वतंत्र भारत के प्रथम और अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल सी. राजगोपालाचारी थे।

◆◆◆

Pariksha Manthan

करेंट अफेयर्स की राष्ट्रीय पत्रिका

परीक्षा मंथन®

empowering aspirants since 1984

e-book series

Buy ONLINE
manthanprakashan.in
www.instamojo.com/manthanprakashan
Follow us on Facebook
www.facebook.com/parikshamanthan
www.facebook.com/groups/parikshamanthan

मध्यकालीन भारत का इतिहास

- IAS, UPPCS, UKPCS,
- PCSJ, CGPCS, RAS,
- JKPCS, BPSC,
- MPPCS, CDS, SSC,
- RAILWAY etc.

परीक्षा मंथन â

ई-बुक श्रृंखला-2

सामान्य अध्ययन

मध्यकालीन भारत का इतिहास

संस्करण-2019-20

(संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग, लोअर सबॉर्डिनेट, यूडीए-एलडीए, पीसीएस (जे), कर्मचारी चयन आयोग, रेलवे भर्ती बोर्ड, एनडीए, सीडीएस, सीपीएफ, एलआईसी, जीआईसी, बी-एड, यूजीसी-नेट तथा अन्य सभी परीक्षाओं हेतु एक सम्पूर्ण संदर्भ ग्रन्थ)

मूल्य : ₹ 60/-

(साठ रुपए मात्र)

मंथन प्रकाशन

7R/5 कैलाशपुरी कॉलोनी, ताशकंद मार्ग, (स्प्रिंग डेल नर्सरी स्कूल के सामने),

सिविल लाइन्स, इलाहाबाद - 211001

मोबाइल नं. : 09335151971

Website: www.manthanprakashan.in ; www.instamojo.com/manthanprakashan

Facebook: www.facebook.com/parikshamanthan

वैधानिक सूचना

संपादक की लिखित अनुमति के बिना 'परीक्षा मंथन : E-book श्रृंखला-मध्यकालीन भारत का इतिहास' से किसी सामग्री का न तो अनुकरण किया जा सकता है और न ही इसे किसी रूप में पुनः किसी माध्यम द्वारा प्रकाशित या प्रसारित किया जा सकता है। 'परीक्षा मंथन : E-book श्रृंखला-मध्यकालीन भारत का इतिहास' में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है। समस्त वाद-प्रतिवाद इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायिक क्षेत्राधिकार के अधीन ही मान्य होंगे।

Pariksha Manthan

परीक्षा मंथन

ई-बुक श्रृंखला-2

सामान्य अध्ययन

मध्यकालीन भारत का इतिहास

अनुक्रमणिका

- इस्लाम का उदय.....3
- अरबों की सिन्ध विजय.....4
- तुर्कों का उदय एवं भारत पर आक्रमण.....4
- दिल्ली सल्तनत 1206 से 1526 7
- दिल्ली सल्तनत : विविध.....23
- क्षेत्रीय राज्य.....23
- धार्मिक आंदोलन.....27
- मुगल वंश (1526 ई. - 1857 ई.).....33
- उत्तर मुगलकाल (1707 ई. - 1857 ई.).....46
- मराठा.....56
- पेशवा काल.....59

Pariksha Manthan

मध्यकालीन भारत का इतिहास

इस्लाम का उदय

- इस्लाम अरबी भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। ये हैं सल्म (शांति) एवं सिल्म (समर्पण)।
- इस्लाम धर्म का उदय अरब देश में हुआ।
- इस्लाम धर्म के उदय के पहले अरब में बहुदेववाद एवं मूर्तिपूजा का प्रचलन था।
- इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैगम्बर मुहम्मद साहब थे।
- मूर्तिपूजा का विरोधी है।
- इस्लाम के अनुयायियों को मुसलमान कहा जाता है। इनका पवित्र ग्रंथ कुरान शरीफ है।

मुसलमानों के 5 कर्तव्य

1. **कलमा :** अल्लाह पर पूर्ण विश्वास प्रकट करना।
2. **नमाज :** प्रत्येक मुसलमान को दिन में 5 बार नमाज पढ़ना चाहिए।
3. **रोजा :** रमजान के महीने में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक अन्न-जल ग्रहण किये बिना अल्लाह की इबादत करना।
4. **जकात :** अपनी आय का 2.5% (ढाई) गरीबों में दान करना।
5. **हज :** प्रत्येक मुसलमान को जीवन में कम से कम एक बार मक्का की यात्रा करनी चाहिए।

- पैगम्बर मुहम्मद साहब प्रथम मुस्लिम राज्य की स्थापना की और मदीना को केन्द्र बनाकर मुसलमानों पर शासन किया।
- पैगम्बर साहब ने धर्मराज्य अर्थात् खिलाफत की स्थापना की।
- पैगम्बर साहब के बाद खिलाफत (धर्मराज्य) के प्रभुख को खलीफा कहा गया।

पवित्र खलीफा

- पैगम्बर साहब के बाद चार पवित्र खलीफा हुए। ये चारों पैगम्बर साहब के साथी रह चुके थे तथा सर्वसम्मति से इन्हें खलीफा चुना गया अतः ये पवित्र खलीफा कहलाये।
- पवित्र खलीफाओं की राजधानी मदीना थी।

1. अबूबक्र - 632-634 ई.

- ये प्रथम खलीफा थे इन्होंने अल्लाह को केन्द्र में रखकर मुसलमानों पर शासन किया एवं इस्लाम धर्म का प्रचार प्रसार किया।

2. हजरत उमर-634-644 ई.

- इनके समय में विजय अभियान बहुत सफल रहे। इन्होंने ईरान, ईराक, मिस्र, सीरिया आदि क्षेत्रों को जीतकर खिलाफत में सम्मिलित किया।
- इन्हीं के समय में 636 ई. में अरबों का भारत पर पहला आक्रमण हुआ जो असफल रहा।

3. हजरत उस्मान- 644-656 ई.

- इनके समय में 651 ई. में पवित्र धर्मग्रंथ कुरान शरीफ का संकलन हुआ। यह ग्रंथ अरबी भाषा में संकलित है।

4. हजरत अली-656-661ई.

- इनके समय में भी विजय अभियान चलते रहे।

5. उमैय्या वंश 661-749 ई.

- 661 ई. में अली की मृत्यु के बाद मुबैय्या नामक व्यक्ति ने अली के पुत्र हसन को हटाकर स्वयं खलीफा बन गया।
- उमैय्या वंश की राजधानी दमिश्क थी।

Pariksha Manthan

अब्बासी वंश - 749-1258 ई.

- 749 ई. में अब्बास सफ्फाह ने ईरानियों के सहयोग से उमैय्या वंश का अंत करके अब्बासी वंश की स्थापना की।
- अब्बासी वंश की राजधानी बगदाद थी।
- इस वंश का अंतिम खलीफा मुस्तकीम थे।

अरबों की सिन्ध विजय

- 711 ई. में खलीफा वालिद के उत्तरी क्षेत्र (ईरान) के गवर्नर अल-हज्जाज ने खलीफा से सिंध अभियान की अनुमति प्राप्त कर ली।
- सर्वप्रथम 711 ई. में उबैदुल्ला के नेतृत्व में एक अभियान सिंध भेजा गया, किन्तु यह पराजित हुआ और मारा गया।
- दूसरा अभियान बुदैल के नेतृत्व में हुआ लेकिन यह भी असफल रहा।
- तीसरा अभियान 712 ई. मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में हुआ।
- मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध के शासक दाहिर को पराजित किया। दाहिर युद्ध करते हुए मारा गया।

अरबों की सिंध विजय के कारण

अरबों के सिंध विजय के अनेकों कारण थे—

1. **राजनीतिक कारण-** मुस्लिम राज्य का विस्तार।
2. **आर्थिक कारण-**भारत समृद्ध देश था अतः यहां अधिकार करके धन प्राप्त करना।
3. **इस्लाम धर्म का प्रचार-**प्रसार करना
4. **तात्कालिक कारण-**कुछ अरबी जहाजों का समुद्री डाकुओं द्वारा लूटा जाना।

अरबों की विजय का प्रभाव

1. **राजनीतिक प्रभाव-** अरबों की प्रशासनिक नीतियां मध्य युग के तुर्क, अफगान, मुगल साम्राज्य के लिए भी मार्ग दर्शन का कार्य करती रहीं।
2. **आर्थिक प्रभाव-** भारत में खजूर की बागवानी एवं ऊंट पालन का अधिक विकास।
   — चर्म शिल्प को प्रोत्साहन
   — मुद्रा प्रणाली का विकास
   — नगरीकरण अनेक नये नगरों का विकास हुआ।
3. **सामाजिक प्रभाव-** सामाजिक समानता का विकास हुआ। ऊंच-नीच, वर्ग-भेद में कमी। पर्दा प्रथा प्रारम्भ।
4. **सांस्कृतिक प्रभाव-** सिंधी भाषा का विकास हुआ। भारत में कुरान का सर्वप्रथम अनुवाद सिंधी भाषा में हुआ।
   — सैकड़ों अरबी विद्वान चिकित्सा, दर्शन, गणित आदि की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत आये।
   — अनेक भारतीय ग्रंथों का अरबी में अनुवाद हुआ, आयुर्वेद, सूर्यसिद्धातिंका, सुश्रुत संहिता, पंचतंत्र आदि का अरबी में अनुवाद हुआ।

तुर्कों का उदय एवं भारत पर आक्रमण

- तुर्क मध्यएशिया की खानाबदोश जनजाति थी।
- अब्बासी खलीफाओं के समय ये लोग महल रक्षक और पेशेवर सैनिक के रूप में नियुक्त होने लगे।
- इसी समय ईरान, ईराक क्षेत्र में समानिद राज्य का उदय हुआ।
- आगे चलकर समानिद राज्य कमजोर हुआ। उसका लाभ उठाकर गजनी को केन्द्र बनाकर अलप्तगीन ने तुर्कों के प्रथम स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

Pariksha Manthan

अलप्तगीन (962 - 977) ई.

- इसकी राजधानी गजनी थी।
- अलप्तगीन ने 1700 चुने हुए तुर्क अधिकारियों को नियुक्त किया। इनमें से एक सुबुक्तगीन था।
- अलप्तगीन के बाद सुबुक्तगीन शासक बना।

सुबुक्तगीन (977-997 ई.)

- दूसरा तुर्क शासक सुबुक्तगीन था।
- कुछ दिनों बाद सुबुक्तगीन ने जयपाल के राज्य में आक्रमण करके लूटपाट किया।
- सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद इसके दो पुत्रों—

  1. अब्दुल काशिम महमूद
  2. इस्माइल

  दोनों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध हुआ जिसमें अब्दुल काशिम महमूद विजयी हुआ और अब्दुल काशिम महमूद गजनवी के नाम से शासक बना।

महमूद गजनवी (998-1030 ई.)

- महमूद गजनवी गद्दी पर बैठने के एक वर्ष के अन्दर ही बगदाद के अब्बासी खलीफा अलकादिर बिल्लाह से गजनी के शासक के रूप में मान्यता प्राप्त कर ली।
- अल कादिर बिल्लाह ने महमूद गजनवी को अमीन-अल-मिल्लत (मुसलमानों का रक्षक) और यामिनउद्दौला (साम्राज्य का दाहिना हाथ) की उपाधि प्रदान की।
- महमूद गजनवी सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला पहला मुस्लिम शासक था।

भारतीय अभियान

- महमूद गजनवी एक हजार ई. से 1027 ई. तक भारत में कुल 17 बार आक्रमण किया।
- इसका पहला अभियान 1000 ई. में हुआ जब इसने सीमा के कुछ क्षेत्रों को विजित किया।
- दूसरा अभियान 1001 में हुआ जब इसने हिन्दू शाही वंश के राजा जयपाल के विरुद्ध आक्रमण किया।
- जयपाल इस पराजय के अपमान को सहन नहीं कर सका और स्वयं निर्मित चिता में जलकर आत्महत्या कर ली।
- 1006 ई. में गजनवी ने मुल्तान पर आक्रमण किया और यहां पर करमाथी वंश के शासक अब्दुल फतेह दाउद ने बिना युद्ध किये ही आत्म समर्पण कर दिया। इस तरह मुल्तान पर महमूद गजनवी का अधिकार हुआ।
- 1008 ई. में पुनः इसने हिन्दू शाही राज्य पर आक्रमण किया और यहां के शासक आन्दपाल को वैहन्द के पास पराजित किया।
- इस विजय के बाद महमूद गजनवी ने सिन्ध पर अधिकार किया।
- 1018 ई. में इसने गंगा घाटी में प्रवेश किया और यहां पर गुर्जर प्रतिहार राजा राज्यपाल द्वारा शासित कन्नौज राज्य पर आक्रमण किया।
- महमूद गजनवी का सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण था 1024-25 में सोमनाथ पर आक्रमण। इस समय गुजरात का शासक भीम प्रथम था। 3 दिनों के भीषण युद्ध के बाद इसने सोमनाथ के मंदिर पर अधिकार कर लिया और मंदिर को तोड़कर विपुल सम्पत्ति प्राप्त की।
- 1025 ई. में सोमनाथ से वापस जाते समय सिन्धु नदी की निचली घाटी में जाटों ने इसका मार्ग अवरुद्ध किया। इस समय यह रक्षात्मक कार्यवाही करके गजनी चला गया।
- 1027 ई. में महमूद गजनवी का अन्तिम आक्रमण हुआ। यह आक्रमण जाटों के विरुद्ध एक तरह से दण्डात्मक अभियान था। इसमें इसने जाटों को कठोरता से दमन किया और वापस चला गया।

Pariksha Manthan

महमूद गजनवी के प्रमुख भारतीय अभियान		
✸ महमूद गजनवी भारत में कुल 17 बार आक्रमण किये जिनमें महत्वपूर्ण हैं—		
वर्ष	**राज्य/स्थान**	**राजा**
1. 1001-2 ई. में	हिन्दुशाही/राज्य	जयपाल
2. 1005-6ई. में	मुल्तान	अब्दुल फतेह दाउद
3. 1008-9	हिन्दुशाही राज्य	आनंदपाल
4. 1012-13	थानेश्वर	राजाराम
5. 1018-19	कन्नौज	राज्यपाल
6. 1020-21	कालिंजर	विद्याधर
7. 1024-25	सोमनाथ	भीम प्रथम

महमूद गजनवी के आक्रमण का प्रभाव

1. भारतीय राजाओं को पराजित कर भारतीय राजनीति की कमजोरी को उजागर कर दिया।
2. पंजाब सिंध एवं मुल्तान में गजनवी गवर्नरों की नियुक्ति कर मुस्लिम शासन की स्थापना।
3. भारत में विदेशी आक्रमण का द्वार खोल दिया।
4. भारतीय कला को नष्ट किया।
5. भारत का धन गजनी ले गया।

मुहम्मद गोरी

- 12वीं शताब्दी के मध्य में गोर वंश का उदय हुआ। इनके साम्राज्य का आधार उत्तर पश्चिम अफगानिस्तान था।
- प्रारम्भ में गोरी लोग गजनी के अधीन थे बाद में यह स्वतंत्र हो गये।
- 1163 ई. में गयासुद्दीन बिन साम गौर वंश का शासक बना इसने गजनी पर आक्रमण करके इसे विजित कर लिया और अपने छोटे भाई मुहम्मद गोरी को गजनी दे दिया।
- मुहम्मद गोरी का पहला आक्रमण 1175 ई. मुल्तान पर हुआ यहां इसने करमाथियों को पराजित कर अपना अधिकार स्थापित किया। यह इसकी पहली विजय थी।
- 1178 ई. में मुहम्मद गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया इस समय यहां का शासक भीम द्वितीय था।
- कशहद के मैदान में गोरी की करारी हार हुयी। यह भारत में इसकी पहली पराजय थी इस पराजय के बाद मुहम्मद गोरी ने मुल्तान एवं सिन्ध के मार्ग को बदलकर पंजाब के मार्ग को चुना।
- 1181 ई. में इसने पंजाब पर आक्रमण किया। यहां पर गजनी वंश का खुशरो मलिक शासक था। इसने युद्ध के स्थान पर मुहम्मद गोरी को अत्यधिक उपहार देकर सन्धि कर ली।
- 1191 ई. में तराईन का प्रथम युद्ध मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी पराजित हुआ और गजनी चला गया।
- 1192 ई. में तराईन का द्वितीय युद्ध हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान पराजित हुआ और बन्दी बना लिया गया। इसने गोरी की अधीनता स्वीकार कर ली परन्तु बाद में विद्रोह कर दिया और मारा गया।

मुहम्मद गोरी के भारतीय अभियान		
वर्ष	**राज्य स्थान**	**राजा/वंश**
1 1175 ई.	मुल्तान	करमाथी वंश
2. 1178 ई.	गुजरात	भीम द्वितीय
3. 1181 ई.	पंजाब	खुशरोमलिक
4. 1186 ई.	पंजाब	खुशरोमलिक
5. 1191 ई.	तराईन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज चौहान
6. 1192 ई.	तराईन का द्वितीय युद्ध	पृथ्वीराज चौहान
7. 1194 ई.	कन्नौज (चंदावर का युद्ध)	जय चन्द्र
8. 1195 ई.	बयाना	कुमारपाल
9. 1205 ई.	खोक्खरों से युद्ध	—

Pariksha Manthan

- 1194 में गोरी ने कन्नौज पर आक्रमण किया इस समय यहां का शासक जयचन्द था। चन्दावर के युद्ध में मुहम्मद गोरी से जयचन्द पराजित हुआ और मारा गया। इस युद्ध के बाद कन्नौज और वाराणसी पर गोरी का अधिकार हो गया।

मुहम्मद गोरी के सेनापतियों द्वारा विजित क्षेत्र

1. कुतुबुद्दीन ऐबक -1196-अजमेर विजय
   1197 बदायूं विजय
   1202-3-बुंदेलखंड विजय
2. बख्तियार खिलजी-1197 - बिहार विजय
   1205 - बंगाल विजय

महत्वपूर्ण तथ्य

- महमूद गजनवी यामिनी वंश से सम्बन्धित तुर्क था।
- महमूद गजनवी कश्मीर अभियान किया था लेकिन यह अभियान असफल रहा।
- अलबरूनी (बाहरी) का वास्तविक नाम अबू रैहान था। यह ख्वारिज्म का रहने वाला था लेकिन गजनी में बस गया था।
- अलबरुनी भारत में आकर संस्कृत भाषा का अध्ययन किया।
- मुहम्मद गोरी शंसबानी वंश का तुर्क था। इसका वास्तविक नाम शिहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी था।
- मुहम्मद गोरी का साधारण सेनापति बख्तियार खिलजी ने विक्रमशिला बौद्ध विहार नालंदा बौद्ध विहार एवं सोमपुर बौद्ध विहार को तहस-नहस करके सैकड़ों भिक्षुओं को मौत के घाट उतार दिया।
- मुहम्मद गोरी ने सर्वप्रथम कुतुबुद्दीन ऐबक को हांसी की इक्ता प्रदान किया था। 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद मुहम्मद गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को विजित भारतीय प्रदेशों का प्रतिनिधि शासक नियुक्त किया।

दिल्ली सल्तनत 1206 से 1526

- दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत 1206 से 1526 तक इतिहास का अध्ययन किया जाता है। इन 320 वर्षों के इतिहास में पांच वंशो ने शासन किया।

सल्तनत के राजवंश

1. गुलाम वंश	-	(1206-1290)
2. खिलजी वंश	-	(1290-1320)
3. तुगलक वंश	-	(1320-1414)
4. सैय्यद वंश	-	(1414-1451)
5. लोदी वंश	-	(1451-1526)

गुलाम वंश

- इस वंश का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक गोरी का दास था इसलिए इस वंश को दास या गुलाम वंश के नाम से जाना जाता है।
- कुछ विद्वान इसे मामलूक वंश का नाम देते हैं। जिसका तात्पर्य है स्वतन्त्र माता पिता की गुलाम सन्तान। इसे आरम्भिक तुर्क वंश के नाम से भी जाना जाता है।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210)

- यह दिल्ली सल्तनत का संस्थापक एवं मुहम्मद गोरी का दास था। मुहम्मद गोरी ने अपने दासों को पुत्र की तरह माना।
- गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक 1206 में स्वतंत्र शासक बना और लाहौर को अपनी राजधानी बनायी।
- जब यह स्वतंत्र शासक बना तब दासता से मुक्त नहीं था इसलिए इसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि मलिक और सिपहसालार की उपाधियों के साथ शासन किया।

Pariksha Manthan

- 1208 में ऐबक गजनी गया यहीं पर मुहम्मद गोरी के भतीजे गयासुद्दीन महमूद ने इसे दासता का मुक्ति पत्र भेजा और उसे सुल्तान की उपाधि प्रदान की।
- मिन्हाज-उस-सिराज ने इसे हातिमताई कहा है।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान का खेल खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मृत्यु हो गई।
- इसकी मृत्यु के बाद इसके तथाकथित पुत्र आरामशाह को लाहौर में गद्दी पर बैठाया गया जो इल्तुतमिश से पराजित होने से पहले 8 महीने तक शासन किया।

ऐबक की उपाधियां

- लख्ता या लाखबख्श
- हातिमताई
- कुरान ख्वां

ऐबक के दरबारी विद्वान

1. हसन निजामी
2. फख्र-ए-मुदाब्बिर

इल्तुतमिश (1211-1236) ई.

- इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का दास था। ऐबक अपनी दासता से मुक्ति से पहले ही 1206 में इल्तुतमिश को दासता से मुक्त कर दिया था।
- इल्तुतमिश सुल्तान बनने से पहले बदायूं का इक्तेदार था।
- इल्तुतमिश ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाई।

1. चंगेज खां की समस्या

1220-21 ई. में मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खां ख्वारिज्म के राजकुमार जलालुद्दीन मांगबर्नी का पीछा करते हुए भारत की सीमा तक आ पहुंचा। इल्तुतमिश ने मांगबर्नी को शरण न दे कर चंगेज खां के आक्रमण से अपनी रक्षा की।

2. नासिरुद्दीन कुबाचा की समस्या

कुबाचा सिन्ध एवं मुल्तान का प्रभारी था। इसने लाहौर पर अधिकार कर लिया था। 1217 में मंसूरा के युद्ध में इल्तुतमिश ने कुबाचा को पराजित करके लाहौर छीन लिया। 1227 में इल्तुतमिश सिन्ध मुल्तान पर आक्रमण करके कुबाचा को पराजित किया। कुबाचा अपने जीवन की रक्षा के लिए सिन्धु नदी में कूद गया और डूबकर मर गया।

3. बंगाल विजय

- इस समय बंगाल का शासक गयासुद्दीन स्वतंत्र रूप से शासन कर रहा था। 1226 में इल्तुतमिश के पुत्र नासिरूद्दीन महमूद ने बंगाल पर आक्रमण किया। युद्ध में गयासुद्दीन पराजित हुआ और मारा गया। इस तरह बंगाल पर इल्तुतमिश का अधिकार हुआ। इल्तुतमिश ने नासिरूद्दीन को यहां का सूबेदार नियुक्त किया। 1229 ई. में नासिरूद्दीन की मृत्यु हो गयी।
- इल्तुतमिश ने तुर्की अमीरों के एक विशिष्ट वर्ग का गठन किया जिसमें उसके 40 विशिष्ट अमीर सम्मिलित थे इन्हें तुर्क-ए-चिहलमानी या दल चालीसा के नाम से जाना जाता था।
- 1229 में इल्तुतमिश बगदाद के अब्बासी खलीफा अलमुस्तान सिंर बिल्लाह से मंसूर प्राप्त किया। खलीफा ने इसे सुल्तान-ए-आजम (महान शासक) की उपाधि दी।
- इल्तुतमिश ने शुद्ध अरबी प्रकार के सिक्के प्रचलित किये जिसमें चांदी के टंका तथा तांबे की जीतल नामक मुद्रा थी।
- इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

Pariksha Manthan

इल्तुतमिश की प्रमुख विजयें

- **1215 ई.** : तराईन के तृतीय युद्ध में ताजुद्दीन एल्दौज को पराजित किया।
- **1217 ई.** : मंसुरा के युद्ध में नासिरुद्दीन कुबाचा को पराजित किया।
- **1226 ई.** : बंगाल विजय की यहां के शासक गयासुद्दीन को पराजित किया।
- **1227 ई.** : सिंध एवं मुल्तान विजय नासिरूद्दीन कुबाचा को पराजित किया।
- **1226 से 1231 तक** : राजपूतों पर विजय।
- **1235** : पंजाब के खोक्खरों पर विजय।

तुर्क-ए-चिहलगानी/दल चालीसा

- इसकी स्थापना इल्तुतमिश ने किया था। इसमें इसके विश्वासपात्र अमीर होते थे। जिन्हें बड़े-बड़े पद दिये जाते थे। यह एक प्रशासनिक वर्ग था।

इल्तुतमिश द्वारा प्रचलित सिक्के

1. **टंका** - यह चांदी का सिक्का था।
2. **जीतल** - यह तांबे का सिक्का था। इनमें 1 : 48 का अनुपात था।

इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी (1236-1266)

- इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद दल चालीसा और इल्तुतमिश के उत्तराधिकारियों के बीच भीषण राजनीतिक संघर्ष शुरू हुआ। इस समय दल चालीसा सुल्तान निर्माता की भूमिका अदा कर रहे थे।
- 1236 से 1266 तक के काल को चालीसा का काल कहा जाता है।

रुकनुद्दीन फिरोज शाह (1236-36 तक)

- इल्तुतमिश अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था लेकिन तुर्की अमीरों ने इसकी इच्छा का सम्मान नहीं किया और इसके पुत्र रुकनुद्दीन फिरोज शाह को सुल्तान बनाया। सुल्तान की माता शाहतुर्कान थी।
- शाह तुर्कान विद्वानों एवं शेखों को दान दिया करती थीं।

रजिया (1236-40)

- शाहतुर्कान के आंतक से परेशान होकर रजिया एक दिन लाल वस्त्र धारण (न्याय की याचना का प्रतीक था) कर जुमा के दिन नमाज के समय जनता के बीच में पहुंची और न्याय की मांग की।
- दिल्ली की जनता ने राजमहल पर धावा बोलकर शाहतुर्कान और रुकनुद्दीन को बन्दी बना लिया और रजिया सुल्तान बनी।
- रजिया दिल्ली की पहली और अन्तिम महिला सुल्तान थी। इसे अपने शासन के प्रारम्भ से ही तुर्की अमीरों के विरोध का सामना करना पड़ा।

रजिया : एक दृष्टि में

- रजिया दिल्ली की प्रथम एवं अंतिम महिला सुल्तान थी।
- रजिया ने जमालुद्दीन याकूत को प्रोन्नत करके अमीर-ए-आखूर (अश्वशाला का प्रधान) नियुक्त किया।
- तुर्की अमीरों ने रजिया का जमालुद्दीन याकूत से प्रेम सम्बन्ध का अफवाह फैलाया।
- रजिया के विरुद्ध षड्यंत्रकारियों का नेता इख्तियारुद्दीन ऐतगिन था।
- रजिया तबरहिन्द के सूबेदार अल्तूनिया से पराजित हुई और अंततः दोनों ने विवाह कर लिया।
- 1240 में कैथल के निकट रजिया एवं अल्तूनिया की हत्या कर दी गई।

बहरामशाह (1240-42)

- इस समय राज्य की सारी शक्ति ऐतगिन के हाथ में थी। 1241 ई. में मंगोल नेता तायर के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण हुआ। मंगोल पराजित हुए और भाग गए।

Pariksha Manthan

- 1242 ई. में बहरामशाह की हत्या कर दी गयी।

अलाउद्दीन मसूदशाह (1242 - 46)

- यह रुकनुद्दीन फिरोज शाह का पुत्र था। 1246 में इसे कारागार में डाल दिया गया और वहीं इसकी मृत्यु हो गई।

नासिरुद्दीन महमूद शाह (1246 - 66)

- यह इल्तुतमिश के पुत्र नासिरुद्दीन महमूद का पुत्र था।
- यह सन्त प्रवृत्ति का सुल्तान था। यह एक अच्छा लेखक था। समय व्यतीत करने के लिए यह कुरान की प्रतियां लिखा करता था। इससे सर्वत्र यह प्रचलित हो गया कि सुल्तान कुरान की प्रतियां बेच कर अपना जीवन यापन करता है।
- 1246 में इसने बलबन को अपना वजीर बनाया।

इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी 1236-66 ई.	
1. रुकनुद्दीन फिरोजशाह (1236-36)	इल्तुतमिश का पुत्र
2. रजिया (1236-40)	इल्तुतमिश की पुत्री
3. बहरामशाह (1240-42)	इल्तुतमिश का पुत्र
4. अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-46)	रुकनुद्दीनफिरोजशाह का पुत्र
5. नासिरुद्दीन महमूदशाह (1246-66)	इल्तुतमिश का पौत्र या नासिरुद्दीन महमूद का पुत्र।

बलबन (1266-86)

- बल्बन इल्तुतमिश का दास था। इल्तुतमिश के उत्तराधिकारियों के समय में यह सत्ता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचा।
- बलबन दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने अपने राजत्व सिद्धान्त की विवेचना की। इसका सिद्धान्त फारस से ग्रहण किया गया था।
- उसने सुल्तान को पृथ्वी पर नियावत-ए-खुदाई (ईश्वर का प्रतिनिधि) और जिल्ले अल्लाह (ईश्वर की छाया) बताया।
- इसने कुलीनता पर अत्यधिक बल दिया। अपनी वंशावली बनवायी और अपने को फारस के पौराणिक नायक अफरासियाब का वंशज बताया।
- बलबन ने अपने दरबार का गठन ईरानी परम्परा के अनुसार किया। इसने दरबार में सिज्दा और पायबोस की परम्पराऐं प्रारम्भ की।
- इसने ईरानी त्योहार नौरोज को मनाना शुरू किया।
- बलबन ने तुर्क-ए-चिहलगानी अर्थात् दल चालीसा पर घातक प्रहार करके इसका अन्त कर दिया।
- फारसी के प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो ने अपना साहित्यिक जीवन इसी के शासन काल से प्रारम्भ किया था जो 7 सुल्तानों के दरबार में रहे।

गुलाम वंश से सम्बन्धित मुख्य तथ्य

- मुहम्मद गोरी के भतीजे गयासुद्दीन महमूद ने कुतुबुद्दीन ऐबक को 1208 में दासता से मुक्ति प्रदान की।
- प्रसिद्ध सूफी संत बहाउद्दीन जकारिया ने मुल्तान एवं सिन्ध विजय में कुबाचा के विरुद्ध इल्तुतमिश की मदद की थी।
- इल्तुतमिश ने ग्वालियर विजय के उपलक्ष्य में रजिया के नाम का टंका जारी किया था।
- इल्तुतमिश भारत का प्रथम सुल्तान था।
- बलवन ने अपने एक सैनिक अधिकारी अली को तुगरिल कुश की उपाधि प्रदान की थी।
- 'गुलाम का गुलाम' इल्तुतमिश को कहा गया था।
- मंगोल नेता चंगेज खान का मूल नाम 'तेमुचिन' था।
- गढ़मुक्तेश्वर की मस्जिद की दीवारों पर अपने शिलालेख में बलबन ने स्वयं को 'खलीफा का सहायक' कहा है।

खिलजी वंश (1290-1320)

- दिल्ली सल्तनत में खिलजियों का शासन काल सबसे कम समय तक था।
- खिलजी तुर्कों की 64 नस्लों में से एक थे लेकिन यह निम्न वर्ग के तुर्क थे।

Pariksha Manthan

जलालुद्दीन खिलजी 1290-96 ई.

- यह खिलजी वंश का संस्थापक एवं प्रथम सुल्तान था।
- इसने अपना राज्याभिषेक कैलूगढ़ी (किलोखरी) में कराया और एक वर्ष तक दिल्ली नहीं आया।

जलालुद्दीन खिलजी के समय की प्रमुख घटनायें

1. मलिक छज्जू का विद्रोह-1290 ई. में कड़ा का सूबेदार (मलिक छज्जू) ने विद्रोह कर दिया सुल्तान ने इसके विद्रोह का दमन कर दिया।
2. रणथम्भौर अभियान-1291 में सुल्तान रणथम्भौर अभियान किया लेकिन किले की सुदृढ़ता को देखकर अपना अभियान वापस ले लिया यहां का शासक हम्मीर देव था।
3. मंगोलों का आक्रमण-1292 में अब्दुल्ला खाँ के नेतृत्व में मंगोलों का आक्रमण हुआ जिसमें मंगोल पराजित हुए।
4. सिद्धीमौला को मृत्युदंड-सिद्धिमौला एक सूफी संत थे, सुल्तान की हत्या के षड्यन्त्र रचने की संभावना के कारण मृत्यु दंड दिया गया।
5. देवगिरि अभियान-1296 अलाउद्दीन खिलजी के नेतृत्व में देवगिरि अभियान हुआ। इसने देवगिरि के शासक रामचन्द्रदेव को पराजित कर अपार धन प्राप्त किया।
6. सुल्तान की हत्या-1296 में कड़ा में अलाउद्दीन खिलजी ने सुल्तान की हत्या करा दिया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)

- अलाउद्दीन खिलजी का बचपन का नाम अली गुरशास्प था।
- अपनी प्रारम्भिक सफलताओं से प्रसन्न होकर यह अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो गया।
- इसने अपने सिक्कों में सिकन्दर-ए-सानी अर्थात् द्वितीय सिकन्दर की उपाधि धारण की।
- दिल्ली के कोतवाल अला-उल-मुल्क के समझाने पर इसने इन योजनाओं का त्याग कर दिया।

अलाउद्दीन खिलजी के काल में मंगोल आक्रमण

क्र.	वर्ष	मंगोल नेता	सल्तनत सेना का नेतृत्व
1.	1297 ई.	कादर खां	उलुग खां के नेतृत्व में सेना ने पराजित किया।
2.	1299 ई.	सल्दी	जफरखां के नेतृत्व में सेना ने पराजित किया।
3.	1299 ई.	कुतलुग ख्वाजा	जफर खां ने पराजित किया।
4.	1303 ई.	तरगी वेग	सल्तनत सेना ने पराजित किया।
5.	1305 ई.	अलीवेग, तरतक एवं तरगी वेग	मलिक नायक के नेतृत्व में सेना ने पराजित किया।
6.	1306ई.	कुबक	मलिक काफूर ने पराजित किया।

- अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने धर्म को राजनीति से अलग रखा।

विद्रोह

- 1301 ई. में उसके विरुद्ध तीन विद्रोह हुए—
  1. अकत खां का विद्रोह
  2. उमर खां एवं मंगू का विद्रोह
  3. हाजी मौला का विद्रोह
- इन विद्रोहों के निवारण के लिए इसने चार अध्यादेश जारी किये—

4 अध्यादेश

1. एक सशक्त (मजबूत) गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना की तथा बरीद तथा मुन्हिया या जासूस नियुक्त किये गये।
2. अमीरों के पारस्परिक मेल जोल और विवाह सम्बन्धों पर रोक।
3. शराब और भांग जैसे मादक पदार्थों के प्रयोग पर रोक।

4. अनुदान में दी गयी भूमियां इसने वापस ली और राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिया कि जिनके पास अत्यधिक सम्पत्ति है। उनसे कर के रूप में ले ली जाये।

गुजरात विजय - 1299

- इस समय यहां का शासक कर्ण बघेला था।
- 1299 में गुजरात अभियान हुआ और कर्णबघेला बिना युद्ध किये ही भाग गया और देवगिरी में रामचन्द्र देव के यहां शरण ली। इस तरह गुजरात को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया।

रणथम्भौर विजय - 1300-1301 ई.

- इस समय यहां का शासक हम्मीर देव था।
- 1300 ई. में रणथम्भौर अभियान हुआ और हम्मीर देव के मंत्री रणमल के विश्वासघात के कारण 1301 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने किले को जीत लिया।

मेवाड़ विजय 1303 ई.

- इस समय यहां का शासक राणा रतन सेन था।
- 1303 में अलाउद्दीन ने स्वयं मेवाड़ अभियान किया। इस अभियान में अमीर खुसरो भी इसके साथ थे।
- इस अभियान का एक और मुख्य उद्देश्य राणारतन सेन की पत्नी पद्मिनी को प्राप्त करना था।

मालवा विजय- 1305 ई.

- इस समय यहां का शासक महलक देव था।
- 1305 में मालवा अभियान हुआ जिसमें महलक देव पराजित हुआ और मालवा को सल्तनत में मिला लिया गया।

जालौर विजय- 1311 ई.

- इस समय यहां का शासक कन्नड़ देव था।
- 1311 में जालौर अभियान हुआ। युद्ध में कन्नड़ देव पराजित हुआ और जालौर को सल्तनत में मिला लिया गया। यह उत्तर भारत की अन्तिम विजय थी।

दक्षिण भारत की विजय

- दक्षिण अभियान का मुख्य उद्देश्य दक्षिण भारत की सम्पत्ति प्राप्त करना था।

देवगिरि अभियान 1307 ई.

- इस समय देवगिरि का शासक रामचन्द्रदेव था।
- 1307 में मलिक काफूर ने देवगिरी पर आक्रमण किया।
- रामचन्द्रदेव को परिवार सहित दिल्ली भेज दिया गया। रामचन्द्र देव यहां पर 6 महीने तक रहा और अपनी एक पुत्री का विवाह सुल्तान के साथ कर दिया।
- सुल्तान ने इसे 1 लाख स्वर्ण मुद्रा एवं राय-राया की उपाधि प्रदान की।

तेलंगाना अभियान 1309-10 ई.

- इस समय तेलंगाना का शासक प्रताप रूद्र देव द्वितीय था। इसकी राजधानी वारंगल थी।
- युद्ध में पराजित होने के बाद प्रताप रूद्र देव द्वितीय बहुत से उपहार के साथ सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली।
- इसी उपहार में विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी सम्मिलित था।

होयसल राज्य पर आक्रमण 1311 ई.

- इस समय यहां का शासक वीर बल्लाल देव तृतीय था। इसकी राजधानी द्वारसमुद्र थी।

पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण 1311 ई.

- इस समय यहां का शासक वीर पांड्य था। इसकी राजधानी मदुरा थी।
- 1311 में मलिक काफूर ने मदुरा पर आक्रमण किया लेकिन वीर पाण्ड्य इसके हाथ नहीं लगा। यहां पर इसने भीषण लूट पाट किया।
- दक्षिण का यही एक राजा था जिसने अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता स्वीकार नहीं की।

Pariksha Manthan

अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण नीति

- अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण नीति क्यों लागू की, इस सन्दर्भ में बर्नी उल्लेख करता है कि बाजार नियंत्रण नीति सेना की सुविधा के लिए लागू की गयी थी।
- बाजार नियंत्रण नीति दो सिद्धांतों पर आधारित थी।

1. उत्पादन लागत के आधार पर वस्तुओं का मूल्य निर्धारण।
2. बाजार में आम जरूरत की वस्तुओं की कमी न हो जाए।

- सुल्तान ने चार प्रकार के बाजार गठित किए-

1. मंडी - यह अनाज का बाजार था। इससे सम्बन्धित 8 जाब्ता (अधिनियम) थे। पहला अधिनियम सर्वाधिक महत्वपूर्ण था जिसने अन्तर्गत सभी प्रकार के अनाजों का मूल्य निर्धारित था। अनाज बाजार के नियंत्रण करने के लिए सुल्तान ने शहना-ए-मंडी की नियुक्ति की और जमाखोरों को कठोर दण्ड की व्यवस्था की।

2. सराय अदल (न्याय का स्थान)

- इससे सम्बन्धित 5 अधिनियम थे। यह एक तरह से सरकारी सहायता प्राप्त बाजार था।
- इसमें विभिन्न प्रकार के कपड़े, मेवे, जड़ी-बूटियां, घी, चीनी आदि बिकता था।

3. घोड़ों, दासों, एवं मवेशियों का बाजार

- इससे सम्बंधित चार सामान्य नियम थे। पहला नियम किस्म के अनुसार मूल्य निर्धारण था। दूसरा नियम दलालों पर कठोर नियन्त्रण था।

4. सामान्य बाजार

- इस बाजार में आम जरूरत की वस्तुएँ बिकती थी जैसे सब्जी, मिट्टी के बर्तन आदि।
- इनका मूल्य भी उत्पादन मूल्य पर आधारित किया गया था।

मुबारक शाह खिलजी (1316-20)

- अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफूर ने उसके 6 वर्षीय पुत्र सिहाबुद्दीन उमर को सुल्तान बना दिया और स्वयं उसका प्रति शासक बन गया।
- अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के 35 दिन बाद मलिक काफूर की हत्या कर दी गयी। इसके बाद अलाउद्दीन खिलजी के एक अन्य पुत्र मुबारक खां को प्रति शासक नियुक्त किया गया।
- मुबारक खां ने शिहाबुद्दीन उमर को बन्दी बना लिया और हत्या करा दी और स्वयं शासक बन गया।
- इसने अलाउद्दीन खिलजी के समय के सभी कठोर कानून समाप्त कर दिये और खलीफा की प्रभुसत्ता स्वीकार नहीं की और स्वयं को खलीफा घोषित किया।

महत्वपूर्ण तथ्य

- जलालुद्दीन खिलजी के समय में पराजित मंगोल सैनिक इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। ये नव मुस्लिम कहलाये और दिल्ली में जिस क्षेत्र में बसे उसे मंगोलपुरी के नाम से जाना जाता है।
- अलाउद्दीन खिलजी अपने सिक्कों पर सिकन्दर-ए-सानी अर्थात् द्वितीय सिकन्दर की उपाधि अंकित कराई।
- अलाउद्दीन खिलजी ने रामचन्द्रदेव को राय-राया की उपाधि दी।
- अलाउद्दीन खिलजी ने सैन्य सुधार के अन्तर्गत नकद वेतन देने, घोड़ों को दागने की प्रथा तथा सैनिकों का हुलिया रखने की प्रथा प्रारम्भ की।
- अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण विजय का श्रेय मलिक काफूर को जाता है।
- मुबारकशाह खिलजी दिल्ली का एकमात्र सुल्तान है जिसने खलीफा की उपाधि धारण की।

तुगलक वंश (1320-1414)

- दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला यह राजवंश था।

Pariksha Manthan

- इस वंश का संस्थापक गाजी मलिक (ग्यासुद्दीन तुगलक शाह) था।

ग्यासुद्दीन तुगलक शाह (1320-25)

- कृषि के विकास के लिए इसने नहरों का निर्माण कराया। यह दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने नहर का निर्माण कराया।
- इसने डाक व्यवस्था को श्रेष्ठ और तीव्रगामी बनाया।
- सुल्तान का अपने समय के प्रसिद्ध सूफी सन्त निजामुद्दीन औलिया से सम्बंध बिगड़ गये। सुल्तान जब बंगाल विजय से वापस आ रहा था तब औलिया के पास सन्देश भेजा कि वह उसके दिल्ली पहुंचने से पहले दिल्ली छोड़ दे। औलिया ने उत्तर दिया था 'हुनूज दिल्ली दूरस्थ'।

मुहम्मद तुगलक (1325-51)

- मुहम्मद तुगलक दिल्ली के सुल्तानों में सर्वाधिक विद्वान सुल्तान था।
- सुल्तान के योगियों से अच्छे सम्बंध थे। जैन आचार्य जिन प्रभासूरि के साथ इसके अच्छे सम्बंध थे।
- सुल्तान हिन्दुओं के त्यौहार होली में भाग लेता था।
- यह दिल्ली का पहला सुल्तान था जो ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के दरगाह के दर्शन के लिए अजमेर तथा सालार मसूद गाजी की दरगाह के दर्शन के लिए बहराइच गया।
- 1340 ई. में इसने सिक्कों पर अपना नाम हटाकर खलीफा मुस्त कफी विल्लाह का नाम अंकित कराया।

राजधानी परिवर्तन

- सुल्तान ने दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरि) राजधानी बनाने की योजना बनायी।
- इसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण में मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ाकर वहां राजनीतिज्ञ प्रभुत्व स्थापित करना था इसलिए इसने दिल्ली के मुसलमानों को दौलताबाद जाने का आदेश दिया।

प्रतीक मुद्रा का प्रचलन (सांकेतिक मुद्रा)

- दिल्ली सल्तनत में दो मुद्राएं प्रचलित थीं—

1. चांदी का टंका
2. तांबे का जीतल

- सुल्तान ने प्रतीक मुद्रा के रूप में कांसे की मुद्रा प्रचलित की जिसका नाम अदली था। यह चांदी के टंके के मूल्य के बराबर थी।

उद्देश्य

- चौदहवीं शताब्दी में पूरे विश्व में चांदी की कमी हो गयी। यहां की मुख्य मुद्रा चांदी कीं टंका थी।
- चांदी की कमी के कारण मुद्रा की कमी हो गयी जिससे वस्तुओं के मूल्य में कमी हो गयी। अतः सुल्तान ने अपनी आर्थिक शाख बचाने के लिए प्रतीक मुद्रा का प्रचलन किया।
- दुर्भाग्य से इसने मुद्रा निर्माण विधि को गुप्त नहीं रखा और न ही नकली सिक्का बनाने वालों के लिए दण्ड का विधान किया। परिणामस्वरूप घर-घर नकली सिक्का बनने लगे और पूरा बाजार नकली सिक्कों से भर गया।
- इससे पूरा राष्ट्रीय व्यापार ठप हो गया।
- सुल्तान ने जब यह समझा कि योजना असफल हो गयी तब आदेश दिया कि जिन लोगों के पास प्रतीक मुद्रा है उन्हें जमा करके बदले में चांदी के सिक्के ले जाए।

खुराशान अभियान योजना

- इस समय ईरान में मंगोलों का शासन था जिन्हें इलखान कहा जाता था।
- इस मसय इल्खानों की शक्ति का पतन हो गया था जिसके कारण राजनीतिक अस्थिरता थी।
- इसी राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाने के लिए सुल्तान ने खुराशान अभियान की योजना बनायी।

Pariksha Manthan

- इसके लिए सुल्तान ने मिस्र के शासक से सन्धि की अभियान के लिए 3 लाख 70 हजार सेना तैयार की और सेना को 1 वर्ष का अग्रिम वेतन दिया।
- दुर्भाग्य से मिस्र के शासक से जो सन्धि की थी वह क्रियान्वित नहीं हो पायी क्योंकि मिश्र के शासक को अपदस्थ कर दिया गया और यह योजना असफल रही।

दोआब में कर वृद्धि योजना

- सुल्तान राजकीय आय को बढ़ाना चाहता था इसलिए करों में वृद्धि की योजना बनायी और इस योजना को सर्वप्रथम दोआब क्षेत्र में लागू किया।
- दुर्भाग्य से जब यह योजना लागू हुई तब दोआब क्षेत्र में अकाल पड़ गया।
- किसान राहत की अपेक्षा कर रहे थे और इसी समय यह योजना लागू हो गयी परिणामस्वरूप किसानों ने विद्रोह कर दिया। यह किसानों का पहला विद्रोह था।
- सुल्तान ने जब यह समझा कि यह योजना असफल हो गयी तब उसने किसानों को कृषि ऋण प्रदान किया जिसे सोनधरी के नाम से जाना जाता है।
- यह दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने प्राकृतिक आपदा के समय किसानों को ऋण दिया।
- बदायूंनी उल्लेख करता है कि इस तरह सुल्तान को अपनी रियाया से और रियाया को अपने सुल्तान से मुक्ति मिली।

मुहम्मद तुगलक की प्रशासनिक योजनाओं का क्रम

1. दोआब में कर वृद्धि योजना
2. राजधानी परिवर्तन की योजना
3. प्रतीक मुद्रा की योजना
4. खुराशान अभियान की योजना
5. कराचिल अभियान की योजना
6. कृषि उत्पादन वृद्धि की योजना

फिरोज शाह तुगलक (1351-1388)

- मुहम्मद तुगलक के न कोई पुत्र था और न ही अपना कोई उत्तराधिकारी।
- यह एक हिन्दू मां का पुत्र था। इसकी मां का नाम नैला देवी था।
- इसने तेलंगाना के एक ब्राह्मण जो इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था मलिक मकबूल को अपना वजीर नियुक्त किया और इसे खान-ए-जहां की उपाधि प्रदान की।
- फिरोज तुगलक अपने प्रशासनिक और लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए प्रसिद्ध था।
- कुछ इतिहासकारों ने इसे सल्तनत काल का अकबर कहा।

प्रशासनिक एवं लोक कल्याणकारी कार्य

1. ऋणों की समाप्ति

मुहम्मद तुगलक द्वारा किसानों को दिए गये ऋण को इसने माफ कर दिया और ऋण पंजिकाओं को नष्ट करा दिया।

2. राजनीतिक अपराधों के दण्ड विधान में परिवर्तन

इसने राजनीतिक अपराध जैसे राजद्रोह गबन के दण्ड विधान में परिवर्तन करके कठोर दण्ड की जगह सामान्य दण्ड देने की व्यवस्था की।

3. सरकारी सेवाओं को वंशानुगत बनाया

फिरोज तुगलक ने आदेश दिया कि सरकारी सेवक के वृद्ध होने या मृत्यु होने पर उसके पुत्र अथवा दामाद अथवा दास को सरकारी सेवा में नियुक्त किया जाय।

4. बुद्धिजीवियों को राहत

इसने धार्मिक एवं शैक्षिणिक कार्यों से जुड़े मुस्लिम व्यक्तियों को कर मुक्त भूमि अनुदान दिया। उल्लेमाओं (धार्मिक वर्ग) ने इसे दिल्ली का आदर्श सुल्तान घोषित किया।

5. नकद वेतन की जगह जागीर देने की व्यवस्था

Iksha Manthan

6. राजस्व व्यवस्था में सुधार

- फिरोज तुगलक दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने राज्य का हासिल तैयार कराया। इसके लिए इसने ख्वाजा हुसामुद्दीन को नियुक्त किया। इन्होंने 6 वर्ष कार्य करके राज्य का हासिल तैयार किया। इनके अनुसार राज्य की वार्षिक आय 6 करोड़ 75 लाख टंका थी।
- फिरोज तुगलक ने 24 ऐसे करों को समाप्त किया जिन्हें सरियत मान्यता नहीं देता। उसने दिल्ली के ब्राह्मणों पर जजिया कर लगाया।

7. मुद्रा में सुधार

फिरोज तुगलक ने 3 प्रकार की मुद्राओं का प्रचलन किया।

1. शंशगनी- यह चांदी की मुद्रा थी यह टंका के मूल्य के 1/6 थी।
2. अध - यह तांबे की मुद्रा थी यह जीतल के मूल्य के 1/2 थी।
3. विख- यह तांबे की मुद्रा थी यह जीतल के मूल्य के 1/4 थी।

8. नहरों का निर्माण

सुल्तान ने अनेक नहरों का निर्माण कराया। यह नहरें दिल्ली एवं हरियाणा के मध्य केन्द्रित थी। जो किसान इन नहरों से सिंचाई करते थे उनसे (हर्ब-ए-सर्व) सिंचाई कर लिया जाता था जो उपज का 1/10 होता था।

9. दासों से प्रेम

यह सर्वाधिक दास प्रेमी सुल्तान था। इसके पास एक लाख 80 हजार दास थे। इसने दासों को नियंत्रित करने के लिए दीवान-ए-बँदगान अर्थात् दासों का विभाग स्थापित किया। प्रत्येक दास को 10 से 100 टंका वार्षिक वेतन दिया जाता था।

10.शिफाखाना की व्यवस्था- (निःशुल्क चिकित्सालय)

सुल्तान ने अनेकों निःशुल्क चिकित्सालय की स्थापना करायी।

11. रोजगार दफ्तर की स्थापना

दिल्ली के कोतवाल के माध्यम से इसने बेरोजगारों को रोजगार देने की व्यवस्था की।

12. निकाह दफ्तर की स्थापना

इस दफ्तर से गरीब मुसलमानों की कन्याओं के विवाह के लिए आवश्यकता अनुसार 50, 30, 25 टंका धन दिया जाता था।

13. कारखानों का निर्माण

सुल्तान ने दो प्रकार के कारखाने का निर्माण कराया।

1. रातिबी कारखाना - इसमें मनुष्यों तथा पशुओं के लिए भोजन तैयार किया जाता था।
2. गैर रातिबी कारखाना - इसमें सुल्तान व उसके परिवार के लोगों एवं अमीरों के दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं तैयार की जाती थीं।

14. उद्यानों से प्रेम

सुल्तान को उद्यानों से बहुत प्यार था। इसने केवल दिल्ली के आसपास फलों के 1200 बाग लगवाये।

- फिरोज तुगलक इस्लाम धर्म के प्रति अत्यधिक कट्टर था। इसने स्त्रियों को सन्तों के मकबरों पर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

फिरोज तुगलक के उत्तराधिकारी

- फिरोज के दो पुत्र थे फतेह खां और मुहम्मद शाह।
- इनमें फतेह खां की मृत्यु फिरोज तुगलक के जीवन काल में हो गयी और मुहम्मद शाह को फिरोजी दासों ने राजधानी से भगा दिया। इस कारण फतेह खां का पुत्र तुगलकशाह द्वितीय उत्तराधिकारी बना जो 1388-89 तक शासन किया।
- 1389 में इसकी मृत्यु के बाद इसका छोटा भाई अबूबक्रशाह दिल्ली का सुल्तान बना।

Pariksha Manthan

- इसके बाद मुहम्मद शाह 1390 से 1394 तक शासन किया।
- इसके शासन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना 1398 में तैमूर का दिल्ली पर आक्रमण है।
- तैमूर के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन प्राप्त करना था।

सैयद वंश (1414 - 1451)

खिज्र खां (1414-21)

- यह सैयद वंश का संस्थापक था। तैमूर ने खिज्र खां को पंजाब और मुल्तान का सूबेदार नियुक्त किया।
- इसने दौलत खां को पराजित करके दिल्ली का स्वतंत्र शासक बना।
- खिज्र खां स्वयं को पैगम्बर मुहम्मद साहब का वंशज मानता था।
- खिज्र खां दिल्ली का स्वतंत्र शासक था। लेकिन यह स्वयं को तैमूरियों का राज्यपाल मानता था।
- इसने सुल्तान की उपाधि ग्रहण नहीं की और न ही अपने नाम का सिक्का जारी किया।
- इसने रैयत-ए-आला की उपाधि के साथ शासन किया।

मुबारकशाह (1421-34)

- इसने विदेशी प्रभुसत्ता को नकार दिया और सुल्तान की उपाधि ग्रहण की। इसने मालवा के शासक हुसंगशाह और जौनपुर के शासक इब्राहिमशाह शर्की से अपने दुर्बल राज्य की रक्षा की।
- दिल्ली का एक मात्र सुल्तान है जो पिता के जीवनकाल में सुल्तान बना।

मुहम्मद शाह (1434-43)

- इसके समय में 1440 ई. में मालवा के शासक महमूद शाह खिलजी ने दिल्ली पर आक्रमण किया। तीन दिनों के भीषण युद्ध के बाद दोनों में संधि हो गयी और महमूद शाह खिलजी वापस मालवा चला गया।

अलाउद्दीन आलम शाह (1443-1451)

- यह सैयद वंश का अन्तिम और सर्वाधिक अयोग्य शासक था।
- इसका अपने वजीर हमीद खां से झगड़ा हो गया और नाराज होकर यह बदायूं चला गया।

लोदी वंश (1451-1526)

- लोदी वंश के शासक अफगान थे। यह अफगानों की साहूखेल शाखा से सम्बंधित थे।

बहलोल लोदी (1451-89)

- यह लोदी वंश का संस्थापक था। यह दिल्ली के सुल्तानों में सर्वाधिक समय तक शासन किया।
- इसने अफगान अमीरों के साथ समानता का व्यवहार किया।
- यह कभी ऊंचे सिंहासन पर नहीं बैठा बल्कि यह कालीन पर बैठता था और इसके चारों तरफ इसके अमीर बैठते थे।
- इसने बहलोली नामक चांदी की मुद्रा प्रचलित की जो टंका के मूल्य का 1/3 थी। यह अकबर के समय तक विनिमय का माध्यम बनी रही।
- बहलोल लोदी जौनपुर के शासक हुसैनशाह शर्की को पराजित कर जौनपुर दिल्ली में मिला लिया।

सिकन्दर लोदी (1489-1517)

- यह एक हिन्दू मां का पुत्र था। इसकी मां का नाम जैबन्द था।
- 1504 में इसने आगरा नगर की स्थापना की और उसे अपनी राजधानी बनाया।
- इसने गज-ए-सिकन्दरी नामक एक प्रामाणिक नाप की इकाई का प्रचलन किया।
- इसने गरीबों और असहायकों को भत्ते देने की व्यवस्था की और जब यह अपने कपड़े और बिस्तर बदलता था तो उसे बेच देता था और उससे अनाथ कन्याओं का विवाह करता था।

Pariksha Manthan

- यह एक कवि था। यह फारसी भाषा में गुलरूखी उपनाम से कविताएं लिखता था।

इब्राहिम लोदी (1517-26)

- यह दिल्ली सल्तनत तथा लोदी वंश का अन्तिम शासक था।
- गद्दी पर बैठते ही इसने ग्वालियर अभियान किया और यहां के शासक विक्रमजीत को पराजित करके इसे अपने अधीन कर लिया।
- इस विजय से उत्साहित होकर इसने मेवाड़ अभियान किया लेकिन यहां के शासक राणासांगा से यह पराजित हुआ।
- 1525 में बाबर पंजाब को जीतकर आगे बढ़ा और 21 अप्रैल 1526 को पानीपत के मैदान में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में इब्राहिम लोदी पराजित हुआ और मारा गया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध का परिणाम यह रहा कि भारत में लोदी वंश के शासन का अन्त हुआ और मुगल वंश की स्थापना हुयी।
- इब्राहिम लोदी दिल्ली का एक मात्र सुल्तान है जो युद्ध भूमि में लड़ता हुआ मारा गया।

सल्तनतकालीन प्रशासन

केन्द्रीय प्रशासन

- केन्द्रीय प्रशासन का केन्द्र बिन्दु राजधानी होती थी।
- ऐबक के समय में लाहौर, इल्तुमिश से लेकर बहलोल लोदी के समय तक दिल्ली और सिकन्दर लोदी तथा इब्राहिम लोदी के समय में राजधानी आगरा थी।

सुल्तान

- केन्द्रीय प्रशासन का केन्द्र बिन्दु सुल्तान होता था।
- इसके पद को दैवी प्रकृति का घोषित किया गया।

सुल्तान के पदाधिकारी

नाइब-ए-मुमालिकात- सुल्तान के बाद यह राज्य का प्रमुख पदाधिकारी था। इस पद का सृजन बहरामशाह के काल में हुआ जब उसने ऐतगिन को नियुक्त किया।

- इसके कार्य सुल्तान की अनुपस्थिति में सुल्तान के सभी कार्यों को सम्पन्न करना था। इस पद का महत्व सुल्तान विशेष की स्थिति पर निर्भर करता था।

  वजीर-इसके कार्यालय को दिवाने-ए-विजारत के नाम से जाना जाता था।

- तुगलक काल विजारत की संस्था का चरमोत्कर्ष काल था। इस काल में वजीरों को न केवल अत्यधिक प्रतिष्ठा मिली बल्कि अत्यधिक वेतन भी दिया जाता था।
- कार्यालय में दो वरिष्ठ अधिकारी होते थे -

  1. मुशरिफ-महालेखाकार
  2. मुस्तौफी - महालेखा परीक्षक

दीवान-ए-आरिज (सैन्य विभाग)- इस विभाग के प्रमुख अधिकारी को आरिज-ए-मुमालिक के नाम से जाना जाता था। इस विभाग की स्थापना बलबन ने की थी। इसका मुख्य कार्य सेना की भर्ती करना था। सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति करना और उन्हें सुसज्जित करना भी इसका कार्य था।

- यह सेना का सेनापति नहीं होता था।

दीवान-ए-इंशा (आलेख विभाग)-इस विभाग का प्रमुख अधिकारी दबीर-ए-खास या अमीर मुंशी होता था। इसका मुख्य कार्य शाही फरमानों को लिपिबद्ध करना और उन्हें सम्बद्ध विभागों तक पहुंचाना था।

दीवान-ए-रसालत-इसका प्रमुख अधिकारी रसालत-ए-मुमालिक होता था जो विदेश मंत्री की हैसियत से कार्य करता था।

सद्र-उस-सुदूर-यह धार्मिक मामलों में सुल्तान का मुख्य सलाहकार था। यह सुल्तान की तरफ से धार्मिक संस्थाओं

Pariksha Manthan

शैक्षणिक संस्थाओं और व्यक्तियों को अनुदान देता था।

अमीर-ए-हाजिब-इसे अमीर बारबक भी कहा जाता था। यह दरबारी मामलों की देखभाल करनेवाला प्रमुख अधिकारी था।

दीवान-ए-वकूफ-जलालुद्दीन खिलजी ने खर्चे के ब्योरे को तैयार करने के लिए इसकी स्थापना की।

दीवान-ए-अमीर कोही-मुहम्मद तुगलक ने सर्वप्रथम इस विभाग की स्थापना की। इसका मुख्य कार्य मालगुजारी व्यवस्था की देखभाल एवं भूमि को खेती के योग्य बनाना होता था।

दीवान-ए-खैरात-यह दान विभाग था। इसकी स्थापना भी फिरोज तुगलक ने की।

न्याय व्यवस्था

- सल्तनत का सर्वोच्च न्यायाधीश स्वयं सुल्तान होता था।
- सुल्तान के न्यायालय को दीवान-ए-मजालिम के नाम से जाना जाता था।

इस्लामी कानून के स्त्रोत

1. **कुरान** - दैवी रहस्यों का उद्घाटन है।
2. **हदीस** - कानून एवं धर्म के सम्बन्ध में पैगम्बर साहब की मान्यतायें एवं निर्देश हैं।
3. **इजमा** - प्रथम दो श्रोतों के आधार पर मुस्लिम न्यायविदों द्वारा दिये गये निर्णय।
4. **कयास** - तर्क एवं विश्लेषण के आधार पर कानून की व्याख्या का तरीका

भू -राजस्व व्यवस्था

- तुर्की साम्राज्य की स्थापना के बाद प्राचीन कर व्यवस्था को समाप्त नहीं किया गया बल्कि पुराने शासक वर्ग को बनाये रखा गया था।
- प्रारम्भिक वर्षों में इन शासकों से वसूल किये गये कर ही राजकीय आय का मुख्य श्रोत था।
- अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का प्रथम सुल्तान था। जिसने भू-राजस्व व्यवस्था में सुधार किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने हिन्दू जमींदारों के अधिकारों को समाप्त किया और उन्हें भी कर देने के लिए बाध्य किया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने पुनः भू राजस्व की दर 1/3 कर दिया एवं जमींदारों के कुछ अधिकारों को वापस किया।

भू-राजस्व निर्धारण की पद्धतियां

1. **बंटाई पद्धति**-इसके अन्तर्गत 3 प्रकार से बंटाई की जाती थी—
   (i) खेत बंटाई- खेत में खड़ी फसल का बँटवारा।
   (ii) लंक बंटाई- कटी हुई फसल का बंटवारा
   (iii) रास बंटाई - अनाज का बंटवारा
2. **मसाहत पद्धति**-इसका प्रचलन अलाउद्दीन खिलजी ने किया था। इसके अन्तर्गत कृषि योग्य भूमि की पैमाइश की गई और प्रति बिस्वा उपज का निर्धारण करके उपज का 1/2 भाग लेना।
3. **मुक्ताई पद्धति** - सुल्तान द्वारा जमींदारों पर कर निर्धारित कर देना। इसके बाद जमींदार किसानों पर कर निर्धारित करते थे।
   - सल्तनत काल में सर्वाधिक लोकप्रिय पद्धति बंटाई पद्धति थी।

सल्तनतकालीन प्रमुख कर

1. **खराज/खिराज**- यह गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर था। यह सामान्यतः उपज का 1/3 भाग लिया जाता था लेकिन अलाउद्दीन खिलजी ने 1/2 भाग वसूल किया।
2. **उश्र**- यह मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमिकर जो 1/5 से 1/10 के बीच में लिया जाता था।
3. **खुम्स**-सैन्य अभियानों के समय लूटे गये धन में राज्य का हिस्सा था। शरियत के अनुसार 1/5 राज्य

का तथा 4/5 सैनिकों का होता था। लेकिन अलाउद्दीन खिलजी एवं मुहम्मद तुगलक ने 4/5 स्वयं लिया तथा 1/5 सैनिकों को दिया।

4. **जजिया**-यह गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला व्यक्ति कर था इसे मुंडकर भी कहा जाता था। स्त्री, बच्चे वृद्ध अपंग ब्राह्मण जजिया कर से मुक्त होते थे। जो जजिया देता था। उसे जिम्मी कहा जाता था। भारत में सर्वप्रथम मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध के हिन्दुओं से जजिया वसूल किया था।

5. **जकात**-यह मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर था। यह धनी मुसलमानों की आय का 21/2 (ढाई) प्रतिशत होता था।

6. **हर्ब-ए-शर्ब**-यह सिंचाई कर था जो उपज का 1/10 होता था।

7. **चरी**-चारागाह कर था।

8. **घर** - गृहकर था इन दोनों करो को अलाउद्दीन खिलजी ने वसूल किये थे।

9. **तरकात**-यह लावारिश सम्पत्ति की जब्ती से होने वाली आय थी।

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

- तुर्क आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण से पहले पश्चिम एवं मध्य एशिया, उत्तरी अफ्रीका एवं दक्षिण-पश्चिम यूरोप की कला शैलियों की विशेषताओं को मिलाकर अपनी एक विशिष्ट स्थापत्य कला शैली का विकास कर लिया था।
- इस्लाम में जीव-जन्तुओं के चित्र बनाने एवं मूर्तियां बनाने पर प्रतिबन्ध था। इनकी जगह फूल-पत्तियां ज्यामितीय चित्र एवं कुरान की आयतों को पत्थरों पर खोदते थे और इस पर नक्काशी की जाती थी। अलंकरण की इस संयुक्त विधि को अरबस्क विधि का नाम दिया गया है।
- चित्तौड़ का 'कीर्ति स्तंभ' राणा कुंभा के शासनकाल में निर्मित हुआ था। इस कीर्ति स्तंभ को राणा कुंभा की उपलब्धियों का स्मारक माना जाता है। इस स्तंभ का निर्माण राणा कुंभा ने महमूद खिलजी पर विजय प्राप्त कर उसकी स्मृति में कराया था। राणा कुंभा विद्वान के साथ-साथ महान संगीतकार एवं कुशल वीणावादक था।
- भारत का प्रथम मकबरा जो शुद्ध इस्लामी शैली में निर्मित हुआ वह था बलबन का मकबरा। बलबन ने मेहरौली क्षेत्र में स्वयं के मकबरे का निर्माण लाल पत्थर से कराया था। इसमें तीन कक्ष बनाए गये थे जिसमें बीच के कक्ष में बलबन की कब्र एवं शेष कक्ष में उसके परिवार के लोगों की कब्र है।

प्रमुख इमारतें

इमारत का नाम	स्थान	निर्माता का नाम	विशेषता
1. कुब्बवत-उल इस्लाम मस्जिद	दिल्ली	कुतुबुद्दीन ऐबक	इसका निर्माण 27 हिन्दू एवं जैन मन्दिरों की सामग्री से किया गया था। यह दिल्ली की पहली इस्लामी इमारत है।
2. अढ़ाई दिन का झोपड़ा मस्जिद	अजमेर	कुतुबुद्दीन ऐबक	एक संस्कृत विद्यालय को तोड़वाकर इसका निर्माण कराया गया।
3. कुतुबमीनार	दिल्ली	कुतुबुद्दीन ऐबक	प्रथम मंजिल का निर्माण ऐबक ने कराया था।

			पूरा इल्तुतमिश एवं इल्तुतमिश ने कराया। इसका नाम सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर है। - मूल रूप में 4 मंजिला लाल पत्थर की है। - फिरोज तुगलक के समय में बिजली गिरने से चौथी मंजिल ध्वस्त हो गई तब फिरोज तुगलक संगमरमर से चौथी एवं पांचवी मंजिल का निर्माण कराया।
4. सीरी का किला	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी	मंगोलों से दिल्ली की रक्षा हेतु इस मजबूत किले का निर्माण कराया।
5. अलाई दरवाजा	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी	सल्तनत काल की पहली इमारत जिसमें संगमरमर का प्रयोग हुआ है।
6. जमायत-ए-खाना मस्जिद	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी के समय में खिज्र खां द्वारा	सल्तनत काल की पहली इमारत जो शुद्ध इस्लामी शैली में निर्मित है।
7. छप्पन कोट्ट	दिल्ली	गयासुद्दीन तुगलक	यह गयासुद्दीन तुगलक का महल था। यह सुनहरी ईंट से बना था।
8. गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा	दिल्ली	गयासुद्दीन तुगलक	यह मकबरा झील के मध्य निर्मित किया गया था।
9. सिकन्दर लोदी का मकबरा	दिल्ली	सिकन्दर लोदी	भारत का पहला मकबरा है जिसमें दोहरे गुम्बद का निर्माण किया गया है।
10. मोठ की मस्जिद	दिल्ली	सिकन्दर लोदी के वजीर मिंया भूआ ने बनवाया	सामने की दीवार में पांच मेहराबदार द्वार हैं।

सल्तनतकालीन साहित्य

- अमीर खुसरो को 'हिन्दी खड़ी बोली' का जनक माना जाता है। ये एक नई काव्य शैली 'सबक-ए-हिन्दी' अर्थात् हिन्दुस्तानी शैली के जन्मदाता थे। इन्हीं को हिन्दवी का भी जनक माना जाता है।
- अमीर खुसरो का जन्म पटियाली नामक स्थान में हुआ था। पहले यह स्थान एटा जिले में था। वर्तमान में यह कासगंज में स्थित है।

सल्तनत कालीन साहित्य		
ग्रंथ का नाम	**लेखक का नाम**	**विशेषता**
1. तारीख-ए-हिन्द (अरबी में)	अलबरूनी (अबू रैहान)	11वीं शताब्दी के भारत के सामाजिक धार्मिक जीवन का वर्णन
2. ताज-उल-मासीर	हसन निजामी	प्रथम ऐसा ग्रंथ जो भारत में मुस्लिम शासन के प्रारम्भ का वर्णन करता है।
3. तबकात-ए-नासिरी	मिन्हाज-उस-सिराज	इसमें 1259 ई. तक का इतिहास संकलित है।
4. मिफ्ताह-उल-फुतूह	अमीर खुशरो ने बलबन से लेकर	जलालुद्दीन खिलजी के समय का विवरण है।
5. खजाइन-उल-फुतूह	गयासुद्दीन तुगलक तक 7 सुल्तानों के दरबार की शोभा बढ़ाई। इन्हें	अलाउद्दीन खिलजी के विजयों का वर्णन है।
6. देवलरानी खिज्रखानी	तूती-ए-हिन्द भी कहा जाता था।	खिज्र खां एवं देवलरानी की प्रेम कथा का वर्णन है।
7. तुगलक नामा	,, ,,	गयासुद्दीन तुगलक के समय का वर्णन है।
8. तारीख-ए-फिरोजशाही	जियाउद्दीन बर्नी यह सल्तनत काल के प्रमुख इतिहासकार थे।	फिरोज तुगलक को समर्पित है इसमें 1259 से लेकर फिरोज तुगलक के शासन तक का इतिहास है।
9. फतवा-ए-जहांदारी	जियाउद्दीन बर्नी	तारीख-ए-फिरोजशाही का पूरक ग्रंथ है।
10. तारीख-ए-फिरोजशाही	शम्स-ए-सिराज अफीफ	फिरोज के शासनकाल को समर्पित है।
11. फुतूह-उस-सलातीन	इसामी यह बहमनी सुल्तान बहमनशाह के दरबार में रहता था	महमूद गजनवी से लेकर मुहम्मद तुगलक तक का विवरण है इसमें मुहम्मद तुगलक की अत्यधिक आलोचना है।
12. किताब-उर-रेहला (अरबी में)	इब्नबतूता यह मुहम्मद तुगलक के शासन काल में मोरक्को से दिल्ली आया। मुहम्मद तुगलक ने इसे दिल्ली का काजी भी नियुक्त किया था।	इस ग्रंथ का एक भाग दिल्ली सल्तनत को समर्पित है।
13. फुतुहात-ए-फिरोजशाही	फिरोजशाह तुगलक	यह फिरोजशाह तुगलक की आत्मकथा है।

दिल्ली सल्तनत : विविध

- 'दस्तार बन्दान' (पगड़ी धारण करने वाले) सल्तनतकाल में उलेमा वर्ग जो उच्च धार्मिक एवं न्यायिक पदों पर आसीन थे, को कहा जाता था। वस्तुतः ये लोग आधिकारिक रूप में सिर पर पगड़ी पहनते थे।
- तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में भारतीय कृषक गेहूं, धान, जौ, चना, मटर, सरसों, तिल, कपास, गन्ना आदि की खेती करते थे लेकिन मक्का की खेती नहीं करते थे। इब्नबतूता ने भी अपने ग्रंथ 'रेहला' में उल्लेख किया है कि भारतीय किसान वर्ष में तीन फसल उगाते थे। यहां गेहूं, धान, गन्ना एवं कपास की खेती बड़े पैमाने पर होती थी।
- जौहर प्रथा की शुरुआत राजपूतों के समय में हुई थी। वस्तुतः राजपूतों ने मुस्लिमों आक्रमणकारियों से स्त्रियों के सम्मान की रक्षा हेतु यह प्रथा प्रारम्भ की थी। जब राजपूत राजा युद्ध में पराजित हो जाते थे तो राजपूत महिलाएं सम्मिलित रूप से अग्नि की चिता जलाकर उसमें जल जाती थीं। इसी प्रथा को जौहर प्रथा कहते थे। सती प्रथा एवं बाल विवाह की प्रथा पहले से चली आ रही थी।
- भारत में 'पोलो' खेल का प्रचलन तुर्कों ने किया था। गुलाम वंश के शासक कुतुबुद्दीन ऐबक लाहौर में 'पोलो' का खेल खेलते समय घोड़े से गिर गया और अंततः उसकी मृत्यु हो गयी थी।

क्षेत्रीय राज्य

विजयनगर साम्राज्य (1336-1678 ई.)

- मध्यकाल में स्थापित होने वाला प्रथम हिन्दू राज्य विजयनगर साम्राज्य था।
- इसकी स्थापना हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने 1336 ई. में माधव विद्यारण्य नामक विद्वान ब्राह्मण की प्रेरणा से किया था।
- हरिहर एवं बुक्का द्वारा प्रारम्भ में स्थापित हम्पी (हस्तिनावति) नामक राज्य ही कालांतर में विजयनगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- विजयनगर साम्राज्य 342 वर्षों तक रहा इस बीच में कुल चार राजवंशों ने शासन किया—

  1. संगम वंश 2. सालुव वंश 3. तुलुव वंश 4. अरबिंदु वंश

संगम वंश (1336-1486 ई.)

- संगम वंश की स्थापना हरिहर बुक्का ने की।

हरिहर प्रथम

- संगम वंश का प्रथम शासक हरिहर प्रथम था। इसने आनेगोन्दी को अपनी राजधानी बनाई।
- हरिहर प्रथम ने अपने शासन के 17 वर्ष बाद विजयनगर को अपनी राजधानी बनाई। फिर इसी नगर के नाम पर विजयनगर साम्राज्य का नाम पड़ा।

बुक्का प्रथम

- हरिहर प्रथम के बाद बुक्का प्रथम शासक बना। इसने मदुरा को जीतकर अपने राज्य में मिलाया।
- इसने वैदिक धर्म को प्रोत्साहन दिया। इस उपलक्ष्य में 'वेदमार्ग प्रतिष्ठापक' की उपाधि धारण की।

हरिहर द्वितीय

- हरिहर द्वितीय, बुक्का प्रथम का पुत्र था। यह विजयनगर का प्रथम शासक था जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।

देवदाय प्रथम

- इसके समय में इटली का एक यात्री निकोलीकोंटी ने विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की।

Pariksha Manthan

देवराय द्वितीय

- देवराय द्वितीय इस वंश का सबसे महान शासक था, जो जनसाधारण में 'इंद्र का अवतार' माना जाता था।
- इसके समय में फारस के शासक शाहरूख ने अब्दुल रज्जाक को अपना दूत बनाकर 1442 ई. में इसके दरबार में भेजा था।
- देवराय द्वितीय ने बड़ी संख्या में अपनी सेना में मुसलमानों को भर्ती किया और उनके उपयोग के लिए एक मस्जिद का निर्माण कराया।

विरुपाक्षराय

- यह संगम वंश का अन्तिम शासक था।

सालुव वंश (1486 - 1505 ई.)

- सालुव वंश का संस्थापक सालुव नरसिंह था।

इम्माडि नरसिंह

- सालुव नरसिंह के दो पुत्र थे। तिम्मा व इम्माडि नरसिंह।
- तिम्मा की हत्या के पश्चात् इम्मडि नरसिंह को गद्दी पर बैठाया गया।
- इम्माडि नरसिंह के वयस्क होने पर उसका अपने संरक्षक नरसा नायक से विवाद हो गया।

तुलुव वंश (1505-1565 ई.)

वीर नरसिंह

- तुलुव वंश की स्थापना वीर नरसिंह ने की। इसने केवल चार वर्ष तक शासन किया।
- इम्माडि नरसिंह की हत्या कर सिंहासन पर अधिकार करने के कारण उसके विरुद्ध असंतोष फैला गया।

कृष्णदेव राय

- कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य का सबसे महान शासक था। इसका शासन काल सफलताओं का युग था।
- इसने बीजापुर राज्य से रायचुर का द्वाबा जीत लिया। इसी तरह इसने उड़ीसा के शासक प्रताप रुद्रदेव गजपति को चार बार पराजित कर आंध्र के तटवर्ती क्षेत्रों को जीत लिया और अन्ततः दोनों में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुआ।
- इसी तरह कृष्णदेवराय ने बीदर पर आक्रमण किया और यहां के शासक महमूदशाह को उसके वजीर बरीदशाह के चंगुल से मुक्त कराकर पुनः गद्दी पर बैठाया। इस उपलक्ष्य में कृष्णदेवराय ने 'यवनराजस्थापनाचार्य' की उपाधि धारण की।
- कृष्णदेवराय के दरबार में तेलगू के आठ प्रसिद्ध विद्वान रहते थे जिन्हें 'अष्टदिग्गज' कहा जाता है।
- कृष्णदेवराय स्वयं विद्वान था। इसे आंध्रभोज/दक्षिण का भोज कहा जाता है।
- कृष्णदेवराय के बाद इसका भतीजा अच्युतराय शासक बना।

सदाशिवराय

- अच्युतराय के बाद कृष्णदेवराय का पुत्र सदाशिवराय शासक बना।
- सदाशिवराय का प्रधानमंत्री रामराय था जो प्रतिशासक के रूप में सारी शक्तियां अपने हाथों में ले लिया।
- अली आदिलशाह ने रामराय से कुछ किलों की मांग की और रामराय ने इंकार कर दिया। परिणामस्वरूप 23 जनवरी, 1565 ई. में तालीकोटा का युद्ध हुआ। इस युद्ध को बनहट्टी/राक्षसी तंगड़ी का युद्ध/कृष्णा नदी का युद्ध के नाम से जाना जाता है।

आरबिदु वंश (1570-1678 ई.)

- आरबिंदु वंश का संस्थापक तिरुमल था।
- तिरुमल का पौत्र वेंकट द्वितीय इस वंश का सबसे महान शासक था।
- वेंकट द्वितीय के शासन काल के समय राजा बोडियार ने मैसूर राज्य की स्थापना की।

Pariksha Manthan

- वेंकट द्वितीय ने चंद्रगिरि को अपनी राजधानी बनाई। इसके समय में विदेशों के अनेक राजनयिक मण्डल यहां आए।
- वेंकट द्वितीय को चित्रकला में अत्यधिक रुचि थी। इसे ईसाई धर्म से सम्बंधित चित्र पसंद थे।

विजयनगर कालीन प्रशासन

- विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन केन्द्रोमुखी प्रशासन था।
- विजयनगर राज्य का स्वरूप राजतंत्रात्मक था जिसका प्रमुख राजा स्वयं होता था।
- विजयनगर के राजा 'राय' की उपाधि धारण करते थे और स्वयं को ईश्वरतुल्य मानते थे।
- इस काल में राजा की सहायता के लिए दो परिषदें होती थी—

1. **राज्य परिषदें**-इसका स्वरूप बहुत व्यापक होता था। राजा इसी की सलाह पर नीतियों को बनाता था। इसकी स्थिति औपचारिक अधिक होती थी।
2. **मंत्रिपरिषद**-इसका स्वरूप छोटा होता था जिसमें कुल 20 सदस्य होते थे। इसमें प्रधानमंत्री, उपमंत्री और विभागों के सदस्य होते थे। इसमें विद्वान राजनीति में निपुण 50-70 वर्ष आयु वाले निपुण व्यक्ति को इसका सदस्य बनाया जाता था। इसका अध्यक्ष प्रधानी व महाप्रधानी (प्रधानमंत्री) होता था। राजा व युवराज के बाद इसका स्थान था।

भूराजस्व व्यवस्था

- विजयनगर साम्राज्य में राजकीय आय का मुख्य स्रोत भूराजस्व था जिसे 'शिष्ट' कहा जाता था।
- भूराजस्व भूमि की उपज के आधार पर निर्धारित किया जाता था जो सामान्यतः 1/3-1/4 के बीच था।
- 16वीं शताब्दी के मध्य में सदाशिवराय के काल में नाइयों को व्यवसायिक कर से मुक्त कर दिया गया था।

न्याय व्यवस्था

- विजयनगर के शासकों ने चार प्रकार के न्यायालयों का गठन किया था—

1. **प्रतिष्ठिता न्यायालय**-यह न्यायालय ग्राम एवं नगर में स्थापित होते थे जो प्राचीन सभा के रूप में थे।
2. **चल न्यायालय**-यह न्यायालय समय-समय पर अलग अलग स्थानों पर कुछ समय के लिए स्थापित किए जाते थे।
3. **मुद्रिता न्यायालय**-यह केन्द्रीय न्यायालय था जो विभिन्न नगरों में स्थापित किए जाते थे जिसमें उच्च न्यायाधीश नियुक्त किए जाते थे।
4. **शास्त्रिता न्यायालय**-यह राजा का न्यायालय होता था। जो राज्य का सर्वोच्च न्यायालय होता था।

नायंकार व्यवस्था

- इस काल में भूसामंतों एवं सेनानायकों के वेतन के बदले राजा द्वारा उन्हें एक विशेष भूखण्ड प्रदान किया जाता था जिसे अमरम् कहा जाता था।
- अमरम् भूमि का उपयोग करने के कारण इन नायकों को अमरनायक कहा जाता है। ये नायक/अमरनायक स्वतंत्र रूप से अमरम् का उपभोग नहीं करते थे। इसके लिए उन्हें दो दायित्वों का पालन करना पड़ता था—
  1. इस भूमि से प्राप्त आय का एक अंश राजा के खजाने में जमा करना था।
  2. इस भूमि में से प्राप्त आय में से राजा की सहायता के लिए एक सेना का निर्माण करना था।
- दायित्वों का निर्वहन न कर पाने पर उसको दी गयी भूमि वापस ले ली जाती थी। ये नायक आंतरिक मामले में काफी स्वतंत्र होते थे। इनके स्थानांतरण का कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

Pariksha Manthan

- कमजोर शासकों के समय में ये नायक अत्यधिक उच्छृंखल हो जाते थे। इनको नियंत्रण रखने के लिए महामंडलेश्वर की नियुक्त की जाती थी।
- नायंकार व्यवस्था इक्ता प्रथा से मिलती जुलती है।

आयगार व्यवस्था

- विजयनगर के शासकों ने स्थानीय प्रशासन की देखभाल के लिए आयगार व्यवस्था प्रारम्भ की।
- इसके अंतर्गत गांव को संगठित कर एक स्वतंत्र प्रशासनिक इकाई के रूप में विकसित किया गया और प्रत्येक प्रशासनिक इकाई की देखभाल के लिए 12 अधिकारियों को नियुक्त किया गया। इसी शासकीय समूह को आयगार कहा गया।
- आयगारों के पद वंशानुगत होते थे। इन्हें वेतन के बदले में करमुक्त भूमि दी जाती थी जिसे मान्यम् कहा जाता था।
- आयगारों का मुख्य कार्य अपने क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखना था।

विजयनगर कालीन संस्कृति

- विजयनगर के शासक न केवल साम्राज्य निर्माता थे बल्कि समाज, शिक्षा, साहित्य और कला को भी प्रोत्साहन दिया।

सामाजिक व्यवस्था

- विजयनगर कालीन सामाजिक व्यवस्था में चातुर्वर्ण व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। समाज में ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ कहे जाते थे। इन्हें अत्यधिक सम्मान व श्रद्धा अर्पित की जाती थी।
- दूसरा वर्ण क्षत्रिय था जिसका विशेष उल्लेख नहीं मिलता है।
- तीसरा वर्ण वैश्य था जिसमें व्यापारी व शिल्पी आते थे। वैश्य वर्ग में एक महत्वपूर्ण वर्ग चेट्टी/सेट्ठी था। जिनका व्यापार अधिकांश था। ये बहुत धनी लोग थे।
- शिल्पियों में वीर पांचाल का अधिकांश व्यवसाय इनके अंतर्गत था। इनके अंतर्गत लोहार, कांस्यकार, स्वर्णकार, मूर्तिकार और बढ़ई थे।
- चौथा वर्ण शूद्र था जो कृषि मजदूरी एवं छोटे-मोटे व्यवसाय से जुड़े होते थे।
- इस काल में उत्तर भारत के बहुत से लोग दक्षिण भारत में जाकर बस गए थे जिन्हें 'बड़वा' कहा जाता था।
- इस काल में दास प्रथा का भी प्रचलन था। स्त्री व पुरुष दोनों दासों का उल्लेख मिलता है।
- इस काल में सती प्रथा का प्रचलन भी था। सती होने वाली स्त्री के स्मृति में सती स्मारक भी बनाया जाता था। जिसे सतीगल्ल कहा जाता था।
- बुक्का प्रथम की पुत्र वधु गंगा देवी संस्कृत की प्रकाण्ड विद्वान थी जिसने मदुरा विजय नामक ग्रंथ की रचना की। बुक्का प्रथम की पत्नी होनायी भी विद्वान थी।
- इस युग में मोहनांगी नामक महिला हुई जिसने 'मारीचि परिनम' नामक ग्रंथ की रचना की।

शिक्षा एवं साहित्य

- विजय नगर के शासकों ने शिक्षा एवं साहित्य के विकास में रुचि ली। यद्यपि इस काल में नियमित विद्यालय का विकास नहीं हो सका। इस काल में मठ एवं मंदिर शिक्षा के केन्द्र होते थे। राजाओं द्वारा मठों एवं मंदिरों को भूमि अनुदान देकर शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाता था।
- इस काल में माधव विद्यारण्य और उनके छोटे भाई आचार्य सायण संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हुए जिन्होंने वेदों पर भाष्य लिखे।
- उसी तरह संस्कृत में गंगा देवी ने 'मदुरा विजयम्' नामक ग्रंथ की रचना की और कृष्णदेवराय ने 'जाम्बवती कल्याणम्' नामक ग्रंथ की रचना की।
- इस काल में तेलगू भाषा का अत्यधिक विकास हुआ। तेलगू भाषा के प्रसिद्ध विद्वान श्रीनाथ थे जिन्होंने

Pariksha Manthan

'हरिविलासम्' नामक ग्रन्थ की रचना की। देवराय द्वितीय ने इन्हें 'कवि सार्वभौम' की उपाधि प्रदान की।

- कृष्णदेवराय के समय में तेलगू भाषा का सर्वाधिक विकास हुआ। इसके दरबार में तेलगू के आठ प्रसिद्ध विद्वान रहते थे जिन्हें अष्टदिग्गज के नाम से जाना जाता था। इनमें अल्लसानि पेद्दन प्रमुख थे।
- अल्लासानिपेद्दन को कृष्णदेवराय ने 'आंध्रकविता पितामह की उपाधि प्रदान की थी। पेद्दन ने 'स्वरोचित संभव मनुचरित' नामक ग्रंथ की रचना की।
- कृष्णदेवराय स्वयं तेलगू का प्रकाण्ड विद्वान था जिसने 'आमुक्त माल्यदा' नामक ग्रंथ की रचना की।

विजयनगरकालीन धर्म

- विजयनगर के शासक हिन्दू धर्म के संरक्षक के रूप में जाने जाते हैं। इस काल के प्रारम्भिक शासक शैव धर्म के अनुयायी थे लेकिन आगे चलकर ये वैष्णव धर्म के अनुयायी हो गए। इस काल में वैष्णव एवं शैव दोनों धर्मों का अत्यधिक विकास हुआ।
- विजयनगर के शासक धर्मसहिष्णु शासक थे। इन्होंने अन्य धर्मों को प्रश्रय दिया।

विजयनगरकालीन कला

- विजयनगर के शासकों में कला में अत्यधिक रुचि प्रदर्शित की। इस काल की कला ब्राह्मणवादी तत्व से प्रभावित है। व्यक्तिगत भवन के रूप में राजमहल/सभाभवन तथा सिंहासन मंच का निर्माण किया गया।
- इस काल के मंदिर विशाल प्रांगण में बनाए जाते थे। मुख्य मंदिर के बगल में अम्मन मंदिर का निर्माण किया जाता था। इसमें मुख्य मंदिर के देवता की पत्नी की मूर्ति स्थापित की जाती थी।
- इस काल के मंदिरों की एक जीवंत रचना कल्याण मण्डप है। ये स्तम्भों पर आधारित विशाल भवन होता था। इसके मध्य में एक यज्ञ/अग्निवेदी का निर्माण किया जाता था। इस भवन में मंदिर के देवता का प्रतीकात्मक रूप से विवाह उत्सव सम्पन्न होता था।

बहमनी राज्य

- बहमनी राज्य की स्थापना मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में हसन गंगू नामक एक अमीर ने की थी।
- हसनगंगू अबुल मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमनशाह के नाम से बहमनी का सुल्तान बना।
- इसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाई। इसने स्वयं को एक अर्ध पौराणिक नायक इस्फांदियार के पुत्र बहमन का वंशज बताया। इसने जजिया कर समाप्त किया।

महमूद गंवा

- यह बहमनी के सुल्तान मुहम्मदशाह तृतीय का वजीर था।
- इसने बहमनी राज्य का विस्तार पूर्वी समुद्र तट से लेकर पश्चिमी समुद्र तट तक किया।
- इसने बहमनी राज्य को चार प्रांतों की जगह 8 प्रान्तों में विभक्त किया।

धार्मिक आंदोलन

भक्ति आन्दोलन

- प्राचीन काल से ही हिन्दुओं को विश्वास था कि मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग हैं-कर्म, ज्ञान और भक्ति ।
- ईश्वर के प्रति अत्यधिक प्रेम और श्रद्धा की भावना को भक्ति कहते हैं। इसमें बताया गया है कि ईश्वर मनुष्य के हृदय में निवास करता है इसलिए इसे प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन इसकी प्राप्ति के लिए सभी मानसिक विकारों से मुक्त होना चाहिए।
- भक्ति में गुरु को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है लेकिन गुरु मोक्ष नहीं दिला सकता। मोक्ष के लिए ईश्वर की कृपा चाहिए

Pariksha Manthan

और ईश्वर कृपा के लिए प्रपत्ति मार्ग का अनुसरण किया जाय, इसका तात्पर्य है ईश्वर के प्रति समर्पण।

भक्ति आंदोलन के कारण

- मध्यकाल में भक्ति आंदोलन और उसकी लोकप्रियता का प्राथमिक कारण हिन्दू धर्म और समाज की अधोगति थी।
- इसके अतिरिक्त भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना और इस्लाम के आगमन की प्रेरणा का कार्य किया।
- इस्लाम धर्म की एकेश्वरवाद, भाईचारा, समानता जैसे विचारधारा निम्न वर्ग के हिन्दुओं को आकर्षित किया जिससे वह इस्लाम धर्म स्वीकार करने लगे। ऐसी स्थिति में हिन्दू धर्म एवं समाज में सुधार की आवश्यकता थी।

- भक्ति आंदोलन के संतों के उपदेशों को दो भागों में बांटा जा सकता है—

1. **सकारात्मक उपदेश**–इसमें एक ईश्वर पर विश्वास और उसकी आराधना पर बल दिया। गुरु सेवा पर बल दिया गया। भाईचारे और समानता पर बल दिया।
2. **नकारात्मक उपदेश**–इसमें मूर्तिपूजा, पुरोहित, यज्ञ और अन्य वाह्य आडम्बर का विरोध, छुआछूत का विरोध।

भक्ति आंदोलनों के महत्वपूर्ण संत

दक्षिण भारत के संत

रामानुजाचार्य

- यह भक्ति आंदोलन के प्रथम संत थे जिनका जन्म 1017 ई. में आंध्र प्रदेश में हुआ और 1137 ई. में इनकी मृत्यु हो गयी।
- प्रारम्भ में ये शंकराचार्य के मत के अनुयायी बने और यादव प्रकाश के शिष्य हुए। लेकिन इनसे संतुष्ट नहीं हुए।
- बाद में गोष्ठीपूर्ण के शिष्य बने और यही इनके वास्तविक गुरु बने। गोष्ठीपूर्ण ने इन्हें गुरुमंत्र दिया और इन्होंने वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया।
- इन्होंने श्री संप्रदाय की स्थापना की और भगवान विष्णु की भक्ति पर बल दिया।
- रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैतवाद दर्शन का प्रचार-प्रसार किया।
- रामानुजाचार्य ने ब्रह्मसूत्र पर टीका लिखा है। (श्रीभाष्य नाम से)
- रामानुजाचार्य को दक्षिण में विष्णु का अवतार माना जाता है।

निम्बार्काचार्य

- यह रामानुजाचार्य के समकालीन थे। इनका जन्म कर्नाटक के वेल्लारी में हुआ था।
- इन्होंने सनक सम्प्रदाय की स्थापना की और विष्णु की आराधना पर बल दिया।

माध्वाचार्य

- ये 13वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण संत थे। इन्होंने विष्णु की आराधना पर बल दिया और ब्रह्म संप्रदाय की स्थापना की।

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन

- भक्ति आंदोलन का उद्भव दक्षिण भारत में हुआ और दक्षिण भारत से उत्तर भारत में भक्ति लाने का श्रेय रामानंद को जाता है।

रामानंद

- रामानंद का जन्म प्रयाग में हुआ और इनका कर्म क्षेत्र काशी था।
- इन्होंने बैरागी संप्रदाय की स्थापना की और राम की आराधना पर बल दिया।
- इन्होंने पुरोहितवाद को चुनौती दी। इनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था, इन्होंने सभी धर्मों, सभी जाति 'स्त्री-पुरुष का भेदभाव किए बिना अपना शिष्य बनाया।

Pariksha Manthan

- रामानंद के अनुसार-जात-पात पूछे नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का कोई।
- रामानंद भक्ति आंदोलन के पहले संत थे जिन्होंने स्त्रियों के मोक्ष के द्वार खोले।

कबीरदास

- कबीरदास रामानंद के सबसे प्रिय और प्रसिद्ध शिष्य थे। इन्होंने शेख तकी नामक सूफी संत से भी शिक्षा ग्रहण की।
- कबीर ने हिन्दू व मुस्लिम धर्मों के समाजों की कुरीतियों का विरोध किया और वेद, पुराण व कुरान की निन्दा की।
- ये समाज सुधारक भी थे इन्होंने बाल-विवाह एवं सती प्रथा का विरोध किया।
- कबीर की रचनाएं बीजक नामक ग्रंथ में संकलित है।

संत रैदास

- संत रैदास परमसत्य (निर्गुण ब्रह्म) की उपासना पर बल दिया। इन्होंने अंतर्मन की पवित्रता पर बल दिया।
- रैदास के अनुसार- मन चंगा तो कठौती में गंगा।

गुरुनानक

- इनका जन्म 1469ई. में पश्चिमी पंजाब के तलवंडी में खत्री परिवार में हुआ। यह गृहस्थ जीवन व्यतीत किए।
- ये दौलतखां के यहां नौकरी भी किए और कालीबेन नदी (पंजाब) के किनारे ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद इनके वाक्य थे- न कोई हिन्दू है न कोई मुसलमान, ईश्वर एक आदिसत्य है। कबीर की भांति इन्होंने सभी वाह्य आडम्बरों का विरोध किया।
- ये बाबर के समकालीन थे और बाबर के सैय्यद पुर के युद्ध को अपनी आंखों से देखा था।
- गुरु नानक ने नानक पंथ की स्थापना किया जो आगे चलकर सिक्ख संप्रदाय में परिवर्तित हो गया।
- इनके उपदेश सिक्ख धर्म के पांचवे गुरु अर्जुनदेव के ग्रंथ 'आदिग्रंथ' में संकलित किए।

बल्लभाचार्य

- ये तेलंगाना के ब्राह्मण थे जो बनारस आकर बस गए। यहीं वाराणसी में स्वप्न में भगवान श्री कृष्ण के आदेश पर वृंदावन चले गए।
- बल्लभाचार्य के भक्तिमार्ग को पुष्टिमार्ग कहा जाता है।
- ये भी गृहस्थ जीवन व्यतीत किए जो कभी संन्यास नहीं लिए और जीवन के अंतिम दिनों में 52 वर्ष की आयु में बनारस में जल समाधि ले ली।

विट्ठलनाथ

- ये बल्लभाचार्य के पुत्र थे जो अकबर के समकालीन थे। अकबर ने इन्हें जैतपुर और गोकुल की जागीर प्रदान की।
- इन्होंने कृष्णभक्ति के आठ संतों को मिलाकर अष्टछाप के कवि की स्थापना की।
- विट्ठलनाथ के प्रसिद्ध शिष्य रसखान थे।

सूरदास

- ये बल्लभाचार्य के शिष्य थे। इनकी भक्ति को पुष्टिमार्ग का जहाज कहा जाता है जो सखा भाव की भक्ति है।
- सूरदास ने 'सूरसागर' नामक ग्रंथ की रचना की।

चैतन्य

- ये पश्चिम बंगाल के ब्राह्मण थे।
- इनकी प्रार्थना विधि को संकीर्तन कहा जाता है। ये विष्णु के आंशिक अवतार माने जाते हैं।

मीराबाई

- मीराबाई भक्ति आंदोलनों की महिला संतों में सबसे प्रसिद्ध संत थीं।
- यह मेड़ता के राजा राणा रतन सिंह की पुत्री थी। इनका विवाह मेवाड़ के शासक राणा सांगा के पुत्र भोज के साथ हुआ जल्दी ही भोज की मृत्यु हो जाने से यह विधवा हो गयी।

Pariksha Manthan

- मीराबाई के गुरु रैदास थे। जीवन के अंतिम वर्षों में यह द्वारिका आ गयीं और यहीं इनकी मृत्यु हो गयी।

तुलसीदास

- तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रमुख संत थे। इनका जन्म राजापुर (बाँदा) में हुआ था, इनकी पत्नी का नाम रत्नावली था।
- इन्होंने राम को विष्णु के औतार के रूप में चित्रण किया और सीता सहित राम की उपासना पर बल दिया। इन्होंने बताया कि भक्ति में निर्गुण ब्रह्म भी सगुण हो जाती है।
- इनकी महान रचना 'रामचरितमानस' है जो अवधी भाषा में रचित है और अनेक भाषाओं में इनका अनुवाद मिलता है।

महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन

14वीं-17वीं शताब्दी में महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन का प्रसार-प्रचार हुआ। महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक ज्ञानेश्वर थे।

ज्ञानेश्वर-

- इन्होंने वाह्य आडम्बरों का विरोध किया। इन्हें विष्णु का ग्यारहवां अवतार माना जाता है। ये वरकरी संप्रदाय से भी संबंधित थे।

संत नामदेव-

- ये महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के सबसे बड़े संत थे। इनके उपदेश सिक्खों के आदिग्रंथ में संकलित हुए। ये भी वरकरी सम्प्रदाय से संबंधित थे।

एकनाथ-

- ये कृष्ण के परमभक्त थे। इन्होंने भागवत पुराण के 11वें स्कन्ध को 'नाथ भागवत' नाम से संकलित किया जिसे मराठी भाषा में लिखा ।

तुकाराम-

- ये महाराष्ट्र के कबीर कहे जाते हैं। इनके संकलन को अभंग कहा जाता है।

रामदास-

- ये शिवाजी के अध्यात्मिक गुरु थे।
- ये धरकारी संप्रदाय से संबंधित थे।

निर्गुण संत

1. कबीर दास 2. गुरु नानक 3. रैदास

कृष्ण भक्ति शाखा के संत

1. बल्लभाचार्य 2. विट्ठलनाथ 3. सूरदास 4. चैतन्य महाप्रभु 5. मीराबाई 6. रसखान

रामभक्ति शाखा के संत

1. तुलसीदास 2. अग्रदास 3. नाभादास

सिक्ख धर्म गुरु

1. गुरुनानक- सिक्ख धर्म के संस्थापक।
2. गुरु अंगद- गुरुमुखी लिपि के प्रवर्तक।
3. गुरु अमरदास- अनुशासन पर बल दिया।
4. गुरु रामदास- मुगल सम्राट अकबर द्वारा प्राप्त भूमि पर अमृतसर नामक नगर बसाया।
5. गुरु अर्जुनदेव- आदि ग्रंथ का संकलन किया ।
   अमृतसर में स्वर्णमंदिर का निर्माण।
   जहांगीर द्वारा इन्हें मृत्युदंड दिया गया।
6. गुरु हरगोविन्द- अकाल तख्त की स्थापना की। सिक्खों को लड़ाकू बनाया।
7. गुरु हरराय- अपने पुत्र रामराय की औरंगजेब के दरबार में भेजा।
8. गुरु हरकिशन- चेचक के कारण जल्दी ही मृत्यु हो गई।
9. गुरु तेगबहादुर- इस्लाम धर्म न स्वीकार करने के कारण औरंगजेब ने मृत्युदंड दिया।
10. गुरु गोविन्द सिंह- खालसा पंथ की स्थापना की
    - औरंगजेब के जीवनपर्यंत संघर्ष किया।
    - नांदेर में इनकी हत्या कर दी गई।
    - इन्होंने गुरु पद समाप्त किया।

सूफी आन्दोलन/सूफीवाद

- सूफीवाद का शुद्ध शब्द 'तसव्वुफ' अर्थात् 'परमसत्य' का ज्ञान प्राप्त करना है।
- सूफी शब्द की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है लेकिन अधिकांश विद्वानों का मानना है कि इसकी उत्पत्ति अरबी भाषा के शब्द 'सूफ' से हुई है जिसका अर्थ है- 'ऊन'। अर्थात् वे मुस्लिम संत जो सांसारिकता से अलग होकर निर्धनता का जीवन व्यतीत करते थे और ऊनी कपड़ा पहनते थे वही सूफी कहलाए।
- सूफीवाद का उदय इस्लाम के उदय के साथ माना जाता है।
- प्रारम्भिक सूफी संत इस्लामी कानूनों को अनिवार्य मानते थे बाद में यह दो भाग में बँट गए-

1. **बा-शरा**-वे सूफी जो इस्लामी रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं का पालन करना अनिवार्य समझते थे। वे बा-शरा कहलाए।
2. **बे-शरा**-वे सूफी संत जो इस्लामी परम्पराओं या कानूनों को पालन करना अनिवार्य नहीं समझते थे।

- सूफीवाद में प्रेम को महवपूर्ण स्थान दिया गया और यह प्रेम ईश्वरीय प्रेम है जिसको 'इश्क-ए-हकीकी' कहा जाता है।

भारत में सूफीवाद

- भारत में प्रारम्भिक सूफीवाद का इतिहास अस्पष्ट है लेकिन भारत में सूफीवाद का वास्तविक संस्थापक/प्रचारक अबुल हसन हुजिब्ररी को माना जाता है जिन्हें हजरत दातागंज भी कहा जाता है। ये महमूद गजनवी के समकालीन थे जो गजनवी के समय पंजाब आए।
- अबुल फजल ने 14 सिलसिलों की चर्चा किए लेकिन भारत में चार सिलसिले ही लोकप्रिय हुए-

1. चिश्ती सिलसिला

- चिश्ती सिलसिला का संस्थापक ख्वाजा अबूइश्हाकसामी चिश्ती थे। भारत में इस शिलशिला के संस्थापक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती थे।
- तराइन के द्वितीय युद्ध के पश्चात् ये भारत आए और अजमेर में जाकर अपनी खानकाह स्थापित किया और ये हिन्दू समुदायों के बीच काफी लोकप्रिय हुए।
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य शेख कुतुबुद्दीन बक्तियार काकी ने अपने जीवन काल में दिल्लो में एक खानकाह स्थापित किया। इनका संगीत से अत्यधिक लगाव था और संगीत सुनते-सुनते ही इनकी मृत्यु हो गयी और दिल्ली में इन्हें दफना दिया गया।
- शेख बक्तियार काकी के सबसे अच्छे शिष्य बाबा फरीद थे इन्होंने अपनी खानकाह अजोधन (पंजाब) में स्थापित किया। बाबा फरीद हिन्दुओं के काफी करीब थे और सिक्खों को आदि ग्रंथ में इनका उल्लेख किया गया। इनकी दरगाह पाकपाटन में बनाई गई। बाबा फरीद बलबन की पुत्री हुजैरा से विवाह किया था।
- बाबा फरीद के सबसे योग्य शिष्य हजरत निजामुद्दीन औलिया थे जो बचपन से ही सूफी संत हो गए।
- औलिया दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा लेकिन किसी सुल्तान का संरक्षण नहीं प्राप्त किया।
- इन्होंने चिश्ती सिलसिले को अखिल भारतीय स्तर पर प्रचार किया इसलिए इन्हें महबूब-ए-इलाही' या 'सुल्तान-उल-औलिया' कहा जाता है। ये योग-साधना में अत्यन्त विश्वास करते थे।
- शेख शलीम चिश्ती अकबर के समकालीन थे जिसने सीकरी में अपनी खानकाह स्थापित किए और ये इस सिलसिले के अंतिम सूफी संत थे। इन्हीं के आशीर्वाद से अकबर को सलीम जैसा पुत्र उत्पन्न हुआ।

2. सुहरावर्दी सिलसिला

- इस सिलसिला के संस्थापक शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी थे भारत में इसके संस्थापक शेख बहाउद्दीन जकारिया थे।

Pariksha Manthan

- बहाउद्दीन जकारिया भारत आने के बाद मुल्तान में अपनी खानकाह स्थापित की। इन्होंने समकालीन राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया। ये इल्तुतमिश के राजकीय संरक्षण को प्राप्त किया।
- बहाउद्दीन जकारिया के बाद इनके पुत्र शेख सदरुद्दीन इस सिलसिले के प्रमुख संत हुए। इन्होंने उत्तराधिकार में प्राप्त सारी सम्पत्ति को दान कर दिया। इन्होंने बलबन के पुत्र मुहम्मद की पत्नी से विवाह किया था।
- शेख सदरुद्दीन के बाद इनके पुत्र शेख रुक्नुद्दीन अब्बुलफत सबसे बड़े सूफी संत हुए। इनके समय सुहरावर्दी सिलसिले का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार हुआ। इनका सुल्तानों एवं अमीरों से घनिष्ठ सम्बंध था। इन्होंने कहा कि लालच, क्रोध, अहंकार को छोड़ देना चाहिए क्योंकि ये लोगों को जानवर बना देते हैं।
- ये सिलसिला चिश्ती सिलसिले की भांति अखिल भारतीय सिलसिला नहीं बन सका। इसके लिए इसकी नीतियां जिम्मेदार थीं।
- इस सिलसिले के संतों ने शासक वर्ग एवं कुलीन वर्गों से संबंध बनाए और उन्हीं लोगों को अपने खानकाह में आने की अनुमति दी।

3. कादिरी सिलसिला

- इस सिलसिला का संस्थापक शेख अब्दुल कादिर जिलानी थे और भारत में इसके संस्थापक शेख मुहम्मद जिलानी थे।
- शेख मुहम्मद जिलानी 1481 ई. में भारत आए और उच्छ में अपनी खानकाह स्थापित किए।
- इस सिलसिले के संत शासकीय सेवा को अच्छा मानते थे और संगीत को प्रश्रय नहीं दिया।
- इस सिलसिले के संत हरे रंग की पगड़ी बांधते थे और गुलाब का फूल लगाते थे जो शांति का प्रतीक था।
- इस सिलसिले का सबसे बड़ा केन्द्र पंजाब के मुल्तान में था।

4. नक्शबंदी सिलसिला

- इस सिलसिले का संस्थापक शेख बहाउद्दीन नक्शबंदी थे और भारत में इसके संस्थापक ख्वाजा बाकी बिल्लाह थे।
- ख्वाजा बाकी बिल्लाह 1597 ई. में अकबर के समय काबुल से दिल्ली आए और यहीं अपनी खानकाह स्थापित किए। ये सूफियों में काफी कट्टर थे जो अकबर की उदार नीतियों का प्रतिकार करने दिल्ली आए।
- ख्वाजा बाकी बिल्लाह के बाद शेख फारुख अहमद सरहिन्दी इस सिलसिले के संत हुए। ये भी बहुत कट्टर संत थे। इन्होंने भारत में इस्लाम धर्म का भरपूर प्रचार-प्रसार किया इसीलिए इन्हें मुजादिया/मुजादिद (पुनर्जागरण करने वाला) की उपाधि दी गई। इन्होंने अपने आप को कयूम घोषित किया।
- इन्होंने कयूम का अर्थ जो इंसान-उल-कामिल से ऊपर बताया। अल्लाह ने कयूम का पद मुझे दिया है मेरे बाद मेरे तीन उत्तराधिकारी को ये पद और देगा।
- दूसरे कयूम-शेख मुहम्मद मासूम थे। औरंगजेब इन्हीं का शिष्य था और इन्हीं के प्रभाव में आकर कट्टरवादी शासक बना।
- भारत में सर्वाधिक कट्टर सिलसिला नक्सबंदी सिलसिला था। इस सिलसिले में शरियत के पालन पर पूर्णतः बल दिया जाता था। इस सिलसिले में शिया और हिन्दू के समान विरोधी थे।
- ये धर्म परिवर्तन में शक्ति के प्रयोग को अच्छा मानते थे और संगीत विरोधी भी थे। ये सरकारी सेवा को अच्छा मानते थे।

Pariksha Manthan

सूफियों के प्रमुख सिलसिले एवं उनके संस्थापक		
सिलसिला	**संस्थापक**	**भारत में इसके संस्थापक**
1. चिश्ती सिलसिला	ख्वाजा अबूइश्हाक सामी चिश्ती	ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
2. सुहरावर्दी सिलसिला	शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी	बहाउद्दीन जकारिया।
3. कादिरी सिलसिला	शेख अब्दुल कादिर जिलानी	शेख मुहम्मद जिलानी
4. नक्शबंदी सिलसिला	शेख बहाउद्दीन नक्शबंदी	ख्वाजा बाकी बिल्लाह

प्रमुख सिलसिला और उनके संत			
चिश्ती सिलसिला	**सुहरावर्दी सिलसिला**	**कादिरी सिलसिला**	**नक्शीबंदी सिलसिला**
1. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती	1. शेख बहाउद्दीन जकारिया	1. शेख मुहम्मद जिलानी	1. ख्वाजा बाकी बिल्लाह
2. शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी	2. शेख सदरुद्दीन	2. शेख मीर मुहम्मद उर्फ (मियां मीर)	2. शेख फारुख अहमद सरहिन्दी
3. शेख हमीदुद्दीन नागौरी	3. शेख रुकनुद्दीन अबुल फत	3. शेख मुल्लाशाही बदख्शी	3. शेख मुहम्मद मासूम
4. बाबा फरीद			4. शेख हुजतुल्ला
5. शेख निजामुद्दीन औलिया			5. शेख अब्दुलअली जुबैर
6. शेख नासिरुद्दीन चिराग-ए-देहलवी			6. शाहवली उल्ला
7. शेख सलीम चिश्ती			7. ख्वाजा मीर दर्द

मुगल वंश – (1526 ई.-1857 ई.)

जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर

- मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर था। इसका जन्म फरगना में 1483 ई. में हुआ था।
- बाबर पितृवंश की ओर से तैमूर वंश का 5वां एवं मातृवंश की ओर से चंगेज खां का चौदहवां वंशज था।
- 1494 में उमर शेख मिर्जा की मृत्यु के बाद यह फरगना का शासक बना। फरगना की राजधानी अन्दीजान थी।
- 1507 में इसने बादशाह की उपाधि धारण की।

बाबर का भारतीय अभियान

- मध्य एशिया की राजनीति की असफलता ने बाबर को भारत में आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया।
- बाबर पानीपत के प्रथम युद्ध के पहले भारत पर चार अभियान किया।
- प्रथम अभियान 1519 में हुआ जब इसने सीमा के दो स्थल बाजौर और भेरा को जीत लिया। बाजौर के युद्ध में बाबर ने सर्वप्रथम तोपों का प्रयोग किया।

- दूसरा अभियान भी 1519 में हुआ जब इसने पेशावर को जीता।
- तृतीय अभियान 1520 में हुआ, इस बार इसने स्यालकोट एवं सैयदपुर को जीता।
- चौथा अभियान 1524 में हुआ जब इसने लाहौर और दीपालपुर को जीतकर पंजाब में प्रवेश किया।

पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल 1526)

- 1525 में पंजाब पर अधिकार करने के बाद बाबर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया, इसकी सूचना पाकर इब्राहिम लोदी भी पानीपत की ओर प्रस्थान किया।
- 21 अप्रैल को पानीपत के मैदान में युद्ध हुआ, इसमें इब्राहिम लोदी पराजित हुआ और मारा गया।
- इस युद्ध के बाद लोदी वंश का अंत हुआ और मुगल वंश की स्थापना हुई।
- इस युद्ध में पहली बार बाबर ने तुलगमा युद्ध नीति के साथ तोपों का प्रयोग किया।
- इसके बाद बाबर ने दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया।

खानवा का युद्ध (1527)

- 1527 में यह युद्ध मेवाड़ के शासक राणा सांगा और बाबर के बीच लड़ा गया। इस युद्ध का कारण बाबर का भारत में रहने का निश्चय था।
- खानवा के युद्ध में इब्राहिम लोदी का चचेरा भाई महमूद लोदी राणा सांगा की तरफ से युद्ध किया।
- बाबर ने अपनी सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए जिहाद (धर्मयुद्ध) का नारा दिया।
- इस युद्ध में बाबर विजयी हुआ और गाजी की उपाधि धारण की।

चन्देरी का युद्ध (1528)

- यह युद्ध चन्देरी के शासक मेदिनीराय तथा बाबर के बीच लड़ा गया।
- इस युद्ध में मेदिनीराय पराजित हुआ और चन्देरी पर बाबर का अधिकार हो गया।
- इस युद्ध में शेरशाह बाबार की तरफ से भाग लिया था।

घाघरा का युद्ध (1529)

- यह युद्ध बाबर और इब्राहिम लोदी के चचेरे भाई महमूद लोदी के बीच लड़ा गया।
- महमूद लोदी इस युद्ध में पराजित हुआ और भाग गया।
- मध्यकालीन भारत का यह पहला युद्ध था जो जल और स्थल दोनों में लड़ा गया।
- भारत में बाबर की सफलता का मुख्य कारण उसका तोपखाना था।
- बाबर भारत का पहला मुस्लिम शासक था जिसने बादशाह की उपाधि धारण की।
- बाबर ने गज-ए-बाबरी नामक एक माप की इकाई का प्रचलन किया।
- बाबर ने तुर्की भाषा में तुज्क-ए-बाबरी (बाबरनामा) नाम से अपनी आत्मकथा लिखी।
- 1530 में बीमारी के कारण आगरा में बाबर की मृत्यु हो गई तथा इसे काबुल में दफनाया गया।

बाबर द्वारा भारत में लड़े गये प्रमुख युद्ध

युद्ध	वर्ष	किसे पराजित किया
1. पानीपत का प्रथम युद्ध	1526 ई.	इब्राहिम लोदी को
2. खानवा का युद्ध	1527 ई.	राणा सांगा को
3. चन्देरी का युद्ध	1528 ई.	मेदिनीराय को
4. घाघरा का युद्ध	1529 ई.	महमूद लोदी को

Pariksha Manthan

महत्वपूर्ण तथ्य

- बाबर के तोपखाने की देखभाल का दायित्व उस्ताद अली एवं मुस्तफा नामक दो तुर्की अधिकारियों के हाथों में था।
- बाबर ने पानीपत की विजय के बाद प्रत्येक काबुलवासी को शाहरुखी नामक एक-एक चाँदी का सिक्का दिया।
- इब्राहिम लोदी की माँ ने बाबर को खाने में जहर दिया था।
- बाबर ने तुलगमा युद्ध नीति उजबेगों से सीखी थी।
- मुगल शासक वस्तुतः चगताई तुर्क थे। मंगोल शासक चंगेज खां के एक पुत्र के नाम पर तुर्किस्तान क्षेत्र को चगताई कहा जाता था। मुगल इसी क्षेत्र के तुर्क थे, अतः इन्हें चगताई तुर्क कहा जाता था।

बाबर के पुत्र एवं पुत्रियाँ

हुमायूँ	कामरान	अस्करी	हिन्दाल	गुलबदन बेगम (पुत्री)
↓				
माहम बेगम से उत्पन्न पुत्र	गुलरुख बेगम से उत्पन्न पुत्र	गुलरुख बेगम से उत्पन्न पुत्र	दिलदार बेगम से उत्पन्न पुत्र	दिलदार बेगम से उत्पन्न पुत्री

हुमायूँ (1530–1556)

- हुमायूँ नाम का आशय भाग्यशाली होता है लेकिन यह मुगल शासकों में सबसे अभागा शासक हुआ।
- 1530 में आगरा में इसका राज्याभिषेक हुआ।
- गद्दी पर बैठते ही अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसकी मुख्य समस्यायें थीं—(1) अफगान समस्या (2) कमजोर सैन्य व्यवस्था (3) हुमायूँ के भाई

(1) अफगान समस्या

- महमूद लोदी अपने को अभी भी दिल्ली का वास्तविक उत्तराधिकारी मानता था।
- अफगानों में सबसे महत्वपूर्ण शेर खां था जो हुमायूँ के लिए सबसे बड़ी समस्या बना।

(2) कमजोर सैन्य व्यवस्था

- राजकोष खाली हो जाने के कारण हुमायूँ एक बड़ी सेना नहीं रख सका।

(3) हुमायूँ के भाई

- हुमायूँ ने अपने भाइयों के साथ उदारता का व्यवहार किया और साम्राज्य का वास्तविक विभाजन कर दिया।
- कामरान को काबुल, कंधार एवं पंजाब दे दिया, अस्करी को संभल का क्षेत्र एवं हिन्दाल को मेवात का क्षेत्र दे दिया।

हुमायूँ के अभियान

कालिंजर अभियान (1531)

- इस समय कालिंजर का शासक प्रतापरुद्रदेव था।
- एक महीने के घेरे के बाद जब किले को नहीं जीत सका तो प्रतापरुद्रदेव ने संधि कर ली।

चुनार का प्रथम घेरा (1532)

- चुनार का किला इस समय शेर खाँ सूर के अधीन था।
- हुमायूँ चार महीने तक इसका घेरा डाले रहा लेकिन जीत नहीं सका। शेर खाँ भी लड़ने की स्थिति में नहीं था।

मालवा एवं गुजरात अभियान (1534-35)

- इस समय मालवा का शासक बहादुरशाह था।

Pariksha Manthan

- हुमायूँ के आक्रमण से भयभीत होकर बहादुरशाह भाग गया और इस तरह बहुत आसानी से हुमायूँ का मालवा एवं गुजरात पर अधिकार हो गया।
- हुमायूँ ने अस्करी को यहां का सूबेदार नियुक्त किया।
- अस्करी कानून व्यवस्था बनाने में असफल रहा परिणामस्वरूप बहादुरशाह छिपे हुए स्थान से बाहर आया और अपनी प्रजा के सहयोग से गुजरात पर पुनः अधिकार किया।

चुनार का द्वितीय अभियान (1537)

- शेर खाँ ने 1537 में बंगाल पर आक्रमण किया।
- इस अवसर पर बंगाल के शासक गयासुद्दीन महमूद शाह ने हुमायूँ से सहायता की मांग की परंतु हुमायूँ सहायता नहीं दे सका।
- हुमायूँ ने शेर खाँ के चुनार किले पर आक्रमण अवश्य कर दिया। छह महीने के घेरे के बाद इसने चुनार का किला जीत लिया।

बंगाल अभियान (1538)

- बंगाल का शासक गयासुद्दीन महमूद शाह युद्ध में घायल होकर हुमायूँ के पास पहुँचा और वहीं इसकी मृत्यु हो गई।
- यह देखकर हुमायूँ के हृदय में दया उत्पन्न हुई और शेरखाँ के विरुद्ध अभियान किया।
- इस समय शेरखाँ बंगाल को जीतकर वापस बिहार आ गया।
- जब हुमायूँ बंगाल से वापस आ रहा था तभी शेरखाँ की सेना ने रास्ते में इसे घेर लिया परिणाम—

चौसा का युद्ध (1539)

- यह युद्ध शेरखाँ और हुमायूँ के बीच लड़ा गया।
- अनेक सैनिक गंगा एवं कर्मनासा नदी में डूब कर मर गए तथा हुमायूँ भी गंगा नदी में कूद पड़ा। निजाम नामक एक भिश्ती ने इसे डूबने से बचाया।
- इस तरह शेरखाँ इस युद्ध में विजयी रहा तथा इस उपलक्ष्य में शेरखाँ ने शेरशाह की उपाधि धारण की।

कन्नौज (विलग्राम) का युद्ध (1540)

- यह युद्ध भी हुमायूँ और शेरशाह के बीच लड़ा गया।
- इस युद्ध में हुमायूँ पराजित हुआ।
- इस युद्ध के बाद शेरशाह का आगरा और दिल्ली पर अधिकार हो गया।

हुमायूँ का निर्वासन काल

- हुमायूँ तीन वर्ष तक राजस्थान और सिंध में इधर-उधर भटकता रहा।
- इस बीच में इसने 1541 में हमीदा बानो से विवाह किया जो सिया मौलवी अली अकबर जामी की पुत्री थी।
- 15 अक्टूबर 1542 को अमरकोट में राणा वीरशाल के महल में हमीदा बानो ने एक पुत्र को जन्म दिया जो अकबर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- 1543 में हुमायूँ ने अकबर को अस्करी के संरक्षण में छोड़कर हमीदा बानो के साथ ईरान चला गया और यहां के शासक शाह तहमास्प के यहां शरण ली।
- तहमास्प की सहायता से 1545 में इसने अपने भाइयों से काबुल और कन्धार जीत लिया।

मच्छीवाड़ा का युद्ध (1555)

- यह युद्ध हुमायूँ और अफगान शासक इब्राहिम सूर द्वारा भेजी सेना के बीच लड़ा, इस युद्ध में हुमायूँ विजयी हुआ।

सरहिन्द का युद्ध (1555)

- यह युद्ध हुमायूँ और सिकन्दर सूर के बीच लड़ा।
- इसमें सिकन्दर सूर पराजित हुआ और भाग गया।
- सरहिन्द विजय का श्रेय हुमायूँ ने अकबर को दिया।
- जनवरी 1556 में जब यह अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतर रहा था तभी सीढ़ियों से गिर गया और इसकी मृत्यु हो गई।

Pariksha Manthan

- लेनपूल लिखता है कि हुमायूँ जीवन भर लुढ़कता रहा और अंत में लुढ़ककर ही इसकी मृत्यु हो गई।

हुमायूँ द्वारा लड़े गये प्रमुख युद्ध			
वर्ष	युद्ध का नाम	प्रतिद्वन्दी	परिणाम
1. 1531	कालिंजर का युद्ध	प्रतापरुद्रदेव	संधि
2. 1532	दोराहा का युद्ध	महमूद लोदी	विजयी
3. 1532	चुनार का युद्ध	शेर खाँ	संधि
4. 1539	चौंसा का युद्ध	शेर खाँ	पराजित
5. 1540	कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध	शेरशाह	पराजित
6. 1555	मच्छीवाड़ा का युद्ध	इब्राहिमसूर	विजयी
7. 1555	सरहिन्द का युद्ध	सिकन्दरसूर	विजयी

महत्वपूर्ण तथ्य

- हुमायूँ ने अपना राजदरबार सूफियाना ढंग से सुसज्जित किया था।
- हुमायूँ एवं शेरशाह के बीच झगड़े का मुख्य कारण बंगाल था।
- कन्नौज युद्ध का आँखों देखा वर्णन मिर्जा हैदर दुग्लत ने किया है क्योंकि यह इस युद्ध में हुमायूँ की तरफ से भाग लिया था।

सूरवंश (1540–55 ई.)

शेरशाह सूरी (1540-45)

- शेरशाह सूरी भारत में द्वितीय अफगान वंश का संस्थापक था।
- शेरशाह ने जो कार्य किये उसके आधार पर न केवल साम्राज्य निर्माता बल्कि इसे अकबर का अग्रगामी कहा जाता है।
- इसके बचपन का नाम फरीद था। इसका जन्म 1472 में बजबारा या नरनौल में हुआ तथा इसके पिता का नाम हसन था।
- 1494 में सिकन्दर लोदी ने जमाल खाँ को जौनपुर के फौजदार पद पर नियुक्त किया।
- 1494 में फरीद पिता से नाराज होकर जौनपुर आया और यहां पर इसने शिक्षा प्राप्त की।
- 1520 में हसन की मृत्यु के बाद यह अपनी पिता की गद्दी का मालिक हो गया।
- बहार खाँ (महमूदशाह) के साथ एक शिकार यात्रा में इसने एक शेर का वध कर दिया जिससे इसने शेरखां की उपाधि धारण की।
- लोहानी सरदारों के षडयंत्र के कारण इसे बिहार छोड़ना पड़ा और ये बाबर की सेना में शामिल हो गया और चन्देरी के युद्ध में इसने बाबर की तरफ से युद्ध किया।
- 1539 में इसने चौसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर शेरशाह की उपाधि धारण की।
- 1540 में इसने कन्नौज के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर भारत का सुल्तान बना।
- शेरशाह सुल्तान बनने से पहले 1529 ई. में बंगाल के शासक नुसरतशाह को पराजित कर 'हजरते-आला' की उपाधि धारण की। 1540 ई. में कन्नौज के युद्ध में हुमायूं को पराजित कर 'सुल्तान' की उपाधि धारण की।

बंगाल विद्रोह का दमन (1541)

- बंगाल के गवर्नर खिज्रखाँ ने 1541 में विद्रोह कर दिया।
- इसने अब बंगाल को 19 सरकारों में बांट दिया और प्रत्येक सरकार में एक शिकदार-ए-शिकदारान की नियुक्ति की जो सुल्तान के सीधे नियंत्रण में थे।

मालवा विजय (1542)

- इस समय यहां मल्लू खां (कादिरशाह) शासक था। इसने अपनी राजधानी उज्जयिनी में शेरशाह का स्वागत किया और मालवा राज्य शेरशाह को सौंप दिया।

Pariksha Manthan

रायसीन विजय (1543)

- यहां का राजा पूरनमल चौहान था।
- शेरशाह ने रायसीन के दुर्ग को चालाकी एवं धोखे से विजित किया, जो इसके जीवन में कलंक था।

मारवाड़ विजय

- यहां का शासक मालदेव था।
- यह राजपूतों के शौर्य से इतना प्रभावित हुआ कि इसने कहा—मुठ्ठी भर बाजरे के लिए मैं हिन्दुस्तान को प्राय: खो चुका था।

कालिंजर अभियान (1544)

- यहां का शासक कीर्ति सिंह था।
- कालिंजर का घेरा लगभग 7 महीने तक पड़ा रहा।
- जब किले को विजित नहीं कर सका तब शेरशाह ने मई 1545 में किले की दीवार को गोला बारूद से उड़ा देने की आज्ञा दी।
- युद्ध सामग्री में आग लगने से शेरशाह गम्भीर रूप से घायल हो गया और इसकी मृत्यु हो गई, लेकिन मरने से पहले इसे किले को जीतने का समाचार प्राप्त हो गया था।

भू-राजस्व व्यवस्था

- सर्वप्रथम शेरशाह ने गज-ए-सिकन्दरी के माध्यम से भूमि की नाप कराई और कृषि योग्य भूमि को तीन श्रेणियों (1) उत्तम, (2) मध्यम, (3) निम्न श्रेणी तीनों का औसत उपज निकालकर 1/3 भाग भू-राजस्व निर्धारित किया।
- इस व्यवस्था को जाब्ती प्रणाली के नाम से जाना जाता है।
- भू-राजस्व के अतिरिक्त किसानों से दो अन्य कर वसूल किये:—

  (i) जरीबाना :—यह भूमि की नाम के लिए लिया जाने वाला कर था जो उपज का ढाई प्रतिशत था।

  (ii) महासीलाना :— यह कर वसूली के लिये लिया जाता था जो उपज का 5 प्रतिशत था। इसने किसानों को भूमि का स्वामी बनाया और किसानों को पट्टा दिया और किसानों से इसने कबूलियत (स्वीकृत पत्र) प्राप्त किया।
- इसने अनेक सड़कों का निर्माण कराया जिसमें सबसे प्रमुख थी बंगाल के सोनारगांव से लेकर पंजाब में अटक तक। इसे सड़क-ए-आजम के नाम से जाना जाता था।

मुद्रा

- शेरशाह ने पुराने सिक्कों को बंद करके सोने-चाँदी-तांबे के नए सिक्के चलाये।
- इसने सर्वप्रथम चाँदी का रुपया चलाया और तांबे का दाम चलाया।
- रुपये और दाम में 1:64 का अनुपात था।
- शेरशाह ने पटना नगर की स्थापना की थी।
- इसने सहसराम में अपने लिए मकबरे का निर्माण कराया जो एक कृत्रिम झील के मध्य में स्थित है।

शेरशाह द्वारा लिया जाने वाला कर

1. **खिराज**—(भूमि कर) औसत उपज का 1/3 भाग
2. **जरीबाना**—भूमि की नाप के लिए उपज का $2^1/_2$%
3. **महासीलाना**—राजस्व अधिकारियों के लिए उपज का 5%

शेरशाह द्वारा बनवाई गई सड़कें

1. **सड़क-ए-आजम**—यह सड़क बंगाल के सोनार गांव से लेकर पंजाब में अटक तक जाती थी। लगभग 1500 मील लम्बी थी।
2. आगरा से बुरहानपुर तक जाती थी।
3. आगरा से चित्तौड़ तक जाती थी।
4. लाहौर से मुल्तान तक जाती थी।

Pariksha Manthan

शेरशाह द्वारा चलाये गये सिक्के

—शेरशाह ने अपने सिक्कों पर फारसी भाषा के साथ-साथ देवनागरी में भी लेख लिखवाये।

—**रुपया**–यह चाँदी का सिक्का था। रुपया का प्रचलन सर्वप्रथम शेरशाह ने किया था।

—**अशरफ**–यह सोने का सिक्का था।

—**दाम**–यह ताँबे का सिक्का था।

अकबर (1556-1605)

- अकबर का जन्म 1542 में अमरकोट में हुआ था तथा इसके बचपन का नाम बदरुद्दीन था।
- हुमायूँ जब फारस गया तब इसे अस्करी के संरक्षण में छोड़ गया।
- हुमायूँ एवं अकबर की दुबारा मुलाकात 3 वर्ष बाद हुई तभी इसका नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर रखा गया।
- हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर पंजाब में सिकन्दर सूर के विरुद्ध सैन्य अभियान में व्यस्त था।
- हुमायूँ की मृत्यु की सूचना मिलने पर पंजाब में गुरुदासपुर जिले में स्थित कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी 1556 को अकबर का राज्याभिषेक हुआ।
- गद्दी पर बैठने के बाद अकबर को पानीपत का द्वितीय युद्ध लड़ना पड़ा।
- यह युद्ध मुहम्मद आदिल शाह के सेनापति हेमू और अकबर के बीच लड़ा गया।
- प्रारम्भ में हेमू ने आगरा और दिल्ली पर अधिकार करके दिल्ली में अपने को स्वतंत्र शासक घोषित किया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- जब हेमू पंजाब की ओर बढ़ा तो 5 नवम्बर 1556 को पानीपत के मैदान में अकबर की सेना के साथ युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में हेमू पराजित हुआ और इसकी हत्या कर दी गई।
- पानीपत के प्रथम युद्ध ने भारत में मुगलवंश की स्थापना की थी किन्तु दूसरे युद्ध ने भारत में मुगलों की शक्ति को पुनः स्थापित किया।
- जब बैरम खाँ मक्का जा रहा था तब गुजरात में पाटन नामक स्थान पर 1561 में इसकी हत्या कर दी गई।
- 1560 से 1564 तक अकबर हरम की स्त्रियों के प्रभाव में रहा। अकबर पर इसकी धाय मां माहमअनगा का सर्वाधिक प्रभाव था।
- 4 वर्ष के इस शासन को पर्दा शासन के नाम से जाना जाता है।

साम्राज्य विस्तार

- मालवा के विरुद्ध अभियान से लेकर असीरगढ़ के पतन तक चार दशकों (40 वर्ष) के दौरान अकबर की भूमिका एक महान विजेता तथा साम्राज्य निर्माता की थी।

मालवा विजय

- सर्वप्रथम अकबर ने 1561-62 में मालवा के शासक बाजबहादुर को पराजित कर मालवा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

गोडवाना विजय

- 1564 में अकबर ने गोडवाना अभियान किया और यहां की राजधानी चौरागढ़ के निकट एक युद्ध में रानी दुर्गावती को पराजित कर दिया और यहां मुगलों का अधिकार हो गया।

राजपूताना विजय

- राजस्थान में साम्राज्य विस्तार के लिए अकबर द्वारा अपनाई गई नीति की विशेषता थी :—

  (1) स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार करने वाले अथवा विवाह संबंधों के इच्छुक राजपूत राजाओं को अपनी

Pariksha Manthan

अधीनता में लेना और उनका राज्य उन्हें वापस कर देना तथा मुगल सेना में उन्हें उच्च पद प्रदान करना।

(2) शत्रुतापूर्ण व्यवहार में लिप्त राजाओं को पराजित कर उनके राज्य को मुगल साम्राज्य में मिलाना।

- आमेर (जयपुर) के शासक भारमल पहला राजपूत राजा था जिसने 1562 में स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार की और अपनी पुत्री का विवाह अकबर के साथ किया।
- अकबर ने भारमल के पुत्र भगवानदास एवं पौत्र मानसिंह को उच्च पद प्रदान किया।
- राजपूत राज्यों में मेवाड़ ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।
- इस समय मेवाड़ का शासक राणा उदय सिंह था।
- 1567 में अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण करके उसे जीत लिया इस अवसर पर उदयसिंह जंगलों में भाग गए थे।
- 1572 में राणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र राणा प्रताप सिंह मेवाड़ के शासक बने।
- राणा प्रताप ने जीवन पर्यन्त अकबर से संघर्ष किया।
- 1576 में अकबर ने राणा प्रताप के विरुद्ध आक्रमण किया परिणामस्वरूप हल्दीघाटी का युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में मुगल विजयी रहे।

गुजरात विजय

- इस समय गुजरात का शासक मुजफ्फर खाँ तृतीय था।
- 1572 में अकबर ने स्वयं गुजरात अभियान किया तथा 1573 में इसे जीतकर मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

दक्षिण विजय

- अकबर पहला मुगल शासक था जिसने दक्षिण अभियान किया।
- इस समय दक्षिण में खान देश, अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा प्रमुख सल्तनत थे।
- खान देश दक्षिण का पहला राज्य था जिसने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।

अहमदनगर अभियान

- सर्वप्रथम 1593 में अकबर ने एक मुगल सेना अहमदनगर विजय के लिए भेजी।
- इस समय अहमदनगर की सुरक्षा का भार चांद बीबी पर था जो अहमदनगर के शासक निजामशाह की पुत्री थी।
- 1601 में इसने किले को जीत लिया तथा दक्षिण विजय के उपलक्ष्य में अकबर ने दक्षिण के बादशाह की उपाधि धारण की।

अन्य कार्य

- अकबर 1562 में युद्ध में बंदी बनाये गए लोगों के लिए दास प्रथा समाप्त कर दिया।
- 1563 में इसने तीर्थ यात्रा कर तथा 1564 में जजिया कर समाप्त किया।
- 1575 में फतेहपुर सीकरी में इसने एक इबादतखाना का निर्माण कराया। इसका उद्देश्य धर्म की सत्यता को जानने की उत्सुकता थी।
- जैन विद्वानों में हरि विजय सूरि जिसको इसने जगतगुरु तथा जिन चन्द्र सूरि जिसे इसने युग प्रधान की उपाधि दी। अकबर इनसे प्रभावित हुआ।
- हिन्दू धर्म के कर्म एवं पुनर्जन्म के सिद्धान्त को ग्रहण किया। यह हिन्दू धर्म से सर्वाधिक प्रभावित हुआ।
- 1580 में पहला ईसाई मिशन फतेहपुर सीकरी पहुँचा जिसमें मॉसरेट, अक्वेविया और एनरिक्वेज इसके सदस्य थे। अकबर ने इनसे भी वार्ता की।
- सितम्बर 1579 में महजर घोषणा-पत्र नाम से एक दस्तावेज जारी किया जिसकी रचना शेख मुबारक ने की थी।

Pariksha Manthan

- इसके द्वारा अकबर को इस्लाम धर्म से सम्बंधित विवादों के निबटारे का सर्वोच्च अधिकार प्राप्त हुआ और अब यह इमाम-ए-आदिल हो गया।
- महजर में अकबर को अमीर-उल-मोमनिन (खलीफा) कहा गया है।
- 1582 में अकबर ने दीन-ए-इलाही धर्म की स्थापना की।
- अबुल फजल इस सम्प्रदाय का मुख्य पुरोहित बना।
- प्रतिष्ठित हिन्दुओं में केवल बीरबल ने ही इसे स्वीकार किया।
- अकबर के दीन-ए-इलाही के बारे में स्मिथ ने लिखा है कि दीन-ए-इलाही अकबर की बुद्धिमत्ता का नहीं बल्कि इसकी मूर्खता का प्रतीक था।

अकबर के नौरत्न

1.अबुल फजल	6. टोडरमल
2.फैजी	7. अब्दुर्रहीम खानखाना
3.बीरबल	8. मुल्ला दो प्याजा
4.तानसेन	9. हकीम हुमाम
5.राजा मानसिंह	

अकबर के प्रमुख कार्य

— 1562 ई. में दास प्रथा की समाप्ति

— 1563 ई. में तीर्थयात्रा कर की समाप्ति

— 1564 ई. में जजिया कर की समाप्ति

— 1575 ई. में इबादतखाने का निर्माण

— 1578 ई. में इबादतखाना सभी धर्मों के विद्वानों के लिए खोला गया।

— 1579 ई. में महजर की घोषणा

— 1582 ई. में दीन-ए-इलाही की स्थापना

अकबर के समय में प्रमुख विद्वान

1.अबुल फजल	—	अकबरनामा
2.निजामुद्दीन अहमद	—	तबकात-ए-अकबरी
3.अब्दुल कादिर बदाँयूनी	—	मुन्तखब-उत-तवारीख
4.फैजी	—	कवि थे अनेक संस्कृत ग्रंथों का फारसी अनुवाद किया
5.बीरबल	—	हिन्दी के विद्वान
6.अब्दुर्रहीम खानखाना	—	रहीम सतसई
7.राजा भानसिंह	—	हिन्दी के विद्वान

महत्वपूर्ण तथ्य

- अकबर का प्रथम विवाह हिन्दाल की पुत्री रुकैया बेगम से हुआ था।
- मेड़ता अभियान 1562 के दौरान अकबर ने युद्धबंदियों के लिए दास प्रथा का निषेध किया।
- अकबर ने जैन आचार्य विजयसेन सूरि को काली सरस्वती की उपाधि दी।
- अकबर ने कृष्णभक्ति शाखा के संत विट्ठलनाथ को गोकुल एवं जैतपुर की जागीर प्रदान की थी।
- बीरबल का वास्तविक नाम महेशदास था। ये काल्पी के निवासी थे। ये ब्रह्मा उपनाम से कवितायें लिखते थे।
- अकबर के राजकवि फैजी थे।
- कृष्ण भक्ति शाखा के संत नंददास अकबर के अनुरोध पर उसके दरबार में गये और वही गीत गाते हुए ईश्वरलीन हो गये।
- अकबर की इच्छानुसार अब्दुल कादिर बदायूंनी ने रामायण का फारसी भाषा में अनुवाद किया था।
- अकबर सभी धर्मों का सम्मान करता था। इसके समय में कानून की दृष्टि में सभी समान थे। यह निरंकुश होते हुए भी प्रजा कल्याण में रुचि लेता था। अतः इसे 'प्रबुद्ध निरंकुश' कहा जा सकता है।

- भू-राजस्व प्रशासन के क्षेत्र में शेरशाह एवं अकबर के बीच टोडरमल नैरन्तर्य की कड़ी थे। वस्तुतः टोडरमल शेरशाह के समय में भी भू-राजस्व अधिकारी रह चुके थे।

जहांगीर (1605-1627)

- जहांगीर के बचपन का नाम सलीम था।
- इसका पहला विवाह मानसिंह की बहन मानबाई के साथ हुआ था जिसे इसने शाहबेगम की उपाधि दी।
- 1601 में मानबाई ने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली।
- इसका दूसरा विवाह जोधाबाई या जगत गुसाई के साथ हुआ।
- 1599 में जहांगीर ने अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया और इलाहाबाद आकर स्वतंत्र रूप से कार्य करने लगा।
- 1605 में अकबर की मृत्यु के बाद आगरा के किले में इसका राज्याभिषेक हुआ।
- गद्दी पर बैठते ही इसने 12 अध्यादेश जारी किये जिनमें महत्वपूर्ण थे छोटे-छोटे अनेक करों की समाप्ति, मद्यनिषेध, अस्पतालों एवं हकीमों की व्यवस्था, रविवार एवं बृहस्पतिवार को पशुबलि पर रोक तथा पुराने कैदियों की रिहाई।
- जहांगीर एक न्यायप्रिय शासक था, सबको न्याय मिले इसके लिए इसने सोने की जंजीर लगवाई जिसे जंजीर-ए-अदली के नाम से जाना जाता था।
- एक जैन संत मानसिंह ने इसके बारे में भविष्यवाणी की थी कि इसका शासन दो वर्ष से अधिक नहीं चलेगा।

खुशरो का विद्रोह

- 1606 में खुशरो विद्रोह करके तनतारन (पंजाब) पहुँचा और सिक्खों के पांचवे गुरु अर्जुन से आशीर्वाद प्राप्त किया।
- लाहौर के पास भैरावल नामक स्थान पर जहांगीर और खुशरो के बीच युद्ध हुआ जिसमें खुशरो पराजित हुआ और बंदी बना लिया गया।
- जहांगीर ने गुरु अर्जुन देव को मृत्यु दण्ड दे दिया था।

मेवाड़ अभियान

- इस समय यहां का शासक अमरसिंह था।
- 1614 में खुर्रम के नेतृत्व में मेवाड़ अभियान हुआ।
- खुर्रम के आतंक से घबराकर अमर सिंह ने जहांगीर से संधि करने को तैयार हो गया।

मेवाड़ की संधि

- 1615 में इस संधि के द्वारा अमरसिंह ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की।
- जहांगीर ने चित्तौड़ सहित सम्पूर्ण मेवाड़ अमरसिंह को वापस कर दिया तथा उसके पुत्र कर्णसिंह को मुगलदरबार में उच्च पद प्रदान किया।

नूरजहां

- इसका जन्म 1577 में हुआ था।
- इसका प्रारम्भिक नाम मेहरुन्निसा था।
- इसके पिता ग्यासबेग (एतमादुद्दौला) थे तथा माता का नाम असमत बेगम था जिन्होंने गुलाब के फूल से इत्र का अविष्कार किया।
- 1594 में मेहरुन्निसा का विवाह अलीकुली खाँ से हुआ।
- नूरजहां का प्रशासन में अत्यधिक प्रभाव था।
- जहांगीर स्वयं कहता था, कि मैंने बादशाहत नूरजहां बेगम को सौंप दिया है अब मुझे शेर भर शराब और आधा शेर कबाब चाहिए।
- 1627 में जहांगीर कश्मीर में रुका तथा जब यह कश्मीर से वापस आ रहा था तब भिम्बर नामक स्थान पर इसकी मृत्यु हो गई।
- इसके शव को लाहौर लाया गया और यहीं पर शाहदरा में दफनाया गया।

Pariksha Manthan

दक्षिण अभियान

- अकबर की मृत्यु के बाद अहमदनगर के वजीर मलिक अम्बर के नेतृत्व में अहमदनगर स्वतंत्र हो गया था।
- 1616 में खुर्रम के नेतृत्व में दक्षिण अभियान हुआ तथा इसके आतंक से घबराकर मलिक अंबर ने जहांगीर की अधीनता स्वीकार कर ली।
- दक्षिण विजय के उपलक्ष में जहांगीर ने खुर्रम को शाहजहां की उपाधि दी।

खुर्रम का विद्रोह

- 1623 में खुर्रम ने जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया परन्तु असफल रहा।
- अंततः 1626 में जहांगीर से इसने क्षमा मांगकर विद्रोह समाप्त कर दिया।

जहांगीर के समय की घटनायें

1.	खुशरो का विद्रोह	—	1606 ई.
2.	मेवाड़ अभियान	—	1614 ई.
3.	अहमदनगर अभियान	—	1616 ई.
4.	कंधार की पराजय	—	1622 ई.
5.	खुर्रम का विद्रोह	—	1623-26 ई.
6.	महावत खाँ का विद्रोह	—	1625 ई.

महत्वपूर्ण तथ्य

- जहाँगीर का जन्म सीकरी गाँव में हुआ था।
- जहाँगीर ने दानियाल (भाई) के पुत्रों को ईसाई धर्म ग्रहण करने की अनुमति प्रदान की। इसकी प्रशंसा स्पेन के तत्कालीन शासक फिलिप III ने किया है।
- मेहरुन्निसा का शाब्दिक अर्थ है 'अत्यंत प्यारी'।

जहांगीर के 12 अध्यादेश

1. छोटे-छोटे अनेक करों की समाप्ति।
2. सड़कों पर चोरी-डकैती रोकने से सम्बन्धित नियम।
3. दूसरों के घरों पर अधिकार करने एवं अंग-भंग का निषेध।
4. मादक पदार्थों के प्रयोग पर रोक।
5. अस्पतालों का निर्माण एवं हकीमों की नियुक्ति।
6. मृत्यु के बाद उत्तराधिकार सम्बन्धी नियम।
7. बृहस्पतिवार एवं रविवार के दिन पशु वध पर रोक।
8. रविवार के दिन का विशेष सम्मान।
9. मनसब एवं जागीरों की पुष्टि।
10. मदद-ए-माश की पुष्टि।
11. धशबी का निषेध अर्थात् अपने कार्य क्षेत्र में वैवाहिक सम्बन्धों पर रोक।
12. कर्मचारियों के वेतनभत्ते में वृद्धि तथा कैदियों की रिहाई।

शाहजहां (1628-1658)

- 1592 में लाहौर में शाहजहां का जन्म हुआ था।
- इसकी माता का नाम जोधाबाई (जगतगुसाई) था।
- 1612 में इसका विवाह आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमन्द बानो बेगम से हुआ जिसे शाहजहां ने मुमताज महल की उपाधि दी।
- जहांगीर की मृत्यु के समय शाहजहां दक्षिण भारत में था।
- शाहजहां अकबर और जहांगीर की तुलना में धार्मिक रूप से कट्टर था।
- शाहजहां ने नए मंदिरों के निर्माण पर रोक लगा दिया।
- इसने पुनः तीर्थ यात्रा कर लगाया।
- इसने ईसाई धर्म परिवर्तन पर रोक लगाई।

राजनीतिक घटना

(1) बुन्देलों का विद्रोह

- इसके समय में 1628 में ओरछा के शासक जुझारसिंह ने विद्रोह किया।
- अंततः 1635 में इस विद्रोह का अंत हुआ और जुझारसिंह की हत्या कर दी गई।

(2) पुर्तगालियों का दमन

- 1632 में शाहजहां ने बंगाल के सूबेदार कासिम खाँ को हुगली के पुर्तगालियों का दमन करने का आदेश दिया।
- कासिम खाँ ने हुगली पर आक्रमण करके अनेकों पुर्तगालियों की हत्या की और हजारों बंदी बना लिये गए।

दक्षिण अभियान

- 1630 में शाहजहां ने अहमदनगर अभियान किया।
- इस तरह शाहजहां ने दक्षिण में स्थाई रूप से मुगल सत्ता स्थापित किया और औरंगजेब को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया।

कन्धार विजय

- 1638 में यहां के प्रशासक अलीमर्दान खाँ को शाहजहां ने अपने पक्ष में कर लिया।
- इसने कन्धार शाहजहां को सौंप दिया।

शाहजहां के पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध

- 1657 में शाहजहां बीमार पड़ा एवं दक्षिण भारत में इसके मृत्यु की अफवाह उड़ गई परिणामस्वरूप मुराद एवं शाहशुजा ने अपने को सम्राट घोषित किया।
- औरंगजेब ने धैर्य से काम लिया और मुराद को अपनी तरफ मिलाकर दारा शिकोह के विरुद्ध युद्ध किया।

शाहजहाँ के समय में होने वाले विद्रोह

1. बुंदेलों का विद्रोह —1628 से 1635 तक
2. खान-ए-जहाँ लोदी का विद्रोह —1629 से 1633 तक
3. पुर्तगालियों का दमन —1632 ई. में

शाहजहाँ के पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध

1. बहादुरपुर का युद्ध	1658 में	शाहशुजा एवं दारा की शाही सेना।
2. धरमत का युद्ध	1658 में	औरंगजेब एवं मुराद की संयुक्त सेना तथा दारा की शाही सेना।
3. सामूगढ़ का युद्ध	1658	औरंगजेब एवं मुराद की संयुक्त सेना एवं दारा के बीच।
4. खजुवा का युद्ध	1659	औरंगजेब एवं शाहशुजा के बीच
5. देवराई का युद्ध	1659	औरंगजेब एवं दारा के बीच

महत्वपूर्ण तथ्य

- शाहजहाँ का वास्तविक नाम खुर्रम था जिसका अर्थ है 'आनंददायक'।
- शाहजहाँ ने तख्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन) का निर्माण कराया। इस सिंहासन का प्रारुपकर्ता जेरोनियो-विरोनियो नामक एक यूरोपीय था।
- शाहजहाँ ने कवीन्द्राचार्य के अनुरोध पर इलाहाबाद एवं बनारस में तीर्थयात्रा कर समाप्त कर दिया था।
- शाहजहाँ ने दाराशिकोह को "शाह बुलंद इकबाल" की सर्वोच्च उपाधि दी थी।
- दाराशिकोह कादिरी सिलसिले के सूफी संत मुल्लाशाह बदख्शी का शिष्य था।
- दाराशिकोह ने भगवद् गीता, योग वशिष्ठ तथा 52 उपनिषदों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद किया। उपनिषदों के अनुवाद के सिर्र-ए-अकबर नाम दिया।
- दारा ने सफीनत-उल-औलिया तथा मज्म-उल-बहरैन नामक फारसी ग्रंथ की रचना की।

Pariksha Manthan

- इटालवी यात्री मनूची दारा के तोपची के रूप में कार्य किया।
- कैदी जीवन व्यतीत करने के दौरान शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा बेगम ने उसकी सेवा की।

औरंगजेब (1658-1707)

- इसका जन्म 1618 में उज्जैन के निकट दोहद नामक स्थान पर हुआ था।
- इसने दो बार अपना राज्याभिषेक करवाया। 1658 में आगरा में और 1659 में दिल्ली में।
- गद्दी पर बैठते ही इसने छोटे-छोटे 80 करों को समाप्त कर दिया।
- इस्लाम धर्म के प्रति इसकी कट्टरता इतनी अधिक थी कि इसे दरबेश एवं जिंदा पीर के नाम से जाना जाता था।
- इसका राजत्व का सिद्धांत इस्लामी राजत्व का सिद्धांत था।

जाटों का विद्रोह

- 1669 में गोकुल के नेतृत्व में मथुरा के आस-पास के क्षेत्रों में जाटों ने विद्रोह किया।
- 1670 में मथुरा के केशवराय मंदिर को तुड़वाकर इसके स्थान पर मस्जिद का निर्माण कराया तो यहां विद्रोह बढ़ गया।

सतनामियों का विद्रोह

- 1672 में मेवात और नारानौल क्षेत्र में सतनामियों ने विद्रोह कर दिया।
- यह विद्रोह एक मुगल सिपाही तथा एक सतनामी साधु के सामान्य झगड़े से शुरु हुआ और बड़ा रूप धारण कर लिया।

सिक्खों का विद्रोह

- औरंगजेब के समय सिक्खों के नए गुरु तेगबहादुर थे।
- इन्होंने औरंगजेब की धार्मिक नीतियों का विरोध किया।
- औरंगजेब ने इन्हें दिल्ली बुलाया और इस्लाम धर्म स्वीकार करने को कहा।
- गुरु तेगबहादुर ने इसका विरोध किया और जिसकी वजह से 1775 में इन्हें मृत्यु दण्ड दे दिया गया।
- सिक्खों के 10वें गुरु गुरुगोविंद सिंह हुए।
- इन्होंने 80 हजार सैनिकों की खालसा सेना तैयार की।

अकबर का विद्रोह

- यह औरंगजेब का पुत्र था।
- 1681 में इसने विद्रोह कर दिया और भागकर मराठा शासक सम्भाजी के पास रायगढ़ में शरण ली।
- 1682 में यह फारस चला गया।

औरंगजेब की दक्षिण विजय

- औरंगजेब की दक्षिण विजय का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य का विस्तार करना था।
- इसके अतिरिक्त दक्षिण में मराठे मुगलों के लिए भावी खतरा बन रहे थे अतः इनकी शक्ति को समाप्त करना औरंगजेब का उद्देश्य था।

बीजापुर अभियान (1685-86)

- इस समय बीजापुर का सुल्तान सिकन्दर आदिल शाह था।
- औरंगजेब ने इसे पराजित कर इसके किले पर अधिकार कर लिया और इसे 1 लाख रुपये वार्षिक पेंशन देकर बीजापुर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

गोलकुण्डा अभियान (1686-87)

- इस समय गोलकुण्डा का शासक अबुल हसन कुतुबशाह था।
- औरंगजेब ने इसे बंदी बना लिया और इसे 50 हजार रुपये वार्षिक पेंशन देकर इसके राज्य को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

Pariksha Manthan

मराठों से संघर्ष

- मराठों ने औरंगजेब को अत्यधिक परेशान किया।
- मराठों में शिवाजी ने मुगलों से निरन्तर संघर्ष किया और महाराष्ट्र में मराठों के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- शिवाजी के बाद इनका पुत्र संभाजी मुगलों से निरन्तर संघर्ष किया।
- 1689 में औरंगजेब ने सम्भाजी को बन्दी बना लिया और इनकी हत्या कर दी तथा मराठा राज्य पर अधिकार कर लिया।
- 1707 में अहमदनगर के पास औरंगजेब की मृत्यु हो गई और औरंगाबाद में इसको दफनाया गया।

औरंगजेब की प्रतिक्रियावादी कार्य

1. हिन्दुओं पर पुनः जजिया कर लगाना।
2. राजपूतों को छोड़कर हिन्दुओं को अच्छे घोड़े एवं पालकी की सवारी पर रोक।
3. मंदिरों के निर्माण एवं मरम्मत पर रोक।
4. संगीत पर प्रतिबंध।
5. इतिहास लेखन एवं ज्योतिष पर रोक।
6. मंदिरों को तोड़ने का आदेश।

औरंगजेब के काल में होने वाले विद्रोह

1. जाटों का विद्रोह	गोकुल के नेतृत्व में प्रारंभ	1669 से जीवन पर्यन्त
2. सतनामियों का विद्रोह		1672-73
3. सिक्खों का विद्रोह	गुरु गोविन्द सिंह के नेतृत्व में	1675 से जीवन पर्यन्त
4. राजपूतों का विद्रोह		1678 से जीवन पर्यन्त
5. अकबर का विद्रोह		1681-82 ई. में
6. बुंदेलों का विद्रोह	चंपतराय एवं छत्रशाल के नेतृत्व में	1672 से जीवन पर्यन्त चला।

महत्वपूर्ण तथ्य

- औरंगजेब को आलमगीर I भी कहा जाता है। यह इसकी उपाधि थी।
- औरंगजेब ने कुरान की हस्तलिखित दो प्रतियाँ मक्का और मदीना भेजा।
- पुत्र जन्म के समय हिन्दुओं से लिया जाने वाला कर समाप्त किया।
- इसके समय में प्रशासन में सर्वाधिक हिन्दू मनसबदार थे।

उत्तर मुगलकाल (1707 ई.-1857 ई.)

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके तीन जीवित पुत्रों मुअज्जम उर्फ शाहआलम, मुहम्मद आजम एवं कामबख्श के बीच उत्तराधिकार का युद्ध हुआ जिसमें मुअज्जम उर्फ शाहआलम विजयी हुआ और बहादुरशाह I के नाम से सम्राट बना।

बहादुरशाह I (1707-12 ई.)

- यह धार्मिक दृष्टि से औरंगजेब की तुलना में उदार था।
- उत्तराधिकार के युद्ध में बहादुरशाह I का साथ गुरू गोविन्दसिंह ने दिया था।
- इसके समय में बँदा बहादुर के नेतृत्व में सिक्खों ने विद्रोह किया। यह विद्रोह का दमन करने में असफल रहा।
- इसे शाह-ए-बेखबर उपनाम से जाना जाता है।

बहादुरशाह I के 4 पुत्र

1. जहाँदारशाह
2. अजीम-उस-शान
3. रफी-उस-शान
4. जमान शाह

जहाँदारशाह (1712-13 ई.)

- उत्तराधिकार के युद्ध में जहाँदारशाह विजयी हुआ।
- जहाँदारशाह ने लाल कुँवर नामक वेश्या को अपने महल में रखा।
- इसने जजिया कर को समाप्त किया।

फर्रुखशियर (1713-19 ई.)

- यह अजीम-उस-शान का पुत्र था।
- यह सैय्यद बन्धुओं की सहायता से सम्राट बना। अतः इसने सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को वजीर एवं सैय्यद हुसैन अली को मीरबक्शी तथा दक्षिण के सूबेदार का पद दिया।
- इसके समय में सैय्यद बन्धु साम्राज्य के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बन गये।
- इसके समय में बँदाबहादुर के नेतृत्व में सिक्ख विद्रोह का अंत हुआ।
- इसने तीर्थयात्रा कर समाप्त किया।
- इसके समय में 1715 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एक प्रतिनिधिमंडल जॉन सरमन की अध्यक्षता में इसके दरबार में पहुँचा। इस प्रतिनिधिमंडल में हैमिल्टन नामक एक चिकित्सक भी था जिसने फर्रुखशियर को एक गंभीर रोग से मुक्ति दिलाई। परिणामस्वरूप इसने 1717 ई. में एक फरमान जारी करके कम्पनी को अनेक रियायतें दी।

रफी-उद्-दरजात (1719-19 ई.)

- यह रफी-उस-शान का पुत्र था।

रफी-उद्-दौला (1719-19 ई.)

- यह भी रफी-उस-शान का पुत्र था इसने शाहजहाँ द्वितीय की उपाधि धारण की।

मुहम्मदशाह 'रंगीला' (1719-48 ई.)

- इसका वास्तविक नाम रोशन अख्तर था। यह जमानशाह का पुत्र था।
- इसके समय में सैय्यद बन्धुओं का अंत हुआ।
- इसके समय में चिनकुलिच खाँ (निजाम-उल-मुल्क) ने 1724 में हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- इसके समय में फारस के शासक नादिरशाह का 1739 में भारत पर आक्रमण हुआ। युद्ध में मुहम्मद शाह रंगीला पराजित हुआ।

अहमदशाह (1748-54 ई.)

- यह बहुत ही विलासी एवं अयोग्य शासक था। इसके समय में राज्य की अर्थव्यवस्था बहुत ही कमजोर हो गई थी।
- इसी के शासनकाल में अफगानिस्तान का शासक अहमदशाह अब्दाली ने पंजाब पर आक्रमण किया अंततः इसने पंजाब एवं सिंध अहमदशाह अब्दाली को दे दिया।

आलमगीर II (1754-58 ई.)

- इसके शासनकाल में अहमदशाह अब्दाली दिल्ली आया और एक रूहेला सरदार नजीबुद्दौला को अपना प्रतिनिधि तथा साम्राज्य का मीरबक्शी नियुक्त किया।
- इसी के शासनकाल में प्लासी का युद्ध हुआ था।

शाहआलम II (1759-1806 ई.)

- इसके समय में 1764 में बक्सर का युद्ध हुआ।
- 1765 में इलाहाबाद की संधि द्वारा इसने अंग्रेजी कम्पनी को बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्रदान की।
- 1788 गुलाम कादिर नामक एक अफगान ने इसे अंधा कर दिया। अतः यह अंधा बादशाह के नाम से जाना जाता है।

अकबर II (1806-1837 ई.)

- मुगल सम्राट के नाम के सिक्के भी बंद करा दिये गये।

बहादुरशाह II "जफर" (1837-1857 ई.)

- इसके समय में 1857 का विद्रोह हुआ जिसमें विद्रोहियों ने इसे दिल्ली में हिन्दुस्तान का सम्राट घोषित किया।

Pariksha Manthan

- अंग्रेजों ने इसे बन्दी बनाकर रंगून भेज दिया यहीं 1862 में इसकी मृत्यु हो गई। इसकी कब्र रंगून में है।

सैय्यद बन्धु

- ये हिन्दुस्तानी मुस्लिम अमीरों के नेता थे।
- सैय्यद अब्दुल्ला खाँ एवं सैय्यद हुसैन अली दोनों भाई थे।
- फर्रुखशियर सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को वजीर नियुक्त किया और बहादुर यमीन-उद्-दौला तथा यार-ए-वफादार की उपाधि दी।
- फर्रुखशियर ने सैय्यद हुसैन अली को मीर बक्शी एवं दक्षिण का सूबेदार नियुक्त कर बहादुर फिरोज जंग, उमादुल्मुल्क, अमीर-उल-उमर आदि उपाधि दी।
- ये दोनों भाई सम्राट निर्माता (King Maker) बन गये।

महत्वपूर्ण तथ्य

- जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह एक महान खगोलशास्त्री था। इसने दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, बनारस और मथुरा में आधुनिक उपकरणों से युक्त वेधशाला का निर्माण कराया था। इलाहाबाद में इसने वेधशाला का निर्माण नहीं कराया था।
- 'जिज मुहम्मद शाही' पुस्तक जो नक्षत्रों संबंधी ज्ञान से संबंधित है, इसके लेखक जयपुर के शासक सवाई जयसिंह थे। इन्होंने 1728 ई. में जयपुर शहर की स्थापना की थी। जयसिंह ने अपने शासनकाल में दो अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कराया था। इसने युक्लिड की रचना रेखागणित के तत्व का संस्कृत में अनुवाद कराया था।
- आमेर के कछवाहा वंश के शासक जयसिंह II ने दिल्ली में खगोलीय वेधशाला का निर्माण कराया था जिसे 'जंतर-मंतर' कहते हैं।

मुगल प्रशासन

केन्द्रीय प्रशासन

- केन्द्रीय प्रशासन में सर्वप्रथम व्यक्ति सम्राट होता था।
- मुगल सम्राट सम्प्रभुता संपन्न शासक थे।
- राज्य की समस्त सैनिक असैनिक शक्तियाँ सम्राट में निहित थीं।

सम्राट के पदाधिकारी एक दृष्टि में

1.	वजीर	प्रधानमंत्री
2.	शाहीदीवान	वित्त मंत्री
3.	मीर बख्शी	सैन्य विभाग का अध्यक्ष
4.	सद्र-उस-सुदूर	धार्मिक मामलों का मंत्री
5.	काज़ी-उल-कुजात	न्याय विभाग का अध्यक्ष
6.	मीर-ए-सामां	शाही घराने की देखभाल करने वाला
7.	मीर-ए-आतिश	तोपखाने का प्रमुख अधिकारी
8.	मीर-ए-बहर	जलबेड़े का प्रमुख अधिकारी
9.	मीर-ए-मुंशी	पत्राचार विभाग का अधिकारी
10.	दरोगा-ए-डाकचौकी	डाक एवं गुप्तचर विभाग का प्रमुख
11.	मुहतसिब	धार्मिक अधिकारी

प्रान्तीय प्रशासन

- मुगल काल में प्रान्तीय प्रशासन को व्यवस्थित करने का श्रेय अकबर को जाता है।
- प्रान्तीय प्रशासन केन्द्रीय प्रशासन का प्रतिरूप था।

जिले का प्रशासन

- जिले को सरकार कहा जाता था।
- प्रत्येक सूबा अनेक जिले में विभक्त था।
- यहां कई अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी।

Pariksha Manthan

प्रांत के पदाधिकारी

1. सूबेदार :—यह सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था। इसका मुख्य कार्य कानून व्यवस्था बनाये रखना था। इसे सैनिक एवं न्यायिक अधिकार भी प्राप्त थे।
2. दीवान :—यह प्रांत का वित्त मंत्री होता था। यह अपने कार्य के लिए केन्द्र के प्रति उत्तरदायी था।
3. बख्शी :—यह प्रांतों में सेना की देखभाल और उनके निरीक्षण के लिए था।
4. सद्र :—यह प्रान्तों में धार्मिक हितों की रक्षा करता था।
5. काजी :—सूबेदार के बाद यह प्रान्त का सर्वोच्च न्यायाधीश था।

जिले के पदाधिकारी

1. फौजदार :—यह जिले का प्रमुख अधिकारी था। यह सैनिक अधिकारी होता था। जिले में कानून व्यवस्था बनाये रखना इसका मुख्य कार्य था।
2. अमल गुजार :—यह जिले का वित्त अधिकारी था।
3. काजी :—यह जिले का मुख्य न्यायाधीश था।

मनसबदारी व्यवस्था

- मनसब फारसी भाषा का शब्द है जिसका तात्पर्य है किसी व्यवस्था में किसी का स्थान अर्थात् किसी सरकारी सेवा में मनसब उसकी स्थिति का सूचक है।
- मध्य एशिया में सर्वप्रथम मंगोलों ने यह व्यवस्था शुरु की थी।
- भारत में इस व्यवस्था को अकबर 1575 में प्रारंभ किया।
- अकबर से पहले मध्यकालीन व्यवस्था में सरकारी सेवकों के तीन वर्ग थे—

  1. सैनिक अधिकारी 2. लेखा अधिकारी 3. बुद्धि जीवी वर्ग
- अकबर ने इन तीनों को मिला दिया और सभी मनसबदार कहलाये।
- अकबर ने सभी को एक-एक मनसब दिया जो उनकी स्थिति के सूचक थे।
- अबुल फजल ने उल्लेख किया है कि सम्राट ने 66 प्रकार के मनसब का निर्माण किया जो 10 से लेकर 10 हजार तक थे। बाद में मनसब बढ़ाया गया।
- मनसबदारी व्यवस्था के दो मुख्य सिद्धांत थे—

  (i) सभी मनसबदार व्यक्तिगत रूप से सम्राट के अधीन थे।

  (ii) प्रत्येक मनसबदार को दो पद दिये जाते थे—

  1. जातपद :—मनसबदार का व्यक्तिगत दर्जा था जो उसकी वरिष्ठता का सूचक था। जातपद से ही उसका वेतन निर्धारित होता था।
  2. सवारपद—इससे एक मनसबदार को कितने घोड़े तथा घुड़सवार रखना है, यह निर्धारित होता था।

मनसबदारी व्यवस्था के मुख्य बिन्दु

- अकबर ने 1575 ई. में मनसबदारी व्यवस्था प्रारम्भ की।
- जात मनसब :—यह मनसबदार का व्यक्तिगत रैंक था। इसमें उसकी वरिष्ठता एवं वेतन निर्धारित होता था।
- सवार मनसब :—इससे मनसबदार अपने अधीन कितने घोड़े एवं घुड़सवार रखेगा यह निर्धारित होता था।
- मश्रूत मनसब :—जब किसी मनसबदार को किसी शर्त के साथ अतिरिक्त मनसब दिया जाता था तो उसे मश्रूत मनसब कहा जाता था।
- दो अस्पा—जब एक सवार के लिए दो घोड़े रखने होते थे तो इसे दो अस्पा मनसब कहा जाता था।
- सिंह अस्पा—जब एक सवार के लिए तीन घोड़े रखे जाते थे तो इसे सिंह अस्पा मनसब कहा जाता था।

Pariksha Manthan

- जहांगीर ने सवार पद में 'दु-अस्पा' एवं 'सिंह अस्पा' की व्यवस्था की।
- दु-अस्पा से तात्पर्य है एक सवार के पास दो घोड़े और सिंह-अस्पा से तात्पर्य है एक सवार के पास तीन घोड़े।
- मनसबदारी व्यवस्था वंशानुगत नहीं थी बल्कि योग्यता इसका मुख्य आधार था।

भू-राजस्व व्यवस्था

- मुगल काल में अकबर के समय भू-राजस्व व्यवस्था में सुधार हुआ।
- अकबर ने टोडरमल को शाही दीवान के पद पर नियुक्त किया।
- टोडरमल ने 1580 में आइने-ए-दहशाला नामक व्यवस्था प्रारम्भ की जो जाब्ती प्रणाली का उत्तम रूप था।
- इसके अन्तर्गत प्रत्येक परगने के कानूनगो को यह निर्देश दिया गया कि भूमि को 4 वर्गों में विभक्त करें—

  1. पोलज—प्रत्येक वर्ष खेती हो।
  2. परती—जिसमें 1 वर्ष छोड़कर खेती की जाये।
  3. चाँचर—जिसमें 3 या 4 वर्ष में खेती हो।
  4. बंजर—जिसमें 5 वर्ष से खेती न हुई हो।
- अकबर भू-राजस्व के अतिरिक्त प्रत्येक बीघा पर 10 सेर अनाज लेता था जिसे दहसेरी कर कहते थे।
- अकबर ने अजमेर में भू-राजस्व घटाकर 1/7 अथवा 1/8 कर दिया।
- औरंगजेब के समय में भू-राजस्व 1/2 लिया जाता था।

मुद्रा प्रणाली

- मुगल काल में सोने, चांदी एवं तांबे की मुद्राओं का प्रचलन था।
- मुगल कालीन मुद्रा गोल एवं चौकोर होती थी जिनमें टकसाल का नाम, सम्राट का नाम और जारी किए गए वर्ष का नाम अंकित होता था।
- सोने की सर्वाधिक प्रचलित मुद्रा इलाही थी जिसका प्रचलन अकबर ने किया था।
- चांदी की मुद्रा में रुपया महत्वपूर्ण था इसका प्रचलन शेरशाह सूरी ने किया था।
- इलाही और रुपया में 1:10 का अनुपात था।
- जलाली नामक चांदी की मुद्रा का प्रचलन अकबर ने करवाया था। यह रुपये के 1/2 के बराबर थी।
- मुगल काल में रुपया और दाम 1:40 के अनुपात में थी।
- अकबर की कुछ मुद्राओं में राम सीता का चित्र अंकित है और देवनागरी लिपि में राम सिया लिखा है।

मुगल काल में भूमि के प्रकार

1. पोलज : जिसमें हर वर्ष खेती हो।
2. परती : जिसमें एक वर्ष छोड़कर खेती हो।
3. चाँचर : जिसमें तीन या चार वर्ष में खेती हो।
4. बँजर : जिसमें खेती न हो।

मुगल सम्राटों के न्याय करने के दिन

अकबर	—	बृहस्पतिवार
जहाँगीर	—	मंगलवार
शाहजहाँ	—	बुधवार
औरंगजेब	—	बुधवार

मुगलकालीन स्वर्ण मुद्रा

1. इलाही	—सर्वाधिक लोकप्रिय स्वर्ण मुद्रा थी।
2. संसब/शहंशाह	—सबसे बड़ी मुद्रा थी (लगभग 101 तोला वजन की)
3. रहस	—संसब के आधे वजन का
4. अत्माह	—संसब के चौथाई वजन का
5. विनसत	—संसब के पाँचवें हिस्से के बराबर
6. चुगुल	—संसब के 50वें हिस्से के बराबर

Pariksha Manthan

मुगलकालीन स्थापत्य कला

- स्थापत्य कला के क्षेत्र में मुगल काल महान युग था।
- बाबर को स्थापत्य कला से अत्यधिक प्रेम था।
- बाबर मानसिंह द्वारा निर्मित ग्वालियर के किले से बहुत प्रभावित था।
- बाबर ने पानीपत में काबुली बाग मस्जिद और सम्भल में एक जामा मस्जिद का निर्माण कराया।
- बाबर के एक अमीर अब्दुल मीर बाकी ने अयोध्या में एक मस्जिद का निर्माण कराया जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना जाता है।
- अकबर के समय में मुगल स्थापत्य का विकास हुआ।
- इसके समय हिन्दू और इस्लामी शैलियों का समन्याय हुआ।

हुमायूँ का मकबरा

- यह दिल्ली में स्थित है।
- 1564 में हुमायूँ की पत्नी हाजी बेगम की देखरेख में इसका निर्माण हुआ।
- इस मकबरे के वास्तुकार मीरक मिर्जा गयास थे।
- यह लाल पत्थर की इमारत है।

फतेहपुर सीकरी योजना

- यह योजना 1569 में प्रारम्भ हुई और 1584 में में पूर्ण हुई।
- यह नगर अकबर ने बसाया था।
- अकबर ने यहां अनेक महल बनवाये।

शाहजहांकालीन इमारतें

- इसका काल स्थापत्य काल का स्वर्ण काल था।
- शाहजहां ने 1638 में अपनी राजधानी आगरा से दिल्ली बनायी और यहां पर शाहजहानाबाद नामक नगर बसाया।

जहांगीरकालीन इमारतें

अकबर का मकबरा

- यह आगरा के पास सिकंदरा में स्थित है।
- 1613 में इसका निर्माण हुआ।
- यह 5 मंजिला इमारत है तथा इसमें गुम्बद का निर्माण नहीं किया गया।
- इसमें हिन्दू, इस्लामी और बौद्ध तीनों शैलियों का मिश्रण है।

एत्मादुद्दौला का मकबरा

- 1626 में इसका निर्माण आगरा में हुआ।
- मुगलकाल की यह पहली इमारत है जो संगमरमर से निर्मित है।
- इसमें पित्रड्यूरा शैली से नक्काशी की गई है। यह यूरोप की शैली है जो बहुत महंगी है।
- भारत की यह पहली इमारत है जिसमें इस शैली का प्रयोग हुआ है।

जहांगीर का मकबरा

- यह लाहौर में सहादरा में स्थित है।
- 1628 में नूरजहां ने इसका निर्माण करवाया था।
- यह एक मंजिला इमारत है।
- चित्र कला के माध्यम से इसमें सजावट हुई है।

दिल्ली की इमारतें

दिल्ली का लाल किला :—

- 1638 में इसका निर्माण प्रारंभ हुआ तथा 1658 में यह बनकर तैयार हुआ।
- इस किले के अंदर अनेक इमारतों का निर्माण हुआ।

Pariksha

दीवान-ए-आम :—

- यह संगमरमर से निर्मित तीन तरफ से खुली इमारत है।
- यहीं पर शाहजहां का तख्त-ए-ताउस (मयूर सिंहासन) रखा जाता था।

दीवान-ए-खास :—

- यह भी संगमरमर से निर्मित इमारत है।
- इसकी दीवार पर अमीर खुसरो का एक दोहा लिखा है जो इन इमारतों को उपयुक्त श्रद्धा प्रदान करता है—

अगर फिरदौस बररुये जमी अस्त।

हमी अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त।।

रंग महल :—यह शाहजहां का अपना महल था। यह संगमरमर से निर्मित इमारत थी।

सीस महल :—यह शाही परिवार का स्नानागार था।

दिल्ली की जामा मस्जिद :—

- लाल किले के बाहर 1644 में इसका निर्माण प्रारंभ हुआ और 1658 में बनकर यह तैयार हो गई।
- यह लाल पत्थर की इमारत है।
- इसके ऊपर संगमरमर के तीन गुम्बद बने हैं।

अकबर द्वारा बनवाये गये किले

1.आगरा का किला	1565 ई.
2.लाहौर का किला	1565 ई.
3.अजमेर का किला	1573 ई.
4.अटक का किला	1581 ई.
5.इलाहाबाद का किला	1583 ई.

आगरा की इमारतें

मोती मस्जिद :

- यह आगरा के किले के अन्दर है।
- यह संगमरमर से निर्मित है।

जामा मस्जिद :

- 1648 में शाहजहां ने अपनी पुत्री जहांआरा के सम्मान में इस मस्जिद का निर्माण कराया।
- यह लाल पत्थर में निर्मित है।

ताजमहल :

- यह मुगल काल की सबसे सुंदर इमारत है।
- 1632 में इसका निर्माण प्रारंभ हुआ।
- 1654 में यह बनकर तैयार हुई।
- यह इमारत हुमायूं के मकबरे की शैली पर निर्मित है जिसका वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी था।
- इसकी मुख्य इमारत अष्ट भुजाकार है।
- इसमें मुमताज महल और शाहजहां की कब्र बनी है।
- इसमें मकराना से लाया गया संगमरमर प्रयुक्त किया गया है।

औरंगजेब के समय की इमारतें

राबिया-उद-दौरानी का मकबरा

- यह औरंगजेब की पत्नी थी।
- 1679 में औरंगजेब ने अपनी पत्नी की स्मृति में औरंगाबाद में इस मकबरे का निर्माण कराया था।
- इसको बीबी का मकबरा और दक्षिण का ताजमहल भी कहा जाता है।

लाहौर की बादशाही मस्जिद

- 1672 में इसका निर्माण हुआ।
- इस मस्जिद में 8 मीनारों का निर्माण किया गया।

दिल्ली की मोती मस्जिद

- 1662 में लाल किले के अंदर इसका निर्माण किया गया।
- यह संगमरमर से निर्मित इमारत है।
- इसके अतिरिक्त मथुरा और वाराणसी में भी इसने मस्जिद बनवाई जो लाल पत्थर से निर्मित है।

मुगल चित्रकला

- बाबर को चित्रकला में रुचि थी, इसने अपनी आत्मकथा में ईरानी चित्रकार बिहजाद के चित्रों की मार्मिक समीक्षा की है।
- हुमायूँ को भी चित्रकला में रुचि थी। हुमायूँ ईरानी प्रवास के दौरान यहाँ के दो चित्रकार ख्वाजा अबदुस्समद एवं मीर सैय्यद अली के सम्पर्क में आया।
- हुमायूँ जब पुनः भारत आया तो इन दोनों ईरानी चित्रकारों को अपने साथ लाया और अपनी चित्रशाला में रखा। इस प्रकार मुगल चित्रकला की नींव हुमायूँ ने रखी।
- अकबर ने चित्रकला का एक विभाग खोला और ख्वाजा अब्दुस्समद को उसका अध्यक्ष नियुक्त किया।

अकबर के समय के महत्वपूर्ण चित्रकार

1.ख्वाजा अब्दुस्समद	10. जगन
2.मीर सैय्यद अली	11. सनबल
3.मिस्किन	12. खेमकरन
4.फारुख बेग	13. तारा
5.दसवंत	14. महेश
6.बसावन	15. हरिवंश
7.केशव	16. राम
8.लाल मुकुंद	17. माधव
9.मधु	

- अबुल फजल के अनुसार अकबर की चित्रशाला में सौ से अधिक चित्रकार थे जिसमें 17 बहुत प्रसिद्ध थे। इनमें 13 हिन्दू चित्रकार थे।
- जहाँगीर के समय में मुगल चित्रकला में व्यापक परिवर्तन हुआ। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ईरानी शैली का प्रभाव कम होने लगा और यूरोपीय शैली का प्रभाव बढ़ने लगा।
- जहाँगीर के समय में प्रकृति-चित्रण मुगल चित्रकला की प्रमुख विशेषता बन गई। इसने दुर्लभ फूल-वनस्पतियों, पशु-पक्षियों का चित्र बनाने का आदेश दिया।
- जहाँगीर का सबसे प्रिय चित्रकार अबुल हसन था, जिसने इसके राज्यारोहण का चित्र बनाया है। जहाँगीर ने इसे नादिर-उल-जमाँ (अपने समय का अद्भुत) की उपाधि दी।
- जहाँगीर का दूसरा महत्वपूर्ण चित्रकार मंसूर था। यह लघु-चित्रों के चित्रण में विशिष्ट था। इसने साइबेरिया के सारस एवं लाल फूलों की बहार का चित्र बनाया। जहाँगीर ने इसे नादिर-उल-अस्र (अपने समय का श्रेष्ठ) की उपाधि दी।
- जहाँगीर के समय का एक विशिष्ट चित्रकार बिशनदास था। जहाँगीर ने इसे फारस के सम्राट एवं उसके दरबारियों का चित्र बनाने के लिए इसे फारस भेजा था।

जहाँगीर के समय के चित्रकार

1.अबुल हसन	6. मनोहर
2.मंसूर	7. मु. नादिर
3.फारुख वेग	8. मुराद
4.बिशनदास	9. गोवर्धन
5.दौलत	

- शाहजहाँ को अपना दैवी प्रकार का चित्र बनवाने का बहुत शौक था, जैसे सिर के पीछे प्रकाश का गोला।

ha Manthan

- शाहजहाँ जब अपनी स्थापत्य योजनाओं में व्यस्त हो गया तो मुगल चित्रकला का पतन प्रारम्भ हो गया।

शाहजहाँ के समय के चित्रकार

1.गोवर्धन	5. चतुर
2.मु. नादिर	6. विचित्र
3.बालचन्द्र	7. चिन्तारमण
4.अनूप	

- औरंगजेब धार्मिक कारणों से चित्रों को पसंद नहीं करता था। अतः मुगल चित्रकला का पतन हो गया।
- मुगल चित्रकार रोजी रोटी की तलाश में राजपूताना प्रदेश एवं पहाड़ी प्रदेशों के राजाओं के यहाँ शरण ली।
- इस प्रकार राजस्थानी शैली एवं पहाड़ी शैली का विकास हुआ।

राजस्थानी शैली

1. **मेवाड़ शैली** : राणा जगत सिंह के समय में अत्यधिक उत्कर्ष हुआ। मनोहर इस शैली का चित्रकार था।
2. **बूँदी शैली** : राजा सुरजन सिंह के समय में इस शैली का उत्कर्ष हुआ।
3. **कोटा शैली** : यह बूँदी शैली से जन्मी शैली है।
4. **जयपुरी शैली** : सवाई प्रताप सिंह के समय में इसका अत्यधिक उत्कर्ष हुआ।
5. **बीकानेरी शैली** : रुनकुद्दीन, सहाबुद्दीन, मस्तराम प्रमुख चित्रकार थे।
6. **किशनगढ़ शैली** : राजा सावंत सिंह के समय में सर्वाधिक उत्कर्ष हुआ। इस शैली का प्रमुख चित्रकार निहालचन्द्र था।

पहाड़ी शैली

1. **बशोली शैली** : यहाँ के राजा कृपाल पाल के समय में इसका उत्कर्ष हुआ। इस शैली का प्रमुख चित्रकार देवीदास था।
2. **कांगड़ा शैली** : राजा संसारचन्द्र के समय में इसका उत्कर्ष हुआ।
3. **जम्मू शैली** :—राजा रणजीत देव के समय में इसका उत्कर्ष हुआ। इस शैली का प्रमुख चित्रकार नयनसुख एवं भजनशाह थे।
4. **गढ़वाल शैली** :—राजा पृथपाल के समय में इसका उत्कर्ष हुआ। इस शैली के प्रमुख चित्रकार शामनाथ एवं हरदास थे।

मुगलकालीन संगीत-कला

- मुगलकाल में संगीत कला का अत्यधिक विकास हुआ।
- बाबर को संगीतकला में रुचि थी। वह आराम के क्षणों में संगीत सुनना पसंद करता था।
- हुमायूँ को भी संगीत में अत्यधिक रुचि थी। इसके दरबार 29 गायक एवं वादक रहा करते थे। इसने बच्चा नामक संगीतकार को माँडू से बुलाया था।
- अकबर के समय में संगीत का सर्वाधिक विकास हुआ।
- अकबर ने लाल कुलवंत नामक उस्ताद से हिन्दुस्तानी गायकी का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। अकबर स्वयं बहुत अच्छा नगाड़ा बजाता था।
- अबुल फजल ने आइन-ए-अकबरी में 36 संगीतकारों का उल्लेख किया है। जिनमें तानसेन सर्वप्रमुख थे।
- तानसेन का वास्तविक नाम रामतनु पांडेय था। यह ग्वालियर के रहने वाले थे।

अकबर के समय के संगीतकार	
1.मश्शाद	7. मियाँ चाँद
2.हिरात	8. बाजबहादुर
3.किपचाक	9. विचित्र खाँ
4.तानसेन	10. सरोद खाँ
5.रामदास	11. रंगसेन
6.सुभान मियाँ	12. अब्दुर्रहीम खानखाना

शाहजहाँ के समय के प्रमुख संगीतकार	
1.पं. जगन्नाथ	3. दुरंग खाँ
2.लाल खाँ	4. सुखसेन

जहाँगीर के समय के संगीतकार	
1.जहाँगीर दाद	4. विलास खाँ
2.परवेज दाद	5. छत्र खाँ
3.हम्जा	6. शौकी

- शाहजहाँ स्वयं भी एक अच्छा गायक था। इसके समय में ध्रुपद गायन का अत्यधिक विकास हुआ।
- इसने लाल खाँ को 'गुन समुन्दर' की उपाधि दी थी।
- औरंगजेब रूढ़िवादी एवं धार्मिक दृष्टि से कट्टर बादशाह था, धार्मिक कारणों से यह संगीत को पसंद नहीं करता था।
- औरंगजेब स्वयं वीणा बजाता था।

मुगलकालीन साहित्य

ग्रंथ का नाम	लेखक	विशेषता	ग्रंथ का नाम	लेखक	विशेषता
1. तुज्क-ए-बाबरी (तुर्की भाषा में)	बाबर	यह बाबर की आत्मकथा है। इससे बाबर के बारे में जानकारी मिलती है।	5. अकबरनामा (फारसी में)	अबुल फजल	इसमें अकबर के शासन के 46 वर्षों का विवरण प्राप्त होता है। अकबरनामा तीन खंडों में विभक्त है। इसका तीसरा खंड आइन-ए-अकबरी है जिसमें अकबर के प्रशासनिक नीतियों का वर्णन है।
2. हुमायूँनामा (फारसी में)	गुलबदन बेगम	यह हुमायूँ की सौतेली बहन थी। इन्होंने इसमें अपना संस्मरण लिखा है।	6. तारीख-ए-हक्की (फारसी में)	अब्दुल हक देहलवी	इसमें अकबर की धार्मिक नीति की कड़ी आलोचना की गई है।
3. तारीख-ए-शेरशाही (फारसी में)	अब्बास खाँ शरवानी	शेरशाह के जीवन का वर्णन है।	7. शाहजहाँनामा (फारसी में)	मुहम्मद सादिक खाँ	शाहजहाँ का विवरण है।
4. अकबरनामा	अब्दुल्ला फैजी सरहिन्दी	यह दूसरी अकबरनामा लिखी गई है।			

मुगलकाल में अनुवादित ग्रंथ

- अकबर ने एक अनुवाद विभाग स्थापित किया और फैजी को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया।
- महाभारत का फारसी अनुवाद रज्मनामा के नाम से हुआ। बदायूँनी एवं टर्क खाँ के सहयोग से इसका अनुवाद हुआ।
- रामायण का फारसी भाषा में अनुवाद बदायूँनी ने किया।
- अथर्ववेद का फारसी भाषा में अनुवाद हाजी इब्राहिम सरहिन्दी ने किया।
- राजतरंगिणी का फारसी भाषा में अनुवाद मौलाना सीरी ने किया।
- गणित की पुस्तक लीलावती का फारसी में अनुवाद फैजी ने किया।
- पंचतंत्र का फारसी अनुवाद अबुल फजल ने अनवर-ए-सुहायली नाम से किया।
- कालिया दमन का फारसी अनुवाद अबुल फजल ने आयगर-दानिश नाम से किया।
- भागवत पुराण का फारसी अनुवाद टोडरमल ने किया।
- सिंहासन बत्तीसी का फारसी अनुवाद बदायूँनी ने किया।

मुगलकाल में आये विदेशी यात्री

1. **राल्फ फिच** (1583-91 ई.) : यह अकबर के समय में पहुँचने वाला अंग्रेज यात्री था। इसने फतेहपुर सीकरी एवं आगरा की तुलना लंदन से की है।
2. **कैप्टन हाकिन्स** (1608-11 ई.) : यह ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रतिनिधि के रूप में जहाँगीर के दरबार में पहुँचा। जहाँगीर ने इसे 400 का मनसब प्रदान किया।
3. **सर टामस रो** (1615-18 ई.) : यह ब्रिटिश सम्राट जेम्स I के राजदूत के रूप में जहाँगीर के दरबार में आया था।
4. **पित्रो-डेलावले** (1623-26 ई.) : यह इटालवी यात्री 1623 ई. में सूरत पहुँचा था। इस समय जहाँगीर शासक था।
5. **पीटर मुंडी** (1630-34 ई.) : यह इटालवी यात्री शाहजहाँ के शासनकाल में भारत की यात्रा की।
6. **ट्रैवर्नियर** : यह इटालवी यात्री 1638-63 ई. के बीच भारत की छह बार यात्रा की। हीरा के व्यापारी होने के कारण हीरा व्यापार के बारे में इसका विवरण महत्वपूर्ण है।
7. **मनूची** (1653-1708 ई.) : यह इटालवी यात्री यहाँ आकर शाहजहाँ के अन्तर्गत दाराशिकोह की सेना में तोपची की नौकरी कर ली। बाद में चिकित्सक का पेशा अपनाया।
8. **बर्नियर** (1656-1707 ई.) : शाहजहाँ के समय में भारत आया शाहजहाँ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार के युद्धों का वर्णन किया है।

मराठा

शिवाजी (1627–80)

- शिवाजी का जन्म 1627 में शिवनेर के दुर्ग में हुआ था।
- इनके पिता शाहजी भोसले बीजापुर के सुल्तान के यहाँ प्रथम श्रेणी के सरदार थे।

- शाहजी के पास पूना एवं बंगलौर की जागीर थी।
- शिवाजी की माता का नाम जीजाबाई था। शाहजी और जीजाबाई में कुछ मन-मुटाव होने के कारण बंगलौर रहते थे और जीजाबाई पूना रहती थीं।
- शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास थे। शिवाजी के जीवन में इनका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा।

शिवाजी के अभियान

- शिवाजी ने अपने अभियानों की शुरुआत बीजापुर के विरुद्ध 1646 में की थी।
- 1646 में इन्होंने सर्वप्रथम बीजापुर के सुल्तान से तोरण का किला विजित किया और इसी वर्ष इन्होंने मुरूम्बगढ़ का किला जीता।
- 1647 में इन्होंने कोंडाना (सिंहगढ़) एवं चाकन का किला जीता।
- 1657 में शिवाजी का पहली बार मुगलों से संघर्ष हुआ। इसमें मराठा सेना को पीछे हटना पड़ा।
- अफजल खां बीजापुर का सेनापति था जो शिवाजी को समाप्त करने के उद्देश्य से प्रतापगढ़ के जंगल में अकेले सन्धि का प्रस्ताव रखा था और यहाँ पर शिवाजी ने बघनखे की सहायता से शिवाजी ने अफजल खां का वध किया।
- 1664 में शिवाजी ने सूरत की प्रथम लूट की। इस लूट से इन्हें लगभग 1 करोड़ रुपये की सम्पत्ति प्राप्त हुई।
- 1665 में औरंगजेब ने शिवाजी का दमन के लिए राजा जयसिंह को नियुक्त किया।
- राजा जयसिंह ने शिवाजी के अनेक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया और अन्ततः 15 जून 1665 को राजा जयसिंह और शिवाजी के बीच पुरन्दर की सन्धि हुयी।
- इस सन्धि के द्वारा शिवाजी ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली और अपने 35 किलों में से 23 किले मुगलों को दे दिए तथा शिवाजी के पुत्र सम्भाजी को 5 हजार का मनसबदार नियुक्त किया गया।
- जयसिंह के कहने पर शिवाजी 1666 में औरंगजेब से मिलने आगरा आए। शिवाजी के गैर अनुशासनिक व्यवहार से औरंगजेब ने इन्हें बन्दी बना कर नजरबन्द कर दिया। अन्ततः शिवाजी आगरा से भागने में सफल हुए।
- 1667 में शिवाजी ने औरंगजेब की अधीनता स्वीकार कर ली।
- औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि दी।

शिवाजी का प्रशासन

- शिवाजी का राजस्व सिद्धान्त प्राचीन हिन्दू सिद्धान्तों पर आधारित था। क्षत्रपति इनकी उपाधि थी। इनकी प्रशासनिक भाषा मराठी थी।

शिवाजी का राज्याभिषेक

- शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनायी।
- 6 जून 1674 को इनका राज्याभिषेक हुआ। राज्याभिषेक काशी के ब्राह्मण विशेश्वरभट्ट (गागाभट्ट) ने वैदिक विधि विधान से सम्पन्न कराया।
- राज्याभिषेक के 11 दिन बाद जीजाबाई का निधन हो गया। अतः 24 सितम्बर 1674 को शिवाजी ने अपना दूसरा राज्याभिषेक तान्त्रिक विधि विधान से कराया।
- यह राज्याभिषेक निश्चलपुरी गोसांई ने कराया।
- 1680 में रायगढ़ में शिवाजी की मृत्यु हो गयी।

सदस्य

1. **पेशवा** : प्रशासनिक कार्य करना इसका मुख्य कार्य था। प्रत्येक राजकीय आज्ञाओं में सम्राट के हस्ताक्षरों के नीचे पेशवा के हस्ताक्षर व मोहर आवश्यक थी।

Pariksha Manthan

2. **अमात्य/पंत/मजमुआदार** : यह राज्य का वित्त मंत्री था■।

7. **न्यायाधीश** :—यह राजा के बाद मुख्य न्यायाधीश था।

8. **पंडितराव** : यह धार्मिक मामलों में राजा का मुख्य सलाहकार था। यह राज्य की तरफ से ब्राह्मणों, मन्दिरों को अनुदान देता था।

भू-राजस्व व्यवस्था

- राजकीय आय का मुख्य श्रोत भूमि कर था।
- प्रारम्भ में शिवाजी ने 1/3 भाग भू-राजस्व वसूल किया। बाद में जब इन्होंने आन्तरिक करों को समाप्त कर दिया तब 2/5 भाग भू-राजस्व वसूल किया।
- राजकीय आय का दूसरा श्रोत चौथ था। शिवाजी यह कर पड़ोसी शत्रु राज्यों से वसूल करते थे। यह उस राज्य की आय का 1/4 होता था।
- इसके अतिरिक्त शिवाजी सरदेशमुखी नामक कर पड़ोसी शत्रु राज्यों से वसूल करते थे। यह राज्य की आय का 1/10 होता था।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

संभाजी (1680–89)

- संभाजी उत्तर भारत के एक ब्राह्मण कवि कलश को अपना सलाहकार नियुक्त किया।
- मुगल सम्राट औरंगजेब से इनका संघर्ष हुआ। 1689 में औरंगजेब ने संभाजी तथा कवि कलश को बन्दी बना लिया और दोनों की हत्या कर दी।

राजाराम (1689–1700)

- राजाराम ने अपनी राजधानी दक्षिण में जिंजी को बनाया।
- इन्होंने निरन्तर मुगलों से संघर्ष किया और आंशिक सफलता प्राप्त की।

शिवाजी II (1700–1707)

- यह राजाराम के अल्प वयस्क पुत्र थे। इनकी माता ताराबाई इनकी संरक्षिका थी।
- ताराबाई मुगलों से मराठा राज्य छीनने में सफल रहीं।
- 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद शाहू आजम की कैद में था। इसने शाहू को रिहा कर दिया।
- 1707 में खेद के मैदान में ताराबाई पराजित हुई और कोल्हापुर चली गयीं और शिवाजी-II के नाम से यही से शासन करने लगीं।

शाहू छत्रपति (1708–49)

- शाहू ने सतारा को अपनी राजधानी बनाई।
- शाहू के समय में मराठे भारत की प्रथम श्रेणी की शक्ति में स्थान पा सके। इसके लिए शाहू के पेशवा ही उत्तरदायी थे।

मराठा छत्रपति—एक दृष्टि में

1.शिवाजी	1674 - 1680 ई.
2.शंभाजी	1680 - 1689 ई.
3.राजाराम	1689 - 1700 ई.
4.शिवाजी-II	1700 - 1707 ई.
5.शाहू-I	1708 - 1749 ई.
6.रामराजा	1749 - 1777 ई.
7.शाहू-II	1777 - 1808 ई.
8.प्रताप सिंह	1808 - 1839 ई.
9.शाहजी	1839 - 1848 ई.

मराठा पेशवा—एक दृष्टि में

1.बालाजी विश्वनाथ	1713 - 1720 ई.
2.बाजीराव-I	1720 - 1740 ई.
3.बालाजी बाजीराव	1740 - 1761 ई.
4.माधव राव	1761 - 1772 ई.
5.नारायण राव	1772 - 1774 ई.
6.माधवराव नारायण	1774 - 1795 ई.
7.बाजीराव-II	1795 - 1818 ई.

Pariksha Manthan

पेशवा काल

बालाजी विश्वनाथ (1713–20)

- यह शाहू के पहले पेशवा थे। इन्होंने मराठों की शक्ति को महाराष्ट्र में सुदृढ़ किया।
- इनकी मुख्य उपलब्धि 1719 में मुगलों से की गयी सन्धि थी। यह सन्धि मुगल दक्षिण के मुगल सुबेदार हुसैल अली ने मुगल सम्राट की ओर से शाहू के साथ की थी।

बाजीराव प्रथम (1720–40)

- यह बालाजी विश्वनाथ के पुत्र थे। इसी समय से पेशवा का पद वंशानुगत हो गया।
- यह पहले मराठे हैं जिन्होंने उत्तर भारत में साम्राज्य विस्तार किया। इन्होंने मुगलों को पराजित कर मालवा, गुजरात और बुन्देलखण्ड को जीतकर मराठा साम्राज्य में सम्मिलित किया।
- इन्हीं के समय में मराठों के अनेक राजवंशों की स्थापना हुई जैसे—
  - रानोजी सिंधिया ने मालवा के एक हिस्से में सिंधिया वंश की स्थापना की। प्रारम्भ में इनकी राजधानी उज्जैन थी बाद में ग्वालियर थी।
  - इसी समय मल्हारराव होल्कर मालवा के दूसरे भाग में होल्कर वंश की स्थापना की। इनकी राजधानी इन्दौर थी।
- यह मस्तानी नामक मुस्लिक महिला से प्रेम करते थे।

बालाजी बाजीराव (1740–61)

- इन्हीं के समय में शाहू जी की 1749 में मृत्यु हुई। इसके बाद छत्रपति के सारे अधिकार पेशवा में निहित हो गये।
- इनके समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना पानीपत का तृतीय युद्ध था। 1761 में यह युद्ध अहमदशाह अब्दाली एवं मराठों के बीच लड़ा गया।
- मराठा सेना का नेतृत्व सदाशिवराव भाऊ एवं विशवासराव ने किया। इसमें मराठे पराजित हुए।
- बालाजी बाजीराव को नाना साहब के नाम से भी जाना जाता था।
- 1750 ई. में संगोला समझौता द्वारा छत्रपति के सारे अधिकार पेशवा में निहित हो गये।
- अब छत्रपति नाममात्र का शासक होता था और सतारा में बन्दी जीवन व्यतीत करता था।

पानीपत का तृतीय युद्ध

- पानीपत का तृतीय युद्ध अफगान शासक अहमदशाह अब्दाली एवं मराठों के बीच में लड़ा गया।
- इस युद्ध का मुख्य कारण दिल्ली एवं पंजाब की राजनीति में मराठों का हस्तक्षेप था।
- इस युद्ध में मराठों की भीषण पराजय हुई। महाराष्ट्र का कोई परिवार ऐसा नहीं था जो अपने स्वजन की मृत्यु पर शोक न मनाया हो।
- यह युद्ध मराठों के लिए राष्ट्रीय विपत्ति के समान थी।
- इस युद्ध का नेतृत्व पेशवा बालाजी बाजीराव का चचेरा भाई सदाशिवराव भाऊ एवं पेशवा का पुत्र विश्वास राव कर रहे थे।
- मराठों की ओर से तोपखाने का नेतृत्व इब्राहिम गार्दी ने किया।
- इस युद्ध का आँखों देखा वर्णन काशीराज पंडित ने किया है।

◆◆◆

Pariksha Manthan